THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL LIBRARY
OU_178051
UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H911/699B Accession No. G.H. 353

Author ओझा राजवल्लभ।

Title बदलते हृदय। 1954

This book should be returned on or before the date last marked below.

बदलते दृश्य

[विदेश-यात्रा के संस्मरण]

लेखक

राजवल्लभ ओझा

प्रकाशक

हिन्दी-भवन

इलाहाबाद

१९५४]

[मूल्य ६)

प्रकाशक—
इन्द्रचन्द्र नारंग
हिन्दी-भवन
३१२ रानी मंडी,
इलाहाबाद-३

मुद्रक—
इन्द्रचन्द्र नारंग
हिन्दी-भवन मुद्रणालय
३१२ रानी मंडी,
इलाहाबाद-३

निवेदन

लेखक अपनी पुस्तक के प्रारम्भ में 'निवेदन' या भूमिका क्यों लिखता है? एक कारण यह हो सकता है कि वह पुस्तक में प्रतिपादित वस्तु या उससे सम्बद्ध विषय की जानकारी करा देने का इच्छुक हो, या प्रतिपादित का सूक्ष्म विश्लेषण उसे अभीष्ट हो। दूसरा कारण लिखने में तनिक संकोच होता है। वह यह है कि कुछ लेखक आत्म-प्रशंसा के लिए, अपनी लेखन-कला की श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए 'निवेदन' लिखते हैं। मैंने क्यों लिखा है, मेरे पाठक स्वयं इसका निर्णय करें। वैसे तो सुना है—अनेक पाठक पुस्तकों का कोई एक प्रसंग भी पूरा नहीं पढ़ते,—'निवेदन' की तो बात छोड़िये। 'तान् प्रति नैष यत्नः'।

ब्रिटिश सरकार के आमंत्रण पर, उत्तर प्रदेशीय श्रमजीवी पत्रकार यूनियन का प्रतिनिधि हो कर मैं सन् १९५१ में ब्रिटेन गया था। जिन्दगी के मोड़ पर खड़े यूरोप के कुछ भागों को मैंने उस यात्रा में देखा—कहीं चलते-चलते, कहीं ठमक कर और कहीं रुक कर। रोज़-रोज़ जो कुछ देखता और अनुभव करता था, उसे रात को, अपने को नींद के हवाले करने के पहले लिखता जाता था। भावुकता को सहचरी बनाते समय भी अपने पुराने मित्र यथार्थवाद से आँखें नहीं फेरीं। भविष्य को सुखद बनाने वाली शक्तियों की ओर से आँखें मूँद लेना, उनकी हवा से भी बचना, उनके साथ चलने को उँगली उठने का कारण समझना—यह सब मैंने अपना अकर्तव्य समझा। वास्तव में मेरी विदेश-यात्रा की डायरी के पन्नों का संकलन ही यह पुस्तक है।

डायरी लिखना कला है। डायरी छपने पर तो लोग उसमें कला जरूर ढूँढते हैं। लोग शायद इस पुस्तक में भी कला ढूँढेंगे, क्योंकि है तो यह डायरी ही। नम्र निवेदन है कि मैं कलाकार नहीं, अतः मेरे पाठक इसमें मेरे दिल की धड़कन, उसकी गर्मी, उसकी गति देखें—उसकी बनावट नहीं। जो नहीं है, उसे ढूँढने में लाभ भी नहीं। आगे पाठक की मर्जी।

मैंने पुस्तक का नाम रखा है 'बदलते दृश्य'। मेरी यात्रा में यही तो होता था—एक के बाद एक दृश्य बदलता था। इसमें पश्चिमी जीवन के विभिन्न पहलुओं की मीठी-कड़ुवी झलक मिलेगी। 'बदलते दृश्य' पाठकों को आज

यूरोप को समझने में सहायक होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। इसलिए विलम्ब हो जाने पर भी मैं पुस्तक के प्रकाशन का लोभ न छोड़ सका।

'नव-जीवन' (लखनऊ) के संपादक श्री सत्यदेव शर्मा यूरोप देख चुके हैं। विदेश-यात्रा की तैयारी मैंने मुख्यतः उन्हीं के परामर्श के अनुसार की। इसमें उन्होंने कभी कृपणता न की और दिल्ली तक मेरे साथ-साथ जा कर तो स्नेह की छाप लगा दी—जहाँ से मैं हवाई जहाज से रवाना हुआ। पुस्तक की पांडुलिपि मेरे साहित्य-मर्मज्ञ मित्र श्री बलदेवप्रसाद मिश्र ने देखी। श्रमजीवी पत्रकार और मेरे प्रिय साथी—श्री बाबूलाल श्रीवास्तव ने पुस्तक का दूसरा प्रूफ पढ़ा। श्रमजीवी पत्रकार एवं कवि श्री रामऋषि शुक्ल ने अंग्रेजी पत्रों का हिन्दी अनुवाद किया। भाई राधेनाथ चोपड़ा (प्रयाग) ने श्री इन्द्रचन्द्र नारंग (प्रकाशक) से सम्पर्क रख कर मेरी सहायता की। इन लोगों को धन्यवाद दे कर शिष्टाचार-पालन का संतोष मुझे न होगा। अन्त में उन मित्रों का स्मरण आना भी स्वाभाविक ही है, जिनकी कृपा से यह पुस्तक पहले ही न छप सकी।

'नवजीवन' लखनऊ   *राजवल्लभ ओझा*

विषय-सूची

पृष्ठ संख्या

१. २२ अप्रैल १९५१ ... ... १

जब कल्पनाएँ अनुभूति बनने लगीं...

(१) मंजिल की ओर

(२) पहले दो पड़ाव—कराची व बेहरिन

२. २३ अप्रैल ९

बेहरिन से लन्दन

(१) अरब के जीवन-शून्य रेगिस्तान

(२) सभ्यता के पुराने घोंसले में

(३) मनमोहक क्रीट

(४) निस्तेज रोम

(५) संसार के 'सबसे बड़े नगर' में

३. २४ अप्रैल १९

लन्दन का अनोखापन

(१) फ्लीट स्ट्रीट

(२) हाइड पार्क कार्नर

(३) पिकाडिली सर्कस

(४) पब

४. २५ अप्रैल २५

(१) 'जलोत्सव'

(२) डाउनिंग स्ट्रीट का मनहूस वातावरण

(३) हाइड पार्क

पृष्ठ संख्या

५. २६ अप्रैल २६

(१) 'वे दिन लद गये जब खलीलखाँ फाख्ता उड़ाते थे!'
(२) ब्रिटेन की जन-नाट्यशाला—यूनिटी थियेटर

६. २७ अप्रैल ३३

(१) युद्ध के घाव
(२) डॉक-मजदूरों के क्षेत्र में
(३) संवाद-समितियाँ
(४) संगीत-रूपक
(५) राजपथ पर भिखारी !

७. २८ अप्रैल ३६

(१) ब्रिटिश म्यूज़ियम
(२) ट्रेफल्गार स्क्वायर
(३) घृणित और क्षोभजनक दृश्य
(४) "कहिये, मौसम अच्छा है न !"

८. २६ अप्रैल ४५

(१) धूप के साथ चेहरे भी चमक उठते हैं !
(२) विक्टोरिया ऐंड अलबर्ट म्यूज़ियम
(३) "सभी गोरे मलान नहीं हैं !"

६. ३० अप्रैल ५०

(१) अफ्रीकी यात्रियों से बातचीत
(२) बकिंघम पैलेस
(३) 'बो स्ट्रीट' के मजिस्ट्रेट की अदालत
(४) 'ओवरसीज़ लीग'
(५) कलाकारों की 'गुफा'

१०. १ मई ५७

(१) ब्रिटिश औद्योगिक मेला
(२) पत्रकार साथियों के बीच
(३) इंडिया हाउस में चाय

पृष्ठ संख्या

(४) ब्रिटिश पत्रों की कार्य-प्रणाली
(५) 'डेली हेराल्ड'

११. २ मई ६६
(१) फिलिप जोर्डन से बातचीत
(२) 'भाग्य का पत्थर'
(३) पार्लमेंट
(४) ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन
(५) नग्न तारिकाओं की कला

१२. ३ मई ७५
(१) ब्रिटिश महोत्सव का समारम्भ
(२) मोम की मूर्तियों की प्रदर्शनी
(३) पत्रकार की काकटेल पार्टी में

१३. ४ मई ८०
(१) दीक्षित अध्यापकों की कमी
(२) इटन कॉलेज
(३) स्लाउ का श्रम-कल्याण-केन्द्र

१४. ५ मई ८६
(१) ब्रिटिश महोत्सव
(२) नेशनल गैलरी
(३) 'तीन बहनें'

१५. ६ मई ९६
(१) मंगलकारी राज्य के आदर्श की हत्या
(२) पेटीकोट लेन में जागरूक श्रमिक से भेंट
(३) 'मैन एँड सुपरमैन'
(४) कहीं केलि-क्रीड़ा और कहीं जीवन में बेकली !

१६. ७ मई १०१
(१) 'गानेवाली गुड़िया'
(२) लंदन से डरहम

पृष्ठ संख्या

१७. ८ मई १०७

डरहम और न्यूकासल

(१) समाज-सेवा-प्रतिष्ठान
(२) राष्ट्रीय स्वास्थ्य-योजना

१८. ९ मई ११४

(१) टीम वैली के औद्योगिक प्रतिष्ठान
(२) अपाहिजों का शिक्षालय
(३) उत्तरी सागर के तट पर
(४) भारतीय एवं अफ्रीकी छात्रों से बातचीत
(५) 'न्यू कासल जरनल' के कार्यालय में

१९. १० मई १२०

(१) स्टौक्टन
(२) "टनों वनस्पति हमसे रँगवाइये"
(३) औद्योगिक विवाद हल करने की प्रणाली
(४) वाटसन भी मजदूर नेता हैं !

२०. ११ मई १२६

(१) रेड डीन से अचानक भेंट
(२) सहकारिता आन्दोलन
(३) 'रहस्यमय कथाओं के देश' की ओर
(४) एडिनबरा के 'पब' में

२१. १२ मई १३४

रंगीन कल्पनाओं के प्रदेश स्काटलैंड में

(१) मेरी की प्रेमलीला का स्थल
(२) पाइप बैंड प्रतियोगिता
(३) "पवित्र स्काटलैंड को अंग्रेजी प्रभुत्व से मुक्त करना है"

२२. १३ मई १४०

(१) हाईलैंड में प्रकृति के लुभावने दृश्य

पृष्ठ संख्या

(२) जल-विद्युत्-केन्द्र और सेमन मछली
(३) पर्थ से डंडी

२३. १४ मई १४७
(१) डंडी से ग्लासगो
(२) लोमंड झील का रूमानी वातावरण

२४. १५ मई १५०
(१) राबर्ट ओवेन का घर
(२) 'ग्लासगो का हाइड पार्क'
(३) अविस्मरणीय दृश्य

२५. १६ मई १५४
ब्रिटेन का सांस्कृतिक तीर्थ-स्थान
(१) एवन के तट पर शेक्सपियर का स्मारक
(२) नाटककार के उद्यान में
(३) शेक्सपियर मेमोरियल थियेटर

२६. १७ मई १६१
(१) 'इंगलैंड का दिल'
(२) शेक्सपियर का घर
(३) मेमोरियल थियेटर में 'द्वितीय रिचर्ड'

२७. १८ मई १६७
(१) साप्ताहिक वेतन मिलने पर भी चेहरा गंभीर
(२) कृषि-प्रणाली

२८. १९ मई १७१
आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय

२९. २० मई १७९
(१) स्ट्रैटफर्ड का शेक्सपियरमय वातावरण
(२) ईरानी तेल के प्रश्न पर टोरी पत्रों
द्वारा शक्ति-प्रयोग की माँग

पृष्ठ संख्या

३०. २१ मई १८४
(१) कॉमनवेल्थ पुस्तकालय में संस्कृत और हिन्दी की पांडुलिपियाँ
(२) "ब्रिटेन पर अमेरिका छा जाना चाहता है"
(३) कुछ पत्रों की ग्राहक-संख्या

३१. २२ मई १८६
(१) चाय के पैकेट और दूध की बोतलें
(२) शृंखलाबद्ध पत्रों का प्रकाशन

३२. २३ मई १६३
(१) लंदन टावर
(२) दुकानें
(३) अखबारी कागज़ की समस्या
(४) न्यूज़ एजेंट
(५) नृत्य-नाटिका

३३. २४ मई १६८
(१) पुस्तकों की प्रदर्शनी
(२) एक महिला पत्रकार के विचार
(३) भारत में 'अंग्रेज़ी का प्रयोग'
(४) 'आक्सफोर्ड' बनाम 'हाक्सफोर्ड'

३४. २५ मई २०३
(१) कीट्स का स्मारक-भवन
(२) लंदन से ज्यूरिख

३५. २६ मई २०८
झीलों के देश स्विटजरलैंड में
(१) शिक्षा और उद्योग का केन्द्र—ज्यूरिख
(२) 'बर्न' की रूमानी संध्या

३६. २७ मई २१६
(१) स्विटजरलैंड की तटस्थता

पृष्ठ संख्या

(२) 'ठुन' झील के किनारे
(३) अपने कार्यवाहक प्रतिनिधि से भेंट

३७. २८ मई २२१

...मीठी याद लिये बर्न से पेरिस

३८. २९ मई २२५

(१) पेरिस की मीठी झलक
(२) डालर की महिमा
(३) कैसिनो-द-पेरी में रति-कुमारियों की कला

३९. ३० मई २३५

(१) कला-मंदिर 'लुव'
(२) 'क्रान्ति-भूमि'
(३) वर्साई का केलि-सदन
(४) 'शैतानों को वोट नहीं दे सकतीं'
(५) 'कामुकों का लोकतंत्र'

४०. ३१ मई २५२

(१) क्रान्ति का स्मारक
(२) नोत्रेदाम का भव्य मंदिर
(३) 'हसीन चाँद में धब्बे'
(४) लहरों के आशाजनक गीत

४१. १ जून २५७

(१) साधन-सम्पन्न पर्यटकों के 'प्रेमनीड़' में
(२) लोज़ान का रंगीन वातावरण
३) खतरनाक चौराहे पर खड़ा पश्चिमी यूरोप

भूल-सुधार

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
घ	३	'नव-जीवन'	'नवजीवन'	११६	७	जनरल	जरनल
२६	११	यह	वह	१२०	३	है।"	है",
३०	२४	इसमें	इससे	१४०	२०	ट्रेक्टरों	ट्रैक्टरों
४३	७	जो	में जो	१५१	११	न होगी	नहीं है
४६	१८	रहत	रहती	१५१	१२	है	था
५५	८	खरीदनेवाने	खरीदवाने	१५५	२३	हैं	है
५८	१६	हो	कि	१५७	फुटनोट	adam	Adam
६१	६	यही	यह	१५८	"	cauce	cause
६५	२६	लाख है	है	१७०	१०	नगन्य	नगण्य
६६	८	अमरीकी	अमेरिकी	१७२	१४	कालेज	हर कालेज
६६	१५	लायड	लायर्ड	२०३	१२	सीखता	लिखता
७६	८	इतनी	इतना	२१३	१०	टेम्म	टेम्स
८७	२३	शान्ति घोष-	शान्ति घोषणा	२१४	१२	वारुणो	वारुणी
		णा की	के समर्थन की	२१५	२	मतमेद	मतभेद
		अपील	अपील	२१८	१५	हीरक सी	हीरक-सी
९२	४	तीस कमरों	२६ बड़े कमरों	२२७	६	जोलिया	जोलियो
९३	२८	कान्सटेनल	कांस्टेबल	२२७	१४	यह	अब
९४	१	योरप	यूरोप	२२७	२३	हिन्द चीन	हिन्द-चीन
९४	२८	हो	भी	२२९	२७	रेस्त्र	रेस्त्रां
९७	१२	५-10	२-३	२३२	३	वह	वे
९९	१	हूँ।	हूँ,	२३२	१३	आकर्षण	आकर्षण का
१०२	२३	होटल	होटल से	२३६	३०	रे सां	रेनेसां
१०४	१९	स्लाड	स्लाउ	२३६	३१	का	की
१०७	१६	स्लाड	स्लाउ	२४५	२६	फिलिप,	फिलिप
१०८	२४	मजदूरी	मजदूरों			स्नोडन	स्नोडन
११७	६	हे	है	२४७	२४	होगा।	बनेगा
११७	२६	आये,	आये, क्योंकि	२४७	२७	पापा	पाया
११७	३०	सवा सात	सवा सात बजे	२५२	१७	कटहरियानाथ	कंडरियानाथ
११७	३१	आ	आठ	२५५	१४	वह	यह
११८	२६	जनरल	जरनल	२६०	३	स्नान-तट	(स्नान-तट)

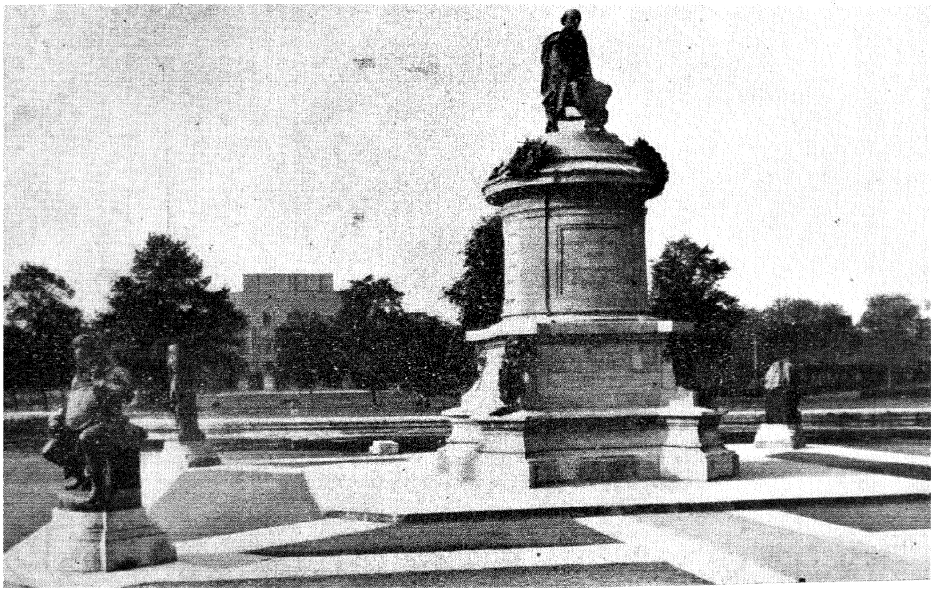

ब्रिटेन के सांस्कृतिक तीर्थस्थान स्ट्रैटफर्ड में शेक्सपियर स्मारक

१२ वर्ष के परिश्रम के बाद मूर्तिकार लॉर्ड रोनाल्ड गोबर ने इस मूर्ति को तैयार किया था और १० मई १८८८ को यह प्रतिष्ठित की गई ।

१६ मई की डायरी, पृ० १५७

लेखक

२२ अप्रैल, १९५१

जब कल्पनाएँ अनुभूति बनने लगीं....

(१) मंज़िल की ओर

(२) पहले दो पड़ाव—कराची व बेहरिन

दिल्ली के पालम हवाई अड्डे से सायंकाल ४ बज कर १७ मिनट के बजाय ५ बज कर १२ मिनट पर 'ताजधारी प्रजातंत्र' की राजधानी लंदन की ओर हमारा विमान उड़ा। सौंदर्य और प्रेम के मेल में जो मिठास है, वैसी ही मधुरिमा पर्यटन में मुझे प्राप्त होती है। इसीलिए हवा में तैरते समय मुझे ऐसा मालूम हुआ जैसे सीमाओं का संकोच समाप्त हो गया है और शेक्सपियर, मिल्टन, वर्ड्सवर्थ, शेली, बायरन और कीट्स के गीत हवा के झोंकों के साथ विमान की खिड़की से मेरे कानों में आ कर मेरे विचारों को जगा रहे हैं। कभी जिस विदेश-यात्रा की कल्पना किया करता था, वही अब जीवन की अनुभूति बनने वाली है। विश्वास और दृढ़ विश्वास से ही आकांक्षाएँ पूरी होती हैं। कल तक 'टेम्स' नदी की लहरों का संगीत सपनों में सुना करता था, परन्तु अब उसके तट पर खड़े हो कर उसकी बल खाती ऊर्मियों से साम्राज्य-लोलुप शासकों के कुकृत्यों का लोमहर्षक वृत्तान्त सुनूँगा तो कभी कर्तव्यनिष्ठ और साहसी ब्रिटिश जनता के जीवन के स्फूर्तिदायक गीत!

विमान जब अपनी मंजिल की दिशा में उड़ा, तो उसके डैनों की भनभनाहट से शुरू में मुझे बड़ा कष्ट हुआ, मगर कान में रुई डाल कर उसे सहन करना ही पड़ा। वायु-मार्ग से यात्रा करते समय मिचली के कारण भी यात्रियों को तकलीफ होती है। परन्तु मैं इससे बच गया। हो सकता है कि 'एयर होस्टेस' ने अपने नाजुक हाथों से मीठी मुसकान के साथ मुँह में घुलाने के लिए जो पिपरमेंट दिया था, उससे मतली न आई हो। हवाई जहाज धीरे-धीरे नौ हजार फुट से अधिक ऊँचाई पर पहुँच गया था। 'सीट बेल्ट' खोल कर जब मैंने खिड़की से बाहर निहारना शुरू किया, तो देखा—बड़े-बड़े वृक्ष उँगलियों के आकार में परिवर्तित हो गये हैं, गाँव ढूह के समान प्रतीत होते हैं और

छोटे-छोटे आकार के मनुष्यों को देख कर अठारहवीं सदी के सुप्रसिद्ध लेखक 'जोनाथन स्विफ्ट के 'गुलिवर्स ट्रेवल्स' में वर्णित एक-एक इंच के मनुष्यों की याद ताजी हो गई। अंतर इतना ही था कि मैं जिस भौगोलिक सीमा में लघु आकार की निर्मल सृष्टि को आकाश से देख रहा था, वह स्विफ्ट की व्यंग्यात्मक चोटों से मुक्त थी। जब खिड़की से बाहर मेरी आँखें ऊपर या सामने उठतीं तो ऐसा प्रतीत होता, जैसे विमान के साथ हम बादलों की दुनिया में अब अन्तर्धान हो जाने वाले हैं। कभी-कभी ऐसा आभास होता कि बादलों के टुकड़े विमान के साथ आँखमिचौनी खेल रहे हैं। नील गगन में श्वेत बादलों के दल तैरते हुए वैसे ही खूबसूरत प्रतीत होते जैसे जलाशय में राजहंस! कभी काले बादलों के दल श्वेत जलद के टुकड़ों को ढक लेते और इनके सम्मिश्रण से ऐसा आकर्षक दृश्य उपस्थित होता, जिसे देखते ही हम ठगे-से रह जाते। विभिन्न रंगों के बादलों के इस प्रमोदपूर्ण व्यापार को देख कर महाकवि कालिदास की कल्पना आँखों के सामने मूर्तिमती हो उठी :—

नितान्तनीलोत्पलपत्रकान्तिभिः क्वचित्प्रभिन्नाञ्जनराशिसन्निभैः।
क्वचित्सगर्भप्रमदास्तनप्रभैः समाचितं व्योमघनैः समन्ततः।

—'ऋतु-संहार'

[कहीं नीले कमलों की कान्ति वाले, कहीं घिसे हुए अंजन की राशि-सदृश और कहीं गर्भवती स्त्री के स्तनों जैसे बादलों से आकाश चारों ओर भर गया है।]

आज इतने निकट से मेघों की अनुपम क्रीड़ा देख कर 'मेघदूत' के विविध चित्र भी आँखों में उतर आये। परन्तु तभी सहसा यह स्मरण हो आया—महाकवि की जिस 'सजल कल्पना' को सिद्धों की मुग्ध-अंगनाएँ चकित हो कर देखा करती थीं; उसे अंग्रेजों के दो सदियों के शोषण के कारण हमारे देश के फटेहाल गाँवों की दुलहिनें आँखों में अभाव का दर्द लिये देखती होंगी।

जब शर्मीली संध्या के मुख पर अरुण घूँघट पड़ गया, तो बादलों के लाल-लाल टुकड़े दिखाई पड़ने लगे। बिहार के प्रतिनिधि श्री रामवृक्ष बेनीपुरी मेरी सीट के पास बैठे थे और डायरी लिखने में तल्लीन थे। मैंने जब उनसे कहा—"बाहर देखिए, दृश्य कैसे बदल रहे हैं", तो बादलों की ओर झाँक कर भावावेश में उन्होंने कहा—"प्यारे भाइयो, यह तो अद्भुत दृश्य है!"

प्रकृति के विभिन्न दृश्यों को देखते-देखते मैं विचारों की दुनिया में डूब

गया। पहली बार भारत के श्रमजीवी पत्रकारों का प्रतिनिधिमण्डल ब्रिटिश सरकार के आमंत्रण पर ब्रिटेन जा रहा है। उत्तरप्रदेश के पत्रकार साथियों ने मुझे अपना प्रतिनिधि चुन कर जो प्रेम और विश्वास प्रकट किया है, उससे मेरा दायित्व बढ़ गया है। 'बदलते दृश्य' में यात्रा का सही वृत्तान्त प्रस्तुत कर के मैं इस दायित्व का निर्वाह करूँगा। और यह विचार आते ही ब्रिटेन के इतिहास के विविध पृष्ठ मेरी आँखों के सम्मुख खुलने लगे।

जिस देश को मैं देखने जा रहा हूँ, उसने द्वितीय महायुद्ध के पूर्व तक दुनिया के एक चौथाई भूखण्ड पर अपना साम्राज्यवादी प्रभुत्व कायम कर रखा था और विश्व की समूची जनसंख्या का लगभग एक चौथाई अंश उसके शासनाधिकार में था। फ्रेंच समाजशास्त्री रूसो के शब्दों में 'बनियों के राष्ट्र'—इंग्लैंड—की राजधानी लंदन जा रहा हूँ, जिसके हाथ में लगभग सौ वर्ष तक अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार तथा वित्त की नकेल रही है, मगर आर्थिक प्रभुता की प्रतिद्वन्द्विता में पराजित वही लंदन अब वाशिंगटन के आगे हाथ फैला चुका है। परन्तु सदियों से साम्राज्यवादी टेव पड़ने के कारण अभी शोषण की उसकी प्यास नहीं बुझी। यूनानी इतिहासकार हीरोदोत ने लीडिया (एशियाई कोचक के निकट) के नरेश कारूँ की पराजय और खजाना लुट जाने की जो कथा लिखी है, उसे ब्रिटिश शासकों ने पढ़ा जरूर होगा, मगर उन्हें आज यह दिखाई नहीं देता कि धरती करवटें ले रही हैं तथा शोषण का युग समाप्त होनेवाला है। युद्ध के बाद हमारे साथ ही कुछ और देश ब्रिटेन के लौह-पाश से मुक्त हुए, मगर मलाया की दर्दभरी आवाज़ मेरे कानों में गूँज रही है। लंदन जाते समय एक राजनीतिज्ञ की यह बात याद आ रही है कि रोम साम्राज्य की भाँति ब्रिटिश साम्राज्य में भी कल्पना-शक्ति की कमी है और जिस साम्राज्य ने मानवता के महान् सेवक महात्मा गांधी जैसे सन्त को कैद में रखा, उसे ईसा को सूली पर चढ़ाने वाले साम्राज्य के समान ही लोग घृणा की दृष्टि से जरूर देखेंगे। मैं उस देश की राजधानी जा रहा हूँ, जिसकी बड़ी राजनीतिक पार्टियाँ अपने-अपने ढंग से उपनिवेशों को ब्रिटेन के अधीन रखने की कोशिशें करती रही हैं। साम्राज्यवादी साहित्यकार रुडयार्ड किपलिंग ने तो हमें मनुष्य भी नहीं समझा।

सहसा विचार-प्रवाह रुक गया। अगली सीट पर बैठे एक यात्री ने 'कैप्टेन की बुलेटिन' मेरे हाथ में थमा दी। वायुयान थोड़ी देर बाद जोधपुर की सीमा पार करने वाला था और इस समय दो सौ मील प्रति घंटे की रफ्तार से

१६,००० फुट की ऊँचाई पर हम उड़ रहे थे। 'कैप्टन की बुलेटिन' को बेनीपुरी जी के हाथ में थमा कर जब मैंने खिड़की से बाहर देखा, तो नीचे धुँधलका-सा दिखाई दिया—दूर-दूर बिखरी हुई बस्तियाँ और बंजर जमीन के बड़े-बड़े टुकड़े।

बेनीपुरी जी ने डायरी लिखने का क्रम जारी रखने के लिए सिगरेट पी कर प्रेरणा प्राप्त करनी चाही। मैंने उन्हें सिगरेट दी और कुछ देर तक हम लोग ब्रिटेन के सम्बन्ध में बातें करते रहे। उन्होंने कहा—"मुझे अंग्रेज़ों ने बंदी बनाया और उन्हीं अंग्रेज़ों के निमंत्रण पर मैं ब्रिटेन जा रहा हूँ। यह जाति भी विचित्र है!" मैंने कहा—'बेनीपुरी जी, अंग्रेज़-शासक ज़रूर बुरे हैं, मगर ब्रिटिश जाति की बड़ी गौरवशालिनी परम्परा है। बेनीपुरीजी ने बड़े नाटकीय ढंग से कहा—"प्यारे भाइयो, यही तो विचित्रता है!"

सचमुच साम्राज्यवादियों के लंदन का चित्र जितना घृणित है, उतना ही ब्रिटेन की बहादुर जनता का चित्र गरिमामय है। निरंकुश नरेशों के विरुद्ध वहाँ की जनता ने प्रबल संघर्ष किया और लंदन वही नगर है, जहाँ किंग जान को इच्छा न होते हुए भी जन-संघर्ष से मजबूर हो कर १२१५ के नागरिक-स्वतंत्रता-सम्बन्धी घोषणापत्र (मैगनाकार्टा) पर हस्ताक्षर करना पड़ा और चार्ल्स प्रथम को अपनी निरंकुशता की कीमत सिर दे कर चुकानी पड़ी। मैं शेक्सपियर, मिल्टन, शैली, बायरन, कीट्स, थैकरे, डिकेन्स और बर्नर्डशा के लंदन जा रहा हूँ, जिसने विचारों के विरोध के बावजूद मार्क्स को शरण दी। औद्योगिक-क्रान्ति के नगर में ही विश्व का प्रथम क्रान्तिकारी अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर संघ स्थापित हुआ था और यहीं १८४५ में इसकी प्रथम कांग्रेस हुई थी। इसी महानगर में 'दुनिया के मजदूरो एक हो' का सर्वप्रथम नारा गूँजा था। लंदन में ही लेनिन को शरण मिली और यहीं सुप्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक वाल्तेयर ने निर्वासन की अवधि व्यतीत की। न जाने कितने क्रान्तिकारियों ने इस नगर में रह कर अपने महान् कार्यों के लिए प्रेरणाएँ प्राप्त कीं। और मैं उसी लंदन को देखने की लालसा से उड़ा जा रहा हूँ, जिसके नवयुवक साहित्यकारों—रैलेफ फाक्स, क्रिस्टोफर काडवेल आदि—ने स्पेन की जनता के लिए फ्रांको के विरुद्ध लड़ कर अपने प्राणों की बलि दे दी। मैं उस लंदन को श्रद्धा की दृष्टि से देखता हूँ, जिसने १९४० में अपूर्व साहस के साथ जर्मन बम-वर्षा का सामना किया, परन्तु फ्रान्स के समान अपना सिर न झुकाया।

मैं खुले दिमाग से ब्रिटेन की परिस्थिति को देखूँगा, क्योंकि मेरी आँखों पर किसी रंग का चश्मा नहीं लगा है।

भावनाओं और विचारों की दुनिया में मैं इस तरह डूबा हुआ था कि जब 'सीट बेल्ट' कसने का संकेत हुआ, तब ज्ञात हुआ कि मंजिल का पहला पड़ाव आ गया। रात में ८ बज कर १५ मिनट पर हम कराची के मारीपुर हवाई-अड्डे पर उतरे। यहीं हमें भोजन करना था, इसलिए रेस्त्रां गये। वहाँ खाने का आर्डर लेने जब ब्वॉय काफी देर बाद पहुँचा, तो हमारी बात सुनने के पूर्व ही उसने कहा—"आज गाय के गोश्त के सिवा और कुछ नहीं है।" इस पर प्रतिनिधिमण्डल के सदस्य बहुत क्षुभित हुए और तब यह सफाई दी गई कि आज 'बीफ नाइट' थी, इसलिए ब्वॉय ने ऐसा कहा था। मगर मछली तथा और चीज़ें भी मिल गईं। भोजन के बाद जब हम रेस्त्राँ से बाहर निकले, तो हमने देखा कि 'बार-रूम' के बरामदे में एक जादूगर अपने करिश्मे दिखा रहा है और कुछ चीनी तथा इंडोनेशियाई यात्री उसका मज़ा ले रहे हैं। दो हसीन एयर होस्टेसेज़ जादूगर को जितना बेवकूफ बनातीं, वह उतना ही खुश हो कर नये-नये करतब दिखाने में जुट जाता।

पासपोर्ट और डाक्टरी प्रमाणपत्र की परीक्षा में यहाँ काफी समय लगा। जब कराची से हमारा विमान मंजिल के दूसरे पड़ाव—बेहरिन की ओर उड़ा, तो सहसा यह सोच कर दिल की चोट उभर आई कि अब हम कराची में भी विदेशी समझे जा रहे हैं। साम्राज्यवादी षड्यंत्र के फलस्वरूप एशिया में भारत का विभाजन एक ऐसी घटना है, जो कभी भुलायी नहीं जा सकती। मगर इसी समय पाकिस्तान के एक शायर का विश्वासभरा गीत याद आया और मन का बोझा हलका हुआ :—

"साथियो ! हाथ बढ़ाओ कि हैं हम आज भी एक,
कौन कर सकता है तक़सीम अदब की जागीर ?
कौन अफ़कार की कन्दील बुझा सकता है,
कौन कर सकता है अहसास की शिद्दत को असीर ?"

प्लेन की बत्तियाँ बुझा दी गई थीं। अधिकांश यात्री सो गये। मगर मेरी आँखों में नींद नहीं। परिवार की याद आते ही आँखें गीली हो गईं। शिवमोहिनी ने कितने धैर्य से यात्रा की समुचित तैयारी में मेरी मदद की और जब मैं कभी परेशान हो उठता, तो वह साहस प्रदान करती। पुराने अर्थों में पत्नी होने के साथ ही वह प्रिय साथी भी है; और उसकी याद इस वक्त मुझे बहुत सता रही थी। जनार्दन और गिरजा दौड़-दौड़ कर १६ अप्रैल को अपने पिता की यात्रा की तैयारी में किस प्रकार संलग्न थे ! कितने भावुक और सीधे

हैं वे दोनों !! लखनऊ स्टेशन पर कई पत्रकार साथियों, मित्रों और रिश्तेदारों ने विदा के समय जो शुभ कामनाएँ प्रकट कीं, वे ही तो यात्रा में मेरा सम्बल हैं।

दिल्ली में २० अप्रैल को ब्रिटिश हाई कमिश्नर सर आर्चिबोल्ड नी ने हमें लंच के लिए आमंत्रित किया था । मैं अन्य प्रतिनिधियों से पहले पहुँच गया था, इसलिए काफी देर पत्रकारिता से ले कर भारत के सामाजिक जीवन पर उनसे बातें हुईं। लंच के समय अंग्रेजी शिष्टाचार के अनुसार विविध विषयों पर विनोदपूर्ण वातावरण में बातचीत होती रही। अंग्रेज़ महिलाएँ अँग्रेजी फूलों की प्रशंसा करते हुए कह रही थीं--"आप लोग बड़े सुहावने मौसम में ब्रिटेन जा रहे हैं, जब वहाँ फूल हँस रहे होंगे, दिन में कभी-कभी धूप भी खिल आयेगी और मेले का महोत्सव भी देखने को मिलेगा।"

दिल्ली के पालम हवाई अड्डे पर मित्रों के साथ ही ब्रिटिश हाई कमिश्नर के कार्यालय से सम्बद्ध सूचना विभाग के कई अधिकारी उपस्थित थे। यहाँ एक दिलचस्प बात यह हुई कि जब कस्टम-अधिकारी सूटकेस खुलवा कर यह देख रहे थे कि किसी के पास कोई आपत्तिजनक चीज तो नहीं है, उस समय बेनीपुरी जी जब अपना सूटकेस खोलने के लिए आगे बढ़े, तो सब जेबों की तलाशी लेने पर भी उन्हें ताली न मिली और इससे वे बड़े चिन्तित हुए। मगर सौभाग्य से विमान के उड़ने में काफी देर थी, इसलिए जहाँ वे ठहरे थे, वहाँ से ताली मँगवाई गई। कस्टम-अधिकारियों ने जब अपना काम पूरा कर लिया, तो पासपोर्ट और मेडिकल सर्टिफिकेट की परीक्षा हुई। यात्रा-सम्बन्धी व्यवस्था पूरी कर लेने के बाद मैं अपने साथियों के बीच आ गया। ब्रिटिश हाई कमिश्नर के सूचना-डायरेक्टर श्री किंग ने फोटो उतरवाने का आग्रह किया और उसी समय जिस विमान से हम उड़नेवाले थे, उसके कैप्टेन भी वहीं आ गये। जिस व्यक्ति के हाथ में अपना जीवन सौंप कर थोड़ी देर बाद हम आकाश-मार्ग से यात्रा करने वाले थे, उसे सहृदय और खुशदिल पा कर बड़ी प्रसन्नता हुई। इसके बाद कई फोटो खींचे गये। अन्त में उड़ने की घड़ी भी आ पहुँची और मित्रों तथा परिचितों से विदा ले कर जब मैं विमान में प्रविष्ट हुआ, तो फिर घर की याद आते ही आँखें डबडबा आईं।

विचारों में डूबता-उतराता तथा स्मृतियों को सँजोता रात में मैं अपनी मंजिल की ओर बढ़ता जा रहा था। कुछ समय बाद मैं भी सो गया और

ठीक ढाई बजे रात को यात्रा के दूसरे पड़ाव—बेहरिन के हवाई अड्डे पर हम पहुँच गये। विमान के बाहर निकलते ही समुद्री हवा के झोंकों ने अवसाद दूर कर दिया। यहाँ पासपोर्ट आदि की परीक्षा नहीं हुई।

बेहरिन में हमें काफी देर रुकना पड़ा, क्योंकि विमान के कल-पुर्जों में कुछ गड़बड़ी आ गई थी। यहीं प्रतिनिधिमण्डल के सदस्यों के विचारों के जानने का अवसर मिला। श्रमजीवी पत्रकारों के इस प्रतिनिधिमण्डल के कुल छः सदस्यों में श्री रामवृक्ष बेनीपुरी—बिहार के सोशलिस्ट लेखक और पत्रकार तथा हिन्दी मासिक पत्रिका 'नई धारा' के सम्पादक; बंगाल के प्रतिनिधि श्री आर० एन० राय चौधरी—दैनिक बंगला 'युगान्तर' के वाणिज्य सम्पादक, भावुक राष्ट्रवादी और पूँजीवाद के भी भावुक विरोधी; श्री जी० एन० आचार्य—'बाम्बे क्रानिकल' के चीफ रिपोर्टर, कम्युनिज्म (वर्गवाद) के कट्टर विरोधी, समाजवादी (सोशलिस्ट) कहलाने के इच्छुक मगर एडम स्मिथ के अर्थशास्त्र से भी कम प्रेम नहीं; मद्रास से प्रकाशित होनेवाले दैनिक 'दिनमणि' के सहायक सम्पादक श्री ए० जी० वेंकटाचारी—सोवियत रूस को गाली देने की 'कला' में विशेष पटु, भारतीय सोशलिस्ट पार्टी के प्रति केवल मौखिक सहानुभूति परन्तु समाजवादी अर्थ-व्यवस्था में कोई आस्था नहीं; मद्रास से प्रकाशित होने वाले अंग्रेजी दैनिक 'हिन्दू' के दिल्ली स्थित प्रतिनिधि श्री के० रंगास्वामी—घोर व्यक्तिवादी, किसानों और मजदूरों के विरुद्ध कुछ भी कहने में कोई संकोच नहीं, पूँजीवादी व्यवस्था के प्रबल पोषक। इनके अतिरिक्त छठाँ प्रतिनिधि मैं हूँ जिसके विचार 'बदलते दृश्य' की रेखाएँ प्रकट करेंगी।

दो घंटे से अधिक समय व्यतीत हो गया, फिर भी विमान ठीक न हुआ। विश्राम-कक्ष से बाहर आ कर मैं मुक्त आकाश के नीचे टहलने लगा। यात्रा के सम्बन्ध में विचार करते-करते यही निर्णय मैंने किया कि राजनीतिज्ञों और साहित्यकारों से मिलने की अपेक्षा ब्रिटेन अथवा यूरोप के देशों में साधारण जनता से मिल कर उसके जीवन को समझने की पूरी कोशिश करूँगा। इस निश्चय का यह अर्थ नहीं है कि मैं राजनीतिज्ञों एवं साहित्यकारों के प्रति निरादर की भावना प्रकट कर रहा हूँ। इनके विचारों को तो मैं स्वदेश में भी इनकी पुस्तकों के द्वारा जान ही लेता हूँ। मुझे तो उन लोगों से बात-चीत करने की आकांक्षा है, जो अपने शासकों की गलत नीति के कारण तीसरे महायुद्ध की आशंका से त्रस्त हैं। 'इंटरव्यू' के प्रलोभन में जन-सम्पर्क का अवसर खो देने पर बड़ा अफसोस होगा। ब्रिटेन गये बिना ही अंग्रेजी लेखकों

से परिचित लोग जानते हैं कि रस्किन जैसा महान् लेखक भी ब्रिटेन को उपनिवेश स्थापित करने का उपदेश दिया करता था और वर्तमान ब्रिटेन के प्रसिद्ध साहित्यकार प्रिस्टले ने अणुबम पर रोक लगाने की माँग का समर्थन करने से इसलिए इनकार कर दिया कि रंगमंच के प्रश्नों पर विचार करने के लिए बुलाये गये अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में सोवियत प्रतिनिधि शामिल नहीं हुए। इसलिए मैं कारखानों के मजदूरों और गाँवों के किसानों से मिलने की लालसा से ब्रिटेन जा रहा हूँ, जिनके परिश्रम से राष्ट्रों के जीवन में निखार आता है।

मैं बाहर टहल ही रहा था कि बेनीपुरी और वेंकटाचारी भी वहाँ आ गये। अभी विमान उड़ने में कुछ और विलम्ब था, इसलिए हम रेस्त्रां में काफी पीने जब पहुँचे, तो जहाँ गलियारे में बेहरिन के वर्तमान बादशाह शेख सर सुलेमान बिनहम्द अल खलीफा का चित्र लटक रहा था, वहाँ बड़ा रंगीन वातावरण दीख पड़ा। पाँच ईरानी युवतियाँ और तीन युवक अपनी विनोद-प्रियता के कारण कुछ यात्रियों का ध्यान आकृष्ट किये हुए थे। ईरानी युवतियों के गुलाब-से खिले बदन, सुरमई आँखें, कसे उरोज और सिर से पैर तक सुडौल शरीर को देख कर कुछ पर्यटक वहाँ से हटने का नाम ही न लेते थे। 'बार-रूम' में एक यात्री शराब के नशे में कुर्सी पर औंधा लेट गया था। उसकी नाक से फों-फों की आवाज हो रही थी और कुछ यात्रियों के लिए वह भी विनोद का साधन बन गया था। हम रेस्त्रां में जब काफी पी रहे थे, तभी वे शोख ईरानी लड़कियाँ भी वहाँ पहुँच गईं और उनके पीछे यात्रियों का एक दल खिंच आया। मोहारक-द्वीप के इस हवाई अड्डे के रेस्त्रां में फारसी कविता की मिठास और मस्ती मूर्तिमती हो उठी और मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे यात्रियों की प्रमोदपूर्ण मुद्रा को देख कर वे आपस में एक-दूसरे से कह रही हैं :—

> "रोकने पर भी तो सखि! हाय
> नहीं रुकती है यह मुस्कान।"
>
> —पन्त

अभी हम लोग रेस्त्रां में ही थे कि सूचना मिली—विमान उड़ने के लिए तैयार है। और लम्बी प्रतीक्षा के पश्चात् हम लोग बेहरिन से काहिरा की ओर उड़े।

———

२३ अप्रैल

बेहरिन से लन्दन........

(१) अरब के जीवन-शून्य रेगिस्तान
(२) सभ्यता के पुराने घोंसले में
(३) मनमोहक क्रीट, (४) निस्तेज रोम
(५) संसार के 'सबसे बड़े नगर' में

जिस समय हमारा वायुयान बेहरिन से प्राचीन सभ्यता के 'घोंसले' काहिरा की ओर उड़ा, तारों को नींद आ गई थी, चाँद का रंग फीका पड़ गया था और उषा गुलाब सी खिल आई थी।

बेहरिन से काहिरा हवाई मार्ग से १२०० मील है और इस फासले को तै करने के लिए हमारा वायुयान २०० मील प्रति घंटे की रफ्तार से उड़ रहा था। दिल्ली से बेहरिन के बीच १७०२ मील की दूरी तै करते समय कान में थोड़ा दर्द होने के सिवा कोई कष्ट मुझे नहीं हुआ।

बेहरिन से हम भोर में उड़े थे, इसलिए खिड़की से बाहर झाँकने पर नीचे के दृश्य स्पष्ट दिखाई पड़ रहे थे। सूरज निकलते ही जब नीचे जीवन-शून्य पठार और सैकत समुद्र देख पड़े, तो ज्ञात हुआ कि अब हम अरब देश के मरुस्थल पर से गुजर रहे हैं। जिधर दृष्टि जाती—रेगिस्तान ही रेगिस्तान देख पड़ता। कभी ऐसा मालूम होता जैसे शून्य में अरुण रेणुका की लहरें उठ रही हैं और कभी सफेद बालू के कण उन्हें बिलकुल ढक लेते। दस लाख वर्गमील में फैले अरब देश के इन बीहड़ पठारों और रेगिस्तानों को देख कर मन में बड़ी टीस हुई। आकाश में विमान बादलों से आँखमिचौनी खेलता हुआ तेजी से अपनी मंजिल की ओर उड़ता जा रहा था और नीचे सुविस्तृत मरुभूमि में कहीं छोटे और कहीं बड़े काफिले अपने ऊँटों के साथ इस धीमी गति से जा रहे थे जैसे बीसवीं सदी में भी पुराने आसमान के नीचे अरबों की दुनिया खानाबदोशों की जिंदगी छोड़ने को प्रस्तुत न हो। इस मनहूस

दृश्य को देखते-देखते जी भारी हो गया था और तब, जब रेगिस्तान के बीच नखलिस्तान के टुकड़े देख पड़े, तो बड़ी उत्सुकता के साथ मैंने खिड़की से बाहर पुनः झाँकना शुरू किया। छोटे-छोटे खजूर के पेड़, काफिलों के आने-जाने के रास्ते और कहीं-कहीं घास अथवा फसल के हरित खण्ड को देख कर यह विचार होता कि अरब के किसानों और खानाबदोशों को इन्हीं से जीने की प्रेरणा मिलती होगी।

अरब के मरुस्थलों को देख कर मन में तरह-तरह के विचार पैदा होने लगे। अमेरिका की 'अरब-अमेरिकी आयल कम्पनी' एक लम्बे अरसे से इस देश का शोषण कर रही है और अंग्रेज भी इस भूखण्ड का दोहन करते आ रहे हैं। परंतु इन शोषकों के मस्तिष्क में कभी यह विचार पैदा न हुआ कि विज्ञान की सहायता से इस भूखण्ड के मानवों के कल्याण के लिए प्रकृति का मनहूस चेहरा बदल दिया जाय। यदि इन रेगिस्तानों को हरा-भरा बनाने के प्रयास शुरू हों तो बीसवीं सदी का उत्तरार्ध विश्व-इतिहास में सदा के लिए सुनहरे परिच्छेद जोड़ जाय। आज की वैज्ञानिक दुनिया में यह कोई असम्भव बात नहीं। सोवियत रूस के कजाखस्तान, उजबेकिस्तान, तुर्कमेनिया तथा ताजकिस्तान में जहाँ लाखों एकड़ भूमि में रेगिस्तान फैला हुआ था—आज उद्यान खड़े हो गये हैं। जहाँ कभी अरब के रेगिस्तानों की भाँति ऊँटों की घण्टियों की 'टिन-टिन' सुनाई पड़ती थी अथवा "पठारों की नीरवता भेड़ों की में-में भंग करती थी—वहाँ आज गेहूँ की मस्त बालियाँ हवा में झूमती हुई रचनात्मक विज्ञान के गीत गाती हैं"। जब यह सम्भव हो सका तो क्या अरब के रेगिस्तानों को सरसब्ज नहीं बनाया जा सकता? परंतु विदेशी शक्तियों के साथ जनता के विरुद्ध साजिश करने वाले अरब के जागीरदार इस सपने को पूरा नहीं कर सकते।

अरब के रेगिस्तान को देखते-देखते सभी यात्रियों के चेहरे मुरझा-से गये थे। वायुयान की जिंदगी निर्जीव प्रतीत होती थी। खिड़की से बाहर झाँकने पर नेत्रों को चुभने वाला वही मनहूस दृश्य दिखाई पड़ता था। एक बार जी में आया कैप्टेन से कह दूँ कि विमान को इतने ऊँचे उड़ा ले चलो कि नीचे का कुछ भी दिखाई न पड़े। 'परंतु यही तो सम्भव न था। वास्तविकता से अलग कल्पना की कोई कीमत नहीं।

जब आकाश से स्वेज नहर दिखाई पड़ी, तो आशा बँधी कि अब प्रकृति की मनोरम छटा देख पड़ेगी। ज्यों ही रेत से घिरी एक मनोरम झील

मैंने देखी, मेरी आँखें जुड़ा गईं। पानी देखते ही सबके मुरझाये चेहरे खिल उठे। अब नील नदी की मनोरम घाटी भी दिखाई देने लगी। एशिया महाद्वीप को पार कर अब मैं अफ्रीका में पहुँच गया था। मैं आकाश में उड़ रहा था और आकांक्षाएँ मिस्र के पिरामिड देखने को मचल रही थीं। जब वायुयान में 'नो स्मोकिंग, फासेन सीट बेल्ट' का संकेत हुआ, तो मैं समझ गया कि मानवीय सभ्यता की पुरातन धरती पर पैर रखने की घड़ी आ पहुँची। काहिरा के हवाई अड्डे पर पहुँचते ही सर्व प्रथम मैंने यही अनुभव किया कि व्यवहार की दृष्टि से यहाँ के लोग हमसे कितना मिलते-जुलते हैं!

हवाई अड्डे पर मिस्र का राष्ट्रीय झंडा लहरा रहा था। तीन सफेद तारों तथा सफेद अर्धचंद्र से युक्त हरे रंग के इसी झंडे के नीचे खड़े हो कर मिस्र के निवासी सूडान और मिस्र से ब्रिटिश फौजों को हटाने का आन्दोलन कर रहे हैं। सभी कर्मचारी तुर्की टोपी पहने हुए थे। संकेत-पट्टिकाएँ अरबी भाषा में थीं। पासपोर्ट और मेडिकल सर्टिफिकेट की परीक्षा के बाद नाश्ता करने के लिए हम लोग रेस्त्राँ में गये। जलपान अच्छा न मिला, इसलिए कुछ यात्री बहुत नाराज हुए। किन्तु मुझे कोई आक्रोश न हुआ, क्योंकि मैं वहाँ के वातावरण में घुलमिल जाने का प्रयास कर रहा था। मुझे यह समझने में देर न लगी कि साम्राज्यवादी शोषण के कारण इस देश के लोग भी बड़े गरीब हैं। हवाई अड्डे के 'बाथरूम' से बाहर आते ही तौलिया और कंघी देते समय लड़के यात्रियों को इस भाव से देखते हैं कि उन्हें कुछ बख्शीश न दी गई, तो उनके घर चूल्हा न जलेगा। मगर धीरे-धीरे इस देश की नींद भी टूट रही है और इसकी रगों में नया खून दौड़ने लगा है।

६० मिनट बाद काहिरा के हवाई अड्डे से १० बजे सबेरे यूरोपीय सभ्यता के पुरातन गढ़ रोम की ओर हमारा विमान उड़ा। 'कैप्टेन की बुलेटिन' से ज्ञात हुआ कि ७ घण्टे में हम लोग १२५५ मील दूरी तै कर के रोम पहुँच जायँगे।

काहिरा से उड़ने के बाद नीचे की सरसब्ज धरती देखने पर ऐसा प्रतीत होता था जैसे प्रकृति ने मिस्र की सुन्दरियों के नाजुक पैरों को आराम पहुँचाने के लिए हरी बनातें बिछा दी हैं। नहरों का दृश्य ऊपर से बड़ा मनोरम लग रहा था। ये नहरें ही तो मिस्र देश की जान हैं। भूगोल की पुस्तकों में जो कुछ पढ़ा था, उसे आँखों से देखता हुआ मैं आकाश में उड़ रहा था। एयर-होस्टेस ने यात्रियों को पत्र-पत्रिकाएँ ला कर दीं। मुझे काहिरा से प्रकाशित

होनेवाला अंग्रेजी दैनिक 'इजिप्शियन गजट' मिला। पहले पृष्ठ पर नजर जाते ही ब्रिटेन के स्वास्थ्य-मंत्री श्री एन्यूरिन बेवान के इस्तीफे की सनसनीखेज खबर देखने को मिली। ब्रिटेन की मजदूर सरकार ने शस्त्रीकरण की नीति अपनाने के कारण नकली दाँत और चश्मे की आधी कीमत लेने का निर्णय किया था। श्री बेवान ने इसी फैसले के विरोध में इस्तीफा दिया था। यात्रियों में इस समाचार की बड़ी चर्चा रही। 'इजिप्शियन गजट' ने श्री बेवान के विचारों का विरोध करते हुए एटली सरकार की शस्त्रीकरण सम्बन्धी नीति का समर्थन किया था। पिछले ७२ वर्षों से यह पत्र ब्रिटेन के प्रतिक्रियावादी दृष्टिकोण का समर्थन करता आ रहा है। इसलिए इससे 'आक्रामक अतलान्तक सन्धि' की वकालत करने के अतिरिक्त और आशा ही क्या की जा सकती थी।

मगर इसमें कोई सन्देह नहीं कि एक ऊँचे सिद्धान्त और आदर्श के लिए श्री बेवान ने स्वास्थ्य-मंत्री के पद से इस्तीफा दिया था।

मैंने सोचा कि जिस समय मैं लंदन पहुँचूँगा, वहाँ के राजनीतिक वातावरण में काफी गर्मी रहेगी। इस पत्र को एक दूसरे यात्री के हाथ में थमा कर जब मैंने खिड़की से बाहर देखा तो लुभावने दृश्य दिखाई पड़े। १४,४०० फुट की ऊँचाई पर हम उड़ रहे थे। मिस्र की सीमा पार करते ही भूमध्य सागर दिखाई पड़ने लगा। विमान के डैनों के निकट बादलों के टुकड़े चक्कर काट रहे थे। नीचे विराट सागर और ऊपर मेघों की बहुरंगी पंक्तियाँ। खिड़की से आँखें हटती ही न थीं। नील गगन में बादलों की अनुपम क्रीड़ा देखने के लिए भूमध्य सागर की लहरें बार-बार ऊपर उठती थीं। प्रकृति-नटी के इस मनोरम नये वेश को देख कर भला कौन उस पर निछावर न होता।

अचानक दो पर्यटकों ने मुझे झकझोर कर कहा—"वह देखो क्रीट द्वीप।" कुछ देर पहले 'कैप्टेन की बुलेटिन' से यह ज्ञात हो चुका था कि हम लोग भूमध्य सागर में सोलम से १२० मील उत्तर और क्रीट से ९० मील दक्षिण हैं। आकाश से भूमध्य सागर के इस गर्वोन्नत टापू को देखने के लिए सभी यात्री खिड़की से बाहर झाँकने लगे। कुछ यात्री, जो अपने स्थान से बैठे-बैठे उस चित्ताकर्षक दृश्य को न देख सकते थे, कभी खड़े हो कर और कभी झुक कर बड़ी तन्मयता से प्राकृतिक सौंदर्य का आनन्द लूटने लगे। क्रीट को देखते ही वायुयान में नई जिंदगी आ गई। सागर के बीच चतुर्दिक् पर्वतों से घिरे इस ऐतिहासिक द्वीप को देखते रहने की लालसा इतनी प्रबल थी कि कोई भी खिड़की से आँख हटाने को तैयार न था। मेरी सीट से एक

कतार आगे एक महिला बैठी हुई थीं। जब मैं क्रीट के सौंदर्य को अपनी आँखों की पुतलियों में उतारने की कोशिश कर रहा था, मेरी सीट के पास आ कर उन्होंने भूगोल बताना शुरू किया—"भूमध्य सागर में सिसली, सार्डिनिया, और साइप्रस के बाद यही सबसे बड़ा द्वीप है।" मैंने कहा—उधर देखिए पर्वतमालाओं की अनुपम शोभा, वे हरित वृक्षों की पाँतें, जैसे मेघ के टुकड़े प्रकृति का शृङ्गार करने पहुँच गए हैं। जब उक्त महिला ने देखा कि उनकी बातों में मैं कोई दिलचस्पी नहीं ले रहा, तो वे अपनी सीट पर चली गईं। वे भले ही मुझसे रूठ गई हों, लेकिन बाहर मैंने देखा कि सागर की लहरें मुसकरा रही हैं। पहाड़ों की बर्फीली चोटियाँ ऊपर उठ कर क्रीट के दिलकश नजारे को जिस अल्हड़पन से अभिव्यक्त कर रही थीं, उस पर कौन न मुग्ध होता! भूमध्य सागर में यह टापू ऐसा देख पड़ रहा था, जैसे वह पर्वतों का एक आकर्षक मेहराब हो।

क्रीट के प्राकृतिक सौंदर्य को देखते-देखते स्मृति-पटल पर इसकी राजनीतिक जिन्दगी की कशमकश के चित्र भी खिंच आये। सचमुच बड़े उलट-फेर क्रीट ने अपने जीवन में देखे हैं। दक्षिण यूरोप के इतिहास ने कई बार इसके साथ करवटें ली हैं। वेनिस के प्रभुत्व में यह रहा, तुर्कों ने इसे अपने अधीन रखने के लिए गर्म रक्त बहाया। यूनानी विद्रोह की लपटें यहाँ उठीं और १८८१ से १८९२ के बीच आठ बार यहाँ सत्ता हथियाने के लिए रक्तपात हुआ। कहते हैं कि कला-कौशल के क्षेत्र में यूरोप के इसी देश को सर्वप्रथम प्रवीणता प्राप्त हुई थी और यहाँ का राजा माइनास ही इतिहास का वह प्रथम नरेश था, जिसके पास अपनी नौसेना थी। इस समय इस पुरातन द्वीप को अमेरिका अपना नौसैनिक अड्डा बनाये हुए है। एक यात्री ने ठीक ही कहा था कि यूनान के बदले अब इसे अमेरिकी टापू कहना वास्तविकता के अधिक निकट होगा।

नये-नये दृश्य आँखों से ओझल हो रहे थे और हमारा वायुयान कभी २०० और कभी २४५ मील प्रति घण्टे की रफ्तार से उड़ा जा रहा था। लंच का समय आते ही एयर होस्टेस ने मधुर मुसकान के साथ मेरी कुर्सी में 'ट्रे' को फिट कर दिया और स्टीवर्ड ने यात्रियों को शराब की प्यालियाँ दीं। इधर आँखों में मस्ती का सरूर और बाहर कामिनी के रूप को लजानेवाली नैसर्गिक छटा। ऐसा मालूम होता था जैसे बहार का मौसम छा गया हो। और इसीलिए खाते समय भी बरबस आँखें बाहर ही पड़ रही थीं। दो यात्री

छुरी और काँटे से केला खाने की कोशिश कर रहे थे और इस प्रयास में जिस धैर्य का वे प्रदर्शन कर रहे थे, उससे वे भी कुछ यात्रियों के लिए आकर्षण का केन्द्र-विन्दु बन गये थे। लंच के बाद मुझे झपकी आ गई और थोड़ी देर बाद जब नींद टूटी तो ज्ञात हुआ कि इटली के दक्षिणी तट से हम १४० मील दूर हैं। 'बुलेटिन' से ज्ञात हुआ कि हवा के दबाव के कारण इस समय विमान की गति १८२ मील प्रति घण्टा है। थोड़ी देर बाद ही इटली का लुभावना हरित प्रदेश दिखाई पड़ने लगा। पहाड़ों की शृङ्खलाएँ, नदियों के मनोरम किनारे, पथरीली जमीन और हरी-भरी घाटियाँ देख कर मैं इटली के अनुपम सौंदर्य पर रीझ गया। आकाश से यूरोप का प्रथम दर्शन प्राप्त करते ही यह खयाल पैदा हुआ कि जिस महाद्वीप के शासकों ने दुनिया के अधिकांश भाग को सदा लूटते ही रहने की कोशिश की, उसके साधारण लोगों से मिल कर यह जानूँ कि उनके विचार क्या हैं।

शाम का सूरज सागर की लहरों के साथ किलोलें कर रहा था। इटली के दक्षिणी तट पर कहीं-कहीं ऊबड़-खाबड़ पर्वतमालाएँ देख पड़ीं, तो कहीं नदियों की उपजाऊ घाटियाँ। ऊपर बर्फीली पहाड़ियाँ चमक रही थीं और नीचे धरती पर हरी कालीनें बिछी हुई थीं। प्राकृतिक दृश्यों के चित्रांकण में इटली के शिल्पियों को क्यों महान् सफलताएँ प्राप्त हैं, इसका रहस्य धीरे-धीरे खुलने लगा। सच तो यह है कि आकाश से दक्षिणी इटली का सौंदर्य देख कर मुझे ऐसा लगा कि नई-नवेली बहू हरे रंग की रेशमी साड़ी पहने विविध रंग के फूलों से अपना शृंगार कर रही है। वृक्षों से भरी उस धरती की अदा पर कौन न रीझता! बर्फीली पहाड़ियों की फिज़ा पर कौन न लुट जाता! बागों की गोद में जो सुहावनी बस्तियाँ नजर आईं, उन्हें क्या मैं कभी भूल सकता हूँ!

नदियों में नौकाएँ देख कर अपने गाँव की याद ताजी हो गई। सदियों से हमारे सांस्कृतिक जीवन को प्रेरणा प्रदान करने वाली गंगा हमारे गाँव से हो कर ही तो बहती है। वर्षों पहले, छात्र-जीवन में, छुट्टी के अवसर पर जब मैं अपने गाँव जाता, तो गंगा में हवा के झोकों के विरुद्ध पाल तान कर अठखेलियाँ करने वाली नौकाओं को देखने में शाम खुशी के साथ गुजर जाती। आज सायंकाल इटली के दक्षिणी प्रदेश में वही दृश्य देख कर बड़ा आनंद मिला। मानवता की भाँति प्राकृतिक सौंदर्य भी अविभाज्य है।

इटली का सबसे बड़ा नगर और बन्दरगाह नेपल्स दिखाई पड़ने

लगा। मेरे मन में आया कि अगर कैप्टेन मुझे यहीं उतार देता तो नेपल्स के पास ही पंपियाई के खुदे खँडहरों और विसूवियस का ज्वालामुखी देख लेता। मैं बदलते हुए दृश्यों को देखता जा रहा था। कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता था कि इस महाद्वीप के इतिहास और राजनीति के भिन्न-भिन्न पृष्ठ अपने आप पलटते जा रहे हैं और मैं उन्हें पढ़ता हुआ आगे उड़ता चला जा रहा हूँ।

सायंकाल इटली की राजधानी रोम के हवाई अड्डे पर मैं पहुँच गया। वायुयान से उतरते ही हवाई अड्डे के आसपास खड़े फटेहाल इटालियनों को देख कर यह स्पष्ट हो गया कि दूसरे महायुद्ध के बाद यह अभागा मुल्क अभी बिलकुल नहीं सम्हल पाया है। वहाँ रोम के जो नागरिक दिखाई पड़े, उनकी पतलूनों में कई-कई पैबन्द लगे थे और उनके कोट जगह-जगह फटे थे। जो निकट थे, उन्हें देखने पर यह प्रकट हुआ कि कितने निस्तेज उनके चेहरे हैं। याचना की रेखाएँ उनके मुख पर खिंची हुई थीं। दर्द में डूबी उनकी आँखों को देख कर मेरे मुँह से बरबस निकल पड़ा—बर्बर मुसोलिनी के कारण इस महान देश के नागरिकों की हालत कितनी मार्मिक हो गई है। एक ओर प्रकृति का सुरम्य दृश्य और दूसरी ओर दैन्य तथा दुःख से प्रताड़ित नागरिकों के जीवन का यह लोमहर्षक चित्र! पश्चिमी सभ्यता के समर्थक एशियाई देशों में यह प्रचार कर रहे हैं कि इटली की हालत पहले की अपेक्षा अब बेहतर है। परंतु मैं अपनी आँखों से यहाँ जो कुछ देख रहा हूँ क्या उसे असत्य मान लूँ?

रोम के हवाई अड्डे पर पासपोर्ट अथवा मेडिकल सर्टिफिकेट की परीक्षा न हुई। इससे जाहिर हो गया कि अभी इस देश का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। रेस्त्राँ में जा कर हम लोगों ने चाय पी। फल यहाँ अच्छे मिले। रेस्त्राँ के ब्वॉय टूटी-फूटी अंग्रेजी बोल लेते थे। जलपानगृह के एक कक्ष में इतालवी शराब का दौर चल रहा था और कई युवतियों की शरबती आँखें यात्रियों को उस दौर में शामिल होने की दावत दे रही थीं। हमारे एक साथी श्वेत-सौंदर्य पर इस प्रकार रीझे हुए थे कि उठने का नाम न लेते थे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि वहाँ का वातावरण सुकुमार यौवन के नशे में डूबा था। स्पेन की एक सुन्दरी हमारी सीटों से कुछ दूर बड़े नाज़ से सुरापान कर रही थी और बहुतेरे यात्रियों की आँखें उधर ही लगी थीं। उसके काले-काले बाल और गुलाब से खिले गौर मुख को देख कर हमारे एक साथी ने कहा—

"श्वेत रमणी के सिर पर काले बाल कैसे ?" जब उन्हें ज्ञात हुआ कि स्पेन की स्त्रियों के बाल भारतीय महिलाओं की भाँति ही काले होते हैं, तब हर्षोन्मत्त हो कर उन्होंने कहा—"तभी तो यह सुन्दरी इतनी लावण्यमयी प्रतीत हो रही है।" वहाँ अधिक रुकने से हमारे दोस्त की परेशानी बढ़ती, इसलिए हम लोग रेस्त्राँ से बाहर आ गये।

बाहर आते ही बेनीपुरी जी काँप गये। कड़ी सर्दी पड़ रही थी। मैंने दिल्ली में ही उनसे सूती कपड़े उतार कर गर्म कपड़े पहनने को कह दिया था। परंतु उन्होंने ध्यान नहीं दिया। लेखक जब नेतागिरी के चक्कर में फँसता है तो अक्सर वह सत्य को नहीं अपना पाता। मैंने जब अपना ओवरकोट उतार कर उन्हें पहनने को दिया, तब बहुत देर बाद उनकी भावुकता बरस पड़ी—"इटली ! प्यारी इटली"। भावुकता की सीमा दो शब्दों में सिमट कर रह गई ! कुछ देर बाद पुनः उन्होंने कहा—"जाड़ा अभी लग ही रहा है।" श्री रंगास्वामी ने ब्राण्डी पीने का सुझाव रखा। हम लोग पुनः रेस्त्राँ में प्रविष्ट हो गये, जिसके एक कोने में 'बार' था। वहाँ की मदिर बयार के झोंके शरीर में लगे और जाड़ा दूर हो गया।

टेक्निकल कठिनाई के कारण रोम के हवाई अड्डे से हमारा वायुयान ठीक समय पर न उड़ सका। यहाँ हमें करीब एक घण्टा पैंतालीस मिनट रुकना पड़ा। एक गुजराती परिवार भी मुझे वहाँ दिखाई पड़ा। विदेश में अपरिचित देशवासी के प्रति भी कितना आकर्षण होता है, इसका प्रथम अनुभव मुझे यहीं हुआ। समय काटने के लिए बिखर कर हम लोग हवाई अड्डे में इधर-उधर टहलने लगे। अचानक एक इतालवी युवती से राजनीति पर बातें शुरू हुईं, तो अपने देश की गरीबी और अधःपतन पर खेद प्रकट करते हुए उसने कहा—"रोम के चौराहों पर अच्छे सिगरेट और स्विस चाकलेट के प्रलोभन में युवतियाँ पर्यटकों का पीछा करती हैं।" जिस समय वह युवती यह बता रही थी कि रोम की नैतिकता किस प्रकार नष्ट हो रही है, उस समय उसकी आँखों से चिनगारियाँ बरस रही थीं। कुछ देर बाद उसने इसी सिलसिले में यह भी बताया कि इटली में धीरे-धीरे विद्रोह की लपटें भी उठ रही हैं, जिनमें तप कर नई इटली का जन्म होगा, और तभी ये निस्तेज चेहरे सतेज होंगे। इस युवती से बातचीत करके मैंने जो कुछ पाया, उसे नहीं भुला सकता। साधारण नागरिकों से मिलने की लालसा ले कर ही मैं यूरोप आया हूँ और प्रथम बार मध्यम वर्ग की एक युवती से बातचीत

करके मैंने जो कुछ अनुभव प्राप्त किये, उनसे सिद्ध हो गया कि हर जगह आम जनता के विचार एक-से हैं। यूरोप के शासकों और यूरोप की जनता में अन्तर है और भविष्य में जनता का यूरोप ही जीवित रहेगा।

रोम से हमारा वायुयान जब आखिरी मंजिल लंदन को उड़ा तो रात हो गई थी और बिजली की छलछलाती रोशनी में एक के बाद दूसरे नगर बड़े खूबसूरत देख पड़ते थे। हिमाच्छादित आल्प्स पर्वत की चोटियाँ भी दिखाई पड़ीं, जो आकर्षक अवश्य हैं, किन्तु पर्वतराज हिमालय की चोटियों की तुलना में वे कुछ नहीं हैं। रात का खाना खा चुकने के बाद मुझे नींद आ गई और जब आँख खुली तो पता चला कि इंगलिश चैनल हम पार कर चुके हैं तथा लंदन पहुँचने में अब विलम्ब नहीं है।

करीब ११॥ बजे रात को हम लंदन पहुँच गये। उस महान् नगर की एक झलक पाने के लिए मैंने उत्सुकता-पूर्ण दृष्टि चारों ओर दौड़ाई परंतु हवाई अड्डे तो नगर से दूर होते हैं, इसलिए कोई खास चीज दिखाई न पड़ी। ब्रिटिश सूचना-विभाग के अधिकारी प्रतिनिधियों के स्वागतार्थ वहाँ उपस्थित थे। बम्बई-स्थित ब्रिटिश उप-हाई-कमिश्नर के कार्यालय के क्षेत्रीय आर्थिक सूचना-अधिकारी श्री सैम्पुल्स भी वहाँ थे, जो इस यात्रा में हमारे साथ रहेंगे। कस्टम-अधिकारियों ने बहुत जल्द अपना काम पूरा किया और आवश्यक पूछ-ताँछ भी जल्दी ही पूरी हुई। इसके बाद हम लोग सूचना-कार्यालय की बस में सवार हो कर २, पार्क स्ट्रीट रवाना हो गये, जहाँ हमारे ठहरने का प्रबंध किया गया था। मार्ग में श्री सैम्पुल्स लंदन की महत्ता का वर्णन करते जा रहे थे। उन्होंने कहा कि रास्ते में जो कारखाने दिखाई पड़ रहे हैं, उनमें आधी रात से कुछ पहले तक काफी रोशनी होती है और इससे लंदन के इस भाग के सौंदर्य में चार चाँद लग जाते हैं, परंतु हम आधी रात के बाद इस क्षेत्र से गुजर रहे थे इसलिए फैक्ट्री क्षेत्र की खूबसूरत झलक देखने को न मिल सकी। सड़क पर बहुत कम लोग दिखाई पड़ रहे थे। जब एक पार्क दिखाई पड़ा, तो पूछने पर श्री सैम्पुल्स ने हँसते हुए कहा—"यही हाइड पार्क है।" इस पार्क के सम्बन्ध में बहुत कुछ सुन रखा था, इसलिए श्री सैम्पुल्स की हँसी का रहस्य समझने में देर न लगी। इस पार्क में उस समय भी कुछ स्त्री-पुरुष देख पड़े, परन्तु वातावरण में शोखी नहीं थी। रात ढल चुकी थी। खुमारी का आलम था।

करीब पौने दो बजे हम लोग सरकारी अतिथि-भवन (गवर्नमेण्ट

हास्पिटेलिटी सेण्टर, २, पार्क स्ट्रीट) पहुँच गये। यही लंदन का सबसे घना इलाका है। सरकारी अतिथि-भवन एक अच्छा होटल है, जहाँ मुख्यतः राष्ट्र-मण्डल के देशों तथा उपनिवेशों से आने वाले प्रतिनिधियों को ठहराया जाता है। हम अपनी डायरी में इसके लिए 'होटल' शब्द का ही प्रयोग करेंगे। यहाँ रजिस्टर में दस्तखत आदि कर लेने के बाद हम लोग अपने-अपने कमरों में गये। सातवीं मंजिल पर मुझे कमरा मिला। हाथ-मुँह धो लेने के बाद जब यात्रा की क्लान्ति मिटी, तो मैंने देखा कि मेज पर मेरे नाम का एक बड़ा पैकेट रखा हुआ है। उसमें दौरे के विस्तृत कार्यक्रम के अतिरिक्त ब्रिटेन के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए काफी साहित्य भी रखा हुआ था। सूचना कार्यालय की इस दक्षता पर बड़ी खुशी हुई।

तो अब मैं ब्रिटेन की राजधानी और संसार के सबसे बड़े नगर लंदन में हूँ। एक बार जी में आया कि अभी बाहर चल कर लंदन को देखूँ तो कि यह कैसा है। मगर विश्राम भी आवश्यक था, इसलिए हसरतों को दिल में दबाये सुबह की प्रतीक्षा में सो गया।

———

२४ अप्रैल

लंदन का अनोखापन.......

(१) फ्लीट स्ट्रीट
(२) हाइड पार्क कार्नर
(३) पिकाडिली सर्कस
(४) पब

लंदन में पहला अनुभव यह हुआ कि यहाँ लम्बी चौड़ी सड़कें भी स्ट्रीट कहलाती हैं। प्रशस्त मार्गों के लिए स्ट्रीट कहना रूढ़िप्रियता का ही परिचायक है। किन्तु लन्दन का अनोखापन यह भी है कि रोड को स्ट्रीट कहा जाय।

सर्वप्रथम आज हम जब विश्वविख्यात फ्लीट स्ट्रीट में पहुँचे, तो दूसरी अनोखी बात यह ज्ञात हुई कि अखबारी दुनिया में प्रसिद्ध इस स्ट्रीट से 'डेली टेलीग्राफ' और 'डेली एक्सप्रेस' नामक दो ही पत्र प्रकाशित होते हैं। परंतु फ्लीट स्ट्रीट ब्रिटिश समाचार पत्र जगत् का हृदय इस दृष्टि से है कि यहीं प्रायः सभी महत्त्वपूर्ण ब्रिटिश पत्रों के राजधानी-स्थित कार्यालयों के अतिरिक्त मुख्य संवाद-समितियों के दफ्तर भी हैं। पत्रकारों की भाषा में जिसे 'लंदन शैली' का समाचारपत्र कहते हैं, उसका जन्म और विकास इसी स्ट्रीट में हुआ। १८९६ में टोरी पार्टी के पत्र 'डेली मेल' का प्रकाशन शुरू हुआ था और इस पत्र के प्रथम अंक को देखने से ज्ञात हुआ कि तब से आज तक 'पेज मेक-अप' की दिशा में कितने प्रयोग हुए तथा कितनी प्रगति हुई। नीति के अनुरूप खबरों को रोचक ढंग से लिखने की प्रेरणा फ्लीट स्ट्रीट से ही ब्रिटिश-पत्रों को प्राप्त होती रही है, इसीलिए यह स्ट्रीट ब्रिटिश-पत्रकारों की मनःस्थिति की परिचायक है।

लंदन से बाहर प्रकाशित होने वाले जिन ब्रिटिश पत्रों के कार्यालय इस स्ट्रीट में हैं, वहाँ खबरें जमा की जाती हैं और इन पत्रों के सदर कार्यालयों

की भाँति यहाँ भी खबरों के सम्पादन के लिए समुचित स्टाफ है, जो यहाँ से 'लंदन शैली' में लिखी गई खबरें अपने-अपने पत्रों को भेजते हैं। यदि कोई पत्र मैनचेस्टर से प्रकाशित होता है, तो वहाँ भी उन्हीं खबरों को सम्पादक-मण्डल के सदस्य सजा-बजा कर तैयार करते हैं जो फ्लीट स्ट्रीट के कार्यालय से बाद में उन्हें मिल जाती हैं। इन दो शैलियों में लिखी गई खबरों में जो अधिक अच्छी मालूम होती है, उसे ही पत्र में स्थान मिलता है।

मद्रास से प्रकाशित होने वाले 'इण्डियन एक्सप्रेस' के लंदन-स्थित प्रतिनिधि श्री सुन्दर कबाडी के साथ हम होटल से फ्लीट स्ट्रीट जाने के लिए जब रवाना हुए, तो हमने देखा कि सड़कों पर कारों, दुमंजिली बसों और टैक्सियों का ताँता लगा है। पैदल चलने वाले तेजी से कदम उठाये अपने-अपने काम पर जा रहे हैं और सब तरफ व्यावसायिक वातावरण है। मगर इमारतों की काली-काली दीवारें इस वृद्ध नगर के नैराश्यपूर्ण जीवन को प्रकट कर रही थीं। श्री कबाडी ने बताया कि वर्षों से इनकी सफाई नहीं हुई।

श्री कबाडी ने अपना आफिस दिखाया और वहाँ कुछ देर उनसे बातचीत करने के बाद जब हम लोग फ्लीट स्ट्रीट में घूमने लगे, तो यह अनुभव हुआ कि श्री बेवान के इस्तीफे के कारण कल के अखबारों में जो सनसनीखेज सुर्खियाँ लगी थीं, आज उनकी रोशनाई धीमी पड़ गई है। टोरी पत्रों ने कल आम चुनाव की सम्भावनाएँ प्रकट की थीं, मगर आज के पत्रों से जाहिर हो गया कि शीघ्र चुनाव न होगा और श्री एटली प्रधान मंत्री के पद पर बने रहेंगे। श्री एन्यूरिन बेवान के साथ श्री हेरोल्ड विल्सन ने बोर्ड आफ ट्रेड के प्रेसिडेंट-पद से इस्तीफा दे दिया था और आज इसी त्यागपत्र की चर्चा फ्लीट स्ट्रीट में थी। इस स्ट्रीट की पहली झलक से ही एक चीज स्पष्ट हो गई कि कुछ पत्रों को छोड़ कर यहां के अधिकांश पत्र यौन और अपराधमूलक प्रवृत्तियों को बढ़ाने वाली खबरों के प्रकाशन में बड़ी दिलचस्पी लेते हैं। कुछ पत्रों में तो कामुकता और कुत्सित सामाजिक जीवन के संवाद मोटे-मोटे शीर्षकों से प्रकाशित होते हैं। 'डेली मिरर' सेक्स और क्राइम सम्बन्धी खबरों से भरा रहता है।

फ्लीट स्ट्रीट तथा कुछ अन्य स्थानों को देखने के बाद लंच के समय हम पुनः अपने होटल वापस आ गये। यहाँ हमारे लिए विशेष रूप से भारतीय भोजन तैयार करवाया गया था। हमें बताया गया कि भारतीय भोजन तैयार करने के लिए एक पंजाबी रसोइया नियुक्त किया गया है। खाना

खेलानेवाली लड़कियाँ (वेट्रेसेज़) बड़ी मुस्तैदी से अपना काम करते हुए बेनीपुरी तथा राय चौधरी के बन्द कालर के कोट देख कर आँखों के इशारे से एक-दूसरे का ध्यान इस पोशाक की ओर आकृष्ट कर रही थीं।

लंच के बाद बेनीपुरी जी के साथ मैं बी० बी० सी० (ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कारपोरेशन) के पूर्वी सेक्शन गया, जो आक्सफोर्ड स्ट्रीट में है। सवेरे ही वहाँ पहुँचने के लिए हमें निमंत्रण मिल चुका था। हिंदी विभाग के श्री आलेहसन से हम बात कर ही रहे थे कि श्री भूपेन्द्र हुजा भी वहाँ पहुँच गये। उन्हीं की प्रतीक्षा थी।

श्री हुजा ने अपने घर चलने का आग्रह किया। एडवर्ड के जमाने में लंदन के धनी और अभिजात वर्ग के लोग जिस भाग में रहते थे, वहीं मेडावाले में हुजा का निवास-स्थान है और वहाँ पहुँचने पर इनकी पत्नी उषा रानी के सद्व्यवहार तथा आतिथ्य सत्कार से स्वदेश से हजारों मील दूर लंदन में ऐसा मालूम हुआ, जैसे अपने ही घर में बैठे हों। श्रीमती हुजा देहली की रहने वाली हैं और यहाँ मूर्तिकला की शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। हम लोग चाय पी रहे थे कि एक और भारतीय वहाँ पहुँच गये। हुजा ने उनसे हमारा परिचय कराया। श्री तूफान 'सोशलिस्ट' विचारों के नवयुवक हैं और पिछले तीन वर्षों से यहाँ रह रहे हैं। श्री तूफान के साथ हुजा के घर से हम लोग पार्क स्ट्रीट आये और रात के भोजन के बाद फिर घूमने निकल पड़े।

सबसे पहले हम हाइड पार्क कार्नर पहुँचे, जहाँ रोज़ शाम को विभिन्न दलों के वक्ता चीड़ के छोटे सन्दूक अथवा छोटी तिकोनी सीढ़ी पर चढ़ कर धुंआधार भाषण करते हैं। शुरू में भीड़ इकट्ठी करने के लिए वक्ताओं को पहले वक्ता और श्रोता—दोनों का पार्ट अदा करना पड़ता है; फिर धीरे-धीरे श्रोता जमा होने लगते हैं और जब वक्ता के सामने सौ-दो सौ की भीड़ इकट्ठी हो जाती है, तो वह बड़े जोश और उत्साह के साथ अत्यन्त ओजपूर्ण भाषा में अपनी वक्तृत्व-कला का परिचय देने लगता है। अपनी-अपनी ढपली और अपने-अपने राग के इस अनूठे दृश्य से मौन अंग्रेज़ भी यहाँ वाचाल हो उठते हैं और हाइड पार्क कार्नर के पास हास-परिहास में लीन अंग्रेजों को देख कर यह आश्चर्य होता है कि गम्भीर और मौन रहने वाले- अंग्रेज यहाँ इतने मुखर कैसे हो जाते हैं। वास्तव में यहीं उनके जीवन में चाँद खिलता है। इस सांध्य-समारोह की एक विशेषता यह भी है कि विभिन्न पार्टियों के समर्थक एक-दूसरे की कटु आलोचना सुनने के बाद भी आपस में नहीं लड़ते, जब कि दो

वक्ताओं के मंचों के बीच बहुत कम फासला होता है। श्रोता बीच-बीच में दिलचस्प सवाल पूछते हैं और वक्ता भी बड़े मजेदार ढंग से जवाब देते हैं। कई श्रोताओं ने वक्ताओं को हतप्रभ करने की कोशिश की, मगर वक्ता भी मनोरंजक प्रश्नों का मनोरंजक उत्तर दे कर यह साबित करते रहे कि पार्लमेंट में भाषण देने की दीक्षा वे प्राप्त कर रहे हैं। यहीं तो राज़ खुलता है कि अंग्रेज़ कितना हास्यप्रिय है।

आज एक पादरी 'पथभ्रष्ट भेड़ों' को सही रास्ते पर आने का उपदेश दे रहे थे और हास-परिहास के बीच ७०-८० व्यक्ति उनका भाषण सुन रहे थे। वहाँ से दो-ढाई गज की दूरी पर ब्रिटिश मजदूर दल के उग्रवादी पक्ष का समर्थन और एटली की अमेरिका-परस्त नीति की आलोचना करते हुए श्री बेवान के रुख की प्रशंसा की जा रही है और तीसरे मंच से शान्ति-आन्दोलन के पक्ष में व्याख्यान हो रहा है तथा चौथे मंच से वैवाहिक व्यवस्था पर तकरीर हो रही है। इस वक्ता की बातें अक्सर कहकहों में डूब जाती थीं। मृतप्राय लिबरल दल का अखाड़ा भी जमा था और एक वक्ता यह बता रहे थे कि लिबरल पार्टी की नीति स्वीकार करने में ही ब्रिटेन की भलाई है।

इस मनोरंजक दृश्य को देख कर जब हम वहाँ से चलने लगे तो यह भी देख पड़ा कि कुछ मनचले लोग लड़कियों को छेड़छाड़ रहे हैं और कहीं-कहीं 'सौदे' की बातें भी हो रही हैं। हाइड पार्क कार्नर के जीवन के दो पहलुओं में जहाँ एक अत्यन्त मनोरंजक है, वहीं दूसरा अति घिनौना !!

यहाँ से हम बस द्वारा लंदन के फैशनेबुल केन्द्र पिकाडिली सर्कस पहुँचे, जहाँ चौराहे के ठीक बीचों-बीच कामदेव की प्रतिमा है। वहीं 'फ्लावर गर्ल्स' रात में काफी देर तक पुष्प बेचा करती हैं और ये 'लड़कियाँ'—प्रौढ़ाएँ और वृद्धाएँ हुआ करती हैं, जिन्हें रूढ़िप्रिय लंदन 'फ्लावर गर्ल्स' के नाम से पुकारता आ रहा है। जब मैं कामदेव की प्रतिमा के निकट पहुँचा, तो वर्डस्वर्थ के सुनहरे डेफोडिल के गुच्छे को मैंने खरीदा। पुष्प बेच कर जीवन-निर्वाह करने वाली इन 'लड़कियों' के चेहरों से दीनता और कपड़ों से गरीबी प्रकट हो रही थी। इस क्षेत्र में बड़ी चहल-पहल थी। विद्युत्-शक्ति के उत्पादन में कमी आ जाने के कारण यहाँ रात में दीवाली का समा अब नहीं होता, फिर भी रंग-बिरंगी रोशनी से अन्य भागों की अपेक्षा 'पिकाडिली की रात' आकर्षक अवश्य प्रतीत होती है।

इंग्लैंड को लंदन के जिस पिकाडिली पर नाज़ है तथा स्काटलैंड

वाले जिसे उड़ती तितलियों और मँडराते भौंरों का उच्छृंखल क्रीड़ास्थल समझते हैं, उसी क्षेत्र के एक 'पब' (मदिरालय) में हम घुसे। युवक-युवतियाँ, प्रौढ़-प्रौढ़ाएँ और वृद्ध-वृद्धाएँ—सभी वहाँ थीं। यहाँ की ज़िन्दगी देखने के लिए हम लोगों ने भी गिनिस बियर पीना शुरू किया। हमारे पास ही दो अंग्रेज़ शराब के नशे में झूम रहे थे और रह-रह कर गीत भी गाने लगते थे। मैनेजर ने जब कहा कि पब में गीत नहीं गा सकते, तब वे मदहोश चुप जरूर हो गये, परन्तु उनमें से एक ने क्रोध में कहा—"आइरिश-मैन इन इंगलैंड।" आयरलैंड और इंगलैंड की पुरानी शत्रुता के कारण आयरलैंड के निवासी को गाली का प्रतीक मान लेना अंग्रेज़ों में प्रचलित है और शायद इसी से चिढ़ कर आइरिश बर्नर्ड शा ने अंग्रेज़ों की जितनी खिल्ली उड़ाई है, उसका जवाब इंगलैंड का कोई लेखक न दे सका।

ब्रिटेन के सामाजिक जीवन में इन 'पबों' का विशेष महत्त्व है। ऐसा मालूम होता है कि जीवन की सम्पूर्ण वेदना को भुला देने के लिए अंग्रेज़ शाम को 'पबों' में जमा हो जाते हैं। सवेरे साढ़े ग्यारह बजे से तीसरे पहर तीन बजे तक और शाम साढ़े पाँच बजे से ग्यारह बजे रात तक पब की दुनियाँ अपनी मस्ती से अंग्रेज़ों को चिन्ता से मुक्त किये रहती है।

लंदन में यातायात के साधनों का अच्छा प्रबन्ध है और आज ही रात में जब ट्यूब (भूमिगत रेलवे) से हमने कुछ दूर सफर किया, तो एक्ज़ीलेटर्स (बिजली की सीढ़ी) से नीचे उतरने और ऊपर चढ़ने में शैशवकालीन खेल-कूद का आनन्द मिला। सीढ़ी पर पैर रखते ही अपने आप नीचे उतरते जाइए और इसी प्रकार नीचे से ऊपर आ जाइए।

भूमिगत रेलवे लाइनों का जाल दूर-दूर तक बिछा हुआ है और नीचे साफ-सुथरे स्टेशन बने हुए हैं। पाँच-पाँच मिनट पर गाड़ियाँ छूटती हैं। डिब्बे खूबसूरत और कुर्सियाँ गद्दीदार। जिन्हें जगह नहीं मिलती, वे खड़े रहते हैं।

मैं जिस होटल में हूँ वह तो बहुत खर्चीला है, मगर आज ज्ञात हुआ कि यहाँ मध्यम श्रेणी के होटलों में खाने-पीने और रहने का खर्च लगभग २५०) प्रतिमास पड़ता है। मगर किसी कुटुम्ब के साथ रहने से इससे अधिक खर्च होगा, शायद ५०-६०) ज्यादा। मध्यम श्रेणी के होटलों के कमरों में भी स्प्रिंगदार बिस्तर, कम्बल, कई चादरें, तौलिए, साबुन, मुँह-हाथ धोने का पात्र-जिसमें गरम और ठंडे पानी का नल लगा रहता है, सुलभ हैं। इसके अतिरिक्त सोफा, अल्मारी, बड़े शीशे, गैस की अँगीठी भी होती है। कमरे में कालीन

बिछा रहता है। बड़े होटलों में इससे अधिक सुख-सुविधा प्राप्त है।

जब मैं सोने गया, तो भावनाएँ नींद पर हावी हो गईं। मछुओं का एक छोटा-सा गाँव 'लिन-डन' जब रोमन विजेताओं के हाथ में आया, तो केल्टिक भाषा का रूप छोड़ कर 'लोंडिनियम' बन गया और बाद में पुनः केल्टिक नाम से इसका अंग्रेजी नाम 'लंदन' पड़ गया। चार सौ वर्षों तक यह नगर रोमन साम्राज्य के प्रभुत्व में रहा, मगर बाद यह खुद साम्राज्यवाद का प्रतीक बन गया और आज भी युग-धर्म के विपरीत शोषण की अपनी परम्परा छोड़ने के लिए प्रस्तुत नहीं है। मगर इस नगर की काली दीवारें, जीर्ण भवन और युवतियों के मुख पर वृद्धाओं की गम्भीरता देख कर मुझे टी० एस० इलियट का उद्‌गार स्मरण हो आया—

यरूशलम, एथेन्स, सिकन्दरिया,
वियेना, लन्दन—के गिरते कलश
अवास्तविक.................. ।

परन्तु खेद यह है कि मजदूर दल के शासकों को भी यही नहीं दिखाई पड़ रहा है—"इस पथरीले भग्नावशेष से कौन सी जड़ें फूट रही हैं और कौन सी शाखाएँ निकल रही हैं।"

हाइड पार्क कार्नर का एक दृश्य, जहाँ अंग्रेज़ों के शुष्क जीवन में भी चाँद खिल आता है। लिबरल पार्टी के एक समर्थक अपनी मृतप्राय पार्टी के लिए भाषण कर रहे हैं।

२४ अप्रैल की डायरी, पृ० २२

लंदन का फैशनेबुल क्षेत्र—पिकाडिली सर्कस, जहाँ चौराहे के ठीक बीचोबीच कामदेव की प्रतिमा है और यही वह भाग है जिस पर लंदन को बड़ा गर्व है। २४ अप्रैल की डायरी, पृ० २२

२५ अप्रैल

(१) 'जलोत्सव'
(२) डाउनिंग स्ट्रीट का मनहूस वातावरण
(३) हाइड पार्क

जलपान के बाद आज बेकर स्ट्रीट में ब्रिटिश सरकार के केन्द्रीय सूचना-कार्यालय जा कर यात्रा-सम्बन्धी कार्यक्रम के विषय में विचार-विनिमय हुआ। यहाँ सूचना-विभाग किसी मंत्रालय के अधीन नहीं है। विभिन्न मंत्रालयों का प्रचार-कार्य इसी कार्यालय द्वारा होता है, जिसके लिए अलग-अलग विभाग हैं।

लंच के बाद हमने टेम्स में 'जलोत्सव' देखा। यद्यपि ब्रिटिश मेले का समारम्भ ३ मई को होगा, मगर विभिन्न सांस्कृतिक समारोहों का कार्यक्रम शुरू हो गया है और लन्दन के वातावरण में सर्वत्र महोत्सव के कारण खुशी व्याप्त है। जलोत्सव देखने के लिए वाटरलू ब्रिज के पास हम खड़े हैं। हज़ारों की संख्या में एकत्र दार्शकों में कई देशों के नागरिकों को देख कर लन्दन को यह गर्व हो रहा है कि आज भी उसमें आकर्षण है।

लंदन के लार्ड मेयर का शानदार नौका-जुलूस देखने के लिए न जाने कितनी 'नीली आँखें' वहाँ अंडे और रोटी की कमी की व्यथा को भुला कर बड़े उत्साह के साथ टेम्स की लहरों से अठखेलियाँ करनेवाली नौकाओं को देखने में तन्मय थीं। करीब एक सदी के बाद यह नौका-जुलूस निकल रहा था। बच्चों की किलकारियाँ तथा युवक-युवतियों की रसमयी बातें सुन कर टेम्स नदी सुहागिन की भाँति इठला रही थी। सहसा ज़ोरों की हर्षध्वनि हुई और मैंने देखा कि लार्ड मेयर नौका-जुलूस के साथ तट पर खड़े दर्शकों का अभिनन्दन स्वीकार करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। वे परम्परागत लाल-श्वेत रंग की पोशाक पहने हुए थे, जिस पर सुनहरी रेखाएँ धूप खिल जाने के कारण चम-चम चमक रही थीं। दो बड़ी नौकाओं पर बैंड की पार्टियाँ और लार्ड मेयर की नौका के दोनों ओर पुलिस की नौकाएँ चल रही थीं। जलूस के पृष्ठभाग

में मोटर-बोटों पर मदिर बयार में झूमते हुए नृत्य और संगीत में डूबे सैलानियों और लंदनवालों को देख कर तालियाँ बज उठतीं और इस जनोल्लास को देख कर किसका मन आनन्द से परिपूरित न हो जाता !

'जलोत्सव' देखने के बाद जब राष्ट्रमण्डल सम्पर्क कार्यालय में पार्लमेंटरी अंडर सेक्रेटरी लार्ड ओगमोर द्वारा दी गई चाय-पार्टी में सम्मिलित होने हम डाउनिंग स्ट्रीट गये, तो १०, डाउनिंग स्ट्रीट (ब्रिटिश प्रधान मंत्री का सरकारी निवासस्थान) पर दृष्टि जाते ही इस मनहूस इमारत से जुड़ी न जाने कितनी पुरानी कटु स्मृतियाँ ताजी हो गईं। यह न तो कोई भव्य स्ट्रीट है और न ब्रिटेन के प्रधान मंत्री का निवास-स्थान ही कोई आकर्षक भवन है। अन्य भागों की अपेक्षा यहाँ की दीवारें और अधिक काली, मगर मार्ग बहुत ही साफ है। ११, डाउनिंग स्ट्रीट (अर्थमंत्री के निवासस्थान) को देखने पर आभास मिला कि रंग उड़ता जा रहा है। यहाँ के आकाश में एशिया और अफ्रीका की शोषित जनता की दर्दभरी कथाएँ भरी हैं। मगर काली दीवारों ने यह अवश्य स्वीकार कर लिया कि "अब हमारी सभ्यता सड़ गई है।"

लार्ड ओगमोर से चाय पर पहले बेवान के त्यागपत्र के सम्बन्ध में बातचीत होती रही। उन्होंने बेवान की योग्यता और आदर्शवादिता की प्रशंसा करने के साथ ही यह कहा कि उनके हट जाने से अब मंत्रिमण्डल में दृढ़ एकता की भावना पैदा होगी और उनकी सेवाएँ प्राप्त न होने से हमें कोई नुकसान न होगा। बेवान की नीति की आलोचना करते हुए लार्ड ओगमोर ने कहा—"वे (बेवान) नकली दाँत और चश्मे से आक्रमण का सामना करेंगे।" मैंने पूछा—"यह आक्रमण का भूत कैसे पैदा हो गया?" लार्ड ओगमेर ने कहा—"सोवियत गुट की विस्तारवादी नीति से हमले की आशंका पैदा हो गई है और इस भय को दूर करने के लिए पश्चिमी राष्ट्रों को सुरक्षा की दृढ़ तैयारी करनी चाहिए, क्योंकि इसी नीति से शान्ति कायम रह सकती है।" मैंने जब कहा कि हथियारों का अम्बार लगाने से आग की लपटें उठेंगी, न कि शान्ति कायम रहेगी, तो उत्तर में उन्होंने जो कुछ कहा, उसका अभिप्राय यह था कि तैयारी, और अधिक तैयारी की ज़रूरत है। कितने आश्चर्य की बात है कि बन्दूक तैयार करनेवाला यह सोचता है कि बन्दूक छूटेगी नहीं, और सोवियत विचारों का प्रसार क्या हथियारबन्दी की नीति अपनाने से रोका जायगा ?

मलाया के सम्बन्ध में कुछ तीखी बातें भी हुईं। पहले ही यह तय हो

गया था कि इस चाय पार्टी में जो बातें होंगी, वे कहीं प्रकाशित न की जायँगी। इसलिए उनका उल्लेख मैं इस डायरी में भी नहीं कर रहा हूँ। मगर 'आतंक-वाद' को मिटाने के नाम पर जब लार्ड ओगमोर ने मलाया-सम्बन्धी अपनी गलत नीति का समर्थन करना शुरू किया, तो मजदूर दल के विद्रोही सदस्यों का यह आरोप स्मरण हो आया कि एटली सरकार परराष्ट्रनीति के मामले में टोरी सरकार का अनुसरण कर रही है।

यहाँ से बाहर निकलते ही यह विचार पैदा हुआ कि दूसरे महायुद्ध के बाद जिस मजदूर दल से ब्रिटेन के साथ ही दूसरे देशों की जनता को भी बड़ी बड़ी आशाएँ थीं, वही आज अपने दल के मस्तिष्क स्वर्गीय लास्की के इस कथन को भुला रहा है कि यदि सोशलिस्टों और कम्युनिस्टों का संघर्ष जारी रहा, तो स्वाधीनता के लिए लड़े जानेवाले द्वितीय महायुद्ध का परिणाम कटुतर गुलामी के अतिरिक्त और कुछ न होगा। मजदूर पार्टी की परराष्ट्र-नीति से असन्तुष्ट इस दल के कुछ संसद-सदस्यों के सम्मुख यह प्रश्न पैदा हो गया है कि वे पार्लमेंटरी मजदूर पार्टी के प्रति निष्ठावान् रहें अथवा उस जनता के प्रति, जिसने दो महायुद्धों की विभीषिका देखने के बाद शान्ति की आशा से उन्हें अपना वोट दे कर विजयी बनाया।

डाउनिंग स्ट्रीट से बाहर निकलते ही स्वच्छ हवा के मीठे झोंकों ने कटु स्मृतियाँ दूर कर दीं।

आज सायंकाल बिहार के श्री ओमप्रकाश आर्य के साथ, जो लंदन में विज्ञान का अध्ययन कर रहे हैं, हम लोग 'हाइड पार्क' घूमने गये और वहाँ 'सर्पेंटाइन लेक' (झील) में नौका-विहार का रस लूटा।

नौका-विहार के बाद जब हम लोग पार्क में टहलने लगे, तो स्वच्छन्द प्रेम का रूप देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। घास से ढके एक विस्तृत मैदान में युवक-युवतियों का प्रगाढ़ आलिंगन और चुम्बन—इस क्षेत्र को रति का क्रीड़ा-स्थल बनाये हुए था। हमारी आँखें शर्म से झुक जातीं, मगर उन शोख युवतियों और प्रौढ़ाओं के प्रेम-व्यवहार में कोई अन्तर न आता।

यहीं ज्ञात हुआ कि लगभग ६ या ७ बजे तक इस मैदान में जो युवक-युवतियाँ देख पड़ती हैं, उनमें अधिकांश भले घरों की हैं—और इस समय हम जो कुछ देख रहे थे, वह गन्धर्व-विवाह की भूमिका है। परन्तु रात को ८ या ९ बजे के बाद यहाँ वासना का नग्न-नृत्य होता है और लंदन की वारांगनाएँ लोगों का पीछा करती हैं। अजीब है यह पार्क! जिसके एक कोने

में शाम को विचार-स्वातंत्र्य का झंडा गड़ता है, सर्पेंटाइन लेक में नौका-विहार का आनन्द सुलभ है और सात बजे तक जहाँ अधिक न चुभनेवाला रूमानी वातावरण बना रहता है, वहीं ८ के बाद सारी कामुकता सिमट आती है !

रात हमने श्री ओमप्रकाश के घर बड़े प्रेम से भारतीय भोजन किया। उनकी पत्नी श्रीमती कमल यहाँ शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। दोनों ही बड़े मिलनसार और सहृदय हैं। आज ही अपनी आँखों यह देख कर बड़ा क्लेश हुआ कि कुछ भारतीय छात्र लड़कियों के चक्कर में अपना समय बरबाद करते हैं।

श्री बेवान के त्यागपत्र से टोरी पार्टी के शिविर में इस आशा से खुशी की जो लहर दौड़ गई थी कि मजदूर दल में बड़ी चौड़ी दरार पड़ जायगी, वह आज खत्म हो गई थी। टोरी पार्टी के पत्रों के अग्रलेखों व शीर्षकों से जहाँ खीझ की भावना परिलक्षित होती थी, वहीं लेबर पार्टी के मुखपत्र 'डेली हेराल्ड' ने प्रसन्नतापूर्वक यह घोषणा की—"टोरियों की आशाएँ धूल-धूसरित।" कम्युनिस्ट पार्टी के मुखपत्र 'डेली वर्कर' ने अपने अग्रलेख में इस बात पर ज़ोर दिया था कि टोरी शत्रुओं के मुकाबले मजदूर दल में यथासम्भव अधिक से अधिक एकता कायम रहनी चाहिए।

आज सुबह लंदन में धूप खिल आई थी और यहाँ के जिस निवासी से बात होती, वही पहले यही कहता—"आप भारत से धूप ले कर आये, यह कितनी खुशी की बात है।" वर्षा और घने कुहरे के देश में धूप भी नियामत है। दिन में न जाने कितनी बार यहाँ मौसम की चर्चा होती है और दो रोज के अनुभव ने यह बता दिया है कि मौसम बुरा हो या अच्छा, अंग्रेजी शिष्टाचार के अनुसार यही कहो—"वाह ! कितना अच्छा मौसम है, कितना सलोना !" परन्तु यदि कोई यह कह दे कि "मौसम बुरा है", तो यही कहना चाहिए—'बड़ा मनहूस मौसम है ! बड़ा नीरस !!"

———

२६ अप्रैल

(१) वे दिन लद गये, जब खलील खाँ फाख्ता उड़ाते थे !

(२) ब्रिटेन की जन-नाट्यशाला—यूनिटी थियेटर

आज नाश्ता करने के लिए ज्यों ही मैं कमरे से बाहर निकला, पाकिस्तान की एक महिला ने, जो शायद इसी होटल में ठहरी थीं, एक प्रकार से मेरा रास्ता रोक कर पूछा—"सामने का लिफ्ट तो काम नहीं कर रहा है, क्या इस विंग में और कहीं लिफ्ट है !" जिस अन्दाज से वे मेरे सामने खड़ी थीं, उससे एक बार मैंने उन्हें जब सर से पैर तक देखा, तो मन में कुछ हँसी आई, मगर "अन्तरराष्ट्रीय सौजन्य" के कारण हँसी रोक कर मैंने एक दूसरे लिफ्ट की ओर संकेत किया और साथ ही हम दोनों दूसरी मंजिल में होटल के डाइनिंग हाल में पहुँच गये। वे साटन का गरारा पहने, सितारोंजड़े कुरते पर शोखी से दुपट्टा डाले थीं, जो बार-बार मचल कर कन्धे से इधर-उधर हो जाता। होठों पर लाल पालिश तथा नाखूनों में विलायती मेंहदी लगी थी। चलने-बोलने में प्रदर्शन का यह भाव मानो आडम्बर की प्रतिमा हिल-डुल रही हो। वे ब्रिटिश मेला देखने आई थीं, और इनको अंग्रेज़ स्त्रियाँ, जो आर्थिक-परिस्थितियों के कारण पाउडर तथा अन्य श्रृंगार-प्रसाधन की वस्तुएँ त्याग रही हैं, बड़े गौर से देख रही थीं।

जलपान के बाद हम जार्ज स्ट्रीट में ट्रेजरी से सम्बन्धित सूचना-विभाग में गये, जहाँ अधिकारियों ने ब्रिटेन की आर्थिक-स्थिति पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस बात को स्वीकार किया कि पहले दूसरे देशों का कच्चा माल ले कर हम अपना तैयार माल अनेक देशों के बाजारों में पाट देते थे, परन्तु अब वह स्थिति नहीं रही है। इसलिए ब्रिटेन नई आर्थिक नीति ग्रहण कर रहा है। यहाँ हमसे यह भी कहा गया कि अमेरिका से जितनी आशा थी, उतनी मदद नहीं मिल रही है। विभिन्न सूत्रों से होनेवाली आय और आयात-निर्यात के आँकड़े दे कर वे अपने देश की आर्थिक-स्थिति समझा रहे थे, और मेज़ पर पुराने 'ऐशट्रे' व बिना बाँह की कुर्सियों से यह ज़रूर परिलक्षित

हो रहा था कि सचमुच अब वे दिन लद गये जब खलील खाँ फाख्ता उड़ाते थे !

दूसरे महायुद्ध का निश्चय ही ब्रिटेन की आर्थिक-स्थिति पर बुरा असर पड़ा है। ब्रिटिश-अधिकारियों ने सोवियत संवाद-समिति 'तास' द्वारा प्रचारित इस खबर को गलत बताया कि ब्रिटेन में बेकारी तेजी से बढ़ रही है। इनके कथनानुसार यहाँ दो या तीन प्रतिशत से अधिक बेकारी नहीं है। मगर आज ही दिन में किसी ऑफिस के एक बाबू ने मुझे बताया कि बेकारी १४ प्रतिशत से अधिक है।

ब्रिटेन में समान काम करने पर भी स्त्रियों को पुरुषों की अपेक्षा कम वेतन मिलता है। इससे यहाँ की स्त्रियों में गहरा असन्तोष है, किन्तु यह शिकायत अभी तक दूर नहीं हुई। मजदूर सरकार ने शृंगार एवं ऐयाशी की चीज़ों पर अधिक टैक्स लगा कर जीवन के लिए आवश्यक चीज़ों की कीमतें कुछ कम निर्धारित करने की कोशिश ज़रूर की है, मगर हथियारबन्दी की नीति ग्रहण करने के फलस्वरूप कीमतों के ऊँचे चढ़ने की आशंका से लोग चिन्तित हो उठे हैं। सिगरेट और शराब की कीमत अधिक है, किन्तु रोटी दूध आदि का मूल्य कम है। मांस की कठिनाई अभी यहाँ काफी है। अर्जेंटाइना से व्यावसायिक समझौता होने के फलस्वरूप जहाँ मांस आने की आशा से लोगों में उत्साह पैदा हो गया था, वहाँ अब मांस की कीमत बढ़ जाने की सम्भावना से वह क्षीण हो रहा है।

श्री बेवान ने त्यागपत्र सम्बन्धी अपने भाषण में कामन सभा में यह कहा था कि अमेरिका के इच्छानुसार हथियारबन्दी की नीति ग्रहण करने के कारण सोवियत गुट के बाहर के देशों की आर्थिक स्थिति अवश्य छिन्न-भिन्न होगी। और इसमें कोई सन्देह नहीं कि अमेरिका के अतिरिक्त पश्चिमी गुट के अन्य सभी देशों की हालत खराब है। इसमें अप्रिय स्थिति पैदा होने के सिवा और आशा ही क्या की जा सकती है ?

ब्रिटिश सूचना विभाग के उक्त कार्यालय से बाहर आने के बाद हमारे कुछ साथी कार से लंदन घूमने निकल गये, किन्तु मुझे होटल आना पड़ा, क्योंकि वहाँ कुछ भारतीय छात्र मेरी और बेनीपुरी जी की प्रतीक्षा कर रहे थे।

श्री ओम्प्रकाश आर्य तथा दूसरे साथियों ने अपनी कविताएँ सुनायीं। ब्रिटिश सरकार के इस अतिथि-भवन के जीवन में सम्भवतः यह पहला ही अवसर होगा, जब यहाँ काफी देर तक हिन्दी साहित्य पर बातचीत होती

रही। लंदन में एक हिन्दी-केन्द्र स्थापित करने के बारे में भी विस्तारपूर्वक बात हुई।

लंदन में आज हमारा तीसरा दिन था, किन्तु अभी तक थियेटर देखने का मौका न मिला था। इसलिए नाटक देखने की आकांक्षा से शाम को हम लोग 'यूनिटी थियेटर' पहुँच ही गये। गोल्डिंगटन स्ट्रीट में यह थियेटर है। इसके चारों ओर निम्न-मध्यम वर्ग की बस्तियाँ हैं। इस भाग में कुछ मज़दूर भी हैं। 'यूनिटी थियेटर' का भवन आकर्षक नहीं हैं। मगर ब्रिटेन की प्रगतिशील जनता को इस पर गर्व है। इस जन-नाट्यशाला की स्थापना का उद्देश्य स्वास्थ्यप्रद मनोरञ्जन के द्वारा शोषित जनता को अपने कर्तव्य के प्रति सजग बनाना है। कला के नाम पर व्यावसायिक लाभ अथवा अभिजात वर्ग के कुत्सित मनोरञ्जन के लिए इस नाट्यशाला का निर्माण नहीं हुआ है। यूनिटी थियेटर में अभिनीत होनेवाले नाटकों द्वारा कलात्मक ढंग से प्रतिक्रियावादी विचारों पर चोट की जाती है। थियेटर-भवन के बरामदे में पहुँचते ही एक किनारे पर किताबों की छोटी दुकान देख पड़ी। वहाँ दो अंग्रेज़ युवक प्रगतिशील साहित्य बेच रहे थे। बेनीपुरी जी ने 'डेली वर्कर' का इतिहास खरीदा।

इस जन-नाट्यशाला में सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक प्रश्नों पर छोटे-छोटे व्यंग्यात्मक रूपकों को प्रस्तुत किया जाता है। नाट्य-साहित्य में यह अभिनव प्रयोग है, जिसे 'रेव्यू' (Revue) कहते हैं। आज के कार्यक्रम का नाम था—'हियर गोज़', जिसके अन्तर्गत पहले भाग में तेरह और दूसरे भाग में चौदह घटनाओं पर 'रेव्यू' प्रस्तुत किये गये।

रङ्गशाला में दर्शक कभी चर्चिल की टोरी परम्परा का परिहास देख ठहाका मार कर हँस पड़ते, तो कुछ देर बाद संयुक्त राष्ट्र सङ्घ पर जंगबाज़ों का प्रभुत्व देख गम्भीर हो जाते। तथाकथित प्रगतिशील लेखकों के साहित्य का कभी मजाक उड़ाया जाता, तो कभी यह दिखाया जाता कि शान्ति और मानवता के शत्रु सारे प्रतिक्रियावादी किस रीति-नीति से एक शिविर में जमा हो रहे हैं। हमने लघुतम नाटकों के माध्यम से देखा कि अमेरिकी सभ्यता क्या है, नया टोरी क्या चिल्लाता है और श्रमिक-वर्ग क्या चाहता है। दो-दो चार-चार या अधिक से अधिक आठ-दस मिनट के दृश्य! मगर कितने प्रभावोत्पादक!! आडम्बरशून्य वातावरण, प्रभावोत्पादक अभिनय एवं कथोपकथन, सादा स्टेज, अभिनेता एवं अभिनेत्रियों की साधारण पोशाकें। किन्तु रोशनी का इतना अच्छा प्रबन्ध कि वातावरण प्राणवान् बन जाता, और

यूनिटी थियेटर की विशेषताएँ यही हैं। सुरुचिपूर्ण साहित्यिक व्यंग्य, नृत्य और जन-संगीत के रसास्वादन के लिए उपस्थित दर्शकों से थियेटर-हाल खचाखच भरा हुआ था।

यूनिटी थियेटर मनोरंजन का साधन होते हुए ब्रिटेन के सांस्कृतिक जीवन में एक प्रगतिशील आन्दोलन भी है। इसी थियेटर में गोर्की के विश्व प्रसिद्ध क्रान्तिकारी उपन्यास 'मदर' (माँ) को नाटक के रूप में खेला जा चुका है। ब्रिटेन के सभी प्रगतिशील साहित्यकारों एवं कलाकारों का सहयोग इसे प्राप्त हैं। किसी दल विशेष से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। यह सच्चे अर्थ में ब्रिटिश जनता की नाट्यशाला है।

'हिन्दुस्तान टाइम्स' की लन्दन-स्थित प्रतिनिधि श्रीमती इला सेन से यहीं भेंट हो गई। आपने इस बात पर बड़ी खुशी प्रकट की कि ब्रिटेन में इस बार जो प्रतिनिधिमण्डल आया है, उसमें सब श्रमजीवी पत्रकार है।

खेल समाप्त होने के बाद एक महिला ने दर्शकों को धन्यवाद देते हुए बताया कि सरकार ने 'यूनिटी थियेटर सोसायटी लिमिटेड' के खिलाफ इस आरोप पर मामला चलाया है कि १५ फरवरी १९५१ को एक ऐसे स्थान पर इस थियेटर की ओर से नाटक खेला गया, जहाँ इसके लिए अनुमति नहीं ली गई थी। इस महिला ने यह भी बताया कि यदि इस मामले को सफलतापूर्वक नहीं लड़ा जाता, तो इस देश के प्रगतिशील सांस्कृतिक आन्दोलन पर बुरा असर पड़ेगा। अन्त में उसने 'रक्षा-कोष' में धन देने की अपील की। मुझे यह देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि लोग जनवादी कला की रक्षा के लिए बड़ी प्रसन्नता से रक्षा-कोष में धन दे रहे थे।

इस थियेटर से वापस आने के बाद जब मैं सोने गया, तो उस समय भी मेरी आँखों में इस जन-नाट्यशाला के चित्र तैर रहे थे।

२७ अप्रैल

(१) युद्ध के घाव……
(२) डॉक-मजदूरों के क्षेत्र में
(३) संवाद-समितियाँ
(४) संगीत-रूपक
(५) राजपथ पर भिखारी !

गिरे हुए मकान, धँसी हुई धरती और चीखती हुई हवाएँ !!!

युद्ध के ये घाव जो अभी तक भर नहीं पाये।

सुप्रसिद्ध सेंटपाल कैथिड्रल (गिरजाघर) से होते हुए जब हमारी कार लंदन बन्दरगाह की गोदियों—डॉक एरिया—की ओर जा रही थी, तो गिरजाघर से आगे पहुँचते ही ध्वस्त मकानों के मलवे, फटी धरती और भूत से खड़े अधगिरे घरों को देख कर इस ख्याल से हृदय काँप उठा कि अगर अब युद्ध हुआ, तो निश्चय ही विनाश का दानव मानवता को निगल जायगा। १९४० के जून में नात्सी विमानों ने लन्दन के इस क्षेत्र में सबसे अधिक बमबारी की थी। और आज इन ढूहों को देख कर यह सोचते ही मन सहम जाता कि जिस समय फासिस्ट दरिंदे आसमान से इस भाग में आग बरसा रहे होंगे, उस संकट काल में यहाँ की जनता पर क्या गुज़र रहा होगा। जर्मन बमबाज़ों ने दो बार सेंटपाल कैथिड्रल पर भी बम फेंके थे, मगर यह मन्दिर बच गया। जब इन दर्दनाक दृश्यों को देखते हुए हम बन्दरगाह की ओर जा रहे थे, तो मुँह से यह निकल ही गया—"कितनी बहादुर है यहाँ की जनता, जिसने लोमहर्षक विनाश का साहस के साथ सामना किया, किन्तु अपनी मर्यादा पर आँच न आने दी।"

परन्तु यह देख कर बड़ा क्लेश हुआ कि युद्ध खत्म हुए छः वर्ष हो गये, फिर भी डॉक-एरिया में युद्ध के दाग बदस्तूर कायम हैं। गृह-निर्माण के सम्बन्ध में यहाँ की सरकार की ओर से जो आकर्षक आँकड़े पेश किये जाते

हैं, वे इस ध्वस्त मकानों के क्षेत्र में रहनेवालों को कैसे सन्तोष प्रदान करते होंगे ?

लन्दन पोर्ट की गोदियों को देखने के पूर्व हमें शराब के पीपों से भरे तहखाने को दिखाया गया। मगर 'भूमिगत सुरा-भण्डार' देखने के बाद भी युद्ध के वे भयानक चित्र आँखों से ओझल न हो सके, जिन्हें मैं अभी देख चुका था।

पथ-प्रदर्शक ने बताया कि शराब का जो गोदाम हम देख रहे हैं, वह १८०५ में तैयार हुआ था और इसी प्रकार के यहाँ कई तहखाने हैं, जिनका क्षेत्रफल २०-३० एकड़ से कम नहीं है। व्यापारियों ने शराब से भरे पीपों को यहाँ रखवा दिया है और ज्यों-ज्यों शराब पुरानी होती जाती है, उसकी कीमत बढ़ती जाती है। आज सवेरे से ही वर्षा होने के फलस्वरूप जोरों की ठंढ पड़ रही थी; इसीलिए जब लाल-लाल पेय पीपे से निकाल कर हमें दिया गया, तो ठंढ का दम टूट गया। इस देश में शीत जलवायु के कारण पीना-पिलाना भी जीवन के लिए आवश्यक समझा जाता है और कुछ अंशों में यह सचमुच यहाँ ज़रूरी है।

तहखाने से बाहर आ कर हम लोग गोदियों में बड़ी देर तक घूमते रहे। लंदन का बन्दरगाह संसार का एक बहुत ही बड़ा बन्दरगाह है, जो टेम्स के मुहाने से टेडिंगटन तक चढ़ाव की ओर कई मील में फैला हुआ है। ब्रिटेन के व्यावसायिक जीवन में इसका बहुत महत्त्व है, क्योंकि इसी बन्दरगाह से यहाँ की बहुत-सी चीज़ें बाहर भेजी जाती हैं और बाहर से कच्चा माल तथा खाद्य-सामग्री यहाँ आती है। टेम्स नदी के उत्तरी तट पर जो चार गोदियाँ हैं, उनमें रायल विक्टोरिया ऐंड एलबर्ट ऐंड किंग जार्ज फिफ्थ डॉक को ही हम देख पाये। यहाँ जगह-जगह गोदाम बने हुए हैं, जहाँ बाहर जाने वाली अथवा दूसरी जगह से मँगाई गई चीजें जमा रहती हैं। इमारती लकड़ी, गल्ला, चाय, चीनी, ऊन, गोश्त और शराब के गोदामों की इस डॉक में प्रधानता है। कहीं-कहीं बाहर भेजने के लिए सैकड़ों की संख्या में कारें जमा थीं। तम्बाकू के गोदाम में भारत और पाकिस्तान का तम्बाकू भी हमें दिखाया गया और वहाँ के अधिकारियों ने हमें बताया कि भारत का तम्बाकू बहुत अच्छा होता है। हम लोगों ने बड़े-बड़े जहाजों को भी देखा। कुछ जहाजों की मरम्मत में मजदूर बड़ी तत्परता के साथ जुटे हुए थे।

गोदियों में भ्रमण करते समय ब्रिटेन के मजदूरों की गरीबी भी नज़र

से न छिप सकी। कुछ मजदूर फटेहाल दिखाई पड़े। पैबन्द लगी पतलूनें और फटे कोट उनकी आर्थिक-स्थिति प्रकट कर रहे थे।

मुझे बाद विश्वसनीय सूत्रों से ज्ञात हुआ कि डॉक-मज़दूरों की दशा शोचनीय है और उनकी सुख-सुविधा पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। एक श्रमिक-कार्यकर्ता ने बताया कि श्रम-मंत्रालय इस सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कर रहा है। जहाजों से माल उतारने और चढ़ाने वाले खलासियों की दशा खराब है। अक्सर खलासियों के नये-नये दल नियुक्त होते रहते हैं। उक्त कार्यकर्ता ने यह भी कहा कि यदि स्थायी तौर पर खलासी नियुक्त कर लिये जायँ, तो बार-बार खलासियों के नये दल नियुक्त करने से जो असन्तोषजनक स्थिति पैदा होती है, वह दूर हो सकती है। एक अन्य मजदूर कार्यकर्ता ने कहा कि गोदियों के श्रमिकों की कार्य-प्रणाली में बड़े सुधार की आवश्यकता है और जब तक उनकी सुख-सुविधा पर ध्यान न दिया जायगा, इस क्षेत्र में उत्तेजना का वातावरण बना रहेगा।

डॉक-एरिया से लौटते समय मैंने देखा कि लंच की छुट्टी में कुछ मजदूर खड़े-खड़े कुछ कुछ खा रहे हैं और अखबार भी पढ़ रहे हैं। हमें बताया गया था कि ब्रिटेन की सबसे कमजोर राजनीतिक पार्टी—कम्युनिस्ट पार्टी का लंदन के डॉक-क्षेत्र में काफी प्रभाव है तथा इस भाग के मजदूरों के हाथ में 'डेली वर्कर' की प्रतियाँ देख कर उक्त कथन का सत्य प्रमाणित हो गया।

ब्रिटेन की विश्वविख्यात संवाद-समिति 'रायटर्स' की ओर से आज हमें लंच पर आमंत्रित किया गया था। हम डॉक-क्षेत्र से सीधे ८५, फ्लीट स्ट्रीट पहुँच गये, जहाँ रायटर्स का कार्यालय है। खाना खा लेने के बाद यहाँ के अधिकारियों ने हमें कार्यालय के विभिन्न भागों को दिखाया। जिस कार्यालय में हम घूम रहे थे, उसके व्यापक कार्यक्षेत्र का अन्दाजा इसी से लगाया जा सकता है कि दुनिया के विभिन्न भागों से प्रतिदिन करीब ५ लाख शब्दों के तार यहाँ आते हैं और यहाँ से उन्हें काट-छाँट कर पुनः ब्रिटेन से बाहर लगभग तीन हज़ार पत्रों को भेजा जाता है। किसे यह पता था कि १८५१ में जूलियस रायटर ने केवल व्यावसायिक खबरें वितरित करने के उद्देश्य से लन्दन में जिस संस्था को स्थापित किया था, उसका कार्यक्षेत्र विविध प्रकार की खबरें भेजने के लिए सारा संसार हो जायगा। ब्रिटेन की एक दूसरी प्रमुख संवाद-समिति प्रेस एसोसियेशन और रायटर्स कई दृष्टियों से अब एक ही संगटन के रूप में हैं। प्रेस एसोसियेशन ने १९२६ में रायटर कंपनी के

अधिकांश शेयर तथा १९३० में कुछ छोड़ कर शेष सभी शेयर खरीद लिये थे। किन्तु १९४१ में इसने लंदन के पत्र-मालिकों के संगठन—न्यूज़पेपर प्रोप्राइटर्स एसोसियेशन—के हाथ आधे शेयर बेच दिये। १९४७ में आस्ट्रेलियन एसोशियेटेड प्रेस, न्यूजीलैंड प्रेस एसोसियेशन तथा १९४९ में प्रेस ट्रस्ट आफ-इण्डिया लिमिटेड भी इस संगठन के छोटे साझीदार बन गये। इस संगठन के ट्रस्टियों का जो बोर्ड है, उसमें ग्यारह ट्रस्टी हैं, जिनमें चार प्रेस एसोसियेशन तथा दूसरे चार न्यूज़पेपर प्रोप्राइटर्स एसोसियेशन द्वारा नियुक्त होते हैं, शेष तीन ट्रस्टियों में एक आस्ट्रेलिया, दूसरा न्यूजीलैंड और तीसरा प्रेस ट्रस्ट आफ इंडिया द्वारा नियुक्त होता है। भारत की 'एसोशियेटेड प्रेस आफ इंडिया' नामक संवाद-समिति जो पहले रायटर्स की ही शाखा थी, अब कुछ भारतीय पूँजीपतियों के हाथ में है, इसको 'प्रेस ट्रस्ट आफ इंडिया' कहते हैं। १९४९ के समझौते के अनुसार प्रेस ट्रस्ट और रायटर्स में जो गठबन्धन हो चुका है, उसे भारतीय जनता और श्रमजीवी पत्रकार स्वाधीन भारत में स्वतन्त्र पत्रकारिता के विकास के लिए बड़ा बाधक समझते हैं।

रायटर्स के अधिकारियों का दावा है कि संवाद-चयन और वितरण में में वे बड़ी ईमानदारी बरतते हैं, मगर एशियाई देशों को इस बात की शिकायत है कि रायटर्स द्वारा वितरित संवादों में साम्राज्यवादी रंग मिला रहता है एवं कई देशों की महत्त्वपूर्ण खबरें या तो दी नहीं जातीं या अपने रंग में रँग कर वितरित की जाती हैं।

प्रेस एसोसियेशन लंदन तथा लंदन के बाहर ब्रिटेन में ही समाचारों के चयन तथा वितरण का कार्य करता है। इनके अतिरिक्त यहाँ दो और ऐजेंसियाँ हैं, जिनके नाम 'एक्सचेंज टेलीग्राफ कम्पनी लिमिटेड' और 'सेंट्रल न्यूज़ लिमिटेड' हैं।

लंदन में एसोशियेटेड प्रेस आफ अमेरिका और यूनाइटेड प्रेस आफ अमेरिका की भी दो शाखाएँ हैं, जिनके नाम क्रमशः 'एसोशियेटेड प्रेस' और 'ब्रिटिश यूनाइटेड प्रेस' हैं। इन पाँच संवाद-समितियों के अतिरिक्त लंदन में बीस से अधिक छोटी-छोटी संवाद-समितियाँ हैं, जो मुख्यतः लेख, प्रहसन, राजधानी के पत्र, कार्टून आदि विशेष सामग्री पत्रों को वितरित करती हैं।

रायटर्स कार्यालय में प्रेस ट्रस्ट आफ इंडिया की शाखा से सम्बद्ध पत्रकारों से भी हमारी बातचीत हुई। अन्त में इस कार्यालय के अधिकारियों को धन्यवाद दे कर हम लोग बाहर आये और कुछ देर तक फ्लीट स्ट्रीट में टहलते रहे।

बेनीपुरी जी यहाँ के सांध्यकालीन पत्र 'ईवनिंग न्यूज़' या 'ईवनिंग स्टैंडर्ड' अथवा 'स्टार' को खरीदते समय जब ब्रिटिश सिक्कों से भरी हथेली हॉकरों के सम्मुख कर देते और वे हँसते हुए अखबार की कीमत लेकर इनका मुँह देखने लगते तो बड़ी मनोरंजक स्थिति पैदा हो जाती। साथियों में से कोई कहता—"अभी यह सिक्का नहीं पहचान पाते"। फ्लीट स्ट्रीट के एक हॉकर ने मुसकराते हुए कहा—"जल्दी ही खरे और खोटे दोनों सिक्के पहचान जायँगे।" तब मैंने कहा—"देखिये बेनीपुरी जी, कितने पते की बात यह कह गया।"

शाम को आज हम लोगों ने शैफ्टसबरी एवेन्यू के सेविल थियेटर में 'गे इज़ दि वर्ड' नामक संगीत-रूपक देखा। हमारे साथ श्री सेम्पुल्स (पूरी यात्रा में हमारे पथ-प्रदर्शक) और उनकी पत्नी भी थीं। इस नाट्यशाला में अभिजात वर्ग के दर्शकों की संख्या अधिक थी। आइवर नोवेलो ने इस संगीत-रूपक में मनोरंजन की इतनी प्रचुर सामग्री प्रस्तुत की थी कि बार-बार दर्शक ठहाका मार कर हँस पड़ते। एक नर्तकी नाटक-मण्डली के लिए पात्रों का चुनाव करती है, इसी सिलसिले में रिहर्सल का क्रम चलता है, जिसमें हास्य, व्यंग्य और शृङ्गार की धारा रह-रह कर फूट पड़ती थी। हास्यप्रधान भूमिका में सफल अभिनय करने के कारण ब्रिटेन के थियेटर-प्रेमियों की जबान पर जिस 'सिसली कार्तनीज़' का नाम रहता है, उसके अभिनय पर सभी दर्शक मुग्ध थे और सारा हाल बार-बार हर्षध्वनि से गूँज उठता था। सचमुच पचास वर्ष से अधिक जिस अभिनेत्री की आयु हो, उसकी हास्यकला की ऐसी निर्झरिणी फूट पड़ी थी, कि जीवन के सन्ताप, दुःख, उलझन और परेशानियों को भुलाकर सब खुले दिल से हँस रहे थे। लिज़वेथ वेब के अभिनय पर युवक फिदा थे और बार-बार करतल-ध्वनि से उसका अभिवादन कर रहे थे। शृङ्गाररस की भूमिका में जब लिज़वेथ वेब मुसकराती तो ऐसा प्रतीत होता कि हरसिंगार के फूल झर रहे हों। रङ्गमञ्च आधुनिक और सजधज आकर्षक!

नाटक खत्म होने के बाद थियेटर-हाल से बाहर निकलने में काफी समय लगा। अभिजातवर्गीय अंग्रेज़ महिलाएँ मोतियों के हार से लदी हुई अपने ऐश्वर्य के प्रदर्शन में इतनी तल्लीन थीं कि बाहर बुझते युग के इस अभिनय को देखनेवालों ने रास्ता रोक रखा था। संगीत-रूपक देखने के बाद वेस्ट एण्ड की अट्टालिकाओं में रहनेवाली नारियों के वैभव-प्रदर्शन की झलक पा लेने पर ही बाहर जाने का रास्ता मिला।

'शफी' में खाना खाया गया। यह भारतीय होटल लन्दन में काफी प्रसिद्ध है। इसके मालिक श्री लालजी भाई हैं, जो बड़े मस्त और हास्यप्रिय हैं। यहाँ हमने पराठे, पुलाव, मुर्ग-मुसल्लम, कोफ्ता, दही-बड़े, आम और मिर्च के अचार तथा दूसरे भारतीय व्यञ्जन पाकर बहुत खुशी-खुशी भोजन किया। यहाँ कई अंग्रेज युवक तथा युवतियाँ अपने भारतीय मित्रों के साथ मसालेदार भोजन का रस ले रही थीं। कुछ भारतीय छात्र आंग्ल युवतियों के साथ खाने-पीने में मुक्त हस्त से पैसे फूँक रहे थे।

लन्दन में कई भारतीय भोजनालय हैं। जहाँ करीब दस हज़ार भारतीय रहते हैं, वहाँ इनका होना स्वाभाविक है। किन्तु अंग्रेजी खाने की अपेक्षा भारतीय भोजन की कीमत अधिक है।

शफी रेस्त्राँ से बाहर निकलने पर कुछ दूर तक हम पैदल टहलते रहे। ब्रिटिश मेले के कारण राजधानी के जीवन में बड़ी चहल-पहल आ गई थी। मगर आज लन्दन के सम्बन्ध में एक ऐसा अनुभव हुआ, जिसने इस नगर के एक धब्बे को स्पष्ट कर दिया। एक भिखारी दिखाई पड़ा। हमें आश्चर्य हुआ—लन्दन में भी भिखारी! मगर भिखारी तो सामने ही खड़ा संगीत के बहाने भीख माँग रहा था।

दुनिया के कई देशों को लूट कर जिस लन्दन ने पूँजीवादी दुनिया में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया, उसके जीवन में इस विरोधाभास को देख कर थैलीशाही-व्यवस्था का विकृत रूप स्पष्ट हो गया।

तो आज चौथे दिन लन्दन के राजपथ पर भिखारी से भी भेंट हो गई!

———

२८ अप्रैल

(१) ब्रिटिश म्यूज़ियम

(२) ट्रेफलगर स्क्वायर

(३) घृणित और क्षोभजनक दृश्य

(४) "कहिये, मौसम अच्छा है न!"

आज ब्रिटेन के सर्वोत्कृष्ट संग्रहालय—ब्रिटिश म्यूज़ियम—को देख कर मानव-सभ्यता के विभिन्न चित्र आँखों में नाच उठे। भारत, चीन, मिस्र, रोम, यूनान आदि देशों की सांस्कृतिक थाती के अतिरिक्त सभ्यता के प्रायः हर चरण की कलात्मक स्मृतियों और विशाल पुस्तकालय को देखकर बाहर मौसम की खराबी से लन्दन के प्रति आज जो खीझ पैदा हो गई थी, वह दूर हो गई और आनन्दमग्न मैं न जाने कितने पर्यटकों के साथ-साथ कला-कृतियों को देखता रहा। ब्रिटिश म्यूज़ियम तथा यहाँ के दूसरे संग्रहालयों में अनेक देशों की सांस्कृतिक निधियाँ देख कर यह तथ्य प्रकट हो जाता है कि साम्राज्यवादी शक्तियाँ धन के साथ ही दूसरे देशों की सांस्कृतिक थाती भी मनमाने ढंग से लूटती हैं!

ब्रिटिश म्यूज़ियम जैसे विशाल संग्रहालय पर सैकड़ों पृष्ठों की पुस्तकें ही लिखी जा सकती हैं, इसलिए डायरी में इसकी झलक ही शायद मिल सके। इसके लगभग एक दर्जन विभागों को देखने के बाद मैंने इस संग्रहालय में पुनः किसी दिन आने का निर्णय किया। यहाँ मूर्तियों और चित्रों के श्रेष्ठ संग्रह को देख कर विभिन्न युगों और विभिन्न देशों के कलाकारों की अनूठी कल्पनाओं पर मैं रीझ उठता! कभी-कभी किसी मूर्ति अथवा चित्र के पास जब मैं देर तक छेनी या तूलिका की करामात देखने में तन्मय हो जाता, तो साथी आगे खींचने का प्रयास करते!

चीनी एवं मिस्री मूर्तियों तथा चीनी चित्रों को देख कर यह आश्चर्य होता कि पशु-पक्षियों एवं पौराणिक गाथाओं को चित्रों, मूर्तियों एवं भित्ति-चित्रों में अंकित करने की कला में पुरातन मूर्तिकार एवं शिल्पी कितने कुशल

थे। इस संग्रहालय में चीन देश की कलाकृतियों का अनूठा संग्रह है।

एक रोमन मूर्ति, जिसमें 'मित्रस्' द्वारा एक साँड़ का बलिदान दिखाया गया है, बड़ी सजीव प्रतीत हुई। साँड़ को बलि देने की प्रथा फारस से रोमनों ने ली थी और 'मित्रस्' नामक देव ने सर्वप्रथम साँड़ की बलि दी थी। इस मूर्ति से यह भी प्रकट हो जाता है कि रोमन सम्राट् बलिदान-सम्बन्धी कार्यों में कितनी दिलचस्पी लेते थे। यहीं सम्राट् कमोडियस के धड़ की एक मूर्ति है, जिसमें उसे 'मित्रस्' देव के रूप में दिखाया गया है। यहाँ यूनानी मूर्तियाँ भी हैं और सिकन्दर के सिर की एक बहुत ही भावोत्पादक मूर्ति है। असीरियन कला की भी कई आकर्षक मूर्तियाँ यहाँ हैं। भारत की विभिन्न सांस्कृतिक निधियों को देख कर इसलिए टीस पैदा हुई कि जबरन ये कलाकृतियाँ यहाँ उठा लायी गई हैं।

भारतीय साहित्य का प्रचुर भण्डार यहाँ देख कर मुझे कोई आश्चर्य न हुआ, क्योंकि दासता के दिनों में अंग्रेजी कानून के अनुसार भारतीय भाषाओं में प्रकाशित सभी पुस्तकों की प्रतियाँ यहाँ पहुँच जाती थीं। पाकिस्तान सरकार की हठधर्मी और अंग्रेज सरकार की लालची नीति के कारण अभी तक हम इस निधि को प्राप्त न कर सके। इस कक्ष में आने पर जो वेदना हुई, उसे कैसे अभिव्यक्त करूँ! पांडुलिपियों का तो इस म्यूज़ियम में बहुत ही अच्छा संग्रह है। अपने देश की पांडुलिपियों के सम्बन्ध में पूरी जानकारी बाद प्राप्त करूँगा। आज यहाँ यह देख कर प्रसन्नता हुई कि प्रायः सभी प्रसिद्ध अंग्रेज-लेखकों की पांडुलिपियाँ सुरक्षित हैं। बाइबिल की एक पुरानी प्रति, मैगनाकार्टा की चार मूल प्रतियों में एक प्रति, लेडी हेमिल्टन के नाम नेल्सन का अधूरा पत्र, रिचर्ड द्वितीय के बाद से ब्रिटिश नरेशों के हस्ताक्षर, शेक्सपियर के प्रथम प्रकाशन की मूल प्रति, इटली के अमर शिल्पी ल्योनार्दो विंशी की नोटबुक, कवि शेली के पत्र...और किन-किन पांडुलिपियों एवं ब्रिटिश साहित्यकारों की स्मृति की चर्चा करूँ; संक्षेप में यही कह देना पर्याप्त है—एक ही संग्रहालय में पांडुलिपियों का इतना अच्छा संग्रह शायद ही कहीं देखने को मिल सके।

अंग्रेजी इतिहास से जुड़ी न जाने कितनी स्मृतियाँ यहाँ वस्त्राभूषणों तथा दूसरी सामग्रियों के रूप में सुरक्षित हैं। स्काटलैंड की रानी 'मेरी' की अंगूठी देख कर हमारे साथी भावुक हो गये थे।

ब्रिटिश म्यूज़ियम का पुस्तकालय संसार का एक बहुत बड़ा पुस्तकालय

है और शोध-कार्य के लिए यहाँ प्रचुर सामग्री सुलभ है।

इस म्यूज़ियम की महत्ता इस बात में भी है कि वैज्ञानिक समाजवादी विचारधारा के प्रवर्तक कॉर्ल मार्क्स ने इसी म्यूज़ियम के वाचनालय में अध्ययन करके मानव-जाति को नई दृष्टि प्रदान की। मार्क्स ने भी इस म्यूज़ियम की महत्ता को स्वीकार किया था और सचमुच ब्रिटेन का यह संग्रहालय ब्रिटिश जाति की कला और संस्कृति के प्रेम का परिचायक है।

यहीं आज डाक्टर अशरफ से भेंट हो गई। वे भारत आने को लालायित हैं, परन्तु पाकिस्तान से लन्दन जाने के कारण दिल्ली पहुँचने में बाधा उत्पन्न हो गई है, और दूर नहीं हो रही है। वे चिन्तित देख पड़े, शायद कुछ आर्थिक कठिनाई भी है। मुस्लिम युग का सामाजिक इतिहास लिखने के लिए ब्रिटिश म्यूज़ियम से सामग्री जमा कर रहे हैं और इच्छा यह है कि भारत जा कर किसी विश्वविद्यालय में अध्यापन का कार्य करें। राजनीति से एक प्रकार से अलग हो गये हैं। परिस्थितियों के शिकार हो जाने के कारण निराशा किसी व्यक्ति को कहाँ ढकेल देती है, डाक्टर अशरफ इसके ज्वलन्त उदाहरण प्रतीत हुए। बड़े सन्ताप के साथ फिर मिलने की बात कह कर मैंने उनसे हाथ मिलाया।

ओम्प्रकाश आर्य के साथ उनके निवास-स्थान पर जा कर आज भी श्रीमती कमल के हाथ का बना स्वादिष्ट भारतीय भोजन किया। यहाँ अधिकांश भारतीय अपना खाना खुद बना लेते हैं। हर घर में गैस के चूल्हे हैं। १०-१२ मिनट में चावल, तरकारी अथवा गोश्त पका सकते हैं (गोश्त पकाने में कुछ समय अधिक लगता है)। डबलरोटी, मक्खन, फल, टमाटर आदि के साथ चावल, तरकारी और दाल तैयार करके १५ मिनट बाद अच्छा भोजन मिल जाता है। गैस के चूल्हे से भोजन बनाने की समस्या हल हो गई है। वहाँ से सब लोग साथ ही हमारे होटल आ गये, जहाँ लन्दन के और भी भारतीय छात्र हमसे मिलने चार बजे आने वाले थे। हिन्दी केन्द्र की स्थापना का आज निर्णय भी हो गया और श्री आर्य ने उद्घाटन-समारोह की सारी तैयारी का दायित्व अपने ऊपर ले लिया।

दिल्ली के श्री चमनलाल से मिलने की बड़ी इच्छा थी। हिन्दी-केन्द्र के सम्बन्ध में जब बातचीत हो रही थी, उसी समय उन्हें वहाँ देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई। श्री चमनलाल यहाँ लन्दन स्कूल ऑफ एकोनामिक्स में श्रमिक-आन्दोलन के विषय में शोध-कार्य कर रहे हैं। ये प्रगतिशील विचारों के बड़े

सरल एवं स्पष्टवादी युवक हैं। वे भी श्री हुजा के फ्लैट में यहाँ रहते हैं।

श्री चमनलाल के साथ करीब पाँच बजे मैं ट्रैफल्गर स्क्वायर में नेल्सन-स्तम्भ देखने गया। २१ अक्तूबर १८०५ को स्पेन के दक्षिणी किनारे पर ट्रैफल्गर अन्तरीप के पास नेल्सन ने फ्रांस और स्पेन के सम्मिलित जहाजी बेड़े पर विजय प्राप्त की थी, किन्तु उसी विजय की घड़ी में नेल्सन की मृत्यु हुई, जिसकी याद में लन्दन में यह ट्रैफल्गर स्क्वायर बना है। इंग्लैंड को अपने नौसेनापति नेल्सन पर गर्व करना स्वाभाविक है, क्योंकि इसी ने नेपोलियन के इंग्लैंड पर हमला करने के सपने को ध्वस्त किया था।

नेल्सन-स्तम्भ जमीन से करीब १८४ फुट ११ इंच ऊँचा है। नेल्सन की मूर्ति १६९ फुट की ऊँचाई पर है और इसी कारण मूर्ति को नीचे से ठीक प्रकार देख सकना सम्भव नहीं है। स्तम्भ के चारों ओर सिंहों की प्रतिमाएँ ब्रिटेन के साम्राज्यवादी चिह्न की प्रतीक हैं। अब एक प्रकार से यह कबूतरों का स्क्वायर हो गया है। यहाँ कुछ लोग कन्धों पर, कुछ उँगलियों पर और कुछ मनचले सर पर कबूतरों को बिठाकर अपना फोटो खिंचवाते हैं। काफी संख्या में यहाँ कबूतर फुदकते रहते हैं। फोटोग्राफरों की फौज यहाँ फोटो खिंचवाने के लिए पर्यटकों का पीछा करती है। छोटे लड़के-लड़कियाँ यहाँ बड़ी प्रसन्न मुद्रा में कबूतरों के साथ खेला-कूदा करते हैं।

आज शाम का खाना मैंने श्री चमनलाल के साथ खाया और वे हाइड पार्क तक हमें छोड़ गये। आज भी कुछ देर तक कार्नर पर विभिन्न दलों के वक्ताओं (सोपबॉक्स ओरेटर्स) के मनोरंजक भाषणों का रस लेता रहा। करीब आठ बजे जब मैं पार्क के अन्दर एक सड़क पर बढ़ा, तो मेरा चलना मुश्किल हो गया। रह-रह कर कानों में अजीब आवाजें पहुँचतीं—"महाशय, १० शिलिंग, २० शिलिंग, १॥ पौंड........।" और जरा आगे बढ़ने पर मैदान में पड़ी बेंचों तथा वृक्षों के किनारे कामुकता का साम्राज्य!!

इस घृणित और क्षोभजनक दृश्य को देख कर मैं मुड़ गया; किन्तु यह भी क्या कम आश्चर्य की बात न थी, कि उसी मार्ग से कारें गुजर रही थीं और बहुतेरे लोग पैदल भी आ-जा रहे थे। चूँकि उसी मार्ग से मैं भी पैदल जा कर अपने होटल शीघ्र पहुँच जाता, इसलिए उधर गया, परन्तु जाने पर आज अपनी आँखों मैंने यह भी देख लिया कि हाइड पार्क सचमुच रात में लन्दन का वेश्यालय बन जाता है!

होटल में आकर बेनीपुरी जी तथा श्री आचार्य से हाइड पार्क का

आँखों देखा वर्णन सुनाया, तो वे जोरों से हँस पड़े, शायद वे मुझसे पहले ही यह दृश्य देख चुके थे।

काश ! इस अच्छे पार्क की यह शर्मनाक परम्परा जल्द खत्म हो जाती !

पाँच दिनों में लंदन के सामाजिक जीवन का जो अनुभव प्राप्त हुआ है, उसका एक दिलचस्प अंग मौसम है। यहाँ परिचित, अर्धपरिचित अथवा अपरिचित से भेंट होते ही बातचीत का सिलसिला शुरू होने पर पहले कानों जो शब्दावली गूँजने लगती है, वह कुछ इस प्रकार की है—"कहिये, मौसम अच्छा है न !" और प्रतिकूल मत होते हुए भी अपने को सुसंस्कृत सिद्ध करने के लिए यह कहना ही पड़ता है—"वाह क्या कहना, कितना अच्छा मौसम है !" वार्तालाप के बीच प्रतिभा एवं विद्वत्ता प्रकट करने के लिए अन्य देशों में लोग साहित्य, संगीत, नृत्य, विज्ञान आदि विषयों पर बातचीत करते हैं, किन्तु यहाँ बातचीत का सिलसिला सदैव मौसम से ही शुरू होता है। समाचारपत्रों में मौसम की खबरों को महत्त्व दिया जाता है। यदि क्षणिक धूप के बाद बूँदाबाँदी हो गई, तो यहाँ के किसी टोरी पत्र में यह भी शीर्षक देखने को मिल जायगा—"स्तालिन ने हमारा मौसम चुरा लिया।" अपने होटल ही का अनुभव यह है कि सुबह चाय लाने वाली वेट्रेस यही कहती है—"कितना अच्छा मौसम है, कितना लुभावना सवेरा !" (चाहे बाहर पानी गिर रहा हो)।

बस में बैठिये, ट्यूब में सफर कीजिए अथवा पब में जाइए—सर्वत्र मौसम से बातचीत शुरू होती है। आसमान में बिजली कड़क रही हो अथवा घनघोर जल-वृष्टि हो रही हो, मगर यदि किसी अंग्रेज़ के मुँह से यह निकल गया—"आज तो मौसम बहुत अच्छा है"—"तो शिष्टाचार के नाते यही कहना होगा—"क्या कमाल का मौसम है।"

अंग्रेज़ जिस प्रकार अंग्रेज़ी का उच्चारण विशेष प्रकार से करता है, टाई की नॉट एक खास ढंग से कसता है और अच्छे सूट के ऊपर पुरानी और फटी बरसाती पहन लेता है, उसी प्रकार मौसम भी उसकी जिंदगी का सचमुच बड़ा दिलचस्प अंग है। किसी परिवार में जाते ही मौसम की चर्चा इस तरह शुरू हो जाती है कि काफी देर तक इसका क्रम जारी रहता है और कभी-कभी ऐसा मालूम होता है कि मौसम का पुराना इतिहास भी अधिकतर लोगों को कण्ठ है। मगर इस चित्र का एक दूसरा पहलू भी है। जितनी भावुकता के साथ अंग्रेज़ मौसम के सलोनेपन का बयान करता है, उतनी ही

तेज़ी के साथ वह बुरे मौसम की चर्चा छिड़ते ही उसकी निंदा भी करने लगता है।

अंग्रेज़-जाति का मौसम-प्रेम भी इस द्वीप का एक अनोखापन है!

चार दिन के भ्रमण के पश्चात् लन्दन के बारे में यह भी सुखद अनुभव मुझे प्राप्त हो गया कि यहाँ स्त्रियाँ पुरुषों से कम काम नहीं करतीं। दफ्तरों में क्लर्क, टाइपिस्ट और सेक्रेटरी के पदों पर स्त्रियाँ ही काम करती हैं। दुकानों अथवा बड़े-बड़े स्टोरों में सामान बेचने का काम भी औरतें ही करती हैं। होटलों और घरों में नौकरानियाँ ये ही हैं। नाई की दुकानों में कई स्थानों पर मर्दों के बाल काटने का काम भी स्त्रियाँ करती हैं। काम के क्षेत्र में यहाँ लिंग-भेद मिट-सा गया है, और स्त्री-पुरुष दोनों मिल कर अपने-अपने घर का कार्य पूरा करते हैं।

---

२६ अप्रैल

(१) धूप के साथ चेहरे भी चमक उठते हैं!
(२) विक्टोरिया ऐण्ड अलबर्ट म्यूज़ियम
(३) "सभी गोरे मलान नहीं हैं!"

आज 'नीर भरी बदरी' आकाश में नहीं घिरी थी। लन्दन में धूप खिली थी। होटल से घूमने के लिए जब बाहर निकला, तो देखा—युवक-युवतियाँ, प्रौढ़-प्रौढ़ाएँ सायकिलों पर सवार 'पिकनिक' के लिए चली जा रही थीं। आज एक तो रविवार और दूसरे चमाचम धूप! लन्दन वाले बहुत खुश थे। जिस प्रकार निदाघ में आर्द्रा नक्षत्र की बूँदें हमारे देश में उल्लास की भावना पैदा करती हैं, उसी प्रकार आर्द्र जलवायु वाले ब्रिटेन में धूप चमकने के साथ लोगों के चेहरे भी चमक उठते हैं और भावनाएँ रंगीन हो उठती हैं। आज (रविवार) यहाँ सभी दुकानें बन्द हैं, और लन्दन ही क्या, सारे ब्रिटेन में शनिवार की दोपहर को दुकानें बन्द होती हैं तो वे सोमवार को ही खुलती हैं। यों तो रोज ही यहाँ की दुकानें शाम को छः बजे तक बन्द हो जाती हैं, किन्तु दुकानों के शो-केसों में तेज पावर के बिजली के लट्टू लगे रहते हैं और इनसे रोशनी छन-छन कर बाहर निकलती है, जिससे सड़कों पर ग्यारह बजे रात तक भी निस्तब्धता का वातावरण नहीं पैदा होने पाता।

हम अभी बाहर घूम ही रहे थे कि एक बेल्जियम-निवासी से भेंट हो गई और उससे कुछ देर तक बातें होती रहीं। यहाँ के शुष्क, किन्तु ईमानदार-जीवन की उसने बड़ी सराहना की। सचमुच लन्दन के शासकों और लोगों में बड़ा अन्तर है, किन्तु इसे इस बात की शिकायत थी कि छुट्टी के दिन भी लन्दन में रंगीन कपड़ा पहने हुए लोग नहीं दिखाई पड़ते। उसके साथ एक और पर्यटक था, जिसने कहा—"दिल भी है कि रंगीन कपड़ा ही पहनें।" किन्तु इस सादगी और गम्भीरता में ही ब्रिटेन का महत्त्व निहित है।

लन्दन पुलिस की कर्तव्यपरायणता के सम्बन्ध में जो कुछ सुन रखा था, उसी के अनुरूप उसका आचरण देख कर बड़ी खुशी हुई। सचमुच

लन्दन पुलिस कितनी शिष्ट, ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ है। लन्दन के शासकों ने हमारे देश में जो भ्रष्टाचारी पुलिस-परम्परा कायम की थी, उसे हम आज भी दूर नहीं कर पाये हैं। पहले दिन ही श्री बेनीपुरी की टोपी जेब से खिसक कर जब गिर गई, तो किस सतर्कता से पुलिस के सिपाही ने टोपी उठाने का शिष्ट संकेत किया। रास्ता पूछने पर ये बड़े धैर्य से मधुर भाषा में लोगों को गन्तव्य स्थान का पता बताते हैं, और वे छःफुटे पुलिस के जवान बहुत स्वस्थ और अनुशासनप्रिय हैं।

आज भी हुजा परिवार और चमनलाल के साथ हमें भोजन करना था। लंच के बाद श्री हुजा और चमनलाल के साथ मैं 'विक्टोरिया एंड अलबर्ट म्यूज़ियम' देखने रवाना हुआ। १८३७ में 'नेशनल स्कूल आफ डिज़ाइन' के रूप में अलंकरण-शैली की कला के प्रदर्शन के लिए जिस संस्था का जन्म हुआ था, वही १८५२ में संग्रहालय के रूप में जनता के लिए खुल गयी। शुरू में इस संग्रहालय का मुख्य उद्देश्य औद्योगिक-कला का प्रदर्शन था, किन्तु आज औद्योगिक कला के साथ ही मूर्ति और शिल्पकला की बहुमूल्य सामग्री यहाँ सुरक्षित है।

इसी म्यूज़ियम के भारतीय-कला-कक्ष में अपने देश की अनेक अनूठी सांस्कृतिक निधियाँ तो देखने को मिलीं ही, साथ ही अपनी औद्योगिक-कला के भी बड़े आकर्षक नमूने यहाँ प्रदर्शित मिले। भारतीय-कला-कक्ष में संग्रहीत चीज़ें पहले ईस्ट इंडिया कम्पनी के प्राइवेट संग्रहालय में थीं, किन्तु कम्पनी का शासन समाप्त होने के पश्चात् १८५८ में जब 'इंडिया आफिस' का निर्माण हुआ, तो भारतीय कलाकृतियाँ 'ब्रिटिश म्यूज़ियम' और 'विक्टोरिया एंड अलबर्ट म्यूज़ियम' में बाँट दी गईं।

इस संग्रहालय में आठ विभाग हैं—(१) स्थापत्य एवं मूर्तिकला, (२) चीनी मिट्टी तथा काली मिट्टी के कई प्रकार के अलंकृत बर्तन, (३) नक्काशी की चीज़ें, (४) चित्र और डिज़ाइनें, (५) पुस्तकों की छपाई के विविध रूप और जिल्दसाज़ी, (६) धातुकला, (७) चित्रकला, (८) काष्ठकला और टेपेस्ट्रीज़।

चीनी मूर्तियों तथा अन्य कलात्मक वस्तुओं का यहाँ भी अच्छा संग्रह है। ईरानी कालीनों तथा दीवारों के पर्दों पर कढ़े हुए बेल-बूटे और भारतीय चादरें औद्योगिक कला की दृष्टि से मुझे अप्रतिम लगीं। रंगों की शोखी से जहाँ इन देशों की सजीवता अभिव्यक्त होती, वहीं विभिन्न रंगों के तागों के

मेलजोल से कई डिज़ाइनों की चादरें एवं कालीनें इन पूर्वी देशों की सौंदर्य-मूलक प्रवृत्ति की द्योतक थीं। यद्यपि चित्रों के लिए लन्दन की 'नेशनल गैलरी' विश्व में प्रसिद्ध है (अभी तक मैं उसे नहीं देख पाया हूँ) परन्तु इस संग्रहालय के कुछ चित्र मुझे बहुत पसन्द आये। सुप्रसिद्ध शिल्पी रेफेल की कलाकृतियाँ यहाँ मुझे देखने को मिलीं। टर्नर और जार्ज कान्सटेबल के प्राकृतिक दृश्यों के कुछ चित्र भी इतने अच्छे थे कि उनके रंगों की रुचिर गहराई में मन डूब गया।

फाँसी पर चढ़ते समय चार्ल्स प्रथम ने अपनी जो अंगूठी पादरी लुक्जम को दी थी, वह भी यहाँ प्रदर्शित है। उसे देख कर स्वर्णकार की कला परखने के बजाय निरंकुश नरेश के कारनामे स्मरण हो आते हैं। ब्रिटेन के कई नरेशों की पोशाकें तथा अन्य चीज़ें भी यहाँ संगृहीत हैं।

काष्ठशिल्पी लकड़ी पर बड़े चित्रकारों की अनूठी कलाकृतियाँ खोद लेने में कितनी सफलता प्राप्त कर सकते हैं—इसके उत्कृष्ट नमूने मैंने यहाँ देखे। यह कला भी अति प्राचीन काल से प्रचलित है और हमारे देश के मन्दिरों के खम्भों आदि पर बेल-बूटों के अतिरिक्त देवी-देवताओं, मनुष्यों एवं पशु-पक्षियों की आकृतियाँ खोदने में भारतीय काष्ठ-शिल्पियों को सराहनीय सफलता प्राप्त है।

इस म्यूज़ियम के भारतीय कला-कक्ष में राजपूत और मुगल-शैली के चित्रों का अच्छा संग्रह है। ब्रिटेन और यूरोप के दर्शक बड़ी तल्लीनता से भारतीय चित्रों को देख रहे थे।

चित्रों के अतिरिक्त यहाँ हमारी मूर्तिकला के उत्कृष्ट नमूने भी अंग्रेज़ उठा लाये हैं। भारतीय-मूर्तिकला के इतिहास में 'कुषाण-सातवाहनयुग' का अपना विशिष्ट स्थान है और इस शैली की कई भव्य मूर्तियाँ यहाँ देखने को मिलीं। चित्तीदार लाल पत्थर पर यक्षिणी की एक प्रतिमा देख कर कालिदास की 'कल्पना' साकार हो उठी। मथुरा से यह मूर्ति यहाँ लायी गई है। शृङ्गार-रस प्रधान इस शैली की मूर्तियों के उभरे उरोजों और क्षीण कटि प्रदेश को देखकर पश्चिम की रमणियाँ इतनी मुग्ध हो रही थीं कि वे हटने का नाम ही न लेती थीं। 'सँपेरों और जादूगरों' के देश की कला से यहाँ न जाने कितने देशों के पर्यटकों को आनन्द प्राप्त होता है।

गान्धार-मूर्ति-शैली के भी कुछ उत्कृष्ट नमूने यहाँ हैं। काले स्लेट-पत्थर अथवा चूने-मसाले की बनी बुद्ध की प्रतिमाएँ निश्चय ही बहुत आकर्षक हैं।

एक शिल्पी ने जब यह कहा कि 'गान्धार-शैली भारतीय मूर्ति कला से सर्वथा भिन्न यूनानी मूर्ति-कला की अनुकृति है' तो मुझे याद आया, कि वीसेंट स्मिथ और सर जॉन मार्शल के विचारों से प्रभावित हो कर ही यह शिल्पी गलत बात को सही मान बैठा है। मैंने उसे डाक्टर काशीप्रसाद जायसवाल के विचारों को बताते हुए कहा कि गान्धार-शैली वास्तव में भारतीय मूर्तिकला की ही एक विशिष्ट शैली है और गान्धार-शैली की मूर्तियों की तथा यूनानी मूर्तियों की गढ़न में बड़ा अन्तर है।

चूने-मसाले से बनी 'बुद्ध-मस्तक' की एक बड़ी लुभावनी प्रतिमा इस म्यूज़ियम में है। इस प्रतिमा की अनूठी गढ़न और आँखों तथा होठों से भावों की अभिव्यक्ति में मूर्तिकार को इतनी बड़ी सफलता मिली है कि युग-युग तक इस भावुक मुखाकृति पर लोग निछावर होते रहेंगे।

हनूमान और पार्वती की कांस्य-प्रतिमाएँ भी यहाँ हैं, जो अपनी शैली की अनूठी कृतियाँ हैं।

नटराज (शंकर) की कांस्य-प्रतिमा देख कर एक यूरोपीय पर्यटक ने जब मुझसे मूर्ति द्वारा अभिव्यक्त मुद्रा की तात्विक व्याख्या जानने की इच्छा प्रकट की, तो उस समय अपने देश की इस भावप्रवण कला पर मुझे निश्चय ही गर्व हुआ। कला के प्रति अनुराग होने के कारण इस मुद्रा के सम्बन्ध में जो कुछ मुझे ज्ञात था, उसे उक्त पर्यटक को बताते हुए मैंने कहा—"भारत के कुछ प्राचीन दार्शनिकों के अनुसार—संहार में ही निर्माण के बीज निहित हैं और इसीलिए नृत्य में विराट संसृति की कल्पना ही इस मुद्रा का आधार है।" इसके बाद वह पर्यटक 'ताण्डव-नृत्य' की मुद्रा में शंकर की इस भव्य प्रतिमा को देख कर बड़ा प्रभावित हुआ। ब्रिटिश म्यूज़ियम और इस संग्रहालय में अपनी कलाकृतियों को देख कर हर्ष और विषाद की मिश्रित भावना पैदा हुई—यह इस कारण कि जहाँ हजारों मील दूर इस नगर में न जाने कितने देशों के पर्यटक भारतीय मूर्तिकला और चित्रकला के इन उत्कृष्ट नमूनों को देख कर हमारी सांस्कृतिक देन की सराहना करते हैं, वहीं इनके लुट जाने से हमारे संग्रहालय अब इनसे वंचित रहेंगे।

आज उषारानी, भूपेन्द्र और चमनलाल के साथ मैंने सिनेमा देखा। उसके बाद अकेले लन्दन के अनजान रास्तों पर टहलता रहा। यहाँ अंग्रेज़ी होटलों में साढ़े नौ बजे रात के बाद भोजन नहीं मिलता, इसलिए अपने होटल जाने के पूर्व 'शफी' में मैंने खाना खाया।

लंदन का सुप्रसिद्ध ट्रैफलगर स्क्वायर—नौसेनापति नेलसन का स्मारक। नेलसन ने १८०५ में स्पेन के दक्षिणी किनारे पर ट्रैफलगर अन्तरीप के पास फ्रांस और स्पेन के सम्मिलित जहाजी बेड़े को पराजित किया था और उसी विजय की घड़ी में उसकी मृत्यु हो गई थी।

२८ अप्रैल की डायरी, पृ० ४२

'शफी' में भोजन करते समय अंग्रेजी खाने के सम्बन्ध में दो अंग्रेज युवकों से बातें होती रहीं । उन्होंने इसे स्वीकार किया कि ब्रिटिश नागरिकों को नारङ्गी के आकार की (रङ्ग की नहीं) छोटी एक रोटी, साग-सब्जी, आलू, गोभी और कुछ गोश्त से पेट भरना पड़ता है । ब्रिटेन में आवश्यकता से लगभग ७० प्रतिशत कम गल्ला पैदा होता है और गोश्त भी बाहर से मँगाना पड़ता है । इस स्थिति में आत्मनिर्भरता का लक्ष्य पूरा करने के लिए साग-सब्जी ने अन्न का स्थान ग्रहण कर लिया है, परन्तु इससे लोगों के स्वास्थ्य पर कोई बुरा असर नहीं पड़ रहा है । मैंने भी देखा कि यहाँ इसी भोजन पर आश्रित रहने वाले ब्रिटिश नागरिक स्वस्थ एवं प्रसन्न हैं । एक छोटी रोटी, सूप, कुछ साग-सब्जी, गोश्त और बाद में कोई मीठी चीज़ (पुडिंग, आइसक्रीम अथवा कोई अन्य चीज़) तथा काफी पी कर लोग तन्दुरुस्त हैं । सवेरे जलपान, दोपहर को लगभग एक बजे भोजन, शाम को चाय और ६॥ बजे से ६॥ रात के बीच भोजन करने की प्रथा यहाँ है, मगर अधिकांश मजदूरों को जलपान के समय चाय या काफी और टोस्ट के अलावे दूसरी कोई चीज सुलभ नहीं है ।

ब्रिटिश महोत्सव के कारण इस समय लन्दन में बड़ी रौनक है । जहाँ बारह बजे तक पिकाडिली तथा कुछ अन्य क्षेत्रों को छोड़ कर शेष भागों में निस्तब्धता छा जाती थी, वहाँ अब कई भागों में देर तक चहल-पहल बनी रहत है । आज एक ऐसी श्वेत युवती से भेंट हो गई, जो दक्षिणी अफ्रीका में मलानशाही नीति के विरुद्ध भारतीय सत्याग्रहियों का साथ दे चुकी है । उससे बहुत देर तक दक्षिणी अफ्रीका के सम्बन्ध में बातें होती रहीं । उसने मुक्त कंठ से पादरी स्कॉट के कार्यों की प्रशंसा की । चलते समय उसने हँसते हुए कहा—"सभी गोरे मलान नहीं हैं ।"

और मैं भी यही सोचता हूँ—निश्चय ही सभी गोरे मलान नहीं हैं ।

---

३० अप्रैल

(१) अफ्रीकी यात्रियों से बातचीत
(२) बकिंघम पैलेस
(३) 'बो स्ट्रीट' के मजिस्ट्रेट की अदालत
(४) 'ओवरसीज़ लीग'
(५) कलाकारों की 'गुफा'

आज नाश्ते के समय 'डायनिंग हाल' (भोजनालय) में अफ्रीका के दो मूलवासी एक श्वेत यात्री के साथ एक ही टेबुल पर जलपान कर रहे थे और तीनों जिस मैत्रीपूर्ण ढंग से बातचीत भी करते जा रहे थे, उसे कुछ श्वेत यात्री विचित्र मुद्रा में देख रहे थे। जिन अफ्रीकावासियों को कुछ प्रतिक्रियावादी लेखकों और राजनीतिज्ञों ने 'हब्शी' नाम से पुकारना शुरू किया है, उनकी जाति के इन दो युवकों से बातचीत करने के बाद मेरी यह धारणा पुष्ट हो गई कि यदि उस महाद्वीप में शोषण खत्म हो जाय तथा उन्हें शिक्षा और विकास का अवसर मिले, तो विद्या के क्षेत्र में वे किसी से पीछे न रहेंगे। लन्दन में और भी कुछ अफ्रीकी यात्रियों से जब बातचीत हुई तथा जितनी अच्छी अंग्रेज़ी वे बोले उससे भी मुझे यह विश्वास हुआ कि मौका मिलते ही वे छलाँग मार कर प्रगति की दिशा में आगे बढ़ जायँगे।

अफ्रीकी यात्रियों में 'सिरेत्सेखामा-काण्ड' को ले कर एटली-सरकार की बड़ी आलोचना होती और एक अफ्रीकी ने मुझसे कहा—"हमें यह आशा न थी कि मलान-पंथियों को खुश करने के लिए ब्रिटेन की मज़दूर सरकार भी रंगभेद की नीति का समर्थन करेगी। यह कितने आश्चर्य की बात है कि एक ओर तो ब्रिटिश लेबर पार्टी संयुक्त राष्ट्र के मानव-अधिकार-घोषणापत्र का अनुमोदन करती है तथा आकवे जैसे राजनीतिज्ञ रंगभेद का तीव्र विरोध करते हैं और दूसरी ओर सिरेत्सेखामा को बामाग्वातो आदिवासियों के चीफ (सरदार) होने से इसलिए रोक दिया गया है, कि उन्होंने एक गोरी महिला से शादी कर ली है और उन्हें पाँच साल के लिए देशनिकाले की सजा भी

दे दी गई है ।" सचमुच डाक्टर मलान को खुश करने के लिए ही एटली सरकार ने सिरेत्सेखामा के खिलाफ कार्रवाई की, क्योंकि वेचुवानालैंड दक्षिणी अफ्रीका से लगा हुआ है और मलानवादी इस बात से बहुत क्षुभित थे कि सिरेत्सेखामा ने कैसे एक गोरी लड़की 'रुथ' (लन्दन की एक टाइपिस्ट गर्ल) से शादी कर ली !

आज ही मुझे यह भी ज्ञात हुआ कि जिस ब्रिटिश साम्राज्य में अंग्रेज़ लेखकों के कथनानुसार कभी सूर्य नहीं डूबता था, उसी ब्रिटेन में अभी खाना-बदोशों की संख्या तीस हज़ार है । ये प्रायः अशिक्षित तथा गरीब गोरे आदिवासी हैं । इनकी रहन-सहन बहुत शोचनीय है । यह सूचना पा कर इस सम्बन्ध में और भी कुछ जानने की प्रबल आकांक्षा हुई, किन्तु आज इस विषय में और जानकारी प्राप्त न हो सकी ।

सवेरे जब हमारी कार ब्रिटिश नरेश के निवासस्थान 'बकिंघम पैलेस' पहुँची, तो वहाँ सिंहद्वार के पास ही काफी भीड़ जमा थी और लोग बड़ी उत्सुकता के साथ ड्यूटी बदलने के समय घुड़सवार रक्षकों के आने-जाने का क्रम देख रहे थे । सवेरे रोज यहाँ रक्षकों की ड्यूटी लगभग १०-१०॥ बजे बदलती है और उस समय उनकी परम्परागत भड़कीली पोशाकें तथा अच्छे घोड़े दर्शकों को आकृष्ट कर लेते हैं ।

सर्वप्रथम रानी विक्टोरिया ने १८३७ में इस महल में रहना शुरू किया था, और तब से ब्रिटिश-नरेशों का यही निवास-स्थान हो गया है । इस महल का निर्माण १७०३ में हुआ था, परन्तु तब से इसमें काफी परिवर्तन हुआ है । जेम्स प्रथम ने रेशम-उद्योग के विकास के लिए जहाँ शहतूत के पेड़ लगवाये थे वहीं अब यह महल खड़ा है । हमें बताया गया कि उन शहतूत के वृक्षों में से एक अभी 'बकिंघम-पैलेस' के बाग में है । बकिंघम के ड्यूक जान शेफिल्ड से जार्ज तृतीय ने इसे खरीदा था, इसलिए जार्ज चतुर्थ के राज्य-काल में यह 'बकिंघम-महल' नाम से प्रसिद्ध हुआ । दूसरे महायुद्ध में जर्मन बम-वर्षकों ने इसे भी ध्वस्त करने की कोशिश की थी, परन्तु वे असफल रहे । स्थापत्य-कला की दृष्टि से इसमें कोई विशेषता नहीं है ।

सूचना-विभाग द्वारा निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आज यहाँ की अदालती दुनिया की झलक पाने के लिए हम 'बो स्ट्रीट' गये । ब्रिटेन में 'बो स्ट्रीट' के मजिस्ट्रेट की अदालत बहुत प्रसिद्ध है और इसका इतिहास सत्रहवीं सदी के अन्त से शुरू होता है । पहले एक अधिकारी ने ब्रिटेन की

न्याय-व्यवस्था तथा अदालती प्रबन्ध का संक्षिप्त परिचय दिया। हमारे देश की न्याय-व्यवस्था ब्रिटेन से काफी मिलती-जुलती है, इसलिए इस सम्बन्ध में कोई विशेष बात मालूम भी क्या पड़ती!

ब्रिटेन में प्रचलित न्याय-व्यवस्था से आम जनता कहाँ तक सन्तुष्ट है, इसके बारे में मैं अपने अनुभव के आधार पर कुछ नहीं कह सकता, किन्तु लन्दन के कुछ मध्यमवर्गीय व्यक्तियों ने मुझसे यह कहा कि साधारणतः यहाँ के लोग प्रचलित न्याय-व्यवस्था से सन्तुष्ट हैं, क्योंकि न्याय प्राप्त करने में कोई कठिनाई नहीं है और खर्च अधिक नहीं पड़ता।

ब्रिटिश पार्लमेंट की लार्ड सभा यहाँ की अपीलें सुनने वाली सब से बड़ी अदालत है। इस सभा के स्पीकर, जिन्हें लार्ड चांसलर कहते हैं, राज्य के सबसे बड़े न्याय-अधिकारी हैं। इस देश में दीवानी के मामलों में लार्ड चांसलर उन सभी प्रशासकीय कार्यों को पूरा करते हैं, जिन्हें अन्य प्रजातंत्रवादी देशों में न्याय-मंत्री करते हैं। फौजदारी के मामलों में यही कार्य यहाँ के गृह मंत्री करते हैं। प्रधानमंत्री अथवा लार्ड चांसलर के परामर्श से नरेश अनुभवी बैरिस्टरों को जजों के पद पर नियुक्त करते हैं। छोटी अदालतों में जो मजिस्ट्रेट नियुक्त होते हैं, वे भी अनुभवी बैरिस्टर होते हैं और नियमानुसार वे ही मजिस्ट्रेट के पद पर नियुक्त हो सकते हैं, जिन्हें सात वर्ष की बैरिस्टरी का अनुभव हो।

एक दिलचस्प बात यह है कि मजिस्ट्रेट की अदालतों को यहाँ 'पुलिस-कोर्ट' कहते हैं और लन्दन टेलीफोन डायरेक्टरी में इनका यही नाम है। यह भी एक अनोखी बात है। इन अदालतों के प्रशासनीय मामलों से पुलिस का कोई सम्बन्ध नहीं, मगर चूँकि इन अदालतों में जो मामले आते हैं, उनमें से अधिकांश का सम्बन्ध पुलिस से रहता है, इसलिए इन्हें लोग 'पुलिस अदालतें' कहने लगे थे। वही प्रथा आज भी है।

इस अदालत के इतिहास के सम्बन्ध में एक मनोरंजक बात यह मालूम हुई कि अठारहवीं सदी के उत्तरार्ध में सर जॉन नामक मजिस्ट्रेट, जिनकी जवानी में ही आँखें जाती रहीं थीं और जिन्हें लोग 'ब्लाइंड बीक' (इंगलैंड में बोलचाल की भाषा में मजिस्ट्रेट के लिए 'बीक' शब्द प्रयुक्त होता है) कहते थे, तीन हज़ार अपराधियों को उनकी आवाज़ से पहचान लेते थे।

इसी सुप्रसिद्ध अदालत में आज हम लोगों ने देखा कि करीब चालीस मिनट में छः-सात मुकदमों का फैसला हुआ। जिस प्रकार अभियुक्त आरोपों

को स्वीकार कर मुकदमों का शीघ्र निर्णय करने में अदालत को मदद पहुँचा रहे थे, उससे भी ब्रिटिश नागरिकों के चरित्र का आभास मिलता है। सर्व प्रथम वेश्या-वृत्ति के आरोपों से सम्बन्धित मामले ही अधिक पेश हुए। पेशकार उनका जुर्म बतलाता और औरतें यह स्वीकार कर लेतीं कि शराब पी कर हमने पिकाडिली सर्कस में राहगीरों को छेड़ा, टैक्सी के पीछे धम-धम की आवाज़ की अथवा नशे में आम सड़क पर अभद्र व्यवहार किया। मजिस्ट्रेट ने उन पर चार रुपये से ले कर तेरह-चौदह रुपये तक जुर्माना किया और जुर्माने की रकम अदा करके वे मुक्त हो गईं। एक व्यक्ति के खिलाफ यह आरोप था कि उसने सिनेमाघर में बैठी एक युवती की जाँघ पर हाथ फेरने की कोशिश की। उसने अभियोग स्वीकार कर लिया और उसे भी जुर्माने की सज़ा हुई। चोरी का एक सनसनीखेज मुकदमा पेश हुआ। अभियुक्तों ने अभियोग स्वीकार करने से इनकार किया, तो उनके विरुद्ध लगाये गये आरोपों की सूची पढ़ी जाने लगी। तब हम लोग दूसरे कार्यक्रम में शामिल होने के लिए वहाँ से उठ आये।

यहाँ अदालत में बाहर भीड़-भाड़ न थी और अंदर, जैसे अपने यहाँ हाईकोर्ट में पृष्ठ भाग में दर्शकों के बैठने के लिए स्थान होता है, वैसे यहाँ भी मजिस्ट्रेट की अदालत में दर्शकों के बैठने का प्रबन्ध है, जहाँ काफी दर्शक बैठे हुए थे। पत्रकारों के लिए एक ओर अलग प्रबन्ध था। मुकदमों की सुनवाई के समय दर्शकों में फुसफुस बातचीत जारी थी और कभी-कभी अभियुक्तों के मनोरंजक उत्तर से दबे दबाये कहकहे भी लग जाते, मगर मजिस्ट्रेट की नजर उठते ही अदालत में फिर सन्नाटा छा जाता।

'ओवरसीज़ लीग' की ओर से हम लोग लंच पर आमंत्रित थे, अतः 'बो स्ट्रीट' से सीधे 'सेंट जेम्स स्ट्रीट' रवाना हुए, जहाँ ओवरसीज़ लीग का बड़ा भवन है। यह टोडियों की संस्था है। इसकी शाखाएँ ब्रिटिश साम्राज्य एवं राष्ट्रमण्डल के देशों में फैली हुई हैं। इस संस्था के मुख्य संरक्षक ब्रिटिश नरेश और इस समय इसके अध्यक्ष लार्ड माउंटबेटन हैं। जितने दिन हमें लन्दन में रहना था, उस अवधि के लिए इस क्लब ने हमें निःशुल्क सदस्यता प्रदान की थी। इसके भारत-पाकिस्तान हाल में, जिसे बनाने के लिए भारत के राजाओं और नवाबों ने काफी धन दिया है, हमारे खाने का प्रबन्ध किया गया था। लंच में ओवरसीज़ लीग के डायरेक्टर-जनरल एयर वाइस मार्शल हेण्डरसन, मंत्री फिलिप क्रॉशा, डेवलपमेंट सेक्रेटरी ब्रिगेडियर बी० जी० स्टोक्स,

जनसम्पर्क अफसर श्री टी० आपरेमोंगर और इस संस्था की केन्द्रीय कौंसिल की सदस्याएँ—लेडी ब्रेबोर्न, लेडी स्टैफैन्सन तथा कर्नल हेमंड के अतिरिक्त और भी कुछ सदस्य-सदस्याएँ उपस्थित थीं।

भोजन के समय अन्य बातों के अतिरिक्त मुख्य रूप से कश्मीर पर बातें होती रहीं। यह देख कर आश्चर्य हुआ कि 'फूट डालो और शासन करो' जिस देश के शासकों की नीति रही है, वे आज भी भारत के प्रश्न पर उसी दृष्टिकोण से विचार प्रकट करते हुए यह कह रहे थे, कि कश्मीर में मुसलमानों की संख्या अधिक है, इसलिए वह पाकिस्तान को ही मिलना चाहिए। अजीब है यह तर्क! टोरी परम्परा के अधिकारियों को कौन समझावे कि भारत फिरका-परस्ती की भावना से मुक्त हो कर न्याय और प्रजातन्त्रवादी दृष्टिकोण से कश्मीर को अपना अविच्छिन्न अंग समझता है। मैंने कश्मीर सम्बन्धी भारतीय दृष्टिकोण उन्हें समझाया, मगर वे इसे समझ कर भी न समझने का स्वाँग रच रहे थे। वैधानिकता का ढोंग रचनेवाले अंग्रेज़ जब कश्मीर के मामले में पाकिस्तान के अवैध रुख का समर्थन करते हैं तो उनका पाखण्डी रूप बिलकुल स्पष्ट हो जाता है।

भोजन के बाद इस संस्था के विभिन्न विभागों को देखते समय एक अवकाशप्राप्त फौजी अधिकारी ने मुझसे पूछा—"आपका देश कश्मीर में लोकमत-संग्रह के लिए क्यों नहीं तैयार होता?" मैंने कहा—"कौन कहता है कि हम इसके लिए तैयार नहीं हैं? वैधानिक रीति से कश्मीर के भारत में शामिल हो जाने के बाद भी भारत स्पष्ट शब्दों में यह घोषणा कर चुका है कि कश्मीरी जनता ही कश्मीर के भविष्य का निर्णय करेगी। पर लोकमत-संग्रह के लिए यह आवश्यक है कि आक्रमणकारियों की फौजें रियासत के हर भाग से हटा ली जायँ, ताकि निडर हो कर जनता अपना मत प्रकट कर सके—और यहीं बाहरी शक्तियों के प्रश्रय से पाकिस्तान अपनी बन्दूक के साये के नीचे लोकमत-संग्रह कराने के लिए आतुर है।' इसके बाद अपने तर्कों में कोई बल न देख उक्त फौजी अधिकारी ने यह कहना शुरू किया—"...भारत-पाकिस्तान में मैत्री का सम्बन्ध कायम रहना चाहिए, क्योंकि पड़ोसी देशों में मनोमालिन्य की भावना रहने से दोनों का नुकसान होता है।" मैंने कहा—"भारत की जनता और सरकार—दोनों ही पाकिस्तान से मैत्रीपूर्ण संबंध कायम रखने के लिए धैर्य से काम कर रही हैं, परन्तु पाकिस्तान के शासक बाहरी शक्तियों के सहारे साम्प्रदायिकतावादी नीति अपना कर अपनी जनता को मूर्ख

बनाने के साथ ही हमारे साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित होने में बाधा पहुँचा रहे हैं।" इसके बाद वे राजनीति की बात छोड़ कर मौसम की चर्चा करने लगे।

सायंकाल हम ब्रिटिश सूचना कार्यालय का फिल्म-विभाग देखने गये। वहाँ हमें कई डाक्यूमेंटरी फिल्में दिखाई गईं। इस विभाग के अधिकारी श्री जोर्डन स्मिथ ने डाक्यूमेंटरी फिल्मों के विषय में संक्षिप्त विवरण दिया। ब्रिटिश-जीवन-सम्बन्धी कुछ फिल्में हमें बहुत पसन्द आईं। इसके बाद आज के सरकारी कार्यक्रम से हम मुक्त हुए।

बेनीपुरी जी ने मुझसे सिगरेट खरीदनेवाने के लिए एक दुकान में चलने को कहा और वहाँ आज पुनः जब उन्होंने छोटे-छोटे ब्रिटिश सिक्कों से भरी हथेली सिगरेट लेने के बाद दुकान में काम करनेवाली लड़की के सामने फैला दी, तो वह आश्चर्य से उनका मुँह देखने लगी। मुझे हँसी आ रही थी किन्तु संयत हो कर मैंने कहा—"आप इसमें से सिगरेट की कीमत ले लें, अभी मेरे साथी आपके सिक्कों को नहीं पहचान पाते।" इस पर वह हँस पड़ी। सिगरेट की कीमत ले कर उसने हमें 'धन्यवाद' दिया और हमने उसे!! बाहर आ कर बेनीपुरी जी ने कहा—"प्यारे भाइयो, बड़ी भली हैं यहाँ की लड़कियाँ!"

रात में कुछ परिचितों के साथ जब हम घूमने निकले, तो बंद दुकानों के 'शो केस' के सामने लोगों की भीड़ देख कर यह जानने की इच्छा पैदा हुई कि इतनी दिलचस्पी के साथ यहाँ के स्त्री-पुरुष शो केस में प्रदर्शित चीजें क्यों देखते हैं। मुझे बताया गया कि शाम को दुकानें बन्द हो जाती हैं और रविवार को भी बाजार बन्द रहते हैं—इसलिए इस समय चीजों की कीमतें देख-देख कर यहाँ के लोग अपने पॉकेट के अनुसार यह तय कर लेते हैं कि कहाँ से कौन चीज़ खरीदनी है और दिन में उन्हें लंच की छुट्टी के समय या किसी अन्य अवकाश के समय खरीद लेते हैं।

मैंने आज प्रथम बार यहाँ 'न्यूज़ थियेटर' भी देखा, जहाँ सबेरे ग्यारह बजे से रात के ग्यारह बजे तक सूचना-सम्बन्धी (डाक्यूमेंटरी फिल्म्स) फिल्में दिखायी जाती हैं। यहाँ उक्त अवधि के भीतर हाल में जब मनचाहे जाइये और जब मन हो उठ कर चले आइए।

न्यूज़ थियेटर देखने के बाद जब लगभग ग्यारह बजे रात को हम पिकाडिली सर्कस पहुँचे, तो वहाँ प्रायः हर दुकान के 'शो केस' के सामने कुछ औरतें खड़ी थीं, जो पुरुषों को छेड़छाड़ रही थीं। एक अंग्रेज ने बताया—'ये औरतें लन्दन के सामाजिक जीवन की कालिमा हैं।" सत्य क्या है, मैं नहीं

कह सकता, पर मुझे यह भी बताया गया कि इन रहस्यमय वारांगनाओं में कुछ ऐसी लड़कियाँ भी होती हैं, जो दिन में विभिन्न व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में काम करती हैं और खर्च पूरा न पड़ने के कारण इस कर्दम में फँस गई हैं। पता नहीं पिकाडिली सर्कस पर लन्दन को क्यों नाज़ है? रात को ग्यारह बजे के बाद यहाँ का जो रूप दिखाई पड़ता है, वह अत्यन्त कुत्सित है। और इस कष्टदायक दृश्य को देख कर कौन इसे स्वीकार न करेगा कि साम्राज्यवादी लूट के बाद भी यहाँ की आम जनता गरीब और दुःखी है। अन्यथा, शरीर बेचने के लिए राज-मार्ग पर पर्यटकों का पीछा न किया जाता !!!

लन्दन के नैश-जीवन का एक और अनुभव मुझे प्राप्त हुआ। मुख्य बाजारों से दूर—एक शान्त क्षेत्र में हम उन भूमिगत कहवागृहों में गये, जहाँ मूर्तिकारों के मॉडल रात के सन्नाटे में जमा होते हैं। इन कहवागृहों में लन्दन व यूरोप के मूर्तिकार एवं चित्रकार अपनी-अपनी रुचि के मॉडल खोजा करते हैं। चित्रकारों की 'कल्पना' का आधार बनने वाली स्त्रियाँ एकान्त में नग्न हो कर अपने शरीर की गढ़न का प्रदर्शन करती हैं और चित्रकार या मूर्तिकार गढ़न पसन्द आने पर एक निश्चित रकम दे कर मूर्ति या चित्र के लिए उन्हें अपना 'मॉडल' बना लेते हैं। यहाँ परियों का अच्छा जमघट लगता है। एक फ्रांसीसी कलाकार ने शरबती आँखों वाली एक तन्वी को देख कर भावुकतापूर्ण शब्दों में जो कुछ कहा, उसे सुनकर मुझे 'मीर' की उक्ति याद आ गई :—

"उनकी आँखों की एक गुलाबी से,
उम्र भर हम रहे शराबी से।"

इस क्षेत्र के कई कहवागृहों में घूमने के बाद जब हम शिल्पियों की अद्भुत 'गुफा' से बाहर निकले, तो सड़क पर काफी सन्नाटा था। मैं इस निस्तब्धता से कुछ घबरा भी गया, परन्तु शीघ्र ही टैक्सी मिल गई और जब मैं अपने होटल पहुँच गया, तब मनःस्थिति ठीक हुई।

लन्दन के जीवन के सम्बन्ध में मीठे और कड़वे—सब प्रकार के अनुभव प्राप्त होते जा रहे हैं। जो कुछ देख रहा हूँ, उसे लिखता जा रहा हूँ। संकोच के कारण अनुभवों को व्यक्त न करना एक पत्रकार के लिए सामाजिक अपराध तथा किसी नगर के जीवन के सम्बन्ध में विविध अनुभवों को न बटोरना कर्तव्यहीनता का द्योतक है।

१ मई

(१) ब्रिटिश औद्योगिक मेला
(२) पत्रकार साथियों के बीच
(३) इंडिया हाउस में चाय
(४) ब्रिटिश पत्रों की कार्यप्रणाली
(५) 'डेली हेराल्ड'

आज भोर ही से आकाश कुहरे से ढका हुआ था और रिमझिम पानी भी गिर रहा था। बिस्तरे से ही इस गीले मौसम को देख कर डर हुआ कि आज खुशी-खुशी कार्यक्रम पूरा करना कठिन होगा। किन्तु जलपान के बाद देखा कि कुहरे की चादर हट गई है, बादल छँट गये हैं और सूरज निकल आया है। क्षण में पानी, क्षण में धूप, यही यहाँ के मौसम की कहानी है।

लगभग ८ बजे नाश्ता करके लोग यहाँ अपने घरों से काम पर निकल पड़ते हैं। प्रायः सभी जगह नाश्ता एक-सा मिलता है—दलिया या कार्नफ्लेक्स, टोस्ट-मक्खन अंडा या आलू-टमाटर तले हुए। बड़े होटलों में दलिया या कार्नफ्लेक्स के पूर्व फलों का शरबत भी दिया जाता है। अन्त में चाय या काफी।

अर्ल्स कोर्ट में ब्रिटिश औद्योगिक मेला देखने के बाद ही यह पता चल गया कि ब्रिटिश जाति उद्योग और व्यवसाय के क्षेत्र में बड़ी पटु है। हमारे साथ बिहार के महेश जी भी थे, जो यहाँ हिन्दी में शोध-कार्य कर रहे हैं। मेला देखने वालों की अपार भीड़। पर धक्कम-धक्का और शोरगुल नहीं!! दुकानें कलात्मक ढंग से सजी हुईं। दुकानों में जाने पर प्रचार-साहित्य इतना दिया जाता, कि उसे ढोना कठिन हो जाता।

ब्रिटिश औद्योगिक मेले का इतिहास बड़ा दिलचस्प है। १६१४ में जब महायुद्ध की आग प्रज्वलित हो उठी, ब्रिटेन के सम्मुख प्रश्न उठा कि जो चीजें वह जर्मनी और आस्ट्रिया से मँगाता रहा है, उन्हें स्वदेश में ही तैयार करने की कोशिश की जाय। उत्पादकों में नया माल तैयार करने की प्रेरणा उत्पन्न करने के लिए ब्रिटिश 'बोर्ड आफ ट्रेड' (वाणिज्य संघ) के तत्त्वावधान

में १६१५ में प्रथम औद्योगिक मेले का उद्घाटन हुआ और तब से यह मेला प्रतिवर्ष लगता है। दूसरे महायुद्ध के समय, अनिश्चित परिस्थिति के कारण सात वर्ष तक औद्यौगिक मेला न लग सका; किन्तु लड़ाई खत्म होने के बाद १६४७ से पुनः पुराना क्रम जारी हो गया।

इस मेले की विशेषता यह है कि इसमें ब्रिटेन के अतिरिक्त राष्ट्रमंडल के देशों की चीजें भी प्रदर्शित की जाती हैं। संसार के विभिन्न देशों के खरीददार यहाँ इस अवसर पर जमा होते हैं। इस मेले की तीन बड़ी शाखाएँ हैं, जिनमें दो लन्दन (१. अर्ल्सकोर्ट २. ओलंपिया) में और तीसरी बरमिंघम में है।

हम आज अर्ल्सकोट का ब्रिटिश औद्योगिक मेला देख रहे थे। २६ हजार वर्गफुट भूमि में एक ही आकर्षक विशाल छत के नीचे इस विराट औद्योगिक प्रदर्शनी में पहली और दूसरी मंजिल पर विविध प्रकार के सूती वस्त्र, जूट तथा चमड़े के अन्य सामान, मिठाइयाँ, खाने की चीजें, फर्नीचर, शीशे का सामान, हैट, प्लास्टिक के सामान, विविध प्रकार के खिलौने, सिगरेट, सफाई करनेवाली मशीनें तथा अन्य वस्तुएँ रोचक ढंग से प्रदर्शित थीं।

दुकानों में जाते ही वहाँ प्रदर्शित वस्तुओं की उत्पादन-कला पर प्रकाश डालनेवालों की व्यावसायिक शिष्टता पर मुग्ध होना ही पड़ता। जिस दुकान में भी हम गये, हमें बड़े आदर के साथ अन्दर ले जा कर प्रदर्शित चीजों के बारे में टेकनिकल बातें बताई गईं और मुख पर प्रसन्नता की रेखाएँ परिलक्षित होते ही वे इस बात से खुश होते ही ब्रिटेन की चीजें लोगों को आकृष्ट कर रही हैं। वास्तव में ब्रिटिश वस्तुओं के अन्तर्राष्ट्रीय विज्ञापन का, यह मेला बहुत बड़ा साधन है। यहाँ हमने खुद कई देशों के खरीदारों को देखा। अपने देश की भी सूरतें दिखाई पड़ीं। १६४६ में हमारे देश के १,२८५ और पिछले साल १,३१७ खरीदारों ने ब्रिटिश औद्योगिक मेले में जा कर काफी मात्रा में चीजें खरीदीं।

दूसरी मंजिल में हम लोग एक दुकान के पास खड़े शीशे के बहुत ही आकर्षक खिलौने देख रहे थे, तभी सामने से बढ़े जोरों की भीड़ आती दिखाई दी। पूछने पर ज्ञात हुआ कि राजा, रानी, राजमाता तथा राजपरिवार के अन्य सदस्यों को देखने के लिए लोग बढ़े जा रहे हैं। वैधानिक नरेश के प्रति अंग्रेजों के परम्परागत प्रेम का अनुभव आज पहली बार मुझे प्राप्त हुआ। हमें एक पुलिसमैन ने बताया—आप यहीं खड़े रहें, इधर से ही थोड़ी देर में ब्रिटिश नरेश जायँगे। जिस समय नरेश मेरे निकट से हो कर जा रहे थे, उस

समय स्त्री-पुरुष धक्के की परवाह किये बिना उचक-उचक कर उन्हें देख रहे रहे थे। राजा-रानी के पीछे राजकुमारियाँ एलिजाबेथ और मारग्रेट थीं। मारग्रेट की आकर्षक पोशाक के कारण युवक-युवतियों का ध्यान उधर ही था। ब्रिटिश पत्रों में मारग्रेट के शृंगार-प्रेम की दिलचस्प कहानियाँ प्रकाशित होती रहती हैं और आज इस सामन्ती सजधज को देख कर वे कहानियाँ सच्ची प्रतीत हुईं। इस मनोरंजक दृश्य को देखने के बाद घूमते-घूमते एक ऐसे स्थल पर हम पहुँचे, जहाँ विज्ञापन-कला के मर्मज्ञों ने एक कपड़े की बड़ी दुकान पर फैशन-परेड का समा उपस्थित कर दिया था। कुछ खूबसूरत लड़कियाँ नई काट-छाँट की सूती और रेशमी पोशाकें पहन कर चार-चार, पाँच की टोली में एक द्वार से बाहर निकलतीं और कुछ देर तक उन नई डिजाइनों की पोशाकों का प्रदर्शन कर अन्दर चली जातीं और फिर दूसरी प्रकार की पोशाकें पहन कर पुनः सामने आ जातीं। इस विचित्र विज्ञापनबाजी को देखने वालों की भीड़ छटती ही न थी। स्त्रियाँ पोशाकों को देख रही थीं और पुरुष उनकी अर्धनग्न अंगच्छटा !!

मोम की पुतलियों के बाद जीवित पुतलियों की जाँघों और अधढके उरोजों को देख-देख कर कुछ दर्शक बड़ा हाव-भाव प्रदर्शित कर रहे थे।

ओलम्पिया के मेले को बाद में देखने का निर्णय करके हम यहाँ से सीधे लन्दन-स्थित भारतीय पत्रकारों से भेंट करने 'इंडियन स्टूडेंट्स ब्यूरो' रवाना हो गये, जहाँ पत्रकार साथियों ने हमें लंच पर आमंत्रित किया था।

भारतीय पत्रकार एसोसियेशन के सेक्रेटरी डाक्टर वसु ने प्रीति-भोज में आमंत्रित सभी पत्रकारों से हमारा परिचय कराया। लन्दन स्थित प्रायः समस्त भारतीय पत्रकारों एवं प्रमुख ब्रिटिश पत्रकारों से मिल कर बड़ी खुशी हुई। इस विदेश-यात्रा में आज पहली बार 'बिरादरी' के लोगों से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। किसका नाम लिखूँ और किसे छोड़ूँ—सभी ने दिल खोल कर हमारा स्वागत किया।

भारतीय पत्रकार एसोसियेशन की अध्यक्ष श्रीमती इला सेन ने अपने संक्षिप्त भाषण में प्रतिनिधि-मण्डल का स्वागत करते हुए कहा कि इस प्रकार के प्रतिनिधि-मंडलों के आने-जाने से एक दूसरे को समझने का मौका मिलता है।

'दिनमणि' के सम्पादक श्री वेंकटाचारी ने और मैंने प्रतिनिधि-मंडल की ओर से स्वागत का उत्तर दिया। मुझसे विशेष रूप से यह कहा गया था कि भारतीय श्रमजीवी पत्रकार आन्दोलन का विवरण दूँ। इसलिए श्री वेंकटाचारी के रस्मी भाषण के बाद प्रीतिभोजों के अवसर पर होने वाले लघु

भाषणों की परम्परा तोड़ कर मैंने यह बताने की कोशिश की कि किस प्रकार भारतीय श्रमजीवी पत्रकार-आन्दोलन पत्रकारों के हितों एवं पत्रकारिता के आदर्श की रक्षा में क्रियाशील है । मुझे यह देख कर प्रसन्नता हुई कि लन्दन के अधिकांश पत्रकार भारतीय श्रमजीवी पत्रकार-आन्दोलन से प्रभावित हैं और जिन शब्दों में हमें कई पत्रकार साथियों ने बधाई दी, उससे हमें अपने आन्दोलन को आगे बढ़ाने की प्रेरणा मिली ।

पत्रकार साथियों से विदा ले कर हम अपने होटल वापस आ गये । श्री रंगास्वामी आज कुछ असन्तुष्ट थे, क्योंकि वे यह नहीं चाहते थे कि प्रतिनिधि-मण्डल का कोई सदस्य भाषण करे । मगर उनके अतिरिक्त अन्य प्रतिनिधियों की समझ में यह बात न आई कि वे यह क्यों चाहते थे । किन्तु इतनी दूर आ कर अपने साथियों से ही अपने आन्दोलन के सम्बन्ध में बात न करते, तो यहाँ के साथियों की जिज्ञासा कैसे पूरी होती !

शाम को साढ़े चार बजे 'इंडिया हाउस' में हमारे हाई कमिश्नर श्री वी० के० कृष्ण मेनन ने चाय पर आमंत्रित किया था । वहाँ पहुँचने पर ज्ञात हुआ कि वे अचानक अस्वस्थ हो गये हैं और उन्होंने इस समारोह में शामिल न होने पर खेद प्रकट किया है। यहाँ भी कई पत्रकार साथियों से पुनः भेंट हुई और विविध विषयों पर उनसे बातें होती रहीं ।

इस चाय-पार्टी में कुछ ऐसे भारतीयों से भी भेंट हुई, जो इंडिया हाउस की कार्यप्रणाली से बहुत असन्तुष्ट हैं । छात्रों की शिकायत यह है कि उनकी कठिनाइयों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता । वास्तव में हाई कमिश्नर के कार्यालय के सम्बन्ध में यहाँ आने के बाद से ही इतनी शिकायतें सुनता आ रहा हूँ, कि उनकी चर्चा इस डायरी में कैसे करूँ । राष्ट्रभाषा हिंदी की तो यहाँ कोई पूछ नहीं और यदि इस भाषा में बोलिए, तो यहाँ के कार्यकर्ता मुँह बिचका लेते हैं—यही 'इंडिया हाउस' के लिए क्या कम कलंक की बात है ? मैंने यहाँ के वातावरण का अध्ययन करके बेनीपुरीजी से कह दिया था, कि आप हिंदी में बातचीत करने को कोशिश न करें, मगर जब अपने हाई कमिश्नर के कार्यालय में हिंदी बोलने की आकांक्षा से उन्होंने तुलसी, कबीर और प्रेमचन्द की भाषा में बातचीत करनी चाही, तो निराशा ही हाथ लगी, और इस पर उनका क्षुभित होना स्वाभाविक था ।

'इंडिया हाउस' से बाहर निकल कर मैं कार से फ्लीट स्ट्रीट पहुँचा और वहाँ कुछ ब्रिटिश-पत्रकारों के साथ टहलता रहा । 'डेली एक्सप्रेस' की

शानदार इमारत फ्लीट स्ट्रीट में पत्रकारों के लिए निश्चय ही आकर्षण की वस्तु है। इसी इमारत के अनुरूप इस पत्र का दूसरा कार्यालय मैनचेस्टर में है। इस टोरी पत्र की ग्राहक-संख्या करीब ४० लाख ८२ हज़ार है और ब्रिटेन में इससे अधिक प्रचलन केवल 'डेली मिरर' का है, जिसके ग्राहकों की की संख्या लगभग ४९ लाख ४७ हज़ार है। बाहर से 'डेली एक्सप्रेस' की भव्य इमारत देख कर कोई भी दर्शक यह कहेगा—"यही तो शीशमहल है!"

आज रात को साढ़े आठ बजे ब्रिटिश लेबर पार्टी के मुखपत्र 'डेली हेराल्ड' के कार्यालय जाना था, इसलिए फ्लीट स्ट्रीट से सीधे मैं अपने होटल गया और वहाँ से खा-पी लेने के बाद हम ठीक साढ़े आठ बजे एंडल स्ट्रीट में 'डेली हेराल्ड' के प्रमुख कार्यालय पहुँच गये। 'शेरी-पान' के साथ सर्वप्रथम सम्पादकीय विभाग के सदस्यों से ब्रिटिश पत्रोद्योग के सम्बन्ध में बातें होती रहीं। इसके बाद ब्रिटिश पत्रों की कार्य-प्रणाली पर भी बातें हुईं।

यहाँ हर बड़े-छोटे पत्र के कार्यालय में एक 'कान्फ्रेन्स रूम' होता है, जहाँ प्रतिदिन सबेरे सम्पादकीय विभाग के सदस्य जमा हो कर इस प्रश्न पर विचार करते हैं, कि आज का पत्र कैसा निकला, कौन-कौन समाचार छूट गये, समाचारों के चयन और शीर्षक लगाने में क्या भूलें हुईं आदि-आदि। कुछ पत्रों में सम्पादकीय कान्फ्रेंस दिन में दो बार होती है और सांध्यकालीन सम्मेलन में अन्तिम रूप से प्रभात-संस्करण के लिए आवश्यक निर्णय किये जाते हैं। कुछ बड़े पत्रों में यह भी परम्परा है कि इस कान्फ्रेंस में सम्पादकीय लेख व टिप्पणियों के विषय पर भी गौर किया जाता है। यहाँ के पत्रकारों का विचार है कि इस व्यवस्था से पत्रों को रुचिकर बनाने एवं उनका स्तर ऊँचा उठाने में बड़ी सहायता मिलती है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रविष्ट होने के लिए ब्रिटेन में कोई सामान्य प्रणाली लागू नहीं है। साधारणतः यहाँ जो युवक पत्रकार होना चाहता है, वह पहले प्रादेशिक साप्ताहिक समाचार पत्र एवं दैनिक समाचार पत्र में काम पाने की कोशिश करता है और वहाँ जूनियर की हैसियत से पत्रकारिता की प्रारम्भिक ट्रेनिंग उसे प्राप्त होती है। इसके बाद रुचि के अनुसार धीरे-धीरे संवाद-संग्रह अथवा संवाद-सम्पादन का अनुभव प्राप्त कर वह प्रादेशिक दैनिक पत्रों में काम पा जाता है। अपेक्षाकृत अधिक प्रतिभा-सम्पन्न एवं कुशाग्रबुद्धि वाला युवक लंदन में आकर राष्ट्रीय पत्रों (राजधानी से प्रकाशित होने वाले बड़े पत्रों को यहाँ 'नेशनल पेपर' कहते हैं) में स्थान पाने की चेष्टा करता है। ब्रिटेन में

किसी विषय में विशेष योग्यता प्राप्त करने पर अधिक महत्त्व दिया जाता है। राजनीति, अर्थशास्त्र, साहित्य, वाणिज्य, खेल-कूद आदि विविध विषयों में से किसी एक में विशेष योग्यता प्राप्त करने पर पत्रों में स्थान पाने में सुविधा रहती है। भाषा की अच्छी जानकारी पर बहुत ध्यान दिया जाता है। अधकचरे पत्रकार यहाँ तरक्की का ख्वाब नहीं देख सकते। शैक्षिक-योग्यता के सम्बन्ध में यहाँ के अनुभवी पत्रकारों के भिन्न-भिन्न मत हैं। कुछ पत्रकारों का ख्याल है कि अग्रलेख, टिप्पणी तथा विशेष लेखों के लिए विश्वविद्यालयों के ऐसे स्नातकों की नियुक्ति से लाभ पहुँचेगा, जो केवल डिग्रीधारी न हों, बल्कि अपने विषय के अच्छे जानकार हों। उपसम्पादकों के लिए स्नातक होना आवश्यक नहीं है। इस सम्बध में एक पत्रकार ने अपना दिलचस्प अनुभव बताते हुए कहा कि कभी-कभी ऐसे स्नातक भी काम के लिए आते हैं जिन्हें ब्रिटिश मंत्रिमंडल के सदस्यों के नाम तक ज्ञात नहीं होते और इसके विरुद्ध कुछ ऐसे गैर स्नातक आते हैं, जिन्हें कुछ विषयों की अच्छी जानकारी रहती है। यहाँ के अधिकांश पत्रकारों का यह ख्याल ठीक ही है कि योग्यता के साथ ही पत्रकारिता में रुचि होने पर ही कोई व्यक्ति इस क्षेत्र में सफल हो सकता है।

यद्यपि पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश पाने के लिए कोई सुनिश्चित प्रथा न होने की शिकायत भी यहाँ काफी है, किन्तु प्रचलित प्रणाली को इस दृष्टि से अच्छा समझा जाता है कि इससे सुयोग्य, परिश्रमी और पत्रकारिता में रुचि रखने वाले व्यक्ति ही इस क्षेत्र में आते हैं।

ब्रिटेन में अब पत्रकारों को पहले से अच्छा वेतन मिल रहा है। प्रथम महायुद्ध के पूर्व यहाँ के पत्रकारों की आर्थिक स्थिति काफी शोचनीय थी, क्योंकि उन्हें कम वेतन मिलता था। १९१४ से पहले प्रादेशिक समाचारपत्रों के सम्पादकीय-विभाग के सदस्यों को केवल ३० शिलिंग प्रति सप्ताह वेतन मिलता था। १९१७ से १९२१ के बीच वेतन-सम्बन्धी जो समझौते हुए थे, उनके फलस्वरूप लन्दन के पत्रों में काम करने वाले दीक्षित और अनुभवी पत्रकारों को प्रति सप्ताह ८ पौंड ८ शिलिंग, प्रान्तीय पत्रों में काम करनेवाले पत्रकारों को प्रतिसप्ताह ५ पौंड १५ शिलिंग तथा स्थानीय साप्ताहिक समाचारपत्रों में काम करने वाले पत्रकारों को प्रतिसप्ताह ४ पौंड १७ शिलिंग वेतन के रूप में मिलता था। १९३९ तक लंदन के अधिकांश पत्रकारों को ८ पौंड ८ शिलिंग प्रति सप्ताह वेतन मिलता था। परन्तु इस समय लंदन के पत्रकारों को १२ पौंड प्रति सप्ताह तथा मैनचेस्टर में लगभग १० पौंड प्रति सप्ताह वेतन

मिल रहा है। लंदन के अखबारों में टोरीपार्टी के पत्र 'डेली एक्सप्रेस' के पत्रकारों को प्रायः सब पत्रों की अपेक्षा अधिक वेतन मिलता है। इस समय ब्रिटेन में किसी भी पत्रकार को साल में ३५० पौंड से कम वेतन नहीं मिलता। सुयोग्य और अनुभवी पत्रकारों का न्यूनतम वेतन १२ पौंड प्रति सप्ताह से अधिक है।

ब्रिटेन के दैनिक समाचारपत्रों के कार्यालय रविवार को बन्द रहते हैं। उस दिन साप्ताहिक समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं। यहाँ पत्रकारों को करीब दो दिन का साप्ताहिक अवकाश प्राप्त होता है। काफी देर तक प्रेस और पत्रकारों के सम्बन्ध में बातचीत कर लेने के बाद जब हम 'डेली हेराल्ड' के सम्पादकीय विभाग में पहुँचे, तो वहाँ शान्त वातावरण में गम्भीरता से काम होता देखा। जिस प्रकार हर उपसम्पादक अपने काम में जुटा हुआ था, उसे देख कर हमारे एक साथी ने ठीक ही कहा—खरी मजूरी चोखा काम। दिन और रात के लिए यहाँ अलग-अलग समाचार-सम्पादक हैं। उप-सम्पादकों में चीफ-सब (अधिष्ठाता उप-संपादक), कापीटेस्टर और उप-सम्पादक की श्रेणियाँ हैं। कापीटेस्टर संवाद-समितियों तथा अपने प्रतिनिधियों द्वारा प्रेषित संवादों को देख कर हर संवाद पर यह संकेत कर देता है कि उसका 'डिसप्ले' किस प्रकार हो। उसको यह ज्ञात रहता है कि हर पृष्ठ पर कितनी हेडिंगें दो, तीन या चार कालमों में देनी हैं। अधिष्ठाता उप-सम्पादक (चीफ सब) कापीटेस्टर से किसी समाचार को छोड़ देने अथवा किस संवाद को कितना स्थान दिया जाय, इस सम्बन्ध में आवश्यक परामर्श करता रहता है। उप-सम्पादकों द्वारा तैयार की गई कापियों को स्वीकृत करने, शुद्ध करने अथवा आवश्यक आलोचना करने का अधिकार चीफ-सब को है। और इसीलिए ब्रिटेन में यह कहा जाता है कि उप-सम्पादकों की नौकरी अधिष्ठाता उप-सम्पादक के हाथ में है। रात्रि के समाचार-सम्पादक तथा प्रेस से अधिष्ठाता उप-सम्पादक का सम्पर्क सदा बना रहता है। संवादों का सम्पादन तथा उन्हें पत्र की नीति के अनुरूप रोचक पोशाक पहनाने का काम उप-सम्पादकों का है। उन्हें इस बात का भी ध्यान रखना पड़ता है कि गलत बातें समाचार में न चली जायँ तथा तथ्यों की हत्या न होने पाये।

'डेली हेराल्ड' में बारह 'टेलीप्रिंटर' मशीनें लगी हैं। हमें बताया गया कि संवाद-समितियों द्वारा प्रेषित खबरों में केवल १० प्रतिशत समाचार 'डेली हेराल्ड' के लिए प्रयुक्त किया जाता है और शेष ९० प्रतिशत खबरें

अपने संवाददाताओं एवं रिपोर्टरों की होती हैं। हमारे यहाँ धनाभाव के कारण प्रेस ट्रस्ट और युनाइटेड प्रेस द्वारा भेजी गई खबरों पर ही प्रायः सभी समाचारपत्र आश्रित रहते हैं। 'डेली हेराल्ड' के टेलीफोन-कक्ष में जिस समय हम पहुँचे, वहाँ दुनिया के कई भागों से खबरें आ रही थीं। चित्र-विभाग में हमारी फोटो ली गई और १०-१५ मिनट बाद उसकी प्रतियाँ हम लोगों को भेंट कर दी गईं। आध घण्टे से कम समय में ही ब्लॉक तैयार हो जाते हैं।

'डेली हेराल्ड' का सन्दर्भ-विभाग भी काफी अच्छा है। यहाँ प्रायः सभी पत्रों में सन्दर्भ-विभाग के महत्त्व पर ध्यान दिया जाता है। इस विभाग की सहायता से तत्काल किसी भी संवाद को अच्छे रूप में पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करने में सुविधा प्राप्त होती है और सन्दर्भ-सहित लिखी गई खबरों से पाठकों की जानकारी बढ़ती है। इसी विभाग में विभिन्न देशों के लोकनायकों तथा विभिन्न दलों के प्रमुख नेताओं के कई-कई चित्र भी रखे रहते हैं।

सम्पादकीय विभाग, फोटो विभाग, संवाद-संग्रह-विभाग आदि में घूमते समय मैंने यह अनुभव किया कि हमारी उपस्थिति के कारण किसी विभाग के काम में कोई बाधा नहीं पहुँची; क्योंकि जिस व्यक्ति से बात की जाती, उसे छोड़ कर शेष सभी सदस्य अपने-अपने काम में लगे रहते। अनुशासन-प्रियता और कर्तव्य-परायणता की यह भावना निश्चय ही प्रशंसनीय है।

संवादाताओं की सुविधाओं पर यहाँ बहुत ध्यान रखा जाता है और इसलिए वे भी संवाद-संग्रह के लिए दिन-रात एक किये रहते हैं। यदि समाचार एकत्र करने के सिलसिले में कुछ खर्च हो जाय या किसी के साथ होटल में खाना-पीना पड़े, तो यह खर्च कार्यालय से मिल जाता है। आवश्यकता पड़ने पर संवाददाता टैक्सी कर सकते हैं, लेकिन किराया एक पौंड से अधिक होने पर बिल जमा करना पड़ता है। बिल-फार्म संवादाताओं की टेबुलों पर पड़ा रहता है, जिसमें चार खाने होते हैं,—१. तिथि २. पूर्ण विवरण, ३. घटना, ४. व्यय। निर्धारित सीमा के भीतर खर्च करने पर यह बिल भी तत्काल चुका दिया जाता है। हमारे साथियों में से एक ने पूछा—"अगर कोई अनावश्यक खर्च करके बिल प्रस्तुत कर दे, तो इसकी जाँच कैसे होती है?" उत्तर मिला—"पत्रकार से कभी ऐसी आशा नहीं की जा सकती।" यह सुन कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।

प्रेस-विभाग में जाने पर छपाई की उत्तम व्यवस्था देख कर हम बहुत

प्रभावित हुए। 'डेली हेराल्ड' की ग्राहक-संख्या अब लगभग बीस लाख से कुछ अधिक तक पहुँच गई है; इसलिए प्रथम संस्करण ग्यारह बजे छप जाता है। इस पत्र के कुल पाँच संस्करण निकलते हैं। अन्तिम संस्करण लन्दन के लिए रात में साढ़े चार बजे छपता है। हर पेज के ३८ मोल्ड होते हैं—३६ मशीनों के लिए और २ संकट-काल के लिए। जिस समय छपाई शुरू होती है प्रेस सेक्शन में ऐसा मालूम होता है, जैसे आँधी चल रही हो।

'डेली हेराल्ड' के संगठन के सम्बन्ध में एक दिलचस्प बात यह है कि टोरियों की संस्था ओधम्स प्रेस लिमिटेड के इसमें ५१ प्रतिशत और ट्रेड यूनियन कांग्रेस के ४६ प्रतिशत शेयर हैं, किन्तु पत्र की नीति निर्धारित करने एवं उसके संचालन का अधिकार ट्रेड यूनियन कांग्रेस को ही है। वास्तव में इस पत्र की नीति 'नेशनल लेबर पार्टी' के सम्मेलन द्वारा निर्धारित होती है और इसकी तथा ट्रेड यूनियन कांग्रेस की औद्योगिक नीति समान है।

'डेली हेराल्ड' का एक संस्करण मैनचेस्टर से भी निकलता है और इन दोनों कार्यालयों में संवाद-सामग्री के अतिरिक्त चित्रों के आदान-प्रदान की मनोरंजक प्रणाली देख कर हमें अपने पत्रोद्योग पर बहुत तरस आया। लंदन कार्यालय में मशीनों में चित्र लगाते ही वे जादू की करामात की भाँति ब्लॉक के रूप में मैनचेस्टर-कार्यालय पहुँच जाते हैं और इस क्रिया में केवल २०-२५ मिनट समय लगता है। विज्ञान के इस सर्जनात्मक पहलू पर कौन मुग्ध न होगा?

एक ही पत्र के कार्यालय को अच्छी तरह देखने के बाद यह स्वीकार करने में कोई लज्जा नहीं है कि ब्रिटिश-पत्रोद्योग से हम पीछे हैं, परन्तु पत्रकारिता का हमारा 'स्तर' ब्रिटिश पत्रों से ऊँचा है। कामुकता एवं यौन सम्बन्धी खबरें छाप कर हमारे देश के अखबार अपनी ग्राहक-संख्या बढ़ाने के चक्कर में नहीं रहते। किन्तु यहाँ के कई पत्रों में जिस रीति-नीति से वासना को उभारने वाली खबरें दी जाती हैं, उसे पढ़ कर मुझे बड़ा खेद हो रहा है। 'न्यूज़ आफ दि वर्ल्ड' नामक साप्ताहिक पत्र की ग्राहक-संख्या करीब ८४ लाख लाख है और ब्रिटेन के सभी पत्रों से इसका प्रेस-विभाग बड़ा है, पर जिस ढंग से इस पत्र में अपराध और यौन सम्बन्धी समाचार, पुलिस अदालत की कार्रवाई तथा इसी प्रकार की दूसरी खबरें दी जाती हैं, उनसे जनरुचि विकृत होती है। भारतीय पत्र अपनी ग्राहक-संख्या बढ़ाने के लिए अभी इस कर्दम में नहीं फँसे हैं।

———

२ मई

(१) फिलिप जोर्डन से बातचीत
(२) 'भाग्य का पत्थर'
(३) पार्लमेंट
(४) ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन
(५) नग्न-तारिकाओं की कला

आज पार्लमेंट देखने के पूर्व हमने ब्रिटेन के प्रधान मंत्री श्री एटली के जन-सम्पर्क-अधिकारी श्री फिलिप जोर्डन से कुछ देर बातें कीं। ये ब्रिटेन के उदार विचारों के एक प्रमुख पत्रकार रहे हैं। उनकी पुस्तक 'रशन ग्लोरी' (रूसी-कीर्ति) में उनके निष्पक्ष विचारों की झलक मिली थी। आज की बातचीत से ऐसा मालूम हुआ कि 'डाउनिंग स्ट्रीट' के कुहरे ने उनके मस्तिष्क को भी ढक लिया है। पेरिस में ब्रिटेन, फ्रान्स, सोवियत रूस और अमेरिका के उप-परराष्ट्रमन्त्रियों का सम्मेलन जर्मनी तथा अन्य प्रश्नों पर सोवियत रूस व आंग्ल-अमरीकी गुट के बीच पैदा हुए मतभेदों को दूर करने के लिए उन योजनाओं पर विचार कर रहा था, जिनके आधार पर उक्त चार बड़े देशों के परराष्ट्र-मंत्री मिल कर भय और आशंका का वातावरण दूर करने के लिए समझौता-वार्ता फिर से शुरू करते, किन्तु पेरिस-वार्ता से यह आभास मिलता जा रहा था कि दोनों गुटों में समझौते की कोई आशा नहीं है। आज फिलिप जोर्डन ने इसी प्रसंग को छेड़ते हुए कहा कि कुछ राजनीतिज्ञ ऐसे सम्मेलनों को प्रचार का अस्त्र बना देते हैं, जैसे कि सोवियत उप-परराष्ट्रमंत्री श्री ग्रोमिको इस समय कर रहे हैं। उनका आरोप यह था कि रूसी परराष्ट्र मंत्री पेरिस-वार्ता से लाभ उठा कर समझौते का रास्ता ढूँढने की अपेक्षा सोवियत गुट का प्रचार कर रहे हैं। मुझे इस बात पर आश्चर्य हो रहा था कि ब्रिटिश प्रधान मंत्री के जन-सम्पर्क-अधिकारी और एक अनुभवी पत्रकार सोवियत उप-परराष्ट्रमंत्री पर भ्रामक आरोप क्यों कर रहे हैं, जब कि पेरिस में अभी समझौता-वार्ता जारी है और बाकायदा उसके भंग होने की घोषणा नहीं हुई है। एटली के सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि वे प्रेस कान्फ्रेंस बहुत

कम करते हैं; शब्दों के कंजूस, किन्तु काम में चुस्त हैं। इसी सिलसिले में उन्होंने नेहरू को 'बातूनी' कहा, किन्तु जानकारी रखते हुए भी शायद वे भूल रहे थे, कि भारत के प्रधान मंत्री के अतिरिक्त, दुनिया में शोषण और साम्राज्य-लिप्सा के विरुद्ध अपनी आवाज भी नेहरू बुलन्द करते हैं। इसलिए वे एटली की भाँति दुनिया की समस्याओं पर चुप नहीं रह सकते। फिलिप जोर्डन ने बताया कि हर सातवें दिन ब्रिटिश कैबिनेट की तथा हर पन्द्रहवें दिन पार्लमेंटरी लेबर पार्टी की बैठकें होती हैं। ब्रिटिश मंत्रिमंडल का कोई सदस्य अपने कार्यकाल में किसी विषय पर कुछ नहीं लिख सकता, मंत्री की कुर्सी से हटने के बाद ही वह लेखन-कार्य कर सकता है।

जिस समय फिलिप जोर्डन रूस पर कई प्रकार के आरोप कर रहे थे, उस समय उन्हीं की पुस्तक 'रूसी-कीर्त्ति' में वर्णित युद्ध-काल की कुछ बातें स्मरण हो आईं। युद्ध-प्रतिनिधि की हैसियत से उक्त पुस्तक में उन्होंने एक जगह लिखा है—"फ्रांस और ब्रिटेन के नेता जहाँ सुदृढ़ फौजी शक्ति के साथ जर्मनी के विरुद्ध युद्ध कर रहे थे, वहीं उनकी यह भी इच्छा थी, कि पहले सोवियत रूस को खत्म किया जाय और बाद आराम के साथ हिटलर को।" इस सम्बन्ध में उन्होंने यह भी लिखा है कि फ्रान्सीसी जनरल वेगां के निमंत्रण पर जब १९४० के शुरू में वे सीरिया गये थे, तो वहाँ उन्होंने देखा कि इस जनरल के सदर मुकाम में ऐसे नक्शे टँगे हुए थे, जिनमें यह दिखाया गया था कि ब्रिटिश और फ्रांसीसी फौजें किस मार्ग से आसानी से रूसी सीमा में घुस कर बाकू पर हमला कर सकती हैं। किन्तु आज इन विचारों को भुला कर एटली के जन-सम्पर्क अधिकारी जोर्डन रूस पर निराधार आरोप करने की कला सीख रहे हैं। मगर यदि उनसे कोई पूछे कि याल्टा, तेहरान और पोट्सडाम घोषणाओं के खिलाफ युद्धकालीन साथी रूस के विरुद्ध, पश्चिमी राष्ट्र आज क्यों योजनाएँ तैयार कर रहे हैं, तो उन्हें शायद उक्त पुस्तक में लिखे गये अपने ही शब्द याद न आवें, क्योंकि उनसे वास्तविकता प्रकट होगी।

'डाउनिंग स्ट्रीट' से बाहर आ कर कुछ देर हम पार्लमेंट स्क्वायर में कार से इधर-उधर चक्कर काटते रहे। कल ब्रिटिश नरेश ब्रिटिश महोत्सव के शताब्दी समारोह का समारम्भ करने वाले हैं, इसलिए आज से इमारतों के सजाने का काम शुरू हो गया है। बकिंघम पैलेस से ह्वाइट हाल तक सभी इमारतों पर झंडे लहरा रहे हैं। कामनवेल्थ के आफिस पर राष्ट्रमंडल में शामिल अन्य देशों के साथ अपना तिरंगा भी लहरा रहा था। ट्रेफलगर स्क्वायर से वेस्ट

मिनिस्टर तक सरकारी कार्यालयों का जाल बिछा हुआ है। ब्रिटेन के इस राजनीतिक और प्रशासकीय केन्द्र-स्थान को ह्वाइट-हाल कहते हैं। हेनरी अष्टम ने ह्वाइट हाल नामक महल बनवाया था और इसी कारण इस सरकारी क्षेत्र को 'ह्वाइट हाल' कहते हैं। ट्यूडरकालीन उस ऐतिहासिक महल का अब केवल वही हाल बचा है, जहाँ हेनरी अष्टम दावतें दिया करते थे। हमने शहीद-स्मारक भी देखा। दो महायुद्धों में ब्रिटेन की रक्षा के लिए जिन सैनिकों ने प्राणोत्सर्ग किया, उनकी पुण्य-स्मृति में यह शहीद-चबूतरा बना है। यहाँ पहुँचते ही मेरे मन में यह भावना पैदा हुई कि यहाँ साम्राज्य की रक्षा में मरने वालों के प्रति इतना सम्मान प्रकट किया गया है और हमने अभी तक स्वाधीनता के अहिंसात्मक संग्राम में शहीद होनेवालों के लिए अखिल भारतीय स्तर पर कोई स्मारक खड़ा नहीं किया।

वेस्ट मिनिस्टर एबे की इमारत देख कर गोथिक कला के अंग्रेजी स्वरूप पर खुश होना स्वाभाविक है। इस गिरजाघर के इतिहास के सम्बन्ध में कई धारणाएँ प्रचलित हैं। परन्तु जो प्रामाणिक तथ्य ज्ञात हुए हैं, उनके अनुसार १०४२ में एडवर्ड-द-कनफेसर ने इसका शिलान्यास किया था। परन्तु उस भवन का कोई भी भाग अब शेष नहीं है। इस मन्दिर की जो इमारत अब खड़ी है, उसे तेरहवीं सदी में तृतीय हेनरी ने तैयार करवाया था। इसी गिरजाघर में ब्रिटिश नरेशों का राज्याभिषेक होता है और शादियाँ भी। यहीं बहुत से पुराने वैज्ञानिकों, साहित्यिकों, राजनीतिज्ञों, चित्रकारों, मूर्तिकारों, सेनानायकों एवं राजपरिवारों के व्यक्तियों की समाधियाँ हैं।

परन्तु इस गिरजाघर ने वर्तमान युग में एक नये विवाद से और भी महत्त्व प्राप्त कर लिया है। इतिहास-प्रसिद्ध 'कारोनेशन चेयर' (वह सिंहासन, जिस पर ब्रिटिश नरेश का राज्याभिषेक होता है) इसी गिरजाघर में है। उसमें वह पत्थर लगा हुआ है, जिसे १२९७ में प्रथम एडवर्ड स्काटलैंड के 'सोन' नामक स्थान से उठा ले गये थे। स्काटलैंड के राष्ट्रीय आन्दोलन से सम्बन्धित व्यक्ति इस पत्थर को उठा ले जाने के प्रयास में हैं। हाल ही में दो व्यक्ति इस आरोप में गिरफ्तार भी किये गये थे।

इस पत्थर को स्काटलैंड में 'भाग्य का पत्थर' कहते हैं। आयरलैंड से यह पत्थर स्काटलैंड लाया गया था और स्काटलैंड के नरेशों के राज्याभिषेक के समय इस पत्थर का 'कारोनेशन स्टोन' के रूप में बहुत दिनों तक इस्तेमाल होता रहा। वहीं से ८४० ई० में यह पत्थर 'सोन' ले जाया गया, जहाँ से

प्रथम एडवर्ड उसे वेस्ट मिनिस्टर के गिरजाघर उठा ले गये थे।

हमारे देशवासियों का ख्याल है कि पश्चिम में अन्धविश्वासी नहीं होते, किन्तु इस पत्थर के विषय में जो कथाएँ स्काटलैंड में प्रचलित हैं और लंदन में कुछ स्काटलैंड वालों से बातचीत करके मैं जिस नतीजे पर पहुँचा, उससे यह सिद्ध हुआ, कि इस भूखंड में भी अन्धविश्वास है। लोगों का ख्याल है कि इसी पत्थर के जादू से स्काटलैंड के राजा छठे जेम्स, प्रथम जेम्स के रूप में इंगलैंड के भी राजा हो गये और तभी से स्काटलैंड में कहा जाता है कि :—

"यदि भाग्य साथ दे, तो जहाँ यह पत्थर जायगा, उस क्षेत्र पर स्काटलैंड का राजा ही राज्य करेगा।"

परन्तु जब इंगलिश नरेश स्काटलैंड पर शासन करने लगे, तो अब स्काटलैंडवाले इसे पुनः प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हैं। इसे तो वे प्राप्त नहीं कर पाते, पर 'पत्थर लाओ आन्दोलन' से अखबारों को काफी दिलचस्प सामग्री मिल जाती है।

पार्लमेंट के मुख्य द्वार पर लेबर पार्टी के प्रसिद्ध सदस्य श्री उड्रो लायड वयाट ने हमारा स्वागत किया। आज ही वे पार्लमेंटरी अंडर सेक्रेटरी और वित्त सेक्रेटरी घोषित हुए थे, वे बहुत प्रसन्न देख पड़ रहे थे। वहीं प्रतिनिधि-मंडल का फोटो लिया गया।

द्वितीय महायुद्ध के समय नात्सी बमबारों ने पार्लमेंट-भवन पर कई बार बम-वर्षा की और १० मई '४१ की रात को कॉमन सभा की इमारत बिलकुल ध्वस्त हो गई थी। पुरानी वास्तु-कला के आधार पर ही इसका पुनर्निर्माण हुआ है। प्रसिद्ध क्लॉक टावर (घंटाघर) बिगबेन के नाम से दुनिया में प्रसिद्ध है। यह ३२० फुट ऊँचा है और दर्शकों को अपनी ओर अवश्य ही आकृष्ट कर लेता है। पार्लमेंट के अन्दर प्रविष्ट होते ही ब्रिटिश जाति के संघर्ष-मय इतिहास के पृष्ठ आँखों के सम्मुख खुलने लगे। श्री उड्रो वयाट यह बताते जाते कि यही वह स्थान है, जहाँ हेस्टिंग्स पर आरोप लगाये गये थे, यह वही स्थान है, जहाँ चार्ल्स को फाँसी दी गई थी—तो उस युग की स्मृतियाँ ताजी हो उठीं।

प्रथम चार्ल्स की फाँसी के आज्ञापत्र को भी हमने देखा, जिस पर फाँसी के समर्थक सभी सदस्यों के हस्ताक्षर हैं।

कॉमन सभा की सजावट में सादगी है किन्तु लार्ड सभा की सजावट

बिल्कुल सामन्ती ढंग की है। लार्ड सभा में जाने के लिए नीचे लाल रंग का कारपेट बिछा है, इस पर उड्रो वयाट ने कहा—"कम्युनिस्टों से पहले यहाँ के लार्डों ने लाल रंग को पसन्द किया था"—इस पर बड़ी हँसी हुई। लार्ड सभा की रायल गैलरी में बैठने के लिए बड़े ठाट-बाट का प्रबन्ध है।

ब्रिटेन के बड़े-बड़े पादरी और सामन्त लार्ड सभा के रूप में संगठित हुए और कॉमन सभा में शुरू में छोटे जमींदार तथा नगरों के धनी प्रतिनिधि थे। अब तब से दुनिया काफी बदल गई है और ब्रिटिश पार्लमेंट के ढाँचे में भी बड़े परिवर्तन हो गये हैं, परन्तु सामाजिक व्यवस्था का पुरानापन ही इस भवन की आज भी विशेषता है।

श्री उड्रो वयाट ने हमें लंच पर आमंत्रित किया था, इसलिए पार्लमेंट-भवन देखने के बाद वहीं कॉमन सभा भवन के एक कमरे में हम प्रीति-भोज में शामिल हुए। इस लंच में टोरी पार्टी के सदस्य श्री जी० निकोलसन तथा उदार दल के सदस्य श्री आर० होपकिन मारिस भी आमंत्रित थे। खाते समय विविध विषयों पर मनोरंजक बातें होती रहीं। श्री निकोलसन ने अपनी पार्टी के नेता श्री चर्चिल को 'वृद्ध शिशु' बता कर यह सिद्ध करने की कोशिश की कि मुँह से चाहे जो कुछ कहें, वे हैं "बड़े निश्छल राजनीतिज्ञ।" मुझे इस बात पर हँसी भी आ रही थी, मगर ऐसे अवसरों पर कोई अप्रीतिकर बात नहीं की जाती न! इसीलिए लंच या डिनर के समय सभी बातें 'हाँ' और 'ना' की पहेली बन जाती हैं। मैं श्री निकोलसन से यह कैसे कहता कि भारत अथवा जिन एशियाई और अफ्रीका के देशों पर श्री चर्चिल आज भी साम्राज्य-वादी प्रभुत्व कायम रखना चाहते हैं, उन्हें इन महाद्वीपों के लोग 'निश्छल-हृदय राजनीतिज्ञ' कैसे कहेंगे? जिस व्यक्ति ने द्वितीय महायुद्ध के बाद १९४७ में अमेरिका जाकर ४ मार्च को फुल्टन में भाषण देते हुए एक प्रकार से साफ-साफ सोवियत रूस के विरुद्ध युद्ध की तैयारी के लिए घोषणा की थी, उसे किस प्रकार का राजनीतिज्ञ कहा जाय, इसे मैं भला लंच के समय कैसे कहता!

लंच के बाद हमने कॉमन सभा की प्रेस-गैलरी से सदन की कार्यवाही देखी। कोरिया के प्रश्न पर विवाद चल रहा था। रक्षा-मंत्री शिनवेल जिस समय अपना कोरिया सम्बन्धी लिखित वक्तव्य पढ़ रहे थे, ठीक उसी समय हम प्रेस-गैलरी में पहुँचे थे। टोरी पार्टी के नेता चर्चिल के पास ही उपनेता ईडन टाँगें फैलाये बैठे थे। रक्षा-मंत्री के वक्तव्य देते समय बीच-बीच में चर्चिल

और ईडन के अतिरिक्त टोरी पार्टी के दूसरे सदस्य सरकार की आलोचना करते हुए कुछ बोल उठते और कभी सरकारी तथा कभी विरोधी पक्ष से तालियाँ बज उठतीं। श्री शिनवेल ने यह बताया कि कोरिया में लंकाशायर नामक फौजी दस्ते के काफी सैनिक हताहत हुए हैं और इसी प्रकरण में टोरी पार्टी की ओर से माँग की गई कि चीन के खिलाफ समुद्री घेरा डाल दिया जाय, ताकि हांगकांग से हो कर युद्ध के लिए जो महत्त्वपूर्ण चीजें चीन पहुँच रही हैं, वे वहाँ न पहुँच सकें। टोरियों का तर्क यह था कि जब कोरिया में चीन अंग्रेजी फौजी दस्तों का सफाया कर रहा है तो उसे युद्धोपयोगी कच्चा माल क्यों दिया जा रहा है। इस पर शिनवेल ने कहा कि व्यापारी क्या चीजें भेजते हैं, उसका हमारे पास लेखा नहीं है। इस पर चर्चिल ने कहा—"तो इस सम्बन्ध में आपके पास कोई सूचना नहीं है?" मजदूर सरकार के रक्षा-मंत्री ने कहा—"आपसे अधिक खबरें रखता हूँ"। इस बात पर टोरी सदस्यों ने मेज पीट कर यह चिल्लाना शुरू किया—"बात वापस लो।" रक्षा-मंत्री अपनी बात पर दृढ़ रहे। तब टोरियों ने शोर किया—"इस्तीफा दो, इस्तीफा दो।" इस पर मजदूर दल के सदस्यों ने क्या कहा, यह तो शोरगुल के कारण सुनाई नहीं पड़ा, किन्तु दो मिनट तक वहाँ एक प्रकार से चिल्ल-पों होती रही।

कॉमन सभा में काफी जीवन रहता है। यदि सभी सदस्य उपस्थित हों, तो उनके बैठने के लिए पर्याप्त सीटें नहीं हैं। जिन्हें सीटें नहीं मिलतीं, वे खड़े रहते हैं। लम्बी गद्दीदार बेंचें सदस्यों के बैठने के लिए हैं। छोटा सा हॉल है, जिसमें कठिनाई से साढ़े तीन-चार सौ सदस्य बैठ सकते हैं, जब कि सदस्य-संख्या ६२५ है। श्री वयाट ने आज ही हमें इस छोटे हॉल को दिखाते हुए कहा था—'संसद व्याख्यान देने की जगह नहीं हैं, बल्कि विचार-विमर्श की जगह है, इसलिए यह हॉल इतना छोटा है, ताकि एक दूसरे की बात सदस्य सुन कर उत्तर दे सकें। परन्तु यह बात जमी नहीं, क्योंकि जब सभी सदस्य आराम से बैठ नहीं सकते, तो किस प्रकार वे विवाद में शान्तिपूर्वक भाग ले सकते हैं।

विरोधी और सरकारी पक्ष के बीच में इतनी जगह खाली है, जिससे दोनों तरफ से यदि "तलवारें खिंच जायँ, तो एक दूसरे पर वार न हो सके।" एक समय था जब सचमुच कॉमन सभा में तलवारें म्यान से बाहर निकल आतीं थीं; इसलिए बीच की रेखा को किसी पक्ष का सदस्य अपने भाषण के समय लाँघ नहीं सकता।

प्रेस-प्रतिनिधियों के बैठने के लिए दूसरी मंजिल में स्थान है, जहाँ से सुविधापूर्वक वे सदन की कारवाही की रिपोर्ट तैयार नहीं कर सकते।

संसद भवन देख लेने के बाद सरकारी कार्यक्रम के अनुसार हम ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन के पूर्वी भाग—२००, आक्सफोर्ड स्ट्रीट—गये। इस विभाग के प्रधान एवं अन्य अधिकारियों से इस संगठन के सम्बन्ध में कुछ देर बातें होती रहीं। भारत, पाकिस्तान एवं लंका के लिए यहाँ से हिन्दी, बंगाली, सिंघली, तामिल, उर्दू और अंग्रेजी भाषाओं में कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं। बी० बी० सी० की यूरोपीय सर्विस के अन्तर्गत २४ भाषाओं में विविध कार्यक्रम प्रसारित करने की व्यवस्था है। रेडियो के व्यापक प्रचलन के साथ ही टेलीविजन भी लोकप्रिय होता जा रहा है और इसी सम्बन्ध में हमें बताया गया कि ब्रिटेन में १९४९ में रेडियो के कुल १ करोड़ २४ लाख २१ हज़ार तथा टेलीविज़न के २ लाख ३९ हज़ार ७ सौ लाइसेंस लिये गये थे।

युद्ध-काल में ब्रिटेन में टेलीविजन सर्विस बन्द कर दी गई थी, परन्तु १९४६ से पुनः यह चालू है। बी० बी० सी० के संगठन के बारे में यह कहा गया कि न तो यह सरकारी विभाग है और न व्यावसायिक संगठन, मगर इसके साथ ही यह भी सत्य है कि इस पर सरकार और पार्लमेंट का पूर्ण नियंत्रण है। कार्यक्रमों के सम्बन्ध में भी विस्तार के साथ बातें हुईं। 'अंग्रेजी शिक्षा' नामक कार्यक्रम से, बी० बी० सी० अंग्रेजी भाषा के प्रचलन की दिशा में प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। हमारे देश में भी हिन्दी-शिक्षण के लिए इसी प्रकार का कार्यक्रम अपनाया गया है, मगर जिस सुव्यवस्थित वैज्ञानिक प्रणाली से हिन्दी-शिक्षण की व्यवस्था उपयोगी सिद्ध होगी, उसे ग्रहण करने के लिए ऑल इंडिया रेडियो, दिल्ली को अपनी रीति-नीति में आमूल परिवर्तन करने की आवश्यकता है।

ब्रिटिश अखबारों में अकसर बी० बी० सी० की शासन-व्यवस्था और नीरस कार्यक्रमों की आलोचना होती है। इन आलोचनाओं में कभी-कभी सत्यांश अधिक होता है, परन्तु तमाम बुराइयों के बावजूद इस संगठन से सामूहिक राय बनाने की दिशा में जनता को मदद मिलती है। हाँ, यह बात दूसरी है कि बी० बी० सी० द्वारा प्रसारित कार्यक्रम से सामूहिक राय सही बनती है अथवा गलत। इस सांस्कृतिक संगठन के पक्ष अथवा विपक्ष में बहुत-सी बातें कही जा सकती हैं, किन्तु मैं इस प्रसंग की चर्चा नहीं करना चाहता, क्योंकि यह एक अलग विषय है। लेकिन यह मैं जरूर कहूँगा कि

बी० बी० सी० ने इस तथ्य को अच्छी तरह समझ लिया है कि रेडियो-प्रचार का असर "सूक्ष्म एवं अदृष्ट" होता है, और इस तथ्य को दृष्टि में रख कर अपने कार्यक्रमों के द्वारा जनता के विचारों को अपनी नीति के अनुरूप ढालने की दिशा में इस संगठन ने सफलता प्राप्त की है।

शाम को लेडी माउंटबेटन ने हमें 'ओवरसीज़ लीग' में चाय पर आमंत्रित किया था। मगर इस निमंत्रण के पूर्व ही एक दूसरे समारोह में शामिल होना मैंने स्वीकार कर लिया था, इसलिए उक्त चाय-पार्टी में मैं न जा सका। रात को हमने वेस्ट एंड की 'हिपोड्रोम' नामक नाट्यशाला में नग्न तारिकाओं द्वारा अभिनीत नृत्य-नाटिकाएँ देखीं। अठारह मनोरंजक एवं विनोदपूर्ण घटनाओं को ले कर जो नृत्य-नाटिकाएँ प्रस्तुत की गई थीं, उन्हें देखने के लिए भीड़ इस कदर जमा थी, कि जिन्हें स्थान न मिला, वे खड़े-खड़े ही आकर्षक रंगमंच पर थिरकती नग्न नर्तकियों को देख रहे थे। पेरिस के जीवन पर व्यंग्य करके इस नाट्यशाला के संचालक भले ही खुश होते हों, परन्तु कला की अपेक्षा नग्न-नारी-सौंदर्य को निहारने के लिए ही अधिकांश दर्शक जमा होते हैं। दूर बैठे जो दर्शक नग्न-सौंदर्य को ठीक से नहीं देख पाते थे, वे बार-बार बाइनाकुलर की सहायता से नारी की सुघर और नग्न-आकृति को देखने में संलग्न थे। दर्शिकाएँ भी आँखों पर बाइनाकुलर लगा-लगा कर रंगमंच पर हिलती-डुलती शोख अनावृत तारिकाओं को देखने में क्यों होड़ लगाये हुए थीं—इसका मर्म तो वे ही जानें, किन्तु रंगमंच की आकर्षक शोभा पर वे इस प्रकार मुग्ध थीं, कि प्रसन्न मुद्रा में वे अपने साथियों को बीच-बीच में चुम्बन का उपहार भी देती जाती थीं!

इन नृत्य-नाटिकाओं के कलात्मक पक्ष के सम्बन्ध में मैं क्या लिखूँ, जब कि ब्रिटिश महोत्सव के कारण मधुपायी दर्शकों से भरे हॉल में कुछ भी ठीक से देख सकना या सुन सकना कभी-कभी रूमानी हरकतों के कारण कठिन हो जाता था। कुछ चंचल लड़कियाँ दर्शकों के पीछे खड़े-खड़े आपस में भद्दे मजाक कर रही थीं और इस मादक वातावरण में सब कुछ देख कर उसे वहीं भुला देना मैंने उचित समझा।

'हिपोड्रोम' से बाहर निकल कर हम कुछ देर तक पिकाडिली में टहलते रहे। ३० अप्रैल को बो स्ट्रीट के मजिस्ट्रेट की अदालत में जिन शिकायतों के आरोप में कुछ मनचली युवतियाँ पकड़ी गई थीं, उनकी एक पूरी फौज यहाँ देख पड़ी। कोई टैक्सियों के पिछले भाग को पीटती, तो कोई

किसी पर्यटक का पीछा करती और यह सब हो रहा था, उस पिकाडिली में, जिस पर लंदन को गर्व है ! जिस सामाजिक-व्यवस्था के अन्तर्गत सुघर जीवन का निर्माण सम्भव नहीं है, उसमें पिकाडिली का यह कलंक मिट भी कैसे सकता है ? किसी की गरीबी जहाँ किसी की वासना की जलन बुझाने के लिए साधन बने, वहाँ रात में सुरुचिपूर्ण वातावरण पैदा ही कैसे हो सकता है ?

———

३ मई

(१) ब्रिटिश महोत्सव का समारम्भ
(२) मोम की मूर्तियों की प्रदर्शनी
(३) पत्रकार की काकटेल पार्टी में

आज ठीक ग्यारह बजे सेंटपाल कैथिड्रल से ब्रिटिश नरेश छठे जार्ज ने 'ब्रिटिश महोत्सव' का समारम्भ किया। बेनीपुरी जी के कारण होटल में विलम्ब हो जाने से मैं समय से वहाँ न पहुँच सका। बाद मैंने यही तय किया कि अब गिरजाघर के अन्दर जाना तो कठिन है, इसलिए भीड़ के साथ ही इस समारोह को देखा जाय।

जब हमारी कार सेंटपाल कैथिड्रल से काफी दूर थी, तभी यह अनुभव हुआ कि कार से आगे बढ़ना कठिन है। हर गली, कूचा, सड़क— दर्शकों से खचाखच भरी थी। कहीं तिल रखने की जगह न थी इसलिए कार छोड़ कर हम भीड़ में शामिल हो गये, और उसके साथ बढ़ते-बढ़ते सेंटपाल कैथिड्रल के काफी निकट पहुँच गये। परन्तु अब आगे बढ़ना कठिन जान कर हम भी दूसरों की भाँति किनारे खड़े हो गये। यदि गिरजाघर के अन्दर चले गये होते, तो आराम के साथ बैठने के लिए कुर्सियाँ अवश्य मिल जातीं, किन्तु लंदन में भीड़ के बीच खड़े हो कर इस समारोह को देखने का अनुभव कैसे प्राप्त होता? एक बार मैंने जब आँख उठा कर चारों ओर देखा, तो ऐसा लगा कि अपने राजा को देखने के लिए जन-समुद्र उमड़ पड़ा है।

ब्रिटेन के जीवन में इतना बड़ा विरोधाभास है, कि उसे देख कर बड़ी हँसी आती है। पुराने इतिहास की बात तो अलग है जब ब्रिटिश जनता निरंकुश नरेशों से संघर्ष करके अपने अधिकारों के लिए प्रयत्नशील थी, पर लगभग १५ वर्ष पूर्व जिस देश में इसी नरेश के बड़े भाई को केवल इसलिए गद्दी छोड़नी पड़ी कि तत्कालीन प्रधान मंत्री बाल्डविन यह नहीं चाहते थे कि आठवें एडवर्ड मिस सिम्पसन से शादी करें, वहीं आज मैं अपनी आँखों देख रहा हूँ कि राजा को देखने के लिए सड़क के किनारे, मकानों के छज्जों तथा

छतों पर स्त्री-पुरुष उमड़ पड़े हैं। आज पहली बार यहाँ धक्कम-धक्का भी खाना पड़ा। गलियों से भीड़ उमड़ती आती थी और सड़क के किनारे खड़े लोग धक्के खा कर कभी आगे और कभी पीछे खिसकते रहते थे। कुछ युवतियाँ धक्के खा कर खीझ उठतीं, परन्तु कुछ ऐसी थीं, जो भीड़ को चीर कर अगली कतार तक पहुँचने के लिए खुद धक्के दे कर आगे बढ़ने की कोशिश करतीं। एक बार हम चारों ओर से लड़कियों के बीच घिर गये। इसी बीच मनचले युवकों की एक भीड़ भी पीछे से वहाँ पहुँच गई। कुछ देर वहाँ इतनी धक्कमधक्का हुआ कि आस्ट्रेलिया से आई हुई कुछ लड़कियाँ बहुत क्षुभित हो उठीं। मेरे पास ही खड़ी एक युवती ने नाराज हो कर कहा—"देखिए, इन लड़कों का छिछोरापन! कितने अभद्र हैं ये।" यह सुनते ही लड़कों में से एक ने कहा—"उधर पीछे आप नहीं देखतीं, जहाँ लड़कियाँ धक्का दे कर आगे बढ़ना चाहती हैं।" वास्तव में भीड़ ऐसी थी कि हर व्यक्ति अपनी-अपनी जगह खड़े होने के प्रयास में विफल हो जाता। लोगों के धक्कों से कभी आगे और कभी पीछे हटना ही पड़ता। किन्तु एक बात अवश्य थी कि भीड़ और धक्कमधक्का के अतिरिक्त शोरगुल कम था।

जब महोत्सव का समारम्भ करने के बाद नरेश की सवारी बकिंघम पैलस जाने के लिए लौटी; तो फिर एक बार पुष्पांजलि भेंट करने के लिए लोग आतुर हो उठे। सामन्ती ठाट-बाट के साथ नरेश की सवारी महल की ओर जा रही थी और पुरुष नरेश पर, प्रौढ़ाएँ रानी पर, वृद्धाएँ राजमाता पर व युवतियाँ एलिज़ाबेथ और मारग्रेट पर फूलों की वर्षा कर रही थीं। जिस समय मारग्रेट पर फूलों की वर्षा हो रही थी, युवक उछल-उछल कर उसी ओर निहार रहे थे और जब मधुर मुसकान से खिले राजकुमारी के मुख को युवतियाँ देखतीं, तो रह-रह कर "लवली-लवली" —चिल्ला पड़तीं। इसी समय एक बार भीड़ सिमट कर इतने नजदीक आ गई, कि पुलिस को भीड़ हटाने के लिए बड़ी मुस्तैदी से काम करना पड़ा। परन्तु ऐसे समय भी लंदन की पुलिस जिस शिष्टता के साथ कर्तव्य-पालन कर रही थी, वह मैं भुला नहीं सकता।

राज-परिवार के सदस्यों के चले जाने के बाद प्रधान मंत्री एटली, विरोधी दल के नेता चर्चिल की कारें देख पड़ीं। मजदूर दल के नेता एटली की कार व टोरी पार्टी से सहानुभूति रखने वाले चर्चिल की कार रोक कर उन्हें फूलों के गुच्छे भेंट करने लगे।

आज दो-ढाई घंटे के भीतर कुछ पत्रों के दो संस्करण समारम्भ-

समारोह-सम्बन्धी ताजे से ताजे चित्रों के साथ प्रकाशित हुए। हजारों की संख्या में इन पत्रों की प्रतियाँ बिक जातीं। हॉकर दौड़-दौड़ कर पत्रों के साथ ही महोत्सव-सम्बन्धी पुस्तिकाएँ और ब्रिटिश झंडे बेच रहे थे।

आज लन्दन में चतुर्दिक् हर्षोल्लास की लहर दौड़ रही थी। जिस ब्रिटिश महोत्सव के शताब्दी-समारोह की चर्चा महीनों पूर्व से ब्रिटेन के बाहर भी फैली थी, आज उसका समारम्भ भी हो ही गया। सड़क पर फूलों की बिक्री हो रही थी। साधन-सम्पन्न अंग्रेज और पर्यटक पुष्पों को खरीदते, किन्तु साधन-शून्य दूर ही से पुष्पों की छटा हसरत-भरी निगाहों से देखते हुए आगे बढ़ जाते। डेफोडील, टुलिप्स और आइरिस (पुष्पों के नाम) खरीदने के लिए कुछ बच्चे मचल रहे थे, मगर उनकी माताएँ समझा-बुझा कर उन्हें आगे खींचने का प्रयास कर रही थीं। शायद उनके पास पैसे कम थे!

धीरे-धीरे भीड़ छूट गई और हम सेंटपाल कैथिड्रिल के पास पहुँच गये, जो लंदन के सुप्रसिद्ध स्थापत्य-कला-विशारद सर क्रिस्टफर रेन के मस्तिष्क की उपज है। वास्तव में रेनेसां शैली का यह मन्दिर ब्रिटिश वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है और क्रिस्टफर रेन की सूझबूझ का सर्वोत्कृष्ट प्रमाण। गोथिक शैली से यह भिन्न है। इसी गिरजाघर में लार्ड नेलसन और सुप्रसिद्ध चित्रकार टर्नर की समाधियाँ हैं।

मैडम तुसाद की विश्वप्रसिद्ध मोम की मूर्तियों की प्रदर्शनी देख कर आश्चर्य और हर्ष—दोनों ही हुआ। इस आश्चर्य-जनक प्रदर्शनी में साहित्य-कारों, विश्व की महान् विभूतियों, नरेशों, अभिनेताओं, खिलाड़ियों, योद्धाओं तथा विक्टोरिया क्रॉस पाने वाले सैनिकों (जिनमें ३ सैनिक भारत के भी हैं) की मूर्तियों के अतिरिक्त एक विभीषिका-कक्ष भी है, जहाँ संसार की सनसनी-खेज हत्याओं और कुख्यात अपराधियों के अतिरिक्त फाँसी के भिन्न-भिन्न तरीके दिखाने के साथ ही खौलते कड़ाह में जलाये जाने का दृश्य भी दिखाया गया है, इसी कक्ष में लोमहर्षक जेलों के उन भागों को भी दिखाया गया है, जहाँ प्रमुख व्यक्तियों को तड़प-तड़प कर अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा।

महान् विभूतियों में महात्मा गांधी की मोम की मूर्ति भी यहाँ है। राष्ट्रमंडल के राजनीतिज्ञों में श्री नेहरू कुर्सी पर बैठे हैं, जिन्ना साहब खड़े हैं और मानवता का महान् शत्रु मलान भी विचित्र वेश-भूषा में इस गिरोह में है। साहित्यकारों की जमात में अंग्रेजी साहित्य के प्रथम कवि चॉसर, सुप्रसिद्ध कवि और नाटककार शेक्सपियर और बीसवीं सदी के श्रेष्ठ नाटककार बर्नार्ड शॉ

भी यहाँ मौजूद हैं। किन्तु साहित्यकारों की मूर्तियों को जिस बेतरतीब ढंग से प्रदर्शित किया गया है, उसे देख कर हँसी आई। चॉसर और शेक्सपियर के साथ मेकाले, किपलिंग और वेल्स कन्धा भिड़ाये खड़े हैं और इस दृश्य को देख कर भी अंग्रेज शायद कभी न सोचते होंगे कि चॉसर और शेक्सपियर का यह कितना बड़ा अपमान है! मुझे तो कुछ मूर्तियाँ अति सामान्य एवं निर्जीव लगीं।

भिन्न-भिन्न भागों में यहाँ मोम की करीब ३४२ मूर्तियाँ प्रदर्शित हैं और कुछ मूर्तियाँ ऐसी, जो बड़ी सजीव प्रतीत होती हैं। क्रान्ति, कला और साहित्य के अतिरिक्त रूमानी ठाट तथा दिल को दहला देने वाले भयानक दृश्यों के साथ ही वह कौतूहल पैदा करने वाला कक्ष भी इस म्यूज़ियम में है, जहाँ मनोरंजन के लिए भाँति-भाँति के खेल तो हैं ही, किन्तु वे शीशे भी हैं, जिनमें अपना चेहरा विचित्र आकार का दिखायी पड़ता है। मूर्तियों की गढ़न में व्यक्ति विशेष की वेश-भूषा, मुखाकृति पर इतना ध्यान दिया गया है, कि उन्हें देख कर आश्चर्य में पड़ जाना स्वाभाविक है।

श्रीमती तुसाद फ्रांस की रहने वाली थीं। गरीबी और पारिवारिक जीवन की कठिनाइयों से तंग आ कर १८०२ में वे अपने ज्येष्ठ पुत्र के साथ अपनी मोम की कुछ मूर्तियाँ लिये ब्रिटेन पहुँची और यहीं विभिन्न भागों में अपनी प्रदर्शनियाँ आयोजित करती रहीं। उनकी मृत्यु के बाद भी इस प्रदर्शनी में नई-नई मोम की मूर्तियाँ जुड़ती जा रही हैं तथा नये राजनीतिज्ञों और नई घटनाओं को लेकर भी मोम की मूर्तियाँ बना कर श्रीमती तुसाद की परम्परा कायम रखी गई है। जिस अभिनव कला को उस कलाकर्त्री ने अपनाया था, वह आज इतनी लोकप्रिय हो गई है कि इसे देखे बिना लंदन की यात्रा अधूरी समझी जाती है।

'डेली हेराल्ड' के कूटनीतिक प्रतिनिधि श्री डब्ल्यू० एन० ईवर द्वारा दी गई काकटेल-पार्टी में आज पुनः कश्मीर के प्रश्न पर मीठी और कड़वी बातें होती रहीं। इस पार्टी में 'डेली हेराल्ड' के सम्पादक तथा कुछ अन्य पत्रकारों के अतिरिक्त भारतीय सिविल सर्विस के अवकाशप्राप्त अंग्रेज और लंदन में रहने वाले भारतीयों में डाक्टर हिंगोरानी भी सपरिवार वहाँ उपस्थित थे।

शाम साढ़े छः से नौ बजे रात तक मधुपान के साथ विविध विषयों पर बातें हुईं, परन्तु बातचीत कश्मीर पर ही केन्द्रीभूत रही। अंग्रेज़ जब यह

कहते, कि कश्मीर के सम्बन्ध में नेहरू की नीति समझ में नहीं आती, तो इस कुटिल राजनीति पर बड़ा क्षोभ पैदा होता। एक अंग्रेज महिला को यह जान कर आश्चर्य हुआ कि पाकिस्तानी आक्रमण से कश्मीर की रक्षा के लिए कश्मीरी मुसलमान अपना रक्त बहा चुके हैं और आगे भी बहायेंगे। भारत में अंग्रेजी भाषा के भविष्य के बारे में भी बातें हुईं। श्री रंगास्वामी ने कहा—"अंग्रेजी भारत की मुख्य भाषा बनी रहेगी, कुछ हिन्दी वाले जरूर चिल्ला रहे हैं, परन्तु उनकी सुनता कौन है!" इस पर कुछ व्यक्तियों ने मन्द मुसकान से अपनी खुशी अभिव्यक्त की। मगर एक सुलझे हुए अंग्रेज ने कहा—"अंततः हिन्दी ही भारत की मुख्य भाषा होगी, क्योंकि वही जनता की ज़बान है।" उसने यह भी कहा कि अंग्रेज़ यही चाहते हैं कि भारत में अंग्रेजी शिक्षा की व्यवस्था किसी न किसी रूप में बनी रहे, ताकि दोनों देश एक दूसरे को समझते रहें।

श्रीमती ईवर ने मुझसे पूछा—"अमेरिका के सम्बन्ध में आपके क्या ख्याल हैं?" मैंने कहा—"अब्राहम लिंकन और वाल्ट ह्विटमैन के अमेरिका को कौन पसन्द न करेगा?" मेरी प्याली में शेरी उड़ेलते हुए कई बार उन्होंने कहा—अमेरिका के लोग बड़े अच्छे हैं!" मैंने भी कहा—"वहाँ के लोग अच्छे हैं और किसी देश की जनता बुरी नहीं होती।" तब वे बहुत खुश नज़र आईं।

यहाँ से विदा हो कर जब हम होटल के लिए रवाना हुए, तो मार्ग में एक साथी के आग्रह पर हम एक 'पब' में प्रविष्ट हुए। यहाँ मजदूर और टोरी दोनों दलों के समर्थक मौजूद थे। वे बियर पी कर आपस में बड़ी मनोरंजक बातें करते जाते थे, किन्तु राजनीतिक विवाद के समय भी वे 'पबों' में गाली-गलौज पर नहीं उतरते। यहीं एक निम्न-मध्यम वर्ग का परिवार देख पड़ा। माँ-बाप के साथ दो लड़कियाँ भी वहाँ मौजूद थीं। उन्होंने बड़े मार्मिक शब्दों में कहा—"विषम आर्थिक परिस्थिति के कारण बियर के अतिरिक्त और कोई पेय उन्हें सुलभ नहीं।" उन्होंने मुझे एक गिलास बियर पिलाया। साधारण अंग्रेज-परिवार के इन सदस्यों ने जिस मैत्रीपूर्ण ढंग से निष्कपट बातें कीं, उससे यही सिद्ध हुआ कि भूगोल की रेखाएँ मानव-मानव के बीच दीवार नहीं खड़ी कर सकतीं। जिस भावुकता और उल्लास के साथ उस सौम्य मुखाकृति वाली लड़की ने मुझे बियर का गिलास दिया था, वह इस यात्रा की एक अमिट स्मृति है।

———

४ मई

(१) दीक्षित अध्यापकों की कमी
(२) इटन कॉलेज
(३) स्लाउ का श्रम-कल्याण-केन्द्र

आज भोर से ही बूँदाबाँदी हो रही थी। आकाश कुहरे से ढका हुआ था। मगर इस बुरे मौसम की परवाह किये बिना हम साढ़े आठ बजे होटल से स्लाउ रवाना हो गये। यह औद्योगिक क्षेत्र विंडसर रोड पर लंदन से करीब २५ मील दूर है। आज पहली बार हमें इंगलैंड के ग्रामीण जीवन की झलक मिली। कुछ साथी कार में सो गये थे और कभी-कभी हम उन्हें यहाँ की देहाती दुनिया के मनोरंजक दृश्य दिखाने के लिए जगा लेते। बेनीपुरी जी स्वदेश पहुँचते ही अपनी यात्रा सम्बन्धी डायरी प्रकाशित कराने की चर्चा किया करते हैं, इसलिए उन्हें जगा-जगा कर यह दिखाना पड़ता कि खेतों में काम करने वाले उन गरीब अंग्रेज़ों को भी देखिए, जो बारिश में परिश्रम के साथ अपने काम पर जुटे हुए हैं। खिले हुए फूलों तथा हरी घास और फसल से भरी-पूरी धरती, सड़कों के किनारे वृक्षों की पाँतें, कारों और बसों का आना-जाना—यह सब पर्यटकों के लिए चित्ताकर्षक होते ही हैं। वसन्त ऋतु के कारण यहाँ के काले-काले वृक्षों का रूप बदल गया है और हरी पत्तियाँ निकल आई हैं। इस शीत प्रदेश में भी अब प्रकृति का सौंदर्य निखर उठा है। लंदन से अधिक अच्छा मुझे यहाँ का ग्रामीण-जीवन लगा। ग्राम बहुत छोटे-छोटे, किन्तु सभी मकान साफ-सुथरे। घरों में बिजली की रोशनी, खिड़कियों पर खूबसूरत परदे। पक्की सड़कें और यातायात की पूर्ण सुविधा। लंदन की भाँति गाँवों में भी देख रहा हूँ कि शायद कोई मकान ऐसा हो, जिसमें खिड़कियों और दरवाजों पर परदे न लगे हों। अंग्रेज़ों को पारिवारिक जीवन में गोपनीयता विशेष प्रिय है और घर की हर खिड़की पर लगे परदे इसी बात का संकेत कर रहे थे। हम यह भी कह सकते हैं कि यहाँ का जीवन बड़ा रहस्यमय है और इसीलिए शायद यहाँ जासूसी

उपन्यासों की खपत अधिक है । हर घर के सामने बाड़ या घेरा। टोरी-परम्परा के कारण निजी सम्पत्ति की भावना यहाँ इस प्रकार जोर पकड़े हुए है, कि छोटे-छोटे घरों के आगे भी घेरा लगा है।

हमारी कारें गन्तव्य स्थान की ओर बढ़ी जा रही थीं और एक जगह जब कुछ घोड़े दिखाई पड़े, तो अनायास उस ओर दृष्टि गड़ गई। लम्बी टाँगों के, पुष्ट रान वाले मोटे-ताज़े घोड़े देख कर मैंने यह समझ लिया कि क्यों अंग्रेज़ों को अपने घोड़ों पर गर्व है। रेस-सम्बन्धी एक पुस्तक में मैंने कभी पढ़ा था कि ब्रिटेन और फ्रांस के घोड़े अच्छे होते हैं। सोवियत रूस के कज़्ज़ाक प्रदेश के घोड़े तथा अरबी घोड़ियाँ भी बहुत प्रसिद्ध हैं। मगर इन अंग्रेज़ी घोड़ों को देख कर एक आश्चर्य अवश्य हुआ कि उनके शरीर से जितनी स्फूर्ति टपक रही थी, उतना ही उनका स्वभाव नियंत्रित मालूम हुआ।

ग्रामीण-जीवन को देखते हुए दस बजे से कुछ पहले हम स्लाउ के शिक्षा-कार्यालय पहुँच गये, जहाँ कुछ देर क्षेत्रीय शिक्षा-अधिकारी से इस द्वीप की शिक्षा-प्रणाली के सम्बन्ध में बातें होती रहीं। उन्होंने संक्षेप में द्वितीय महायुद्ध के पूर्व और उसके बाद के शिक्षा-प्रयोगों के बारे में बतलाया।

शैक्षिक-क्षेत्र में इंगलैंड और वेल्स में एक प्रकार से विकेन्द्रीकरण की नीति लागू है। राष्ट्रीय शिक्षा-प्रणाली का विकास जिस रीति से यहाँ हुआ है, उसका विश्लेषण करने पर यह प्रकट हो जायगा कि शिक्षा-मंत्रालय का शैक्षिक-क्षेत्र के आधारभूत प्रश्नों पर अवश्य नियंत्रण है, किन्तु शिक्षा-पद्धति तथा पाठ्यक्रमों के सम्बन्ध में अध्यापकों को पूरी आजादी है और इस मामले में अधिकारियों की ओर से कोई हिदायत नहीं दी जाती। अध्यापक स्थानीय अधिकारियों अथवा प्रबन्ध समितियों के अधीन हैं, परन्तु पारस्परिक सहयोग और विचार-विनिमय के आधार पर शिक्षा-मंत्रालय स्थानीय प्रशासन एवं प्रबन्ध-समितियों के बीच सम्बन्ध कायम रहता है और निरीक्षक एक प्रकार से सम्पर्क अफसर का काम करते हैं। उक्त संस्थाओं द्वारा संचालित स्कूलों में प्राथमिक, माध्यमिक और टेक्निकल शिक्षा दी जाती है। प्रौढ़ों के लिए भी इन्हीं संस्थाओं द्वारा शिक्षा की व्यवस्था की जाती है।

शिशु-पाठशालाएँ (नर्सरी) काफी लोकप्रिय होती जा रही हैं। इनमें दो से पाँच साल तक के शिशुओं को दाखिल किया जाता है। प्राइमरी स्कूलों में यदि शिशु-पाठशालाओं को भी शामिल कर लिया जाय, तो यहाँ दो से ग्यारह वर्ष तक की बालक-बालिकाएँ तथा ग्यारह से अठारह वर्ष तक की

छात्र-छात्राओं को विभिन्न प्रकार के माध्यमिक स्कूलों में शिक्षा दी जाती है।

स्थानीय प्रशासन तथा प्राइवेट प्रबन्ध समितियाँ कला-कौशल की शिक्षा के अतिरिक्त सांध्यकालीन प्रौढ़-पाठशालाओं की व्यवस्था भी करती हैं। १९४५ से स्थानीय प्रशासन द्वारा संचालित किसी भी स्कूल में प्राइमरी और माध्यमिक शिक्षा के लिए छात्रों से फीस नहीं ली जाती। अठारह वर्ष तक की आयु के जो लड़के-लड़कियाँ स्कूल नहीं जातीं, उनके लिए 'अनिवार्य पार्ट-टाइम शिक्षा योजना' लागू है। परन्तु जिन स्कूलों को शिक्षा-मंत्रालय से आर्थिक सहायता मिलती है, उनमें छात्रों से फीस ली जाती है।

ब्रिटेन में अब छात्र-छात्राओं के स्वास्थ्य पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाने लगा है। १९४४ के शिक्षा-कानून के अन्तर्गत 'स्कूल स्वास्थ्य योजना' एवं 'राष्ट्रीय स्वास्थ्य-योजना' में सामंजस्य स्थापित हो गया है। सभी प्राइमरी और माध्यमिक स्कूलों के छात्र-छात्राओं के लिए अनिवार्य रूप से मुफ्त शिक्षा की व्यवस्था है। डाक्टर और नर्सें स्कूलों में जा कर विद्यार्थियों के स्वास्थ्य की परीक्षा करती हैं। किसी छात्र का विकास रुक जाने अथवा विकास की गति में ह्रास का आभास मिलते ही उसकी मनोवैज्ञानिक परीक्षा के बाद उसकी उचित चिकित्सा की व्यवस्था की जाती है। हमें बताया गया कि यह सारा काम बड़ी ईमानदारी और परिश्रम के साथ होता है। स्वास्थ्य-अधिकारी टालने की भावना से कोई काम नहीं करते।

गूँगे-बहरे बच्चों की शिक्षा की समुचित व्यवस्था है। इस प्रकार के पाँच से सोलह वर्ष तक के सभी लड़के-लड़कियों को पाठशाला जाना जरूरी है।

स्कूलों में सभी बालक-बालिकाओं के लिए मुफ्त दूध और भोजन की व्यवस्था करने की दिशा में प्रयास किया जा रहा है। शिशु-पाठशालाओं में सभी बच्चों को दूध मुफ्त मिलता है। १९४६ से अन्य स्कूलों में भी बच्चों को दूध मुफ्त मिलने लगा है, परन्तु मुफ्त भोजन की सुविधा अभी केवल ५० प्रतिशत छात्रों को सुलभ है। अधिकांश स्कूलों में छात्रों का भोजन तैयार करने के लिए कैंटीन की समुचित व्यवस्था है।

ब्रिटेन में दीक्षित अध्यापकों की कमी से शिक्षा-मंत्रालय के सम्मुख विषम समस्या उपस्थित है। आबादी बढ़ रही है और यह आशा है कि १९४७ के शुरू में जितने बच्चे इंगलैंड और वेल्स के स्कूलों में पढ़ते थे, उससे १० लाख अधिक १९५३ तक हो जायँगे। युद्ध के पूर्व इंगलैंड और वेल्स के सहायता प्राप्त प्राइमरी और सेकेंडरी स्कूलों में कुल करीब १ लाख

६० हजार अध्यापक थे, जिनकी संख्या १९४९ में २ लाख ११ हजार हो गई थी और अनुमानतः १९५४ के शुरू तक लगभग २ लाख ४० हज़ार अध्यापकों की आवश्यकता होगी। शिशु-पाठशालाओं के लिए मुख्यतः अध्यापिकाओं की आवश्यकता है, किन्तु उनकी भी कमी है। उक्त अधिकारी ने बताया कि शिक्षित महिलाओं को अध्यापन के क्षेत्र में लाने का प्रयास जारी है। युद्ध के बाद नये शिक्षा-क़ानून के अन्तर्गत संकटकालीन ट्रेनिंग-कालेजों की व्यवस्था की गई है, जिनमें फौज से विघटित लोगों को ट्रेनिंग दे कर प्राइमरी और सेकंडरी स्कूलों में अध्यापन के लिए भेजा जा रहा है। स्थायी रूप से जो ट्रेनिंग कालेज हैं, उनमें प्रतिवर्ष २३ हजार शिक्षक छात्रों को दीक्षित किया जाता है, जब कि युद्ध से पहले केवल पन्द्रह हजार शिक्षक-छात्रों को दीक्षित किया जाता था। हमें एक दूसरे सूत्र से मालूम हुआ कि ग्रामर स्कूलों (माध्यमिक स्कूलों का एक प्रकार) में ग्रेजुएट अध्यापकों की बड़ी कमी होती जा रही है और इसके साथ ही विज्ञान और गणित के अध्यापकों की भी कमी हो रही है, क्योंकि विज्ञान ले कर विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र अध्यापन की ओर कम वेतन के कारण आकृष्ट नहीं हो रहे हैं। जहाँ तक महिला-स्नातकों का प्रश्न है, उनकी संख्या भी शिक्षण के क्षेत्र में गिरती जा रही है। एक अध्यापक ने मुझे यह भी बताया कि ब्रिटेन में दीक्षित अध्यापकों की कभी अब धीरे-धीरे वह रूप धारण करती जा रही है, जो यदि शीघ्र दूर न हुई तो ब्रिटेन के सम्मुख दीक्षित अध्यापकों का संकट पैदा होगा।

साधारण नागरिकों के बच्चों के लिए जो प्राइमरी तथा सेकंडरी स्कूल हैं, उनके अतिरिक्त अभिजात-वर्ग के बच्चों के लिए अलग स्कूल हैं जिन्हें 'पब्लिक स्कूल' कहते हैं। सबसे पुराने पब्लिक स्कूल—विनचेस्टर (१३८२) और इटन (१४४०) हैं। हैरो भी एक सुप्रसिद्ध पब्लिक स्कूल है जहाँ नेहरू जी ने शिक्षा प्राप्त की थी। मगर आज के युग में वर्गों के आधार पर इस तरह अलग-अलग स्कूलों की व्यवस्था जारी रखना निस्सन्देह किसी भी राष्ट्र के लिए अपमानजनक है। सभी बच्चों को समान रूप से अच्छी शिक्षा की सुविधा प्राप्त होनी चाहिए। यह कौन अच्छी संस्कृति है जिसके अन्तर्गत धनी वर्ग के बच्चों को अच्छी शिक्षा की व्यवस्था अलग हो और साधारण जन समुदाय के लिए अलग।

स्कूलों से बी० बी० सी० द्वारा विशेष प्रोग्राम ब्रॉडकास्ट किये जाते

हैं। इस विभाग में अनुभवी शिक्षा-विशारद कार्यक्रमों को तैयार करने के लिए रखे गये हैं और विभिन्न अवस्था के बालकों के लिए अलग-अलग प्रोग्राम ब्रॉडकास्ट किये जाते हैं। 'स्कूल ब्रॉडकास्टिंग कौंसिल' स्कूलों, ट्रेनिंग कॉलेजों और शिक्षा-अधिकारियों से पूर्ण सम्पर्क कायम रखती है। इस व्यवस्था से कार्यक्रमों को रुचिकर बनाने में कौंसिल को मदद मिलती है।

शिक्षा-अधिकारी से बातचीत करने के बाद हम सर्वप्रथम एक प्राइमरी स्कूल देखने गये। इस पाठशाला में ४०२ विद्यार्थी और १२ शिक्षक हैं। इस स्कूल में भी अध्यापकों की संख्या बहुत कम है। बच्चे स्वस्थ और प्रसन्न देख पड़े। जब हम एक कक्षा में अध्यापिका से बातें कर रहे थे, कुछ बच्चे एक दूसरे को चिढ़ा रहे थे। बच्चों ने हमें अपना सामूहिक गान भी सुनाया।

इस पाठशाला के शिशु-विभाग—नर्सरी—को देख कर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई।

मुख्य अध्यापिका ने बड़ी दिलचस्पी के साथ शिशु-पाठशाला के हर विभाग को दिखाया। छोटे-छोटे बच्चे कहीं खिलौनों के साथ खेल रहे हैं; कहीं शिशु के हाथों से तूलिका कागज पर चल रही है और शिशु-कल्पना विविध रंगों में उस पर उतर रही है तो कहीं झूले में कोई झूल रहा है। कहीं-कहीं वर्णमाला के अध्ययन में वे तल्लीन हैं तो कहीं दीवारों पर रँगे चित्रों को देखने में वे तन्मय हैं। कहीं-कहीं तीन-चार वर्ष के शिशु ऊधम भी मचा रहे हैं।

स्लाउ क्षेत्र की शिशु-पाठशालाओं से श्रमिक परिवारों को यह लाभ होता है कि माताएँ अपने दो से पाँच वर्ष तक के बच्चों को इन नर्सरी स्कूलों में छोड़ कर निश्चिन्त हो अपने-अपने काम पर चली जाती हैं और शाम को काम से वापस आ कर फिर अपने शिशु को अपनी गोद में ले लेती हैं। इस क्षेत्र के एक सेकेंडरी स्कूल को को भी हमने देखा। वहीं हमने अध्यापकों एवं छात्रों के साथ भोजन किया। हम लोगों के लिए विशेष रूप से चावल और मसालेदार सब्जी तैयार करवायी गयी थी। इस स्कूल में ११ से १५ वर्ष तक की छात्र-छात्राएँ पढ़ती हैं। स्कूल में घूमते समय हमें शोरगुल बिलकुल नहीं सुनायी पड़ा। वातावरण बिलकुल शान्त था। एक हॉल में कुछ लड़के-लड़कियाँ नृत्यकला सीख रहे थे और उस बुरे मौसम में भी व्यायामशाला में कुछ छात्र व्यायाम कर रहे थे। इस माध्यमिक पाठशाला के हेडमास्टर विचारों से प्रतिक्रियावादी जान पड़े, किन्तु अपने काम में पटु हैं। यहाँ हेडमास्टर को व्यापक अधिकार प्राप्त हैं। वही पाठ्यक्रम तैयार करता है, पाठ्य-पुस्तकें चुनता है और

उसकी इच्छा के विरुद्ध किसी अध्यापक की नियुक्ति या बर्खास्तगी नहीं हो सकती। हेडमास्टर के छोटे कमरे में विविध विषयों की कई पुस्तकें उनकी टेबुल पर बिखरी पड़ी थीं। कॉफी पीते समय बातचीत के सिलसिले में पता चला कि अपने दायित्व के प्रति यह प्रधानाध्यापक कितना सजग है। शिक्षा के क्षेत्र में यही सजगता छात्रों के विकास में सहायक सिद्ध होती है।

स्लाउ क्षेत्र के स्कूलों को देख कर हम पुनः विंडसर आ गये। टेम्स नदी के तट पर यह कस्बा बसा हुआ है और वर्कशायर का यह केवल एक खूबसूरत इलाका ही नहीं है बल्कि ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण स्थान है।

सबसे पहले हम यहाँ सेंटजार्ज चैपल (गिरजाघर) देखने गये, जो 'लम्ब वास्तुकला' का एक उत्कृष्ट नमूना है। इतिहास की अमूल्य निधियाँ इस गिरजाघर में संगृहीत हैं। ट्यूडर और स्टुअर्टकालीन राजाओं व सामन्तों की तलवारें तथा फौजी वर्दियाँ वहाँ हमें देखने को मिलीं। कई अंग्रेज़ नरेशों की समाधियाँ भी यहाँ है। अष्टम हेनरी और प्रथम चार्ल्स की समाधि जब हम देख रहे थे, तभी कुछ छात्र-छात्राओं की भीड़ वहाँ आ पहुँची। इनके शरीर पर कपड़े अच्छे थे और ये महोत्सव की खुशी में गीत गा-गा कर वहाँ की चीजों को देख रहे थे।

इस ऐतिहासिक गिरजाघर के भित्ति-चित्रों और रंगीन चित्रों से जटित खिड़कियों की शोभा सचमुच प्रशंसनीय है। वास्तव में अब यह ईशु-पूजा का स्थान होने के साथ ही एक म्यूज़ियम भी हो गया है, जहाँ पुरानी वस्तुएँ तथा नरेशों की समाधियाँ देखने के लिए दर्शकों की भीड़ लगी रहती है। परन्तु ऐसा प्रतीत हुआ कि यहाँ के पादरी ज्यों ही लोगों की भीड़ देखते हैं, उपदेश देने के लिए झट आ पहुँचते हैं और हमारे साथ भीड़ देख कर जब उन्होंने अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया, तब उपदेश सुनने के लिए हमें वहाँ बैठना ही पड़ा।

हमने विंडसर महल (विंडसर कॉसल) को भी देखा। यह महल एक पहाड़ी पर दुर्ग की भाँति खड़ा है। विजयी विलियम (१०६६ से १०८७) के समय से ही यह परम्परा है कि प्रत्येक ब्रिटिश नरेश यहाँ प्रति वर्ष कुछ समय जरूर निवास करता है।

राजधानी से करीब २२ मील दूर आमोदप्रमोद के लिए यह गढ़ी बनवायी गयी थी। महल में चित्रों का अच्छा संग्रह है। सिंहद्वार के सामने कटी-छटी घास के बीच पुष्पों की क्यारियाँ बड़ी मनोरम लगती थीं। नरेश इस महल में नहीं रहते, तब भी रक्षक अपनी-अपनी जगहों पर तैनात रहते हैं।

जिस समय हम वहाँ पहुँचे, पानी गिर रहा था। दर्शकों की संख्या नगण्य थी, किन्तु रक्षक अपने-अपने स्थानों पर मुस्तैदी के साथ सीधे तने खड़े थे। अंग्रेज़ों में अनुशासन की भावना निश्चय ही सराहनीय है। टेम्स नदी के उत्तरी तट पर इंगलैंड का विश्वप्रसिद्ध पब्लिक स्कूल 'इटन कॉलेज' स्थित है। १८२३ में नदी पर पुल बाँध कर विंडसर और इटन के बीच सम्पर्क स्थापित कर दिया गया था। इटन का कस्बा बकिंघम शायर में है।

१४४० में इस कॉलेज की स्थापना हुई थी और इस समय यहाँ लगभग १०० अध्यापक दस-ग्यारह सौ छात्रों को शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। इटन कॉलेज भी इस बात का द्योतक है कि यह भूखंड परम्पराओं का कितना पुजारी है। सभी लड़के आज भी यहाँ ऊँचे-ऊँचे हैट (टाप हैट), टेलकोट और इटेन जैकेट पहनते हैं। छठे हेनरी का जन्म विंडसर महल में हुआ था और उसी ने टेम्स नदी के उत्तरी तट पर इस कॉलेज की स्थापना की थीं, क्यों कि यह स्थान उसे बहुत प्रिय था। ट्यूडरकालीन ईंटों से निर्मित इस स्कूल की पुरानी इमारत के कुछ भाग आज भी अपने मूल रूप में खड़े हैं।

अन्य देशों की भाँति ब्रिटेन में भी प्राचीन काल के स्कूलों पर धर्म की छाप है। लड़ाइयों के बीच फँसे रहने के कारण छठे हेनरी की रुझान धर्म की ओर हो गई थी और इसीलिए इटन-कॉलेज के गिरजाघर की दीवारों पर उसने कुमारी मेरी की जीवन-सम्बन्धी कई आश्चर्यजनक कथाओं को चित्रित करवाया है। ये भित्ति-चित्र बहुत ही आकर्षक हैं और इनका रंग अभी बहुत फीका नहीं पड़ा है। यहाँ १२-१३ वर्ष की अवस्था के छात्र दाखिल किये जाते हैं और १८ वर्ष की अवस्था तक उन्हें शिक्षा दी जाती है। २४ छात्रावासों में विद्यार्थियों के निवास की समुचित व्यवस्था है। आरम्भ में इस कॉलेज में केवल ७० छात्र पढ़ते थे और आज भी प्रतिभा की दृष्टि से सबसे अच्छे सत्तर छात्रों को, जिन्हें 'किंग्स स्कॉलर्स' (राजा के छात्र) कहते हैं, अध्ययन के लिए राज्य-कोश से छात्रवृत्तियाँ मिलती हैं। जिस कमरे में सत्तर छात्रों के साथ इस कॉलेज की नींव पड़ी थी, वह कमरा भी सुरक्षित है।

४ दिसम्बर १९४० को जर्मन बमवारों ने इस पब्लिक स्कूल पर भी बम फेंके थे और इस शिक्षण-भवन के कुछ भाग नष्ट हो गये थे। प्रथम महायुद्ध में इस कॉलेज से शिक्षा पाये ११५४ छात्र मौत के शिकार हो गये थे और अपर स्कूल के नीचे उनकी याद में स्मारक बना हुआ है। बहुत-सी डेस्कों पर उन पुराने छात्रों के नाम खुदे हैं, जिन्होंने अध्ययन के अनन्तर

जीवन में प्रवेश करने के बाद राजनीतिक, साहित्यिक एवं अन्य क्षेत्रों में यश प्राप्त किया था। कवि शेली और ग्रे ने यहीं शिक्षा प्राप्त की थी। वाटरलू के विजेता वेलिंगटन भी इसी स्कूल की उपज थे, जिन्होंने यह उद्‌गार व्यक्त किया था—"इटन की क्रीड़ाभूमि में वाटरलू की विजय हुई थी।" इस स्कूल को इस बात का भी गर्व है कि ब्रिटेन के १७ प्रधान मंत्री यहीं के छात्र रह चुके हैं। पुराने राजनीतिज्ञों में वालपोल, ग्लैडस्टन आदि भी यहीं के छात्र थे। कॉलेज-पुस्तकालय में कुछ पुरानी अमूल्य पांडुलिपियाँ भी हैं। खेल के मैदान बहुत अच्छे हैं। इटन के पास ही 'स्टोक पोग्स' नामक गाँव है, जिसकी कब्रगाह में थौमस ग्रे ने अपनी अमर 'एल्जी' (मर्सिया—दुःखपूर्ण कविता) लिखी थी, जिसका स्थान अंग्रेजी काव्य साहित्य में सदा के लिए सुरक्षित है। इस अभिजात-वर्ग के स्कूल में पढ़ने के बाद भी उस कवि में उपेक्षित और अभावग्रस्त जनता के लिए बड़ा दर्द था। इटन कॉलेज को देखने के पश्चात् यहाँ से रवाना होते समय आज के युग में भी कवि ग्रे का यह उद्‌गार वहाँ के वातावरण में गूँजता हुआ सुनायी पड़ा : "कितने ही पुष्प बिना खिले मुरझा जाते हैं।"

हम फिर विंडसर आ गये और कुछ समय तक उस कस्बे में घूमते रहे। वहाँ गलियों में इधर-उधर घूमने के बाद यह बात छिपी न रही कि लोग अभी तक युद्ध के प्रभाव से मुक्त नहीं हो पाये हैं। दुकानों में बिक्री कम हो रही थी और कुछ स्त्रियों के रूखे बाल तथा फीके चेहरे उनकी आर्थिक बेबसी का परिचय दे रहे थे। सचमुच युद्ध ने इतनी सामाजिक समस्याएँ पैदा कर दी हैं कि उन्हें शीघ्र सुलझाना कई देशों के लिए कठिन प्रतीत हो रहा है। २८ अप्रैल के 'न्यू स्टेट्समैन ऐंड नेशन' में बारह नये साहित्यकारों ने ब्रिटेन के सभी लेखकों से शान्ति-घोषणा की अपील करते हुए अपने पत्र में यह लिखा था—"हम लेखकों का यह विश्वास है कि तीसरे महायुद्ध के बाद हमारी सभ्यता शायद ही बची रहे।" लंदन के डॉक क्षेत्र तथा इन दर्द भरे चेहरों को देखने के बाद इन युवक लेखकों की अपील को स्वीकार करने से कौन सहृदय व्यक्ति इनकार कर सकता है? सचमुच पुराने युद्ध के घाव भरने और नये युद्ध की आशंका मिटने पर ही मनहूस वातावरण दूर होगा।

विंडसर के 'कॉसल होटल' में शाम साढ़े छः बजे खाना खाने के बाद 'कम्युनिटी सेंटर' देखने के लिए पुनः हम स्लाउ पहुँचे। करीब बीस लाख रुपये की लागत से इस केन्द्र की स्थापना की गई है। ६४० एकड़ में यह

औद्योगिक इलाका फैला हुआ है। यह क्षेत्र एक कंपनी के हाथ में है, जो यहाँ औद्योगिक प्रतिष्ठानों को बनवा कर उन्हें पट्टे पर उठाने का काम करती है। लगभग २२० फर्में यहाँ शृङ्गार-प्रसाधन सम्बन्धी विविध सामग्री, परदे और झालर, फर्नीचर, मिठाइयाँ तथा अन्य चीजें तैयार करके उन्हें लंदन के बाजारों में बेचती हैं। इस औद्योगिक क्षेत्र में मजदूरों की संख्या करीब २१ हज़ार है। अब इसी स्लाउ के औद्योगिक क्षेत्र का अनुकरण कर, ब्रिटेन के उत्तर-पूर्वी समुद्र-तट के किनारे-किनारे लगभग चौंतीस औद्योगिक क्षेत्रों में उपभोक्ताओं के लिए विभिन्न चीज़ें तैयार होती हैं।

पूँजीवादी देशों में ब्रिटेन एक ऐसा देश है, जहाँ पुरानी सामाजिक व्यवस्था कायम रखने के लिए हर वर्ग के लोगों की सुख-सुविधा पर थोड़ा बहुत ध्यान रखा जाता है। इस नीति से असन्तोष जल्दी पैदा नहीं होता, और इसीलिए ब्रिटेन में घटनाओं के इतने उतार-चढ़ाव के बाद भी अभी सामाजिक क्रान्ति के उपयुक्त वातावरण नहीं पैदा हो रहा है। पूँजीवादी दृष्टिकोण से मज़दूरों की सुख-सुविधा के लिए स्लाउ कम्युनिटी सेंटर खुला हुआ है, जिसका उद्देश्य इस संगठन के सेक्रेटरी के अनुसार—'सेवा' है। यह संस्था 'नेशनल कौंसिल आफ सोशल सर्विस' (समाज सेवा सम्बन्धी राष्ट्रीय समिति) से सम्बद्ध है। इस सेंटर में श्रमिकों तथा उनके बालबच्चों के शारीरिक एवं सांस्कृतिक विकास के लिए प्रबन्ध है। नागरिकों को सलाह देने के लिए एक अलग कार्यालय है। युद्ध-काल में भरती तथा सुरक्षा-सम्बन्धी दूसरे प्रश्नों की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट करने के लिए इसकी स्थापना हुई थी। परन्तु अब समाज सेवी यहाँ श्रमिकों को निजी और घरेलू प्रश्नों पर आवश्यक सलाह देते हैं। जिस समय हम इस केन्द्र के विभिन्न भागों को देखते हुए तालाब के पास पहुँचे, तो वहाँ हमने देखा कि जाड़ों में भी शाम को लड़के-लड़कियाँ उत्साह के साथ तैर रहे हैं। कुछ लोग मैदान में खेल रहे थे तथा कुछ लोग भवन के विभिन्न भागों में ताश खेल रहे थे, कुछ वहीं बॉक्सिंग (घूँसेबाजी) का अभ्यास कर रहे थे।

ब्रिटेन के औद्योगिक क्षेत्रों में प्रायः हर जगह छोटे-बड़े पैमाने पर श्रमिक-कल्याण-केन्द्र खुले हुए हैं।

स्लाउ से हम ग्यारह बजे रात होटल पहुँचे। आज इस यात्रा में पहली बार मैंने थकान अनुभव की। किसी प्रकार डायरी में संक्षिप्त विवरण अंकित कर मैं सो गया।

५ मई

(१) ब्रिटिश महोत्सव
(२) नेशनल गैलरी
(३) 'तीन बहनें'

उमंग और उत्साह के साथ बूँदाबाँदी की परवाह किये बिना टेम्स नदी के दक्षिणी तट पर ब्रिटिश महोत्सव देखने के लिए जब मैं मुख्य द्वार पर पहुँचा, तो काफी भीड़ नजर आई। इस मेले ने त्योहार का रूप ले लिया है। सौ वर्ष पूर्व १८५१ में विक्टोरिया ने इस महोत्सव की शुरूआत की थी और इस वर्ष इसका शताब्दी समारोह मनाया जा रहा है। यहाँ लोगों से बातें करिये, अखबारों की सुर्खियाँ देखिए अथवा जगह-जगह लगे पोस्टरों पर दृष्टि दौड़ाइए—सर्वत्र इसी महोत्सव की चर्चा है। जहाँ आज प्रदर्शनी देखने हम खड़े हैं, वही स्थान द्वितीय महायुद्ध में फासिस्ट जर्मन बमबारों का निशाना बन चुका है। किन्तु बाइस मास के अनवरत परिश्रम से दक्षिणी तट का यह भाग, जहाँ मेला लगा हुआ है, चित्ताकर्षक और लुभावना क्षेत्र बन गया है। इस प्रदर्शनी की शृङ्खला ब्रिटेन भर में फैली हुई है। वसन्त ऋतु के स्वागत में इस देश के भिन्न-भिन्न भागों के लगभग १७०० स्थानों में यह मेला लगा हुआ है। परन्तु राजधानी के महोत्सव का अपना अलग महत्त्व है। मुख्य द्वार से मेले के भीतर घुसते ही एक के बाद दूसरी भव्य चीजें देखने को मिलीं। फव्वारों की छटा देखने के बाद ज्यों ही मैं साथी चमनलाल के साथ आगे बढ़ा, एक श्रमिक परिवार (पति, पत्नी और उनका शिशु) की प्रतिमाएँ दीख पड़ीं। मूर्तियों की गढ़न इतनी अच्छी, कि चेहरे के भाव स्पष्ट थे। मूर्तिकार की कल्पना-शक्ति और भावाभिव्यक्ति की क्षमता पर मैं मुग्ध हो गया। इन प्रतिमाओं से महोत्सव को देखने के लिए नव-स्फूर्ति प्राप्त हुई। मगर चाय पीने के लिए जब हम कहवागृह की ओर गये, तो हर कहवागृह के सामने प्रतीक्षातुरों की लम्बी कतार देख कर मेरा साहस छूट गया। पर, अपने साथी के आग्रह पर मैं भी 'क्यू' में खड़ा हो गया और लम्बी प्रतीक्षा के बाद

एक प्याली चाय मिली। शरीर में कुछ फुर्ती आई और पैर आगे बढ़े।

इस प्रदर्शनी में सब का ध्यान 'डोम आफ डिसकवरी' (अनुसन्धान गुंबज) की ओर आकृष्ट होता था। अल्मोनियम का यह गुंबज निश्चय ही स्थापत्यकला का एक ऐसा अद्भुत उदाहरण है, जिसे देख कर उन वास्तु-कला विशारदों एवं इंजीनियरों की सूझबूझ का कायल होना ही पड़ा, जिन्होंने इसे बना कर स्वयं वास्तु-कला के क्षेत्र में एक नया अनुसन्धान प्रस्तुत किया है। यह गुंबज ब्रिटेन के सुप्रसिद्ध स्थापत्य-कला-विशारद राल्फ टुब्ज के मस्तिष्क की उपज है। इसका व्यास ३६५ फुट है और, इससे अधिक चौड़े व्यास का गुंबज दुनियाँ में आज तक निर्मित नहीं हो सका है।

इस प्रदर्शनी में बड़े कलात्मक ढंग से यह दिखाया गया है, कि वैज्ञानिक, सांस्कृतिक, औद्योगिक एवं प्राविधिक क्षेत्रों में ब्रिटेन ने अपने इतिहास के प्रारम्भ से आज तक कितनी प्रगति की है। वाटरलू और वेस्टमिनिस्टर ब्रिजों के बीच यह प्रदर्शनी लगी हुई है। बीच में हंगर फोर्ट का रेलवे पुल है और इसी के द्वारा इस प्रदर्शनी को 'ब्रिटेन की भूमि' और 'ब्रिटेन के निवासी' नामक दो भागों में विभक्त किया गया है। 'डोम आफ डिसकवरी' में ब्रिटिश जाति के साहसपूर्ण कार्यों और खोजों पर प्रकाश डाला गया है। सर्वप्रथम हमने उस कक्ष को देखा, जिसमें यह प्रदर्शित किया गया है, कि ब्रिटिश द्वीप कैसे बना, किस प्रकार विभिन्न युगों में इसका विकास हुआ और जंगली अवस्था से सभ्यता के युग में प्रविष्ट होने तक किन-किन मंजिलों से इसे गुजरना पड़ा। यातायात कक्ष में जाते ही यह प्रकट हुआ, कि जल, स्थल और वायु-मार्गों से ब्रिटेन किस प्रकार विश्व के विभिन्न भागों से सम्बन्ध स्थापित रखे हुए है। यहाँ यातायात सम्बन्धी साधनों के विभिन्न रूपों की आकर्षक प्रदर्शनी देखते ही बनती थी। ब्रिटिश वैज्ञानिकों के चमत्कार-पूर्ण आविष्कारों के देखने के साथ ही ड्रेक, कुक और लिविंगस्टन की साहस-पूर्ण समुद्री यात्राओं का चित्रण देख कर ब्रिटिश दर्शकों के मन में उत्साह की भावनाएँ पैदा हो रही थीं।

डायरी में इस विराट महोत्सव का शब्द-चित्र प्रस्तुत करना भी सम्भव नहीं है, किन्तु कुछ मनोरंजक स्फुट चित्रों को अंकित करने का प्रलोभन मैं कैसे संवरण कर सकता हूँ। गृह-सज्जाकक्ष में छोटे से छोटे और बड़े से बड़े मकान को सजाने के लिए नई से नई प्रणाली का व्यावहारिक स्वरूप देखने के लिए स्त्रियों की भीड़ लगी हुई थी। अच्छे गृहों को सजाने की प्रणाली देख कर कुछ

महिलाओं के चेहरे पर अतृप्त लालसा की रेखाएँ खिंच आई थीं और वे अपने-अपने पतियों अथवा साथियों को झकझोर-झकझोर कर विविध प्रकार के फर्नीचर तथा सज्जा-प्रसाधन की सामग्री दिखला रही थीं। साहित्यिक कक्ष में ब्रिटिश कवियों, लेखकों, नाटककारों और आलोचकों की तस्वीरें तथा पुस्तकें प्रदर्शित थीं। इस कक्ष की एक विचित्रता यह भी थी, कि ब्रिटेन के श्रेष्ठ कवियों की कुछ पंक्तियाँ ध्वनि-विस्तारक-यंत्रों से सुनायी जाती थीं और दर्शक बड़े चाव से सुनते थे। राष्ट्र-मंडल सम्पर्क विभाग में ब्रिटेन ने राष्ट्रमंडल में शामिल राष्ट्रों से अपने रिश्ते को प्रकट करते हुए यह बताया है, कि किस प्रकार "लोकतंत्रवाद" के विकास में उसने सहायता की है। इसी कक्ष में एक अंग्रेज़ महिला ने तिरंगे झंडे की ओर मेरा ध्यान आकृष्ट करते हुए मुझसे पूछा—"अब आप आजाद हैं, हमें बुरा तो नहीं समझते?" मैंने उत्तर दिया "आज़ाद तो सबको होना ही चाहिए और इन्सान इन्सान से क्यों नफरत करे।"

जैसा कि मैंने शुरू में ही कहा है यह महोत्सव वास्तव में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में ब्रिटिश जाति के सफल कार्यों का एक प्रकार से लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है। नृत्य और संगीत के लिए एक बहुत ही भव्य रंगशाला भी इसमें बनी हुई है।

लन्दन पहुँचने के बाद से टोरी पार्टी के पत्रों में इस मेले के विरुद्ध बहुत-सी ऐसी खबरें पढ़ने को मिली थीं, जिनसे यह ध्वनि निकलती थी कि महोत्सव सफल न होगा, किन्तु अब उन्होंने भी अब यह लिखना शुरू कर दिया है कि इसके सफल हो जाने की आशा है। आज की भीड़ देख कर इसमें कोई सन्देह नहीं रहा, कि धीरे-धीरे दर्शकों की संख्या बढ़ती जायगी। पर टोरी पत्रों की इस आलोचना से हम अवश्य सहमत हैं, कि जलपानगृहों की समुचित व्यवस्था नहीं है।

जिस समय हम मेले से बाहर निकले, शाम हो गई थी और बिजली की रंग-बिरंगी रोशनी ने प्रदर्शनी को नई दुलहिन का रूप दे दिया था। टेम्स के उत्तरी तट पर पहुँचने के बाद जब मैंने फिर एक बार दक्षिणी तट की ओर देखा, तो महोत्सव के फलस्वरूप जगमग दीपोत्सव की छटा देख पड़ी। अनिश्चित अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति में ब्रिटिश मेले का यह 'शताब्दी-समारोह अवश्य ही भव्य रहा और इसे देख कर ब्रिटिश-जाति को समझने में मुझे बड़ी आसानी हुई—यही क्या कम है।

ब्रिटिश महोत्सव देखने के पूर्व आज मैंने ब्रिटेन के सर्वोत्कृष्ट कला-

संग्रहालय—नेशनल गैलरी—में ब्रिटेन और यूरोप के महान् शिल्पियों की कलाकृतियों को देख कर अंग्रेजों के इस दावे को स्वीकार कर लिया, कि यह कला-मन्दिर अनूठा है। १८२४ में अड़तीस चित्रों के संग्रह से इस 'कला-कक्ष' का कार्य शुरू हुआ था और इसके तीस कमरों में दो हजार चित्रों को देख कर रंगों की रुचिर गहराई में मन इस प्रकार डूब जाता है कि यहाँ से बाहर आने की इच्छा नहीं होती। अंग्रेज शिल्पियों के अतिरिक्त इतालवी और डच कलाकारों की कई उत्कृष्ट कलाकृतियाँ यहीं मुझे देखने को मिलीं। कुछ स्पेनिश और फ्रेंच शिल्पियों की अच्छी कलाकृतियाँ भी इस संग्रहालय में हैं। नेशनल गैलरी की महत्ता इसी बात से आँकी जा सकती है, कि 'मोनोलिज़ा' के अमर चित्रकार ल्यो-नार्दो-विंशी की कुछ अमूल्य कृतियाँ भी यहाँ हैं और विश्वप्रसिद्ध शिल्पी माइकेल एंजिलो की कला का दर्शन भी यहाँ सुलभ है। अभी मैंने पेरिस के कलामन्दिर 'लुव' को नहीं देखा है, किन्तु 'नेशनल गैलरी' एक महान् कला-संग्रहालय है—इसमें कोई सन्देह नहीं। मानव-भावनाओं एवं चित्रकला की विविध शैलियों के अध्ययन का यह कला-मन्दिर एक अच्छा साधन है।

नेशनल गैलरी में विभिन्न शैलियों के प्रवर्तकों तथा आचार्यों की कलाकृतियाँ देख-देख कर नये चित्रकार अपनी कलाकृतियों के लिए प्रेरणा प्राप्त कर रहे थे। महोत्सव के कारण दर्शकों की भीड़ अधिक थी, किन्तु कमरे बड़े-बड़े हैं और शैली तथा काल पर ध्यान रखते हुए चित्रों को इस प्रकार लगाया गया है, जिससे दर्शक सुविधापूर्वक उनको देख सकें। कमरों के बीच में सोफे पड़े हैं, जिन पर बैठ कर आराम से चित्रों को ध्यानपूर्वक देखा जा सकता है।

कल स्विस कॉलनी में एक युवक चित्रकार ने मुझे बताया था, कि इटली और हालैंड के बाहर इन देशों के विश्वविख्यात चित्रकारों की कृतियों का जितना अच्छा संग्रह नेशनल गैलरी में है, उतना अच्छा कहीं भी नहीं है और उसका कथन आज मुझे सत्य प्रतीत हुआ। उन्नीसवीं सदी के पूर्व यूरोप के हर देश में चित्रकारों अथवा मूर्तिकारों को नरेश, सामन्त एवं अभिजात वर्ग के लोग अथवा धार्मिक संगठन अपने यहाँ चित्रकारी के लिए नियुक्त कर लेते थे और इसी के फलस्वरूप पुराने चित्रों का आधार मुख्यतः पौराणिक कथाएँ अथवा धार्मिक कहानियाँ हैं। उन्नीसवीं सदी तथा उसके बाद कला-सम्बन्धी विचारों में परिवर्तन हुए और उसका प्रभाव चित्रकला एवं मूर्तिकला

पर पड़ा। फोटोग्राफी के विकास के साथ प्राकृतिक दृश्यों के चित्रांकन की ओर भी शिल्पी आकृष्ट हुए। यद्यपि इस संग्रहालय में तेरहवीं से उन्नीसवीं सदी तक के योरपीय चित्रों का ही अच्छा संग्रह है, किन्तु इसे देखने पर उक्त कथन की सार्थकता सिद्ध हो जायगी।

सत्रहवीं सदी के सुप्रसिद्ध चित्रकार रूबेन्स के 'जजमेंट आफ पेरिस' नामक चित्र को देखने में जिस समय मैं तल्लीन था, उसी समय एक विदेशी पर्यटक को एक अंग्रेज़ यह समझाने की कोशिश कर रहा था, कि अंग्रेज़ फ्रांस वालों के मुकाबले कला के क्षेत्र में पीछे नहीं हैं और दूसरे महायुद्ध के बाद म्यूजियम देखने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। उक्त चित्र में रूबेन्स ने भावाभिव्यक्ति के साथ ही मांसल सौंदर्य के चित्रांकन में जिस अद्भुत प्रतिभा का परिचय दिया है, उसे देख कर मैं चकित रह गया। भित्ति-चित्रों के बनाने में रैफेल को बड़ी सफलता मिली है और नेशनल गैलरी में इस कलाकार की कई बहुमूल्य कृतियाँ संगृहीत हैं। रेफेल एथेन्स की विचारधारा से प्रभावित था। ग्रीक-कला के कुछ नमूने भी मुझे यहाँ देखने को मिले। डच चित्रकार जॉन वान आइक के 'एरनोलफिनी और उसकी पत्नी' नामक तैल-चित्र ने मुझे इस दृष्टि से प्रभावित किया, कि पन्द्रहवीं सदी के इस चित्रकार ने धार्मिक चित्रों की अपेक्षा दैनिक जीवन सम्बन्धी विषयों को अपनी कला का आधार बनाया। इसकी कला में यथार्थवाद का पुट है। राज्याश्रय में जिस कला का विकास हुआ, उसमें रति-विषयक चित्रों की प्रधानता अस्वाभाविक नहीं है। शिल्पी ग्यूदो रेनी का 'रति का शृङ्गार' नामक चित्र यद्यपि रेफेल की शैली का अनुकरण मात्र है, किन्तु यह अनुकरण भी प्रशंसनीय है। कलाकार टीशियन के 'टच मी नाट' नामक चित्र में ईसा और मेरी मैग्डालेन की भावुक मुद्रा से प्रभावित होने के साथ ही मैं शिल्पी के रंगों की गहराई में डूब गया। इस चित्र को देख कर टीशियन के सम्बन्ध में विलियम हैजलेट की यह उक्ति सत्य मालूम हुई, "इसके चित्रों में चिन्तनशील सिर ही नहीं देख पड़ते, बल्कि स्पन्दनशील शरीर भी देख पड़ते हैं।" हालबिन और गोया के पोर्ट्रेट देखने के लिए दर्शक इतनी भीड़ लगाये थे, कि मैं उन्हें ठीक से न देख सका। कान्सटेबल नामक शिल्पी ने प्राकृतिक दृश्यों के चित्रांकन में शानदार सफलता प्राप्त की है। मैं विक्टोरिया एंड अलबर्ट म्यूजियम में इसके कुछ चित्र पहले देख चुका था। यहाँ भी इस कलाकार की कुछ अच्छी कृतियाँ संगृहीत हैं, जिनमें इंगलैंड के मनोरम प्राकृतिक दृश्यों को देख कर बड़ा सुख प्राप्त हुआ। सच

तो यह है, कि यहाँ योरप के प्रायः सभी प्रतिनिधि शिल्पियों की कृतियाँ देखने को मिलीं, इसलिए किनका नाम गिनाऊँ और किनका नाम छोड़ूँ। इस कला-संग्रहालय को देख कर हमें रूसो के इस कथन में अवश्य सन्देह हुआ, कि "ब्रिटेन केवल बनियों का देश है।"

आज रात में साथी चमनलाल व हुजा-परिवार के साथ एल्डविच थियेटर में मैंने सुप्रसिद्ध रूसी नाटककार एवं कथाकार शेखोव द्वारा लिखित 'तीन बहनें' नामक नाटक देखा। शेखोव की रचनाएँ मुझे पसन्द हैं, इसलिए इस नाटक को देखने की लालसा प्रबल थी। रंगशाला दर्शकों से खचाखच भरी हुई थी। इस रूसी नाटककार ने अत्याचार और पीड़ा के गर्भ से उदय होनेवाले जिस सुखद भविष्य की ओर संकेत किया है, वही उसकी महान देन है। इसके नाटकों में आश्चर्य में डालने वाली घटनाएँ नहीं हैं, कथाओं का तारतम्य नहीं है; परन्तु उनमें सत्य की अभिव्यक्ति है और इसीलिए इसके नाटकों में भिन्न-भिन्न पात्र अलग-अलग सोचते हैं। शेखोव के नाटक वातावरण प्रधान हैं। अच्छे और बुरे पात्रों की अलग-अलग श्रेणियाँ नहीं हैं। इसीलिए इस नाटककार के नाटकों को सफलतापूर्वक रंगमंच पर प्रस्तुत करना सरल काम नहीं है। बिखरे पुष्पों को एक सूत्र में पिरोने से जैसे आकर्षक माला तैयार हो जाती है, उसी प्रकार शेखोव के नाटकों में भिन्न-भिन्न दृष्टि से सोचने वाले पात्रों को एक सूत्र में पिरोना ही प्रोड्यूसर का मुख्य कर्तव्य हो जाता है। किन्तु 'तीन बहनें' को देखने पर ऐसा लगा, जैसे दृश्यों का सामंजस्य स्थापित करने में सुयोग्य प्रोड्यूसर श्री पीटर ऐशमोर असफल रहे। तीन बहनें—ओल्गा, माशा और आइरीना की भूमिका में क्रमशः कुमारी सोलिया जॉनसन, कुमारी मारग्रेट लाइटन और रेनी एसाशन काम कर रही थीं; तीनों बहनों के भाई की पत्नी की भूमिका में कुमारी डायना चर्चिल। मुझे डायना चर्चिल का और बेटरी कमांडर वर्शनिन की भूमिका में राल्फ रिचार्डसन का अभिनय विशेष पसन्द आया।

तीनों बहनों की मनःस्थिति से नाटककार ने यह प्रकट किया है, कि जारशाही के कारण रूस की स्थिति इतनी शोचनीय हो गई थी, कि कोई इच्छानुसार कार्य नहीं कर पाता था। तीनों बहनों का हाल ही यही था। उनमें एक मास्को जाने का सपना देखती है और दो जीवन में जो नहीं करना चाहतीं, वही उन्हें करना पड़ता है। वर्शनिन अपने पारिवारिक जीवन से क्लांत है, परन्तु कठिनाइयों के बीच आगे बढ़ते हुए वह कह उठता है—"समय

आएगा, जब सब कुछ बदल जायगा और नई पीढ़ी के लोग हमसे अच्छे होंगे।" इसी सुखद कल्पना को ले कर हम भी रंगशाला से बाहर निकले।

एक दर्शक ने मुझसे कहा—"शेखोव के नाटकों को देखने से बड़ा दर्द पैदा होता है।" परन्तु मेरी राय बिलकुल भिन्न थी। मैंने कहा—"पीड़ित वर्ग को सुखद भविष्य का संदेश भी शेखोव के नाटकों से प्राप्त होता है। विवशता और दुख पीछे छूट जाते हैं। जिस नई दुनिया की ओर शेखोव संकेत करता है, उसमें इनके लिए कोई स्थान नहीं है।"

आज सोते समय शेखोव के वे शब्द रह-रह कर याद रहे थे—"समय आएगा, जब सब कुछ बदल जायगा और अगली पीढ़ी के लोग हमसे अच्छे होंगे।"

———

६ मई

(१) मंगलकारी राज्य के आदर्श की हत्या
(२) पेटीकोट लेन में जागरूक श्रमिक से भेंट
(३) 'मैन ऐंड सुपरमैन'
(४) कहीं केलि-क्रीड़ा और कहीं जीवन में बेकली !

लन्दन के वेस्ट एंड की झलक यहाँ आने के बाद रोज ही मिलती रहती है, परन्तु ईस्ट एंड के लोगों से—उन लोगों से, जो ब्रिटेन के शोषित और प्रताड़ित वर्ग के अंग हैं और जिनके परिश्रम तथा बलिदान पर वेस्ट एंड के लोग मजे करते हैं—मिलने के लिए मैं आतुर था।

जलपान के बाद ज्योंही मैं कमरे में पहुँचा, महेश जी एवं साथी चमनलाल भी आ गये। कुछ देर बाद साथी चमनलाल के साथ हम घूमने निकले। महेश जी किसी से मिलने चले गये।

आज ईस्ट एंड जाने के पूर्व कुछ ऐसे छात्रों से भेंट हुई, जो एटली-सरकार के समर्थक होते हुए भी इस बात की आलोचना करते रहे, कि हथियारबन्दी की नीति अपनाने के कारण ब्रिटेन में समाजवाद खतरे में पड़ गया है। नये बजट से मुद्रा-स्फीति और बढ़ने की आशंका पैदा हो गई है—इसका दुष्परिणाम निम्न-मध्यवर्ग तथा मजदूरों को भोगना पड़ेगा। समाज-सेवा-सम्बन्धी योजनाओं की उपेक्षा करके मजदूर सरकार ने अब अमेरिका के इशारे पर जो पुनश्शस्त्रीकरण सम्बन्धी नीति अपना ली है, इससे मंगलकारी राज्य के आदर्श से अब वह एक प्रकार से च्युत हो गई है। अर्थ-शास्त्र के एक विद्यार्थी ने कहा कि हो सकता है मजदूरी बढ़ जाय, किन्तु इसका असर भी यही होगा, कि मुद्रा-प्रसार का रोग तेजी से बढ़ेगा और इसका कुप्रभाव उन-पर पड़ेगा, जो वृद्धावस्था की पेंशन पाते हैं।

वास्तव में यहाँ की जनता नये बजट के कारण अपने भविष्य को सशंक दृष्टि से देख रही है। लंदन में अब तक टोरी-पार्टी के जितने समर्थक मुझसे मिले, उनसे बातचीत करके मैं इसी नतीजे पर पहुँचा हूँ, कि वे इस

स्थिति को सत्ता हथियाने के लिए लाभजनक समझ रहे हैं। टोरी-विचार के लोगों का अनुमान है, कि मजदूर सरकार ने जो उलझनें पैदा कर दी हैं, उन्हीं में वह स्वयं फँस जायगी और अगले आम चुनाव में इसी गलत नीति के कारण उसे पराजित होना पड़ेगा। मैं इन बातों को सुन कर इसलिए चिन्तित हो उठा हूँ, कि क्या ब्रिटेन की जनता ने जिस आशा से मजदूर दल को युद्ध के बाद चुनाव में विजयी बनाया था, वह निकट भविष्य में टोरियों के हाथ में सत्ता आने पर निराशा में परिवर्तित हो जायगी। किन्तु भविष्य के सम्बन्ध में इतना हताश भी क्यों हुआ जाय?

ईस्ट एंड के विभिन्न भागों का चक्कर काटते हुए हम जिस समय 'पेटीकोट लेन' के पास पहुँचे, तो वहाँ हमें लखनऊ के नक्खास-सा दृश्य दिखाई पड़ा। सड़क के दोनों ओर दुकानें और खरीदारों की भीड़ इतनी, कि एक दुकान से दूसरी दुकान तक जाने में ५-१० मिनट का समय लग जाता। निम्न-मध्यवर्ग तथा मजदूर-वर्ग के स्त्री-पुरुष अपनी-अपनी इच्छा के अनुकूल चीज़ें खरीदने में व्यस्त थे, और कई देशों के पर्यटक बड़ी दिलचस्पी से इस बाज़ार को देख रहे थे। रविवार के दिन ईस्ट एंड के पेटीकोट लेन में हर माल के खरीदार उसी प्रकार जमा होते हैं, जिस प्रकार प्रति रविवार को लखनऊ के नक्खास बाजार में भाँति-भाँति की सूरतें दिखाई पड़ती हैं। अन्तर केवल यही है कि नक्खासवाली गन्दगी इस बाजार में नहीं है।

बाजार का दृश्य यह है कि कहीं मजदूरों के बच्चे खिलौनों के लिए मचल रहे हैं और उनके माँ-बाप सस्ते से सस्ते खिलौने उन्हें खरीदवा रहे हैं और कहीं नये-पुराने कपड़े खरीदने के लिए लोग टूट पड़े हैं। और उधर दो युवतियाँ नकली मोती की मालाएँ बार-बार उठातीं और हर एक की कीमत पूछ इस ढब से रख देतीं, जैसे सारी आकांक्षाएँ बिखर गई हों।

चारों ओर शोर गुल था और छोटी-छोटी दुकानों पर खड़े-खड़े सामान बेचनेवाली महिलाएँ या पुरुष कभी-कभी ग्राहकों को बुला-बुला कर बड़े दिलचस्प ढंग से सामान दिखा कर खरीदने का आग्रह करते। मोल-तोल करते हैं और नहीं भी करते। यहाँ चीजें कुछ सस्ती मिलती हैं। इसलिए सैकड़ों खरीददार चीजें खरीदने में व्यस्त थे।

एक तो ब्रिटिश महोत्सव का अवसर और दूसरे आज सूरज तेजी से चमक रहा था, इसलिए यहाँ काफी भीड़ थी। लगभग दो घंटे तक इस बाजार में घूमने के बाद ज्यों ही हम वहाँ से बाहर निकले, एक अधेड़ मजदूर

ने पूछ ही तो दिया—"आप भारतवासी हैं न ?"

"हाँ, परन्तु यह आपने जाना कैसे ?"

"जहाजों पर काम करते-करते कई देशों के निवासियों को पहचानने में मैं कभी भूल नहीं कर सकता। पसन्द आया लंदन का यह हिस्सा ?"

मैं असमंजस में पड़ गया कि क्या कहूँ। परन्तु जब मैंने यह कहा—"मुझे आपका देश बहुत पसन्द आया"—तो उसकी बांछें खिल उठीं।

एक अनुभव ब्रिटिश नागरिकों के सम्बन्ध में मेरा यह भी हुआ है, कि जिससे भी यह कहिए कि "आपका देश बड़ा अच्छा है तथा लोग भले हैं", तो उसकी प्रसन्नता की सीमा नहीं रहती। देश-प्रेम इनमें कूट-कूट कर भरा है।

मगर वृद्ध ने फिर कहा—"मैंने तो आप से इस क्षेत्र के बारे में पूछा था।" मैं फिर द्विविधा में फँस गया। बात टालने की गरज़ से मैंने कह दिया—"एक न एक दिन इस क्षेत्र में परिवर्तन के बीज अंकुरित होंगे ही।" इस पर गम्भीर मुद्रा में श्रमिक साथी ने कहा—"सेंटपाल का गिरजाघर तो आप देख ही चुके होंगे, तो यही समझिये कि चर्च की भाषा में यह भाग नरक है और वे राजसदन, वह ह्वाइट हॉल, वह पिकाडिली सर्कस और संक्षेप में वेस्ट एंड स्वर्ग है, उसी स्वर्ग के देवताओं ने आपके देश को लूटा, जरा उसे भी देख लीजिएगा।" इसके बाद मैं उससे यह न कह सका कि मैं २, पार्क स्ट्रीट (वेस्ट एंड) में ठहरा हूँ।

मेरे आग्रह पर उस ईमानदार अंग्रेज़ श्रमिक ने मेरे साथ कॉफी पी। बाद में बड़ी श्रद्धा के साथ मैंने उससे हाथ मिलाया और वहाँ से टैक्सी द्वारा सीधे हम अपने होटल वापस आ गये।

तीसरे पहर जब हम हाइड पार्क घूमने गये, तो सर्पेंटाइन लेक के आस-पास बड़ी भीड़ जमा थी। आज रविवार है न ! इसीलिए पार्क लोगों से भरा हुआ था। कहीं प्रगाढ़ आलिंगन और कहीं चुम्बन के दृश्य, कहीं भुजपाश में बद्ध रेशमी बालों से खेलते हुए प्रेमियों का समूह ! पार्क में ऐसा मालूम होता, जैसे अल्हड़ यौवन का अतुलित प्रेम प्रवाहित हो रहा हो अथवा जवानी के नशे में झूमती हुई प्रकृति पुरुष के साथ लिपटी हो ! वास्तव में वहाँ 'रति' बरस रही थी, किन्तु "स्पर्श से लाज लगी" वाली भावना से शून्य !!

शॉ का 'मैन ऐंड सुपरमैन' देखने के लिए टिकट पहले से खरीद रखा था। अतः हाइड पार्क से बाहर निकल कर टैक्सी पकड़ी और सीधे न्यू थियेटर पहुँचा। रंगशाला में बैठने के बाद मैंने सोचा कि आज प्रथम बार अंग्रेज़ी

साहित्य के उस श्रेष्ठ और जनवादी नाटककार का नाटक देखने जा रहा हूँ। जिसने इबसन की भाँति अपने नाटकों को अपने विचारों का वाहन बनाया था और जिसके व्यंग्य व हास्य से पता चलता है, कि आयरलैंड की भूमि में मानवीय गुणों को प्रकट करने की कितनी क्षमता है। विचारोत्तेजक नाटक 'मैन एंड सुपरमैन' के सम्बन्ध में आलोचकों के मत भिन्न-भिन्न हैं। बर्नर्ड शॉ के इस नाटक में साहित्यिक दृष्टि से चाहे आज शुरू की ताजगी न हो, मगर रंग-मंच पर जिसे पहलेपहल इसे देखने का अवसर मिले, उसके लिए भला इसकी ताज़गी कैसे खतम हो सकती है!

शॉ के लिए यह कहा गया है, कि जिस सपने को वह पूरा करना चाहते थे, उसके लिए यदि व्यंग्य और हास्य का साहित्यिक माध्यम न अपनाते, तो क्रान्तिकारी के रूप में उन्हें फाँसी के तख्ते पर झूलना पड़ता और इस कथन में कोई अतिशयोक्ति नहीं है। रंगशाला में दर्शक उस अमर कलाकार के व्यंग्य और परिहास-भरे शब्दों को सुन कर खिलखिला कर हँस पड़ते। मैं अभिजात-वर्गीय अंग्रेज़ों के साथ बैठा हुआ था। मेरे आगे कुछ रमणियाँ बैठी हुई थीं। उधर शॉ के नाटक के दृश्य साधारण और रंगमंच भी सादा, परन्तु मेरे आसपास बैठी चपल युवतियाँ जब अपनी जाति के संबंध में कसी गई फब्तियाँ सुन कर हँसते-हँसते लोट-पोट जातीं, तो मुझे नाटककार की महान सफलता पर बड़ी प्रसन्नता होती। शॉ के चुटीले व्यंग्य का ही यह कमाल है, कि अंग्रेज़ अपनी बेवकूफियों पर भी जी खोल कर हँसते हैं।

'मैन एंड सुपरमैन' को देख कर जब मैं रंगशाला से बाहर निकला, तो मन में बार-बार यही विचार पैदा होता, कि इस देश में रंगमंच के प्रति लोगों में कितना प्रेम है। ...और एक हमारा देश है, जहाँ अभी तक हिंदी का अपना कोई विकसित रंगमंच ही नहीं है। जिस प्रकार लंदन में कई जगहों पर क्यू लगा कर लोग खड़े रहते हैं, उसी प्रकार थियेटर के लिए टिकट के खरीददारों को लंबे क्यू में काफी देर खड़ा होना पड़ता है। कुछ थियेटरों में बहुत पहले टिकटों की अग्रिम बिक्री हो जाती है और ये थियेटर निश्चय ही लंदन के सांस्कृतिक केन्द्र हैं, जहाँ साहित्य, संगीत, नृत्य—तीनों का रस प्राप्त होता है। यहाँ भी सिनेमा हैं, मगर वे थियेटर पर हावी नहीं हो पाये हैं। परन्तु अपने देश में सांस्कृतिक कुंठा की स्थिति पैदा हो जाने के कारण सिनेमा का रंग इस प्रकार छा गया है, कि थियेटर की ओर ध्यान ही नहीं जाता; और इसीलिए नाटकों का विकास अवरुद्ध है। आज मैंने लंदन की सड़कों पर पहली बार कुछ

लोगों को मदिरा-नशे के झोंके में उच्छृंखल आचरण करते देखा। महोत्सव के 'मूड' में ब्रिटेन के विभिन्न भागों से आये दर्शकों एवं यूरोप से आये सैलानियों में निशा-विहार की होड़-सी लगी थी।

आज रात मैंने जिस होटल में खाना खाया, उसके एक कर्मचारी ने बताया, कि उसे जो वेतन मिलता है; उससे उसके घर का काम नहीं चल पाता। जब-जब इस महानगरी में अभावग्रस्त लोगों से मेरी बातचीत होती है, तो उस समय इसके जीवन का एक ऐसा पहलू सामने आ जाता है, जिससे यह बात प्रकट होती रहती है, कि विश्व के एक बड़े भाग को वर्षों लूटने के बाद भी जहाँ एक वर्ग की तिजोरियाँ भरती गईं; वहीं बस के कंडक्टरों, होटल के कर्मचारियों, दुकानों में काम करने वाली लड़कियों तथा फैक्ट्रियों और गोदियों में काम करने वाले मजदूरों के जीवन में बेकली पैदा होती गई और—युद्ध के बाद तो इनकी स्थिति निश्चय ही पहले से बदतर हो गई है। लंदन के जीवन के यही दो पक्ष हैं, जिनके समझने के लिए सामाजिक व्यवस्था की गहराई में पैठना पड़ेगा।

कल लंदन से डरहम रवाना होना है। अतः रात में अपना सामान ठीक करता रहा और आधी रात के बाद जब सोने गया, तो उस समय दिन भर के अनुभव छाया-चित्र की भाँति आँखों के सम्मुख घूम गये—वेस्ट एंड के हाइड पार्क में उच्छृंखल केलि-क्रीड़ा और ईस्ट एंड के पेटीकोट लेन में नकली मोती की मालाएँ न खरीद सकने के कारण दो मज़दूर-स्त्रियों की बिखरी हुई हसरतें !! भला इस व्यवस्था में सर्वोदय की गुंजाइश कहाँ है ?

---

७ मई

(१) 'गानेवाली गुड़िया'
(२) लन्दन से डरहम

लन्दन में तेरह दिन के सैर सपाटे के बाद आज उत्तरी इंगलैंड की यात्रा शुरू होनेवाली थी; इसलिए जब सो कर उठा, तो पैरों में तेजी और मन में उत्साह तथा स्फूर्ति भरी हुई थी। घुमक्कड़ को एक स्थान से दूसरे स्थान जाने में जितनी खुशी होती है, वह सचमुच अवर्णनीय है। हाँ, तो आज इंगलैंड के उस भाग में हम जाने वाले हैं, जिसे अंग्रेजों के कथनानुसार ब्रिटिश द्वीप के हर जीवन को अभिव्यक्त करने का गौरव प्राप्त है। इसमें कोई सन्देह नहीं, कि डरहम इंगलैंड के प्राकृतिक और भौतिक जीवन का प्रतिनिधि-क्षेत्र है और अब इसी काउंटी में तीन-चार दिन का पड़ाव होगा।

लंदन से डरहम के लिए तीसरे पहर रवाना होना था, इसलिए सुबह महेश जी के साथ ब्रिटिश औद्योगिक मेले के ओलंपिया सेक्शन को भी देखने का अवसर मिल गया। इस प्रदर्शनी में छोटे-छोटे पुर्जों के अतिरिक्त छपाई की मशीनें, फोटोग्राफी के सामान, रेडियो और टेलीविज़न के सेट, चश्मे, वैज्ञानिक यन्त्र, रासायनिक पदार्थ, चीनी मिट्टी के बर्तन, भाँति-भाँति के खिलौने, आभूषण तथा अन्य प्रकार की आकर्षक चीजें प्रदर्शित थीं।

अर्ल्सकोर्ट की भाँति इस प्रदर्शनी में भी काफी भीड़ थी। अनेक देशों के लोग वहाँ दिखाई पड़े और अधिकांश दर्शक नये यन्त्रों को देखने और समझने में व्यस्त थे। मुझे कल-पुर्जों से नफरत तो नहीं है, किन्तु जिस विषय में आज तक रुचि नहीं रही, उसे मेले में समझने की कोशिश करूँ—यह मुझे अच्छा न लगा। खिलौनों की एक दुकान के सामने भीड़ देख कर मैं भी उसमें शामिल हो गया। वहाँ बोलने और गानेवाली गुड़िया को देख कर आश्चर्य इस बात पर हुआ, कि फ्रांसीसी गुड़िया फ्रेंच भाषा में, स्पेनिश गुड़िया अपनी भाषा में और इंगलिश गुड़िया अंग्रेज़ी में गा रही है या बोल

रही है। दुकानदार ने बताया, कि लगभग चार वर्ष के परिश्रम के बाद ऐसी गुड़िया बनाने में सफलता मिली है। कागज के नये ढंग के खिलौने भी बड़े लुभावने थे।

प्रेस-सेक्शन में छपाई की विविध प्रकार की मशीनों को मैंने बड़ी दिलचस्पी से देखा। नई-नई डिजाइनों की मशीनों को देख कर एशिया के कई भागों के खरीददार उनके सम्बन्ध में आवश्यक पूछ-ताछ कर रहे थे। रंगीन छपाई के लिए छोटी-छोटी मशीनें, किन्तु कम से कम समय में उनका अधिक से अधिक काम देख कर इनके बारे में वे विशेष अभिरुचि प्रकट कर रहे थे। इसी कक्ष में एक जगह लिखा था—"यहाँ हिन्दी बोली जाती है। "मैंने सोचा यह कैसा नाटक! जा कर देखा—वहाँ टाइप-ढलाई की प्रदर्शनी है। एक सज्जन वहीं खड़े थे, जिन्होंने टूटी-फूटी हिन्दी में बातें कीं तथा वहाँ से चलते समय कई बार उन्होंने सलाम किया। हिन्दी बोलने का इनका अभिनय कम मनोरंजक नहीं था······और तख्ती लटकाना तो युग की विशेषता है, इसलिए तख्ती लगाने में भला वे क्यों चूकते!

दो घंटे इस प्रदर्शनी में चक्कर काटने के बाद वहाँ से सीधे हम अपने होटल आये। 'डायनिंग हॉल' में जाने पर आज बड़ी भावुकता जगी। भारतीय खाना तैयार करने के लिए यहाँ जो पंजाबी रसोइया है, उसे बुला कर दो-चार बातें कीं और विलायत में स्वादिष्ट भोजन कराने के लिए धन्यवाद दिया। इस होटल की खाना परोसनेवालियों का व्यवहार भी हमारे साथ बहुत अच्छा रहा। उन्हें भी हमने धन्यवाद दिया।

खाना खा कर जब मैं अपने कमरे में पहुँचा, तो वहाँ साथी चमन व ओमप्रकाश के अतिरिक्त और भी कुछ परिचित लोग पहुँच गये। उनसे कुछ देर तक बातें होती रहीं और ढाई बजे इनसे विदा ले कर हम होटल किंग्स क्रॉस स्टेशन रवाना हुए, जहाँ से ट्रेन द्वारा हमें डरहम जाना था।

विलायत में आज पहली बार लंदन के एक रेलवे स्टेशन पर पहुँचते ही कौतूहल के साथ मैंने चारों ओर देखा। स्टेशन की इमारत कोई अच्छी नहीं है, मगर प्रबन्ध सराहनीय है। मुसाफिर क्यू बना कर स्टेशन से बाहर और बाहर से अन्दर प्लेटफार्म पर आ-जा रहे थे। रेलवे कर्मचारियों को न तो यात्रियों से कोई परेशानी थी और न यात्रियों को रेलवे कर्मचारियों से। यहाँ के प्रायः सभी स्टेशनों पर विभिन्न ट्रेनों के छूटने का समय तथा यात्रियों के लिए अन्य आवश्यक सूचनाएँ ध्वनिविस्तारक यंत्रों से प्रसारित की जाती

हैं। हमारी ट्रेन प्लेटफार्म पर खड़ी थी। सरकारी मेहमान होने के नाते हमें किसी बात की कोई दिक्कत नहीं थी। अपर क्लास के दो डिब्बे भारतीय और सीलोनी प्रतिनिधिमंडल के लिए रिज़र्व थे।

ब्रिटेन की ट्रेनों में दो ही श्रेणियाँ होती हैं—(१) अपर क्लास और (२) लोअर क्लास; जिन्हें हम पहले और तीसरे दर्जे के डिब्बे कह सकते हैं। दूसरा और ड्योढ़ा दर्जा यहाँ नहीं होता। मगर आराम की दृष्टि से यहाँ पहले और तीसरे दर्जे के डिब्बों में कोई खास अन्तर नहीं है। अगर कोई विभेद है तो यही, कि अपर क्लास में केवल तीन अथवा छः गद्दीदार सीटें (कुर्सियाँ) होती हैं, जब कि लोअर क्लास के डिब्बों में इससे अधिक सीटें हैं। किन्तु दोनों श्रेणियों में सभी कुर्सियाँ गद्दीदार हैं। अपर और लोअर क्लास के किराये में डेढ़ गुने से कुछ अधिक का अन्तर है। डिब्बों में जितनी सीटें हैं, उतने ही यात्री बैठते हैं। कम से कम हमारी ट्रेन में तो भीड़भाड़ नहीं थी। सीटों के गद्दे देखने में भड़कीले नहीं हैं, मगर आरामदेह अवश्य हैं।

हम प्लेटफार्म पर इधर-उधर टहल कर यहाँ के वातावरण का अध्ययन कर ही रहे थे, तभी हमारे 'पथ-प्रदर्शक' श्री सेम्पुलस ने कहा कि अब गाड़ी छूटने का समय हो गया। हम अपने डिब्बे में जा कर बैठ गये और ठीक साढ़े तीन बजे हमारी ट्रेन लन्दन से डरहम के लिए रवाना हुई। यहाँ की गाड़ियों में एक विशेषता यह भी है, कि धूम्रपान करने वालों के लिए अलग डिब्बे हैं और सीट के पास ही 'ऐश-ट्रे' लगी होती है।

ट्रेन छूटते ही 'हिन्दू' के प्रतिनिधि श्री रंगास्वामी और लंका की राजधानी कोलम्बो से प्रकाशित होने वाले दैनिक पत्र 'सीलोन आबजर्वर' के सम्पादक श्री एच० डी० जैन्स, ओ० बी० ई० के बीच भारतीयों के प्रति लंका सरकार के गलत रुख के प्रश्न पर कटु बातचीत शुरू हो गई। लंका के प्रतिनिधि अवस्था में अधिक, जाड़े से परेशान, जुकाम से पीड़ित और विचारों में पाकिस्तान के वर्तमान शासकों की भाँति आगे न देख कर पीछे मुड़ कर देखनेवालों में थे। मैंने सीलोनी प्रतिनिधि से आराम करने के लिए कहा, उन्होंने मेरी बात मान ली और इस प्रकार यह अप्रिय प्रसंग समाप्त होते ही बाहर के ग्रामीण दृश्य देखने में हम तन्मय हो गये। ट्रेन तेजी से गन्तव्य स्थान की ओर दौड़ रही थी और लंदन पीछे छूट गया था। 'किंग्स क्रॉस' स्टेशन पर एक ब्रिटिश पत्रकार ने कहा था, कि अब हम विलायत के एक ऐसे भाग में जा रहे हैं, जहाँ सुनहरी चिड़ियाँ पहाड़ियों पर चहचहाती

रहती हैं, जहाँ लुढ़कते हुए दलदल और घाटों की अधिकता है, जहाँ जहाज बनानेवाले कारखानों में हवा से बातें करते हुए क्रेन दिखाई पड़ेंगे, तो जमीन के अन्दर कोयले के रूप में अगाध सम्पत्ति। प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ औद्योगिक चमत्कार उत्तरी इंगलैंड की विशेषता है और हम इसी भाग में अब पहुँचनेवाले हैं। हमारे डिब्बे के एक ओर गलियारा-सा है, जिससे हो कर यात्री इधर-उधर आ-जा सकते हैं और जहाजों की भाँति रेलिंग पकड़ कर बाहर के दृश्य भी देख सकते हैं। डिब्बे के फर्श और गलियारे में अच्छा कारपेट बिछा हुआ है।

रेलवे-लाइन के किनारे-किनारे बिना जोती हुई भूमि बहुत कम दिखाई पड़ी। इस देश में अधिक से अधिक गल्ला पैदा करने का प्रयास शुरू हो गया है और चरागाह के अतिरिक्त जमीन के हर टुकड़े में गल्ला पैदा करने की कोशिश हो रही है। काले-काले वृक्षों की पाँतें और उनके बीच कहीं-कहीं हरे-हरे चरागाहों में पशुओं को देख कर अपने गाँवों की याद ताजी हो उठी। जिन वृक्षों में पत्तियाँ निकल आई थीं, उनकी कालिमा पत्तियों की हरीतिमा से ढक गई थी। दूर छोटे-छोटे गाँव दिखाई पड़ रहे थे। जिन खेतों में बोवाई पहले खतम हो गई थी, उनमें बीज अंकुरित हो गए हैं। कहीं-कहीं छोटे-छोटे खेतों में गेहूँ बोया जा रहा है। पशुओं में मुख्यतः लाल रंग की चितकबरी गायें और घोड़े दिखाई पड़े।

४ मई को लंदन से स्लाउ जाते समय इंगलैंड के ग्रामीण-जीवन की प्रथम झलक मिली थी। आज ट्रेन से डरहम जाते हुए दूसरी बार इस द्वीप के ग्रामीण-जीवन के दृश्यों को देख रहा हूँ। दूर-दूर पेड़ों के झुरमुटों से जब रंगीन पुष्प दिखाई पड़ते हैं, तो उत्तर-पश्चिमी इंगलैंड के 'लेक डिस्ट्रिक्ट' की झीलों और पुष्पों के सम्बन्ध में वर्ड्सवर्थ की कविताएँ स्मरण हो आती हैं, किन्तु हम इस समय उत्तर-पूर्व की ओर जा रहे हैं, जहाँ कोयले के रूप में ब्रिटेन की अपार निधि धरती में छिपी है। ब्रिटिश सूचना-विभाग के अधिकारियों ने अपने कार्यक्रम में 'लेक डिस्ट्रिक्ट' को शामिल भी नहीं किया है।

ट्रेन आगे बढ़ती जा रही है और अब कहीं-कहीं छोटे-छोटे जंगल दिखाई पड़ रहे हैं। भारत में अंग्रेज शासकों ने जंगलों को कटवा कर हमारे सम्मुख कृषि-सम्बन्धी विकट समस्याएँ पैदा कर दी हैं। परन्तु यहाँ अधिक अन्न पैदा करने के जोश में भी जंगल नहीं कटवाये जा रहे हैं। अगर यह उपनिवेश होता, तो सम्भवतः यहाँ भी दुष्परिणाम की चिन्ता किये बिना इन जंगलों को

कटवा दिया जाता। अंग्रेज़ी मौसम का तो कोई ठिकाना है नहीं; जिस समय ट्रेन लंदन से रवाना हुई थी, आसमान साफ था, मगर अब बाहर छमाछम बूँदें गिर रही हैं। आसमान बादलों से ढक गया है—ऐसा प्रतीत होता है, जैसे स्वामी रामतीर्थ की कल्पना हमारे सम्मुख मूर्तिमती हो उठी है :—

य' पर्वत की छाती पर बादल का फिरना,
वह दम भर में अबरों से पर्वत का घिरना,
गरजना, चमकना, कड़कना, निखरना,
छमाछम-छमाछम ये बूँदों का गिरना।

मैं लुभावने ग्रामीण दृश्यों को देखने में डूबा हुआ था। अचानक श्री सेंपुलस ने मुझसे खाने के लिए तैयार हो जाने को कहा। डायनिंग कार में जा कर हम लोगों ने खाना खाया। मौसम की ठंढक दूर करने के लिए अधिकांश यात्री मधुपान में संलग्न थे। यद्यपि गाड़ियों के डिब्बे बिजली से गर्म रखे जाते हैं, किन्तु बारिश और तेज हवा के कारण सचमुच ठंड इतनी बढ़ गई थी, कि हमें बड़ा कष्ट हो रहा था। एक स्टेशन पर स्थानीय अखबार से मालूम हुआ था, कि वर्षा के कारण कई हिस्सों में बाढ़ आ गई है, जिससे फसल बरबाद हो रही है। प्रकृति की यह लीला भी आश्चर्यजनक है—वसन्त और ग्रीष्म में बाढ़! अपरिचित स्टेशनों के नाम पढ़ते-पढ़ते तबियत ऊब गई थी, किन्तु अपरिचित स्टेशनों के नाम पढ़ने में भी एक कुतूहल है। जब डार्लिंगटन स्टेशन आया, तो पत्रकार के नाते यहाँ पहुँचते ही इस बात को याद कर बड़ी प्रसन्नता हुई, कि इस छोटे, किन्तु महत्त्वपूर्ण कस्बे से सवेरे 'नार्दर्न इको' और शाम को 'नार्दर्न डिस्पैच' नामक दो दैनिक पत्रों के अतिरिक्त तीन छोटे-छोटे साप्ताहिक पत्र भी प्रकाशित होते हैं।

ट्रेन में थोड़ी देर के लिए मैं सो भी गया और जब नींद टूटी, तो मैंने देखा कि हम डरहम स्टेशन पहुँच गये हैं। छोटा स्टेशन, भीड़भाड़ भी बहुत कम। प्लेटफार्म से उतरते ही जाड़े से काँप गया। न्यू कॉसल से केन्द्रीय सूचना कार्यालय के प्रतिनिधि स्टेशन पर उपस्थित थे। उनके साथ स्टेशन से सीधे हम 'रायल काउंटी होटल' रवाना हो गये, जहाँ हमें ठहरना था।

इस छोटे होटल में बिजली से कमरे गर्म रखने की कोई व्यवस्था नहीं है। बिस्तर पर गर्म पानी की बोतलें देख कर अंग्रेज़ी-जीवन के सम्बन्ध में एक विदेशी की यह उक्ति याद आ गई, कि "गर्म पानी की बोतलों से ही अंग्रेज़ कभी-कभी अपनी रूमानी भावनाओं को सन्तुष्ट कर लेते हैं।"

साथियों के आग्रह पर होटल के 'बॉर-रूम' में घुसते ही मैंने देखा, कि बड़ी फुर्ती से तेज बियर के बड़े-बड़े गिलास लोग खाली करते जा रहे हैं ।

वहाँ से लौटने पर जाड़ा कुछ कम प्रतीत हुआ और बिस्तरे पर जात हो आज बड़ी मीठी नींद आई ।

———

८ मई

डरहम और न्यू कासल

(१) समाज सेवा प्रतिष्ठान
(२) राष्ट्रीय स्वास्थ्य-योजना

सुबह धूप खिल आई थी और इस छोटे से होटल में जो भी यात्री देख पड़े, पहले सबने "कितना सलोना मौसम है" कह कर एक दूसरे का अभिवादन किया। किन्तु लगभग एक पखवारे के अनुभव से मैं अंग्रेज़ी मौसम के सम्बन्ध में विश्वास खो चुका था, इसलिए मुझे भय था, कि कहीं मौसम खराब न हो जाय और वही हुआ। करीब ६ बजे सवेरे से जलवृष्टि शुरू हो गई और तेज हवा के झोंकों से शीत का प्रकोप बढ़ गया। एक तो ब्रिटेन के उत्तरी भाग में यों ही अधिक जाड़ा पड़ता है और दूसरे इस आँधी-पानी ने मौसम को इतना बुरा बना दिया, कि हमें अपने कार्यक्रम में भी परिवर्तन करना पड़ा।

आज टीम वैली के औद्योगिक प्रतिष्ठानों को देखने के बजाय सबसे पहले डरहम की 'कौंसिल आफ सोशल सर्विस' (समाज सेवा-प्रतिष्ठान) के कार्यालय गये। इस प्रतिष्ठान के डायरेटर ने विस्तार के साथ अपने कार्य-कलाप का परिचय दिया।

डरहम काउंटी के गाँव-गाँव में इस सेवा-प्रतिष्ठान की शाखाएँ फैली हुई हैं। यह काउंटी करीब पचीस मील लम्बी-चौड़ी है। इसके पूर्व लंदन से बाइस मील दूर स्लाउ के सेवा-प्रतिष्ठान को हम देख चुके थे, किन्तु इस प्रतिष्ठान का कार्यक्षेत्र उसकी अपेक्षा बहुत व्यापक है। ब्रिटेन की यह सबसे बड़ी गैरसरकारी सेवा-संस्था है। संचालक ने हमें यह भी बताया, कि यह कौंसिल काउंटी भर में स्थापित करीब एक हजार प्रतिष्ठानों का संघबद्ध रूप है, जिनमें लगभग सवा सौ संस्थाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

उद्देश्य के सम्बन्ध में यह बताया गया कि ब्रिटेन की यह परम्परा रही है कि जनसेवा के उद्देश्य से स्वेच्छापूर्वक विभिन्न भागों में लोगों के सहयोग

से सेवा-प्रतिष्ठान स्थापित किये जायँ। सरकारी एवं गैरसरकारी सेवा-कार्यों में सामंजस्य स्थापित करने के लिए १६१६ में नेशनल कौंसिल आफ सोशल सर्विस (समाज-सेवा सम्बन्धी राष्ट्रीय समिति) की स्थापना हुई और तब से सेवा-प्रतिष्ठानों का कार्य अधिक सुचारु रूप से चल रहा है।

स्थानीय मसलों का अध्ययन करके जन-सहयोग के आधार पर उन्हें हल करने तथा जन-कल्याण के उद्देश्य से ही सेवा-प्रतिष्ठानों की स्थापना हुई है। उक्त कौंसिल के डायरेक्टर ने बताया, कि नागरिकों के मानसिक, आध्यात्मिक एवं शारीरिक विकास पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है। बेकारों को काम दिलाना और अपाहिजों को काम के योग्य बनाना इन प्रतिष्ठानों का एक मुख्य कर्तव्य है।

हमें यह भी बताया गया कि लक्ष्य को पूरा करने के लिए काम का क्षेत्र बँटा हुआ है। 'एक संस्था बच्चों में, दूसरी युवकों में, तीसरी स्त्रियों में, चौथी अवकाशप्राप्त सैनिकों में और पाँचवीं अपाहिजों में काम करती है। संगीत और नृत्य के अतिरिक्त सिलाई आदि की शिक्षा देने, मुर्गी पालने एवं अन्य कार्यों के लिए अलग-अलग शाखाएँ हैं। नागरिकों को हर प्रश्न पर सलाह देने के लिए समुचित व्यवस्था है। युद्ध-काल में भरती का कार्य भी इन्हीं सेवा-प्रतिष्ठानों द्वारा होता है। हर बड़े गाँव में क्लब के लिए सार्वजनिक भवन खड़ा करने का प्रयास जारी है, जहाँ आमोद-प्रमोद के साधन तो सुलभ होंगे ही, किन्तु इसके साथ ही वहाँ सामाजिक और सांस्कृतिक प्रश्नों पर विचार-विनिमय भी होगा और इससे ग्रामीण-जीवन में सांस्कृतिक विकास का पथ प्रशस्त होगा। बच्चों के लिए खेलकूद की समुचित व्यवस्था करने पर मुख्य ध्यान दिया जा रहा है। हमारे एक साथी ने पूछा—"क्या इन संस्थाओं का सम्बन्ध राजनीतिक दलों से है? संचालक ने हँसते हुए कहा—"डरहम उग्र राजनीति का अखाड़ा है। यहाँ मजदूरी के घूँसे तने ही रहते हैं, और जहाँ राजनीति है, वहाँ घूँसेबाजी अनिवार्य है। इसलिए सेवा-प्रतिष्ठान को राजनीति से अलग रखा गया है।"

इस सेवा-प्रतिष्ठान के इतिहास को बताते हुए उक्त अधिकारी ने कहा कि १६३० की विश्वव्यापी मंदी के फलस्वरूप इंगलैंड के इस क्षेत्र में जोरों से बेकारी फैली और १६३६ में कोयला-मजदूरों की बड़ी हड़ताल के कारण स्थिति और भी चिन्तनीय हो गई। जहाँ युवतियों के दिल को चुरा लेने वाले फूल खिलते थे, वहाँ काँटे उग आये, और जहाँ गाँवों में खेल के मैदान थे, वहाँ

घुटने भर घास उग आई। बहुत बड़ी संख्या में लोग बेकार हो गये और उस विषम आर्थिक परिस्थिति ने यहाँ ऐसा मनहूस वातावरण पैदा कर दिया, जिसे स्मरण करते ही आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इस स्थिति को दूर करने के उद्देश्य से १९३७ में बेकारों के क्लब के नाम से जो आन्दोलन शुरू हुआ, उसने ही अब इतनी बड़ी संस्था का रूप ग्रहण कर लिया है। सेवा सम्बन्धी राष्ट्रीय समिति से आर्थिक सहायता मिलने के साथ ही उद्योगपतियों से भी काफी सहायता मिलती है। इसके अतिरिक्त सम्बन्धित क्षेत्रों के लोग भी स्वेच्छा से मदद करते हैं।

डरहम के सेवा-प्रतिष्ठान का वार्षिक व्यय लगभग ५ हजार पौंड है, जिसमें आधी रकम काउंटी कौंसिल और एक हजार पौंड सरकार देती है—शेष डेढ़ हज़ार पौंड चंदे से प्राप्त होता है। ब्रिटेन के विभिन्न भागों में स्थापित इन सेवा-प्रतिष्ठानों की संख्या लगभग दो सौ है।

कम्युनिटी सर्विस कौंसिल का डायरेक्टर नेशनल कौंसिल आफ सोशल सर्विस (राष्ट्रीय सेवा परिषद) का क्षेत्रीय अधिकारी होता है, जिसके द्वारा सरकार इस कौंसिल से अपना सम्पर्क स्थापित रखती है। ब्रिटेन में इन सेवा-प्रतिष्ठानों का कार्य अवश्य सराहनीय है, किन्तु इनसे मूल सामाजिक समस्याएँ हल नहीं हो सकतीं। सामाजिक असन्तोष दूर करने के लिए ये चाहे जितना काम करें, किन्तु जब तक शोषण का रोग दूर नहीं होता, इस लाक्षणिक उपचार के द्वारा आधारभूत प्रश्न हल नहीं हो सकते। मगर कुछ हद तक श्रमिकों का असन्तोष दूर करने में इनसे ज़रूर मदद मिल रही है।

कम्युनिटी सर्विस कौंसिल के डायरेक्टर से बातचीत कर के जब हम कार्यालय से बाहर निकले, तो पानी गिर ही रहा था और तेज हवा चल रही थी। इस आँधी-पानी में न्यू कासल के सूचना-अधिकारी राबर्ट बर्न्स के सुझाव पर हम एक 'पब' में गये। वहाँ बर्न्स ने एक बूढ़े टोरी से हमारा परिचय कराया और उसने हमसे हाथ मिला कर मज़दूर सरकार की आलोचना शुरू कर दी। डरहम के इस 'पब' में यह वृद्ध टोरी ट्रांसपोर्ट हाउस (मजदूर पार्टी का केन्द्रीय कार्यालय) की खिल्ली उड़ा रहा था और मजदूर दल के कुछ समर्थक चुप्पी साधे बैठे हुए थे। हमारे एक साथी भी बहुत कुपित हुए, किन्तु उन्होंने विवाद में पड़ना उचित न समझा। यह दृश्य था बड़ा मनोरंजक! जब वृद्ध टोरी ने एटली से ज्यादा बेवान की आलोचना शुरू की, तो कुछ युवक-अंग्रेज़ उसे तेज निगाहों से घूरने लगे। इस 'पब' के वातावरण से यह पता चल

गया, कि अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में टोरी राजनीति का अनुसरण करने के कारण मजदूर सरकार अपनी लोकप्रियता खोने लगी है। धीरे-धीरे ब्रिटेन में जो स्थिति पैदा होती जा रही है; उससे ऐसा प्रतीत होता है कि अगले आम चुनाव में कहीं टोरी पार्टी विजयी न हो जाय। 'पब' के एक भाग में युवतियों की टोली धड़ाधड़ बियर के गिलास खाली कर रही थी और वृद्ध टोरी की बातों से खीझ कर कुछ मधुप्रेमी उधर खिंच गये थे, जहाँ जिंदगी थी।

लंच के बाद हम न्यू कासल रवाना हुए। कार चलाने वाली लड़की डरहम और न्यू कासल के बीच का फासला तय करने के लिए तेजी से कार लिये जा रही थी और मैं इस क्षेत्र के ग्रामीण दृश्यों को देखने में डूबा हुआ था। छोटे-छोटे गाँव, पक्की सड़कें और कोयले की खानों को देखते हुए हम गन्तव्य स्थान की ओर जा रहे थे। मार्ग में एक मजदूर से भेंट हो जाने पर उसने कहा— "अंग्रेज़ शासकों ने भारत में उद्योग-धन्धों को बढ़ने नहीं दिया, और इसीलिए वहाँ के लोग गरीब हैं।" इस मजदूर साथी के मुख से अपने देश के गरीबों के प्रति सद्भावना के शब्दों को सुन कर मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि जनता कहीं भी हृदयहीन नहीं होती। बातचीत के सिलसिले में मुझे ज्ञात हुआ, कि इस देश का मध्य वर्ग भी कम परेशान नहीं है। औरतें चिन्तित हैं कि कल क्या होगा? द्वितीय महायुद्ध के बाद अब तृतीय महायुद्ध की आशंका से वे मरी जा रही हैं। वास्तव में लड़ाई का सब से बुरा असर स्त्रियों पर पड़ता है, क्योंकि वे ही इसमें अपने पुत्रों, पतियों और भाइयों को खोती हैं, इसलिए उनका चिन्तित होना स्वाभाविक है। जब हम टाइन नदी के तट पर बसे इंगलैंड के सुप्रसिद्ध औद्योगिक एवं व्यासायिक नगर न्यू कासल पहुँचे; आसमान साफ हो गया था, किन्तु जाड़ा बढ़ गया था। यह नगर कृषि, इंजीनियरिंग, और डाक्टरी की शिक्षा के लिए विख्यात है। इन विषयों की शिक्षा प्राप्त करने के लिए अनेक देशों के लड़के यहाँ प्रतिवर्ष आते हैं। सम्राट् हेड्रियान की रोमन दीवारों के भग्नावशेष देख कर इस नगर के पुरातन इतिहास की बातें स्मरण हो आईं। लगभग ९०० वर्ष हुए रोमन विजेताओं ने इस क्षेत्र को भी अपने बूटों से रौंद डाला था। विजयी विलियम के पुत्र राबर्ट कारथोज ने यहाँ १०८० में न्यू कासल नामक एक किला बनवाया था और तभी से इस नगर का नाम न्यू कासल पड़ गया। एक समय था, जब इंगलैंड और स्काटलैंड की लड़ाई के कारण इस क्षेत्र की जनता को सदैव संकटों का सामना करना पड़ता, किन्तु दोनों देशों के एक में मिल जाने के कारण वह स्थिति दूर हो गई।

न्यू कासल उत्तरी सागर से केवल आठ मील दूर है। ब्रिटेन के 'प्रथम सुधार बिल' के प्रस्तावक ग्रे यहीं के निवासी थे और उनकी एक भव्य मूर्ति नगर के बीचोबीच खड़ी है। इस क्षेत्र का कोयला इसी बंदरगाह से बाहर जाता है। यहाँ जहाज बनाने का बड़ा कारखाना भी है। रेलवे के सुप्रसिद्ध आविष्कर्ता जार्ज स्टेफेन्सन भी यहीं के थे। यहाँ की जनसंख्या २ लाख ९३ हजार ८ सौ ९३ है। यहाँ से पार्लमेंट के लिए चार सदस्य चुने जाते हैं।

इसी नगर में आने पर पहली बार हमें पता चला, कि स्वास्थ्य-सेवा के राष्ट्रीयकरण के द्वारा मजदूर सरकार ने कितना बड़ा जनहितकारी कदम उठाया है। यहाँ के क्षेत्रीय स्वास्थ्य अधिकारी ने स्वास्थ्य-सेवा संबंधी योजनाओं को विस्तार के साथ बताया।

ब्रिटेन में मजदूर सरकार की राष्ट्रीय स्वास्थ्य-योजना के अनुसार हर नागरिक के लिए मुफ्त चिकित्सा की व्यवस्था है—डाक्टर मुफ्त, दवाएँ मुफ्त। खबर कीजिए, घर डाक्टर पहुँच जायगा। ब्रिटेन की ९०-९५ प्रतिशत जनता राष्ट्रीय-स्वास्थ्य सेवा का लाभ उठा रही है। हमें बताया गया, कि जब डाक्टरी पेशे का राष्ट्रीयकरण हुआ तो शुरू में कुछ डाक्टरों ने इसका विरोध किया। किन्तु अब प्रायः ९० प्रतिशत डाक्टरों ने इसे पूर्णतया स्वीकार कर लिया है। इंगलैंड और वेल्स के २१ हजार जनरल प्रेक्टिशनरों (डाक्टरों) में लगभग १८-१९ हजार इस सेवा में शामिल हो गये हैं। स्काटलैंड के प्रायः सभी जनरल प्रेक्टिशनरों ने राष्ट्रीयकरण की योजना स्वीकार कर ली है। दाँत और आँख के डाक्टरों ने भी इसे अपना लिया है। तीन हज़ार से अधिक अस्पतालों में इस योजना के अन्तर्गत कार्य हो रहा है। इंग्लैंड और वेल्स में चौदह हज़ार से अधिक तथा स्कॉटलैंड में १७५० केमिस्टों ने राष्ट्रीयकरण की योजना मान ली है। डाक्टरों के पारिश्रमिक के सम्बन्ध में यह नियम बनाया गया है, कि उन्हें प्रति मरीज के हिसाब से निर्धारित शुल्क और ३०० पौंड प्रतिवर्ष अथवा प्रति रोगी के हिसाब से अपेक्षाकृत कुछ अधिक शुल्क दिया जाता है। जो डाक्टर पारिश्रमिक के लिए प्रथम प्रणाली स्वीकार करते हैं, उन्हें संबंधित अधिकारियों की स्वीकृति प्राप्त करनी होती है। दाँत के डाक्टरों को दाँत सम्बन्धी विभिन्न रोगों की चिकित्सा के आधार पर प्रति रोगी के हिसाब से फीस दी जाती है। रोगियों की पर्चियों के आधार पर दवाखानों के मालिकों को औषध की कीमत चुका दी जाती है।

यहाँ अस्पतालों में प्राइवेट वार्ड अवश्य हैं किन्तु उनमें डाक्टरों की

सिफारिश पर रोग की दृष्टि से केवल उन्हीं रोगियों को रखा जाता है, जहाँ अलग उनकी चिकित्सा अपेक्षित होती है। हमारे देश में जो धनी या साधन-सम्पन्न होते हैं वे ही प्राइवेट अथवा स्पेशल वार्डों में स्थान पाते हैं। परन्तु यहाँ ऐसा नहीं है। प्रायः सभी रोगी इस देश के अस्पतालों में जनरल वार्ड में रहते हैं, और जो रोगी प्राइवेट वार्ड में रहना चाहे, उसे स्थान होने पर वहाँ रखने की तत्काल व्यवस्था की जाती है।

न्यू कासल में अठारह शिशु-कल्याण-केन्द्र एवं प्रसूति-गृह हैं। गर्भवती स्त्रियों के घर जा कर नर्सें मुफ्त सलाह देती हैं और डाक्टर भी उनकी देखभाल करते हैं। गर्भवती स्त्रियों के पौष्टिक भोजन एवं औषध के सम्बन्ध में भी बड़ी सतर्कता बरती जाती है।

बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष रूप से ध्यान दिया जा रहा है। स्कूलों में बराबर उनके स्वास्थ्य की जाँच होती है। यहाँ इस प्रकार के सात अस्पताल हैं और हमने छात्रों के लिए विशेष रूप से बने एक अस्पताल को देखा। चिकित्सालय में प्रविष्ट होते ही कुछ बच्चे देख पड़े, जो पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने में व्यस्त थे। डाक्टर हमदर्दी के साथ हर बच्चे के स्वास्थ्य की जाँच कर रहे थे। नर्सें लगन के साथ अपने काम में जुटी हुई थीं। भिन्न-भिन्न रोगों के लिए अलग-अलग कक्ष। इस अस्पताल को देखने के बाद जब अपने अस्पतालों से इनकी तुलना करता हूँ, तो बड़ा क्लेश होता है। यहाँ डाक्टरों का यह मधुर व्यवहार और अपने देश में डाक्टरों की वह तानाशाही! जैसे उनकी मानवता मर चुकी है। विदेशी शासन के कारण सांस्कृतिक कुंठा की जो स्थिति पैदा हो गई थी, वह स्वतंत्र होने के बाद भी अभी दूर नहीं हो सकी है।

न्यू कासल से शाम को हम पुनः डरहम वापस आ गये। उत्तरी इंगलैंड का यह एक मनोरम स्थल है। इसके ग्रामीण भागों में यदि धरती के नीचे कोयला है, तो ऊपर फूलों का सौंदर्य और आकाश पक्षियों के कलरव से व्याप्त!

आज मैंने डरहम के सुप्रसिद्ध गिरजाघर को भी देखा, जो इंगलैंड में नार्मन स्थापत्य-कला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। वियर नदी से घिरी एक पहाड़ी पर निर्मित इस पुरातन गिरजाघर की इमारत इतनी ऊँची और भव्य है, कि कोई भी दर्शक इसकी वास्तुकला पर मुग्ध हो सकता है। यहाँ का विश्वविद्यालय भी इंगलैंड के पुराने विश्वविद्यालयों में से है। स्काटलैंड के सांस्कृतिक दूत सर वाल्टर स्काट को डरहम का ग्रामीण क्षेत्र बहुत पसन्द था

और आज नगर तथा ग्रामीण भाग को देखने के पश्चात् मुझे भी यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं, कि यहाँ के ग्रामीण क्षेत्र मुझे नगर की अपेक्षा अधिक आकर्षक प्रतीत हुए।

रात को होटल के 'बार' में बड़ी भीड़ थी। जहाँ मई में भी कड़ाके की सर्दी पड़ रही हो, वहाँ प्रकृति ने स्वयं लोगों को मधुपायी बना दिया है। मधुशाला में आ कर शीत का कष्ट कुछ देर के लिए लोग जरूर भुला पाते हैं। जहाँ होटल में बिजली से कमरों को गर्म रखने की व्यवस्था नहीं है, वहाँ घरों की दशा क्या होगी, इसका अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है। शीतकाल में इस भाग के निवासियों पर क्या गुजरती होगी, इसकी कल्पना से ही मैं काँप उठा। उधर मयखाने का यह आलम था, कि "सुराही जो भरी जाती है, खाली होती जाती है।" मगर इससे कहीं शीत का प्रकोप दूर हो सकता है। इस क्षेत्र में घरों के कमरों को बिजली से गर्म रखने की बड़ी आवश्यकता है। 'बियर' पिलाने से कहीं यह समस्या हल होगी?

९ मई

(१) टीम वैली के औद्योगिक प्रतिष्ठान
(२) अपाहिजों का शिक्षालय
(३) उत्तरी सागर के तट पर
(४) भारतीय एवं अफ्रीकी छात्रों से बातचीत
(५) 'न्यू कासल जरनल' के कार्यालय में

आज उत्तर-पूर्वी विकास-क्षेत्र के महत्वपूर्ण एवं सब से पुराने औद्योगिक केन्द्र—टीम वैली को देखने जब रवाना हुए, तो डरहम से आगे बढ़ते ही खान में काम करने वाले कुछ मजदूरों को देख कर मुझे अचानक १९२९ की एक दिलचस्प घटना स्मरण हो आयी। ३ मई को ब्रिटिश-महोत्सव के समारम्भ-समारोह के समय राजा तथा उनके परिवार को देखने के लिए अपार जन-समूह सेंटपाल कैथिड्रल के निकट उमड़ आया था। मगर इन्हीं राजा के बड़े भाई ड्यूक ऑव् विंडसर के साथ तत्कालीन प्रधान मंत्री बाल्डविन ने खान-मजदूरों की स्थिति देखने के प्रश्न पर जो रुख ग्रहण किया था, उसे याद कर यही कहना पड़ता है, कि यहाँ राजतंत्र भी एक अच्छा तमाशा है। ड्यूक आव् विंडसर १९२४ में जब प्रिंस आफ वेल्स थे, तो उस समय संसारव्यापी मंदी के कारण कोयला-मज़दूरों में व्यापक बेकारी फैली हुई थी। डरहम तथा दूसरे स्थानों की कई खानों का काम बन्द हो गया था। श्रमिकों के सम्मुख भोजन की विकट समस्या उत्पन्न हो गई थी। बाल्डविन की टोरी सरकार बेकारी की समस्या हल करने की दिशा में कोई प्रभावकारी कदम नहीं उठा रही थी। इस स्थिति से क्षुभित हो कर विघटित सैनिकों में से अधिकांश ने, जो खानों में भी काम कर चुके थे, तत्कालीन प्रिंस आफ वेल्स (अब ड्यूक ऑव् विंडसर) को अपनी दर्दनाक स्थिति से परिचित कराते हुए एक मार्मिक पत्र लिखा था और यह प्रार्थना की थी, कि वे सरकार पर प्रभाव डाल कर उनकी आजीविका के लिए कोई व्यवस्था करावें।

प्रिंस आफ वेल्स डरहम के कोयला-क्षेत्र में जाने को लालायित थे, किन्तु बाल्डविन ने उन्हें बुला कर डाँटा, कि वे कोयला-क्षेत्रों का दौरा करने न जायँ, क्योंकि चार मास बाद आम चुनाव होने वाला है और विरोधी पक्ष बेकारी की समस्या से लाभ उठा कर टोरी पार्टी को अपदस्थ करने का प्रयास करेगा। ड्यूक ऑव् विंडसर को बाल्डविन के भाव पर बड़ा आश्चर्य हुआ, किन्तु जब उन्होंने लार्ड वाल्डविन को यह बताया, कि आपके मित्र सर अलेक्जेंडर लिथ (उत्तरी इंगलैंड का एक व्यवसायी) ने ही यात्रा का कार्यक्रम तैयार किया है; तब वाल्डविन ने राहत की साँस ली और उन्हें उस क्षेत्र में जाने की अनुमति दी। कहते हैं, इस घटना का असर दोनों व्यक्तियों के मस्तिष्क पर इतना पड़ा, कि सम्भवतः इस कारण भी वाल्डविन ने अष्टम एडवर्ड (अब ड्यूक आव् विंडसर) को मिस सिम्पसन से विवाह करने की अनुमति नहीं प्रदान की। वाल्डविन ने अपने एक मित्र से यह कह कर कि जरूरत हुई, तो मैं गद्दी पर दूसरे राजा को बिठा दूँगा, यह प्रकट कर दिया था, कि ब्रिटेन में राजतंत्र का क्या महत्त्व है और अन्त में अष्टम एडवर्ड को ड्यूक ऑव् विंडसर ही बनना पड़ा।

यह क्षेत्र ब्रिटेन के औद्योगिक जीवन में जितना प्रसिद्ध है, उतना ही इस भाग से सम्बन्धित उक्त कांड ने यह भी सिद्ध कर दिया है, कि ब्रिटिश राजा किस प्रकार प्रभावशाली प्रधानमंत्रियों के हाथ की कठपुतली होते हैं। इस घटना की याद हमें इसलिए भी आई, कि दूसरे महायुद्ध के बाद पुनः आर्थिक कठिनाई में फँसे होने के कारण ब्रिटेन का श्रमिक-वर्ग परेशान एवं चिन्तित है और ये भावनाएँ उनके चेहरों से परिलक्षित होती थीं।

वृष्टि हो रही थी। कार चलाने वाली लड़की हमें आसपास के दृश्यों की ओर संकेत करके यह बता रही थी, कि धीरे-धीरे अब इस क्षेत्र में पहले से अधिक सुधार हो गया है—जिन्दगी अब उतनी बोझिल नहीं मालूम पड़ती। दूर-दूर पर झाड़ियों, पुष्पों से लदे गुल्मों और पहाड़ी दृश्यों को देख कर हमें भी टीम वैली के औद्योगिक क्षेत्र को देखने के लिए नव-स्फूर्ति मिल रही थी। लगभग साढ़े दस बजे हम टीम वैली पहुँचे। इस औद्योगिक क्षेत्र के चेयरमैन श्री एफ० ए० सैडलर फारेस्टर ने संक्षेप में विकास-क्षेत्रों की औद्योगिक प्रगति और कार्यप्रणाली पर प्रकाश डाला। पिछड़े हुए इलाकों में औद्योगिक विकास की रोशनी फैलाने के लिए सरकार के प्रोत्साहन से इंगलैंड में तीन, स्काटलैंड में दो और वेल्स में एक विकास क्षेत्र निर्धारित कर दिये गये हैं, जहाँ औद्योगिक

कार्य हो रहा है। इससे हजारों मजदूरों को काम मिल गया है और ब्रिटेन का औद्योगिक उत्पादन भी बढ़ रहा है। टीम वैली के साथ ही अब उत्तर-पूर्वी औद्योगिक-क्षेत्र में धीरे-धीरे करीब ३४ स्थानों में विविध उद्योगों के कई कारखाने खड़े हो गए हैं। लगभग ३०४ उत्पादकों के इन कारखानों में अब ४४,००० श्रमिक काम में लगे हैं। मजदूरों में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की संख्या अधिक है। कुल श्रमिकों में स्त्रियाँ लगभग ६० प्रतिशत हैं, किन्तु इन्हें पुरुषों की अपेक्षा कम मजदूरी दी जाती है, इससे उन्हें असन्तोष है।

ब्रिटेन के इस पिछड़े हुए क्षेत्र में यदि बेकारी भीषण रूप धारण न करती, तो सम्भवतः इस इलाके में उद्योग-धंधा खड़ा करने की ओर सरकार का ध्यान शीघ्र आकृष्ट न होता। इन विकास-क्षेत्रों में उद्योग-वितरण कानून के अन्तर्गत कारखाना बनाने के लिए जमीन प्राप्त करने, उनपर फैक्ट्रियों के उपयुक्त इमारतें बनवाने, बोर्ड आफ ट्रेड द्वारा कुछ औद्योगिक प्रतिष्ठानों को अनुदान देने तथा औद्योगिक विकास से सम्बन्धित अन्य बातों की व्यवस्था की गई है, ताकि पिछड़े हुए क्षेत्रों में एक सुनिश्चित योजना के अनुकूल उद्योग-धन्धों का विकास हो सके। इन विकास-क्षेत्रों के औद्योगिक प्रतिष्ठान उत्पादकों के हाथ में हैं। नार्थ ईस्टर्न ट्रेडिंग स्टेट्स लिमिटेड नामक कम्पनी की देखरेख में इस क्षेत्र का कार्य हो रहा है। २६ जुलाई १६३५ को 'लंदन टाइम्स' ने जिस भाग को 'कार्य शून्य क्षेत्र' घोषित किया था, उसमें अब निश्चय ही हजारों व्यक्ति विभिन्न उद्योगों में लगे हुए हैं और उनकी आजीविका चल रही है। किन्तु इतना होते हुए भी इस क्षेत्र में अभी बेकारी है।

टीम वैली इस विकास-क्षेत्र का सब से बड़ा औद्योगिक भाग है। १६३६ में यहाँ काम शुरू हुआ था और अब कोयले की खानों में काम आने वाली मशीनों से ले कर खूबसूरत चमड़े के बेग, गृह-सज्जा की चीजें, खाने का सामान, रेडियो के पुर्जे, सेफ्टी ग्लास, कपड़ा आदि कई चीजें यहाँ तैयार होती हैं। इस क्षेत्र में भी कंपनी कारखानों के योग्य भवन बना देती है और उत्पादक उन्हें किराये पर ले लेते हैं।

श्रमिकों के लिए घर बनाने की ज़िम्मेदारी काउंटी कौंसिल पर है। पहले इस क्षेत्र में बहुत ही अस्वास्थ्यकर गृह थे। एक श्रमिक से ज्ञात हुआ, कि उन घरों में से कुछ ऐसे थे, जिनमें मनुष्य शायद ही रहना पसन्द करे। हमें बताया गया कि नूतन गृह-निर्माण योजना के अन्तर्गत उक्त स्थिति में बड़ा सुधार हो गया है।

टीम वैली में ऊनी कपड़े तैयार करनेवाली एक मिल को हमने देखा। यहाँ भी मजदूरों में स्त्रियों की संख्या सबसे अधिक थी। इस मिल को देखने के बाद छोटे-छोटे पुर्जे ढालनेवाले एक कारखाने को भी हमें दिखाया गया। इस कारखाने में स्त्रियों के अतिरिक्त छोटी उम्र के लड़के भी काम करते दीख पड़े।

श्रमिकों के स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए यह योजना लागू है, कि स्त्रियों और १६ से १८ वर्ष तक की आयुवाले मजदूरों से ४८ घंटे प्रति सप्ताह और १६ वर्ष से कम आयु के मजदूरों से ४४ घंटे प्रति सप्ताह काम लिया जाता है। १८ वर्ष से कम आयु वाले मजदूरों की प्रति वर्ष इस दृष्टि से डाक्टरी परीक्षा होती है, कि वे काम करने के योग्य हैं अथवा नहीं। ब्रिटेन भर में यह योजना लागू है। श्रमिकों के कल्याण पर कारखाने वाले प्रतिवर्ष हर मजदूर पर औसतन ४० पौंड खर्च करते हैं। अधिकांश कारखानों में कैंटीन हैं, जहाँ सस्ते दामों में खाना मिलता है। श्रमिकों के खेल-कूद और आमोद-प्रमोद की भी व्यवस्था है।

टीम वैली से हम लोग सीधे न्यू कासल पहुँचे। यहाँ एक ऐसे रेस्त्रां में हमने खाना खाया, जहाँ मध्यमवर्ग के लोग प्रायः खाते हैं। छोटा रेस्त्रां और साधारण भोजन। यहाँ खाना खा कर हमने यह अनुभव किया, कि ब्रिटेन में अधिकांश साधारण रेस्त्राओं में अच्छा भोजन नहीं मिलता। मगर जिस साहस के साथ लोग इस संकट का सामना कर रहे हैं, वह अवश्य ही प्रशंसनीय है।

लंच के बाद हम एक ऐसे सेवा-केन्द्र को देखने गये, जहाँ अपाहिजों को कला-कौशल की शिक्षा दे कर उन्हें आजीविका कमाने योग्य बनाया जाता है। यहाँ पहुँचते ही युद्ध के भयानक चित्र आँखों में उतर आये। इस केन्द्र में ऐसे अपाहिज देख पड़े, जिनमें कुछ के हाथ कट गये हैं, तो किसी के पैर और किसी की आँखें खराब हो गई हैं, तो किसी के कान—यह युद्ध का ही परिणाम है। उन्हें विविध प्रकार की प्राविधिक शिक्षा दी जा रही थी। कोई दर्जी का काम सीख रहा था, कोई घड़ी अथवा टाइपराइटर मरम्मत करने की ट्रेनिंग पा रहा था, तो कोई मोची का काम खुशी-खुशी कर रहा था।

इस केन्द्र को देख लेने के बाद हम पुनः न्यू कासल लौट आये, क्योंकि यहाँ ब्रिटिश कौंसिल की शाखा में भारतीय विद्यार्थियों से सवा सात बजे मिलना था। हम लगभग दो घंटा पहले पहुँच गये थे, इसलिए यहाँ से आठ

मील दूर जा कर उत्तरी सागर के किनारे कुछ देर तक टहलते रहे।

टाइन नदी के मुहाने पर यहाँ का बन्दरगाह है। सागर के किनारे पहुँचते ही कार छोड़ कर बच्चों की भाँति हम लोग उछलते-कूदते तट के पास पहुँचे। विराट सागर हरहरा रहा था। दूर जलधि के बीच पाँच-छः जहाजों को देख कर हमारे एक साथी ने न्यू कासल के व्यावसायिक महत्व की चर्चा शुरू कर दी। किंतु उस समय हम लोग इस शुष्क बातचीत की अपेक्षा अनन्त जलराशि को देखने में डूबे हुए थे। वास्तव में सागर को देखने पर विराट प्रकृति के स्पन्दनशील सौन्दर्य का दर्शन होता है।

न्यू कासल से सागर के तट तक बस्तियाँ ही बस्तियाँ हैं। सड़कें काफी अच्छी हैं। जिस समय हम सागर के किनारे पहुँचे, वहाँ कई युवक-युवतियों की टोलियाँ घूम रही थीं। यहाँ यद्यपि कड़े शीत के कारण हम काँप रहे थे, फिर भी यहाँ का वातावरण इतना अच्छा लग रहा था, कि हटने की इच्छा नहीं होती थी। सरकारी कार्यक्रम से बँधे होने के कारण इस मनोरम स्थान को छोड़ कर पुनः हमें न्यू कासल में ब्रिटिश कौंसिल की स्थानीय शाखा में जाना ही पड़ा। वहाँ कई भारतीय एवं अफ्रीकी छात्रों से हमारी भेंट हुई। भारतीय विद्यार्थियों में बिहार के चार छात्र ऐसे थे, जो यहाँ कृषि सम्बन्धी शिक्षा प्राप्त करने के लिए आये थे। उनसे भोजपुरी में बातचीत करके जो प्रसन्नता प्राप्त हुई, उसे मैं कभी नहीं भुला सकता। ग्रियर्सन ने जिस भोजपुरी को उत्साही जाति की व्यावहारिक भाषा कहा है, उसी भाषा में भारत से हजारों मील दूर ब्रिटेन के औद्योगिक क्षेत्र में बातचीत करने में सचमुच बड़ा रस मिला। एक अफ्रीकी छात्र ने मलान की रंग-भेद सम्बन्धी नीति पर बड़ी देर तक बातचीत की। उसने यह भी कहा कि भारतीय समाचार पत्र अश्वेत जातियों की मर्यादा की रक्षा में जो योग प्रदान कर रहे हैं, उसे कभी नहीं भुलाया जा सकता।

आज का अन्तिम कार्यक्रम मेरे लिए रुचिकर था, क्यों कि इस यात्रा में प्रथम बार एक प्रान्तीय समाचार पत्र के कार्यालय में जा कर वहाँ की कार्य-प्रणाली को देखने का अवसर मुझको मिला। 'न्यू कासल जनरल' के प्रेस का सराहनीय प्रबन्ध देख कर मैं बहुत प्रभावित हुआ। प्रान्तीय पत्रों में स्थानीय खबरों पर विशेष ध्यान दिया जाता है और इन पत्रों का दावा है, कि इनकी अंग्रेजी लंदन के पत्रों से अच्छी होती है। उक्त पत्र के मालिक लार्ड केम्सले हैं, जिनके हाथ में ब्रिटेन के कई पत्र हैं। लंदन के अतिरिक्त ब्रिटेन के ग्यारह जिलों से लार्ड केम्सले के अन्य पत्र प्रकाशित होते हैं। इस देश

के पत्रों पर यह किस प्रकार हावी हैं, इसका अन्दाज़ा इसी से लगाया जा सकता है, कि इनके हाथ में चौदह दैनिक, छः साप्ताहिक और रविवार को प्रकाशित होने वाले छः पत्र हैं।

न्यू कासल में पत्रोद्योग के क्षेत्र में लार्ड केम्सले को एकाधिकार प्राप्त है। दैनिक 'स्पोर्टिंग मैन' को छोड़ कर यहाँ से प्रकाशित होने वाले सभी पत्र इन्हीं के हाथ में हैं।

'न्यू कासल जनरल' दकियानूसी विचारों का पत्र है। इसके सम्पादक मिस्टर क्लाड ने घूम-घूम कर हमें कार्यालय के विभिन्न भागों को दिखलाया। इस प्रान्तीय पत्र के कार्यालय में भी आध घंटे में फोटो तैयार करके ब्लॉक बना लिया जाता है।

लगभग ग्यारह बजे रात को हम डरहम वापस आ गये। नगर में उस समय सन्नाटा छाया हुआ था। मैं भी काफी थका था। बिस्तरे पर जाते ही नींद की गोद में लुढ़क गया।

---

१० मई

(१) स्टौक्टन

(२) "टनों वनस्पति तेल हमसे रँगवाइए"

(३) औद्योगिक विवाद हल करने की प्रणाली

(४) वाटसन भी मजदूर नेता हैं !

सुबह नींद टूटते ही बाहर देखा—इन्द्र भगवान् आज भी कृपा किये हुए हैं। मगर नाश्ता करने के लिए जब भोजनागर में गया, तो वहाँ "कैसा अच्छा मौसम है।" कह कर एक अंग्रेज़ युवक ने बातचीत शुरू की। मैंने मन ही मन कहा, लोग समझते हैं, पूर्ववाले ही परम्पराओं से चिपके रहते हैं, किंतु ये अंग्रेज़ तो परम्पराओं से चिपकने में उनसे भी आगे हैं। अन्य बातों के अतिरिक्त मौसम भी उनकी सामाजिक परम्पराओं की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी बन गया है। और तो और नगरों व गाँवों के नामों के साथ नदियों के नाम जोड़ने की परंपरा एक लंबे अर्से से प्रचलित है। जिस न्यू कासल को पिछले दो दिन से देख रहा हूँ, उसका सही नाम है—न्यू कासल-अपान-टाइन। आज देखने जाऊँगा टीज़ नदी के तट पर बसे स्टौक्टन-आन-टीज़ और १६ मई को पहुँच जाऊँगा इंगलैंड के सर्वोत्कृष्ट सांस्कृतिक प्रतिनिधि शेक्सपियर के गाँव—स्ट्रैटफर्ड आन-एवन। परम्परावादी इंगलैंड के जीवन में पुरानी धार्मिक रूढ़ियाँ शेष हैं और औद्योगिक सभ्यता के उदय होने के बाद भी वे दूर न हो सकीं।

आज नाश्ते के बाद हम इस इलाके के ऐसे भाग की ओर रवाना हुए, जो अपने अमर पुत्र स्टेफेन्सन के आविष्कार के कारण संसार भर में सुप्रसिद्ध है। जिस रेलगाड़ी के द्वारा दूर-दूर भागों से औद्योगिक, सांस्कृतिक एवं व्यावसायिक संबंध कायम रखना सम्भव हो सका है, उसका श्रेय महान् आविष्कारक स्टेफेन्सन को ही तो है, जिसकी पहली रेलगाड़ी ने १८२५ में स्टौक्टन से डार्लिंगटन तक का सफर पूरा किया था और वह पहली रेलगाड़ी उस अमर विभूति की स्मृति में अब तक डार्लिंगटन में सुरक्षित है। खेद है कि इस गाड़ी को देख कर भी स्वार्थ के कर्दम में फँसे वैज्ञानिक एवं आविष्कारक विज्ञान को

निर्माण की अपेक्षा विनाश का साधन बनने दे रहे हैं।

यह औद्योगिक क्षेत्र लोहे और इस्पात के उद्योग के लिए विख्यात है, किंतु इसके अतिरिक्त छोटे-मोटे कई प्रकार के उद्योग-धंधे खड़े हो गए हैं।

स्टौक्टन के विश्वविख्यात औद्योगिक प्रतिष्ठान—पावर गैस कारपोरेशन को देखने के लिए जब हम इसके मुख्य कार्यालय पहुँचे, तो इस प्रतिष्ठान के प्रायः सभी बड़े अधिकारियों ने खुले दिल से हमसे बातचीत की। हमारे लिए इस प्रतिष्ठान का महत्त्व इस दृष्टि से भी उल्लेखनीय है, कि सिन्दरी में रासायनिक खाद तैयार करने के लिए जो कारखाना खुला है, उसके लिए यहीं से मशीनें प्राप्त हो रही हैं, तथा इसी संगठन से प्राविधिक सहायता भी मिल रही है। यह बहुत ही पुरानी औद्योगिक संस्था है और कई देशों के कल-कारखानों के लिए यहाँ से मशीनें व पुर्ज़े भेजे जाते हैं। रूस ने भी यहाँ से मशीनें प्राप्त की हैं। इसकी स्थापना १८७६ में हुई थी।

सिन्दरी के कारखाने के सम्बन्ध में यहाँ बहुत देर तक बातें होती रहीं। हमारे कुछ साथियों ने इस रासायनिक खाद तैयार करने वाले कारखाने में शीघ्र उत्पादन न होने की शिकायत की। इस पर उक्त प्रतिष्ठान के चेयरमैन तथा दूसरे अधिकारियों ने कहा कि शीघ्र उत्पादन न होने की शिकायत करते समय कुशल टेक्नीशियनों की कमी के कारण जो दिक्कतें हैं, उनपर भी ध्यान देना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि यद्यपि सिन्दरी में खाद तैयार करने का कारखाना खड़ा करने की योजना १९४५ में बन गई थी, किन्तु १९४८ में पावर गैस कारपोरेशन को इसे तैयार करने का आर्डर मिला और इस स्थिति में कुछ समय तो लगता ही। खर्च बढ़ने के सम्बन्ध में जो आरोप लगाया गया है, वह गलत है, क्योंकि चीजों का दाम पहले से बहुत बढ़ गया है। चेयरमैन ने कहा कि उत्पादन शुरू होने के पूर्व चार सीढ़ियाँ तय करनी होती हैं—(१) कारखाने के लिए इमारत, (२) मशीनें, (३) कच्चा माल और (४) कुशल कारीगर। पहली दो मंजिलें फतह हो चुकी हैं। कच्चा माल भारत में इतना अधिक है कि उत्पादन शुरू होने के बाद रासायनिक खाद तैयार करने वाले कारखानों में सिन्दरी का कारखाना संसार का सबसे बड़ा कारखाना हो सकता है। हाँ, यह अवश्य है कि भारत में कुशल कारीगरों और टेकनीशियनों की कमी है, इसलिए जिस तेजी से कुशल कारीगरों की संख्या बढ़ेगी, उसी गति से उत्पादन भी बढ़ेगा। जब हमारे एक साथी ने यह पूछा, कि "आप विशेषज्ञ क्यों नहीं देते ?" तो इसके उत्तर में इस संस्था

के चेयरमैन ने कहा—"इस छोटे से देश में इतने फालतू आदमी कहाँ हैं। हाँ, भारतीयों को काम सिखाने की हम व्यवस्था अवश्य कर सकते हैं।" उन्होंने बताया कि इस समय भी कुछ भारतीय यहाँ काम सीख रहे हैं और कारखाने में घूमते समय उनमें से दो भारतीयों से हमारी भेंट हुई। यहाँ सर्वप्रथम हमें रासायनिक प्रयोगशाला दिखाई गई, जहाँ विशेषज्ञ और शिक्षार्थी बड़ी तन्मयता के साथ अपने-अपने काम में लगे हुए थे। वनस्पति तेल की रँगाई के प्रश्न पर हमारे देश में यह कहा जा रहा है, कि रँगने की क्रिया ठीक ढंग से नहीं हो सकती, इसलिए अभी तक यह काम नहीं हो रहा है। मगर अपने देश के कुछ विवेकशील लोगों का यह दृढ़ विश्वास है, कि उपयुक्त रंग न मिलने का बहाना केवल प्रपंच है और वास्तव में वनस्पति तेल के उत्पादक इतने प्रभावशाली हैं, कि रंग मिल कर भी नहीं मिल पाते। मैंने यहाँ के विशेषज्ञों से विशेष रूप से इस सम्बन्ध में जब पूछताछ की, तब मुझे बताया गया, कि वनस्पति तेल को रँगना बिलकुल आसान है। मैंने मन में सोचा, रासायनिक खाद की आवश्यकता पूरी करने के लिए इसी प्रतिष्ठान की सहायता से सिंदरी में कारखाना खड़ा किया गया, किन्तु जनता के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए इस कम्पनी की सहायता से वनस्पति के रँगने की व्यवस्था नहीं की जा रही है। पूँजी की माया विचित्र है!

पावर गैस कारपोरेशन के एक अधिकारी ने आयल रिफाइनिंग प्लैंट के बारे में एक पुस्तिका मेरे हाथ में देते हुए कहा—"टनों वनस्पति तेल हमसे रँगवाइए।" इसका उत्तर मैं क्या देता। किन्तु हमारे देश के जो अधिकारी यह कहते हैं, कि वनस्पति तेल का रँगना अभी सम्भव नहीं है, वे क्या इस चुनौती को स्वीकार करेंगे?

यहीं हमने देखा, कि किस प्रकार हीरे काटे-छाँटे जाते हैं और इसी कक्ष में हमें यह भी बताया गया, कि सच्चे हीरे की परख क्या है। इस प्रतिष्ठान में मजदूरों के लिए कैंटीन तथा आमोद-प्रमोद के लिए नाटक-गृह एवं खेलने के लिए मैदान आदि की समुचित व्यवस्था है।

हमें यह भी बताया गया, कि ब्रिटेन में मजदूर और मालिक अपने-अपने संगठनों के द्वारा औद्योगिक विवादों को हल कर लेना ही उचित समझते हैं। परन्तु जिन उद्योगों में ऐसा सम्भव नहीं होता अथवा जहाँ दोनों पक्षों के प्रतिनिधि अपना विवाद हल नहीं कर पाते, वहाँ समझौता-अधिकारियों के द्वारा श्रम-मंत्रालय ऐसे विवादों को हल करता है। अगर मध्यस्थ-बोर्ड से

भी औद्योगिक विवाद नहीं सुलझ पाते, तो कानून द्वारा स्थापित औद्योगिक अदालतें ऐसे मामलों में अपना निर्णय देती हैं । युद्ध-काल में मजदूरों और मालिकों के बीच पैदा हुए झगड़ों के निपटारे के लिए राष्ट्रीय मध्यस्थता कौंसिल बनी थी और आज भी वह कायम है। इसे भी औद्योगिक विवादों के सम्बन्ध में फैसला करने का अधिकार है और इसका निर्णय दोनों पक्षों को स्वीकार करना पड़ता है। सरकार राष्ट्रीय संयुक्त सलाहकार समिति के द्वारा मजदूर संगठनों और मालिकों की संस्थाओं से अपना सम्पर्क कायम रखती है। उक्त समिति में ब्रिटिश मिल मालिक महासंघ और ट्रेड यूनियन कांग्रेस के प्रतिनिधि हैं।

उद्योगों के आधार पर यहाँ मालिकों के संगठन बने हैं। इनके सभी संघबद्ध संगठनों का नाम ब्रिटिश मिल मालिक महासंघ है। सरकार ने इसे मान्यता प्रदान कर रखी है । औद्योगिक मजदूर ट्रेड यूनियनों में संगठित हैं और इनके केन्द्रीय संगठन का नाम ब्रिटिश ट्रेड यूनियन कांग्रेस है। १९४८ में ब्रिटिश ट्रेड यूनियनों की सदस्य-संख्या ९३ लाख १ हजार थी। अलग-अलग ७०६ ट्रेड यूनियनें थीं। परन्तु ६६ प्रतिशत मजदूर १७ बड़ी यूनियनों के सदस्य थे।

ब्रिटेन के श्रमिक आन्दोलन में एकता नहीं है। कम्युनिस्ट तथा कुछ स्वतंत्र श्रमिक कार्यकर्ता ब्रिटिश ट्रेड यूनियन कांग्रेस की नीति से असन्तुष्ट हैं। विश्व मजदूर संघ से सम्बद्ध मजदूर सङ्गठनों और ब्रिटिश ट्रेड यूनियन कांग्रेस में बड़ा मतभेद है । ब्रिटेन के कम्युनिस्ट एवं स्वतन्त्र मजदूर कार्यकर्ताओं का कहना है, कि श्रमजीवियों और मालिकों में सहयोग बनाये रखने की बात वास्तव में ट्रेड यूनियन कांग्रेस के प्रतिक्रियावादी नेताओं और थैलीशाहों की चालबाजी है। १९४९ में विश्व मजदूर संघ से अपना सम्बन्ध खतम करने की घोषणा करते हुए ब्रिटिश ट्रेड यूनियन कांग्रेस ने अमेरिकी सी० आई० ओ० के नेताओं का अनुसरण किया और तब से मजदूर आन्दोलन में एक चौड़ी दरार पड़ गई है। ब्रिटिश कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकर्ताओं का कहना है, कि 'मार्शल-योजना' के अन्तर्गत जो देश आ गये हैं, उन्होंने अमेरिका को खुश करने के लिए विश्व मजदूर संघ से अपना सम्बन्ध खत्म कर लिया है, किन्तु हमें ज्ञात हुआ, कि ब्रिटिश ट्रेड यूनियन कांग्रेस की इस नीति से लंदन, ग्लासगो और लीड्स की कुछ बड़ी ट्रेड यूनियनों की कौंसिलों और स्कॉटलैंड की खानों में काम करनेवाले मजदूरों ने असंतोष प्रकट किया।

पावर गैस कारपोरेशन के कुछ कारखानों को देखने के बाद मैं बेनीपुरी जी के साथ न्यू कासल गया, जहाँ भारतीय छात्रों ने हमें खाने के लिए आमंत्रित किया था। वहीं एक भारतीय डाक्टर से भी भेंट हुई, जो बम्बई के हैं और डाक्टरी सीखने के बाद यहीं एक अस्पताल में ६०० पौंड वार्षिक पर काम करते हैं। इन्हीं डाक्टर ने हमें अपनी कार से डरहम पहुँचा दिया। मार्ग के दो गाँवों में भी हम लोग गये, ग्रामीणों से बातें कीं। इन दोनों गाँवों में पक्की सड़कें बनी हुई हैं। छोटे-छोटे दुमंजिले मकान, जिनकी खिड़कियों पर खूबसूरत पर्दे पड़े हुए हैं। लड़कों के खेल के लिए मैदान भी दिखाई दिये। एक गाँव के पब में जा कर हमने बियर भी पी। ग्रामीणों ने बताया, कि प्रथम महायुद्ध के बाद १९२९-३० की मन्दी के फलस्वरूप यहाँ बेकारी के कारण जो विषम स्थिति पैदा हो गई थी, वैसी दशा आज अवश्य नहीं है, लेकिन परेशानियों की कहानी अभी खत्म नहीं हुई है। हमें यह भी मालूम हुआ, कि कई भागों में लोगों के सम्मुख मकान की विकट समस्या अभी है।

रायल काउंटी होटल में ही आज हमें डिनर दिया गया था, जिसमें डरहम के मेयर और अन्य स्थानीय अधिकारियों के साथ ही 'नेशनल यूनियन आफ माइन वर्कर्स' (खान मजदूरों की राष्ट्रीय यूनियन) के जनरल सेक्रेटरी श्री साम वाटसन भी उपस्थित थे। श्री वाटसन श्री एटली के दाहिने हाथ हैं। स्वास्थ्य-मंत्री बेवान के इस्तीफे के बाद इन्होंने एटली का जोरों से समर्थन किया था और आज के डिनर में उनकी उपस्थिति के कारण मौसम, फूल अथवा साहित्य पर चर्चा होने के बजाय राजनीतिक चर्चाएँ होती रहीं। वाटसन स्कॉच ह्विस्की के पेग के पेग चढ़ा कर अमेरिका की आक्रामक नीति का अपनी शक्ति भर समर्थन कर रहे थे। इन्होंने फख्र के साथ यह भी कहा, "मैं चार पुश्त से खान-मजदूर हूँ और मेरा जन्म खान में हुआ है।" मगर यह सुनते ही कि कैंटरबरी के 'रेड डीन' डरहम विश्वविद्यालय में भाषण देने आये हैं, वह भड़क उठे : "वह डीन नहीं है, डीन की खाल ओढ़े हुए वह रूस का एजेंट है" और इसी आवेश में रूस की निंदा व अमेरिका की प्रशंसा में वे भाषण करते रहे। बोल्शेविक क्रान्ति के समय मास्को-स्थित ब्रिटिश प्रतिनिधि सर ब्रूस लोखार्ट ने लिखा था—"इंगलैंड के टोरी इस क्रान्ति को घृणा की दृष्टि से देखते हैं व इसके परिणामों से भयभीत हैं और श्रमिक देशभक्तों में भी मैंने यही भय पाया।" एटली के दाहिने हाथ वाटसन के मुँह से उक्त बातें सुन कर सर ब्रूस लोखार्ट के कथन को कौन असत्य समझेगा? वाटसन

को शायद लॉस्की द्वारा १९४३ में कहे गये ये शब्द याद नहीं रहे— "सोशलिस्टों और कम्युनिस्टों के आपसी संघर्ष के फलस्वरूप जर्मनी और इटली का मजदूर आन्दोलन खतम-सा हो गया था और यदि द्वितीय महायुद्ध के बाद भी इन दोनों पार्टियों की वही नीति कायम रही, तो स्वतन्त्रता के लिए लड़े जाने वाले युद्ध का नतीजा कटुतर गुलामी के रूप में परिणत होगा।" जिस समय वाटसन यह कह रहे थे, कि अगर अमेरिका न होता, तो यूरोप भूखों मर गया होता; उस समय वे शायद इस बात को भूल रहे थे—यूरोप को दो शिविरों में विभक्त करने की साजिश इसीलिए रची गई, कि वालस्ट्रीट के संकेत पर पश्चिमी यूरोप के साथ ब्रिटेन भी नाचे। युद्ध के बाद ब्रिटेन में मजदूर-दल की जीत पर दुनिया में इसलिए खुशी मनायी गई थी, कि शान्ति की ताकतें सुदृढ़ हो रही हैं। मगर टोरी पार्टी की परराष्ट्र-नीति का अनुसरण करके ब्रिटिश लेबर पार्टी ने शान्ति के शिविर को धक्का पहुँचाया है और इसी लिए इस दल के सुप्रसिद्ध सदस्य के० जिलियाकस ने, जो स्वतन्त्र एवं निष्पक्ष विचारों के कारण लेबर पार्टी से निकाल दिये गये हैं 'आई चूज़ पीस' (मैं शान्ति को वरण करता हूँ) नामक पुस्तक में वर्तमान मजदूर सरकार की नीति की भर्त्सना करते हुए इसे शान्ति के लिए घातक बताया है। मार्शल-योजना की वकालत करते समय वाटसन इस बात को भी भूल रहे थे, कि इस सहायता का अर्थ है अमेरिका की आर्थिक और अप्रकट रूप में राजनीतिक गुलामी। इनको इस बात की बड़ी शिकायत थी, कि भारत खुले रूप में आंग्ल-अमेरिकी गुट का समर्थन नहीं करता। परन्तु ब्रिटेन में भी सभी मजदूर कार्यकर्ता वाटसन के विचारों के पोषक नहीं हैं। मई दिवस के समारोह के अवसर पर ५ मई को ट्रेफलगर स्क्वायर में एक अंग्रेज़ युवक ने मुझसे कहा था, ब्रिटेन अमेरिका का पिछलग्गू नहीं बन सकता। मुझे वाटसन की अपेक्षा उस युवक की बात में अधिक विश्वास है। आश्चर्य यही है कि वाटसन भी मजदूर नेता हैं।

——————

११ मई

(१) रेड डीन से अचानक भेंट
(२) सहकारिता-आन्दोलन
(३) 'रहस्यमय कथाओं के देश' की ओर
(४) एडिनबरा के 'पब' में

पर्वतों, जंगलों और झरनों की शोभा को समेटे जो स्काटलैंड जॉनसन और सर वाल्टर स्काट की लेखनी से दुनिया के दूर-दूर देशों के लोगों को प्रिय हो गया है, उसी शीत प्रदेश को देखने के लिए बड़ी आतुरता से मैं अपने बिखरे सामान को सूटकेस में भर रहा था, तभी सहसा याद आया, कि 'रेड डीन' इसी होटल में ठहरे हैं और क्या उनसे बिना भेंट किये ही मैं आज इंगलैंड से स्काटलैंड रवाना हो जाऊँ ? कार्यक्रम के अनुसार कैंटरबरी जाना नहीं हो सकता, किन्तु वहाँ जाने का उद्देश्य अब इसी होटल में पूरा हो सकता है। इसी विचार के साथ मैं जलपान करने जब डायनिंग हॉल में गया, तो एक वृद्ध सज्जन, जिनके गले में क्रॉस लटक रहा था, अपनी टेबुल छोड़ कर मेरे पास आ गये और बड़े स्नेह के साथ उन्होंने कहा—"क्या मैं आपही की टेबुल पर जलपान कर सकता हूँ ?" आज तक के अनुभव के बाद इंगलैंड में मेरे लिए यह एक आश्चर्यजनक घटना थी। मैंने सोचा, यह कौन सहृदय अंग्रेज है, जिसके शब्द-शब्द से ममता और स्नेह की रसधारा फूट रही है। अंग्रेज़ तो पर्यटक से भी बिना पूछे कुछ बातें नहीं करते, किन्तु यह कौन साधु पुरुष है, जो एक अश्वेत से बात करने के लिए उसकी टेबुल पर ही जलपान करना चाहता है। क्रॉस देख कर विश्वास हुआ—हो न हो यही डाक्टर हैवलेट जॉनसन हैं, तब तक उन्होंने अपना परिचय स्वयं दे दिया और आज सुबह से ही जिस व्यक्ति से मिलने को मैं आतुर था, उस सन्त से इस प्रकार अनायास भेंट हो जाने पर प्रसन्नता क्यों न होती ? एटली के साथी और डरहम के मजदूर नेता साम वाटसन जिस मानवतावादी पादरी को कल रात भोजन के समय गालियाँ दे रहे थे, वही आज किस सौजन्य के साथ हमसे

घुलमिल कर बातें कर रहा है ! इस पादरी को केवल इस समय यही चिन्ता है, कि सम्पूर्ण मानवता के कल्याण के लिए अब स्थायी रूप से विश्व-शान्ति कायम रहे । ब्रिटेन के टोरियों और ट्रान्सपोर्ट हाउस की वर्तमान नीति के समर्थकों की दृष्टि से इस पादरी का यही दोष है, कि वह समानता और बंधुत्व के आदर्श का आराधक है और इस लिए उसे व्यंग्यात्मक ढंग से 'रेड डीन' (रूस समर्थक पादरी) कहा जाने लगा है ।

कैंटरबरी के डीन डाक्टर हैवलेट जॉनसन से खुल कर बातें हुईं । उन्होंने भारत की तटस्थ परराष्ट्र-नीति को शान्तिवादी नीति कह कर उसकी सराहना की। गांधी जी की चर्चा करते ही उनकी आँखें तर हो गईं । "महात्मा जी और नेहरू—दोनों ही कैंटरबरी में मेरे मेहमान थे" यह कहते हुए रेड डीन ने भारत के शान्तिवादी रुख की पुनः प्रशंसा की । आपने कहा—"शान्ति की रक्षा करके वर्तमान युग इतिहास में वह देन छोड़ जायगा, जिसे भावी पीढ़ी सदा याद रखेगी ।" हमारे साथियों ने उनसे बहुत से सवाल पूछे और बड़ी गम्भीरता के साथ उन्होंने हर प्रश्न का उत्तर दिया ।

अमेरिका और रूस के सम्बन्ध में पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा—दोनों राष्ट्रों की आर्थिक नीतियों के विश्लेषण से स्वतः यह बात प्रकट हो जायगी, कि कौन शान्ति चाहता है और कौन विग्रह । रूस दूसरे महायुद्ध के घाव भरने में लगा है—वह पुनर्निर्माण में संलग्न है । अमेरिका आक्रामक नीति अपना कर अपने साम्राज्यवादी पंजे में दुनिया को कसना चाहता है । आखिर सोने और फौजी अड्डे के लिए ही तो अमेरिका कोरिया में लड़ रहा है । जब एक प्रतिनिधि ने लौह-आवरण की चर्चा शुरू की, तो डॉक्टर जॉनसन हँसे । उन्होंने कहा—आश्चर्य है, कि इस प्रकार के गलत प्रचार में भारत के पढ़े-लिखे लोग भी फँस रहे हैं । मैं तो रूस कई बार गया हूँ, दूसरे लोग भी जाते ही रहते हैं, परन्तु 'लौह-आवरण' जैसी कोई बात नहीं पाई गई । हाँ, जो लोग राजनीतिक स्वार्थों के कारण इस प्रकार का झूठा प्रचार करते हैं, उन्हें सत्य कैसे दिखायी पड़ेगा ? एक अन्य प्रश्न के उत्तर में रेड डीन ने कहा, कि रूस और पूर्वीय यूरोप के देशों के धार्मिक नेताओं ने मुझे बताया, कि उन्हें पूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त है । आपने कहा, कि मेरी दृष्टि से रूस का सामाजिक जीवन ईसा के उपदेशों के अनुकूल सँवारा जा रहा है, इसलिए मैं पादरी होते हुए भी रूस का समर्थक हूँ और प्रत्येक सच्चा ईसाई अवश्य कम्युनिस्ट होगा ।

डाक्टर जॉनसन के हृदय में भारत के प्रति बड़ा प्रेम है। इच्छा तो यही हो रही थी, कि इनसे बातें करते रहें, किंतु सरकारी कार्यक्रम से बँधे होने के कारण यह सम्भव नहीं था। ब्रिटेन के इस ईमानदार और सुयोग्य सन्त से इस होटल में अचानक भेंट हो जाना मेरे लिए सौभाग्य की बात थी। अपनी यात्रा के इन मधुर क्षणों को मैं कभी नहीं भुला सकता।

होटल से अपने सामान के साथ अपनी-अपनी कार में हम लोग इस भाग की सहयोग-समितियों के कार्य-कलाप देखने को रवाना हुए। आज ही तीसरे पहर न्यू कासल जा कर हमें स्कॉटलैंड की राजधानी एडिनबरा के लिए गाड़ी पकड़नी थी।

ब्रिटेन में अपने ढाँचे के अन्तर्गत सहकारिता-आन्दोलन सफल है। इस समय एक हज़ार से अधिक बिखरी हुई सहयोग-समितियों के करीब एक करोड़ पाँच लाख सदस्य हैं जब कि पूरे देश की जन संख्या पाँच करोड़ से कुछ कम है। हम पहले न्यू कासल की सी० डबल्यू० एस० (थोक व्यवसाय करनेवाली सहयोग समितियाँ) के कार्यालय में गये। यह एक पुरानी संस्था हैं। १८६४ में इसकी स्थापना हुई थी। ब्रिटेन में दो प्रकार की सहयोग समितियाँ हैं—१. रिटेल सोसायटी २. होलसेल सोसायटी। रिटेल सोसायटी ने उपभोक्ताओं के लाभार्थ होलसेल और उत्पादक समितियाँ भी स्थापित कर दी हैं। किन्तु रिटेल सोसायटियों का मुख्य कार्य होलसेल सोसायटियों तथा दूसरे साधनों से सामान खरीद कर उसे सस्ते भाव अपने सहयोगियों के हाथ बेचना है। रिटेल समितियों के काम में लगे कर्मचारियों की संख्या २ लाख ५० हजार है। १९४८ में इन समितियों ने ४६० लाख पौंड का व्यापार किया था। होलसेल समितियों का मुख्य कार्य उत्पादन के द्वारा रिटेल समितियों की माल-सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति करना है। न्यू कासल में इस संस्था का क्षेत्रीय कार्यालय है। कार्य-संचालन के लिए २८ डायरेक्टरों का एक बोर्ड है, जिसकी बैठक प्रति सप्ताह मानचेस्टर, लंदन और न्यू कासल में क्रमशः होती है और हर तीसरे मास समस्त सहयोग-समितियों के प्रतिनिधियों की साधारण बैठक होती है। हर छठे मास आय का वितरण होता है। कोई भी सदस्य २०० पौंड से अधिक का शेयर नहीं खरीद सकता।

इस सोसायटी द्वारा मुख्यतः कपड़ा, जूता, फर्नीचर, बर्तन तथा अन्य आवश्यक चीजों के उत्पादन पर ही ध्यान दिया जाता है। इस समिति की देखरेख में दो सौ कारखानों और फर्मों का संचालन होता है, जहाँ की तैयार

वस्तुएँ दुनियाँ के कई भागों में भेजी जाती हैं और इस प्रकार अन्तरराष्ट्रीय वाणिज्य भी इसके कार्यक्रम का मुख्य अंग होता जा रहा है। सहयोग-समितियों के अपने बैंक और बीमा-कम्पनियाँ हैं। यहाँ सहकारिता-आन्दोलन ने इतनी सफलता प्राप्त की है, कि यहाँ होलसेल सोसायटी के पास अपने जहाज़ हैं, जिनके जरिये दूर-दूर देशों के बाजारों में यहाँ का सामान भेजा जाता है।

ब्रिटिश सहकारिता-आन्दोलन के बारे में जानकारी प्राप्त कर लेने के बाद इसी आन्दोलन द्वारा संचालित एक सिलाई का कारखाना दिखाया गया। यहाँ के पाँच सौ कर्मचारियों में स्त्रियों की संख्या अधिक तो थी ही, किन्तु सोलह वर्ष से कम उम्र के कई लड़कों को भी मैंने काम करते देखा। इनमें अधिकांश लड़के प्रायः अशिक्षित थे। पूँजीवादी अर्थ-व्यवस्था की यह कितनी बड़ी विडम्बना है, कि इतने बड़े शोषक देश में भी किशोरों को, जब उन्हें शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए, अपनी आजीविका कमाने के लिए खटना पड़ता है।

इस सिलाई के कारखाने में हर घंटे २२ कोट और ४५ पैंट तैयार होते हैं। सारा काम मशीनों से होता है। प्रति सप्ताह औसतन हर कर्मचारी को ४ पौंड ८ शिलिंग मजदूरी मिलती है। सप्ताह में काम के ४४ घंटे निर्धारित हैं।

इस कारखाने में मैंने एक दिलचस्प चीज़ यह देखी, कि मशीनों पर काम करनेवाली लड़कियों ने अपनी-अपनी मशीनों पर अपने-अपने प्रिय अभिनेता एवं अभिनेत्रियों के चित्र लगा रखे थे। हमें देख कर वे आपस में कानाफूसी भी करती जा रही थीं, कुछ मुसकरा रही थीं, कुछ हँस रही थीं। मगर सबके चेहरे कुछ सूखे-से प्रतीत हुए। आँखों से विवशता टपक रही थी और यद्यपि वे कई प्रकार के सुन्दर वस्त्र सी रही थीं, परन्तु उनके शरीर पर अच्छे वस्त्र नज़र नहीं आये।

इस कारखाने को देखने के बाद हम सोसायटी द्वारा सञ्चालित कैंटीन में खाना खाने गये। यहाँ सस्ते दामों पर कर्मचारियों के भोजन की व्यवस्था है। कैंटीन के बर्तन और फर्नीचर सोसायटी के कारखानों द्वारा तैयार किये हुए थे। खाना अच्छा नहीं मिला। भला भरपेट आलू का भरता कोई कैसे खा सकता है!

लंच के बाद हम न्यू कासल वापस आ गये। अभी ट्रेन छूटने में देर थी, इसलिए स्टेशन के पास ही कुछ देर हम टहलते रहे। टाइयाँ यहाँ काफी सस्ती थीं। मैंने मित्रों के लिए कुछ टाइयाँ खरीद लीं।

स्टेशन पर काफी भीड़ थी। मेले के कारण एक भाग से दूसरे भाग आने-जाने वालों की संख्या बढ़ गई थी। चार बजे हमारी ट्रेन न्यू कासल से एडिनबरा के लिए रवाना हो गई। आज हम ऐसे क्षेत्र से हो कर स्काटलैंड जा रहे थे, जहाँ कुछ भागों में गेहूँ की खेती होती है और मवेशियों की संख्या अधिक है एवं जहाँ कुछ भाग की आबादी प्रति वर्गमील ४०० से अधिक; किन्तु बाद घट कर यह संख्या प्रतिवर्ग मील ५० से १०० प्रति वर्गमील रह जाती है। हरी घास से भरे लम्बे चरागाहों में भेड़ों के झुंडों को देख कर इस क्षेत्र के प्राकृतिक सौंदर्य की पहली झलक मिली। भूरे रंग की मोटी गायें भी चरागाहों में दिखायी पड़ीं। दूर-दूर तक हरित भूमि-खंड देख कर आँखें जुड़ा गईं। ट्रेन में बैठे-बैठे इन हरे-भरे विस्तृत चरागाहों, बर्फ से ढकी पहाड़ियों और कहीं कहीं उछलते-कूदते लाल मृगों को देख कर मैं इस पर्वतीय प्रदेश के रूमानी सौंदर्य पर रीझ उठा। दुनिया के धुर उत्तरी भाग की ओर हम जा रहे थे, इसलिए गर्मी में भी हमें काफी जाड़ा मालूम हो रहा था। ब्रिटिश ट्रेनों में रेलिंग पकड़ कर गलियारे से बाहर के दृश्यों को देखने की सुविधा प्राप्त है, इस लिए मैं वहीं से खड़े-खड़े ट्रेन के चतुर्दिक् बिखरे हरित सौंदर्य को निहारने में तल्लीन था। जिस समय उत्तरी सागर के किनारे से हमारी ट्रेन गुजरने लगी, तो बहुत ही लुभावना दृश्य दिखाई पड़ा। एक ओर सागर की उत्तुंग तरंगें और दूसरी ओर हरित पृथ्वी पर हवा के झोंके के साथ मस्ती में झूमनेवाली तृण-उर्मियाँ। पृष्ठ भाग में धवल पर्वत-शिखर, नीचे वनप्रदेश और ऊपर आकाश में पक्षियों का स्वच्छन्द विचरण। प्रकृति की ऐसी अनूठी कलाकृति का अनुकरण कर न जाने कितने शिल्पी अमर कलाकार बन जाते हैं। और आज मैं उसी मनोहर दृश्य को जी भर देखता जा रहा हूँ।

ट्रेन द्रुत गति से दौड़ती जा रही थी और कभी-कभी पिछले दृश्यों के चित्र आँखों में तैरने लगते। अभी कुछ देर पहले ट्विड माउथ नामक नगर दिखाई पड़ा था। और उसके लाल-लाल मकान स्काटलैंड के रहने वालों की रंगीन तबियत और साहस की भावना को व्यक्त कर चुके थे। ट्रेन से उस नगर को देख कर भूगोल में पढ़ी हुई बात याद आ गई, कि यही वह क्षेत्र है, जहाँ इंगलैंड और स्काटलैंड की सीमा मिलती है। प्रसिद्ध सेमन मछली यहीं विशेष रूप से पायी जाती है और स्काटलैंड वाले बड़े गर्व से कहते हैं—"ट्विड नदी की सेमन सबसे अधिक स्वादिष्ट होती है।" सहसा यह भी याद आया, कि बैरविक-अपान-ट्विड प्राचीन समय में प्रेमियों का क्रीड़ास्थल भी रहा है।

सदियों पूर्व माँ-बाप के डर से भाग कर प्रेमी-प्रेमिकाएँ यहाँ पहुँच पर विवाह-बंधन में बँध जाते थे। सीमा पार कर एक देश से दूसरे देश में भाग जाने की सुविधा भी थी।

रहस्यमय कथाओं से भरे प्रदेश से होते हुए हमारी ट्रेन एडिनबरा की ओर जा रही थी। इंगलैंड और स्काटलैंड के बीच वर्षों युद्ध होता रहा और एक लम्बे अर्से के बाद रानी मेरी के पुत्र छठे जेम्स के राज्यकाल में १६०३ में दोनों देश एक ताज के अधीन हुए और १७६० में दोनों ने एक ही पार्लमेंटरी शासन-प्रणाली अंगीकार की। हम उस स्काटलैंड के चरागाहों, बर्फीली पहाड़ियों, घने जंगलों और छिटपुट खेतों को देखते जा रहे थे, जहाँ एक समय इस देश के निवासियों ने स्वतंत्र अस्तित्व के लिए साहस के साथ संघर्ष किया, जहाँ सामंती षड्यंत्र में फँस कर न जाने कितने नौनिहालों ने अपनी जानें दीं, जहाँ वासना की लपटों में अनेक सामन्त झुलस गये और जहाँ मारग्रेट जैसी रानी ने यदि अपने पवित्र आचरण से इस प्रदेश को गौरव प्रदान किया, तो रानी मेरी के विलासमय जीवन ने यहाँ के वातावरण में चुल-बुलापन भर दिया। पाषाण-काल से पूर्व हिम-काल की आदिम सभ्यता का यह प्रदेश रोमनों से पूर्व केल्टिक आदि जातियों का क्रीड़ाक्षेत्र रहा और रोमनों के बाद पिक्ट्स और स्काट्स ने यहाँ प्रवेश किया। अन्त में स्काट जाति के नाम पर ही इस का नाम स्काटलैंड पड़ा। यद्यपि अभी स्काटलैंड की भूमि पर पैर नहीं रखा था किंतु इस रहस्यमय देश के पुराने वृत्तान्त की स्मृतियाँ ताजी होते ही अपने डिब्बे की खिड़की से इसे जी भर निरखने की भावना बड़ी प्रबल होती जा रही थी। प्रकृति के विविध रूप यहाँ दर्शनीय हैं जौर जब सायकिल पर सवार युवक-युवतियों की टोलियाँ देख पड़ीं, तो इस भाग के रूमानी जीवन का कुछ आभास मिला। जिन ग्रामीण दृश्यों से स्काटलैंड के प्रसिद्ध कवि राबर्ट बर्न्स को अनुभूति प्राप्त हुई, उनको निहारता हुआ मैं अब एडिनबरा पहुँचने वाला था।

ठीक ६ बज कर १६ मिनट पर एडिनबरा के वेवर्ली नामक रेलवे-स्टेशन पर हमारी गाड़ी खड़ी हुई और इस नगर को देखने की आकांक्षा लिये हम ट्रेन से उतरे।

स्टेशन पर यहाँ के निवासियों के रंगीन और नये ढंग की पोशाकें देख कर हमें मालूम हो गया, कि हम अब इंगलैंड से दूर स्काटलैंड में हैं। एडिनबरा की महिला सूचना-अधिकारी कुमारी शॉ प्लेटफार्म पर उपस्थित थीं। उनके

साथ स्टेशन से लगे नार्थ ब्रिटिश होटल गये, जहाँ हमारे ठहरने का प्रबंध था। यही यहाँ का सब से बड़ा होटल है।

इस शीत प्रदेश में पहुँच कर भी मैंने शाम को स्नान किया। जब नीचे होटल के लौंज (विश्राम-कक्ष) में गया, तो बताया गया, कि बिहार के भूतपूर्व चीफ सेक्रेटरी श्री रसेल ने हमें डिनर पर आमंत्रित किया है। भोजन के समय श्री रसेल ने भी कश्मीर के प्रश्न पर बातचीत शुरू करते हुए कहा कि वे इस मामले में भारत के दृष्टिकोण को नहीं समझ पाते। मैंने कहा—जब प्रायः सारा ब्रिटिश प्रेस इस मसले में जानबूझ कर पाकिस्तान के पक्ष में भारत के खिलाफ गलत प्रचार कर रहा है, तो यहाँ के लोग वस्तुस्थिति को कैसे समझेंगे? मगर आश्चर्य यह हुआ कि तथ्यों को जान लेने के बाद भी श्री रसेल ने उन्हें स्वीकार नहीं किया। इस मर्ज की क्या दवा है?

होटल के मदिर वातावरण से यह प्रकट हो गया, कि अब हम स्कॉच ह्विस्की के प्रदेश में हैं। खा-पीकर हम बाहर घूमने निकले। बेनीपुरी जी ने आज बातों-बातों में एक सूझबूझ की बात यह कही, कि "यहाँ खाने का अर्थ अन्न और पीने का अर्थ पानी नहीं है।" अंग्रेजी होटलों की भाँति यहाँ भी एक रोटी और साग-सब्जी तथा कुछ गोश्त मिला।

हम विश्व-प्रसिद्ध प्रिंसेज़ स्ट्रीट में टहल रहे थे। स्कॉटलैंड के निवासी अंग्रेज़ों से मानसिक-स्तर पर आज भी संघर्षरत हैं। किन्तु अंग्रेजी परम्परा के अनुसार वे भी इस लम्बे-चौड़े मार्ग को स्ट्रीट कहते हैं। होटल के पास ही प्रिंसेज़ स्ट्रीट से लगे स्कॉटलैंड के सुप्रसिद्ध साहित्यकार सर वाल्टर स्काट का स्मारक दीख पड़ा और एक सांस्कृतिक प्रतिनिधि की विशाल मूर्ति देख कर मैं उसपर मुग्ध हो गया। स्मारक के पास खड़े हो कर मैं सोचने लगा कि अब वह दिन दूर नहीं, जब हम भारतीय भी अपने सांस्कृतिक प्रतिनिधियों के सम्मान में कलापूर्ण स्मारक खड़ा करेंगे। दिन में इस स्मारक को देखने का निर्णय करके हम वहाँ से आगे बढ़े। लंदन की भाँति यहाँ भी दुकानें शाम को बन्द हो जाती हैं, परन्तु ग्यारह बजे रात तक इस स्ट्रीट पर सैलानियों की चहलकदमी जारी रहती है।

एडिनबरा के एक पब में जा कर हमने वहाँ की भी जिन्दगी देखी। हमारे एक साथी जब स्कॉच ह्विस्की में सोडा वाटर डालने लगे, तो एक अधेड़ स्कॉच ने परिहास के स्वर में कहा—"कहीं स्कॉटलैंड में भी सोडा वाटर के साथ ह्विस्की पी जाती है।" जब उस मधुशाला में एक ओर तीन-चार युवतियों

को पेग पर पेग स्काच ह्विस्की चढ़ाते देखा, तो मैं समझ गया, कि राबर्ट बर्न्स क्यों मधुशालाओं के प्रेमी थे। यहाँ रूढ़ियों को त्याग कर समानता के स्तर पर प्रेम-विह्वल वातावरण में जो बातें होती हैं, उससे कवि को निस्सन्देह बड़ी प्रेरणा मिलती होगी। बर्न्स की कुछ श्रेष्ठ कविताएँ मधुशालाओं के सम्बन्ध में हैं।

कई शरबती आँखों ने इस मधुशाला के वातावरण को रंगीन और शोख बना दिया था। ग्यारह बजते ही मधुशाला बन्द हो गई और मधु-प्रेमियों को अनिच्छा-पूर्वक बाहर जाना पड़ा।

होटल में अपने कमरे में आ कर जब खिड़की से बाहर देखा, तो दूर एक निर्जन स्थान में रोशनी और उस रोशनी में पहाड़ी पर खड़ा कोई गढ़ दिखायी दिया।······सोचने लगा क्या वही गढ़ मेरी का क्रीड़ास्थल तो नहीं है! किन्तु आधी रात को इस उलझन में फँसने के बजाय डायरी लिखने के बाद मैं सो गया। नींद की खामोश दुनिया में बड़ी विश्रान्ति मिलती है! बड़ी शान्ति!

१२ मई

रंगीन कल्पनाओं के प्रदेश स्कॉटलैंड में

(१) मेरी की प्रेमलीला का स्थल
(२) पाइप बैंड प्रतियोगिता
(३) "पवित्र स्काटलैंड को अंग्रेजी प्रभुत्व से मुक्त करना है"

कार्यक्रम के अनुसार एक दिन से अधिक एडिनबरा में रुकना सम्भव न था। कुमारी शॉ से जब इस सम्बन्ध में बातें हुईं, तो बड़े मनोरंजक ढंग से उन्होंने कहा—"देख लिया न आपने लंदन का पक्षपात! एडिनबरा का अपना पुराना गौरवशाली इतिहास है। यहाँ महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक संस्थाएँ हैं, अनेक दर्शनीय स्थल हैं, और भला इन्हें एक दिन में कैसे देखा जा सकता है। कम से कम स्कॉटलैंड की राजधानी के लिए कार्यक्रम में दो हो रोज दे दिये गये होते।" लंदन के सूचना-कार्यालय ने इस मामले में भूल अवश्य की थी। किन्तु कुमारी शॉ के प्रयास से एक रोज में हम यहाँ अधिक से अधिक स्थलों को देख सके।

सबसे पहले हमने पुराने एडिनबरा में उस ऐतिहासिक किले को देखा, जहाँ एक समय अंग्रेज़ों और इस देश के निवासियों में घोर संग्राम हो चुके हैं। यह किला वास्तव में एडिनबरा के राष्ट्रीय संघर्ष के इतिहास का प्रतीक है। पहाड़ी पर निर्मित इस किले का बाहरी दृश्य भी बहुत प्रेरक है। गढ़ के हेड वार्डर ने हमें घूम-घूम कर महत्त्वपूर्ण स्थानों को दिखाया।

सेंट मारग्रेट चैपल को छोड़ कर एडिनबरा किले की सभी इमारतें १३१४ में नष्ट कर दी गईं थीं, ताकि यदि आक्रमणकारी अंग्रेज़ इसे अपने अधिकार में कर लें, तो भी वे इससे कोई फायदा न उठा सकें। इस किले में एक कुआँ है, जिसे 'फोर वेल' कहते हैं। जब अंग्रेज़ इस किले को घेर लेते थे, तो इसी के पानी से यहाँ का काम चलता था। यह कुआँ ११० फुट गहरा

है और समुद्र की सतह से ऊँचा होने पर भी इसमें ३० फुट पानी रहता है।

इस पुरातन किले में राष्ट्रीय युद्ध-स्मारक अथवा 'शहीद-स्मारक' भी है। साम्राज्य की रक्षा में खेत रहे सैनिकों की स्मृति में यह स्मारक खड़ा है। भिन्न-भिन्न लड़ाइयों में काम आये सैनिकों की पूरी सूची यहाँ पुस्तकों के रूप में रखी गई है। स्काटलैंड के हर फौजी दस्ते का स्मृति-चिह्न यहाँ सुरक्षित है। विख्यात योद्धाओं द्वारा प्रयुक्त हथियारों को यहाँ प्रदर्शित किया गया है। सैनिकों के अतिरिक्त प्रथम महायुद्ध के समय जिन जानवरों ने सैनिकों की सहायता की थी, उनके चित्र भी यहाँ देखने को मिले।

इस स्मारक को देख कर पुनः यह भावना अवश्य पैदा हुई, कि एक यह देश है, जहाँ साम्राज्यवादी युद्ध में काम आये सैनिकों का स्मारक खड़ा किया गया है और एक हम हैं, जो स्वाधीनता-संग्राम के शहीदों की स्मृति में आज तक कोई भव्य स्मारक खड़ा न कर सके।

हमने स्काटिश पार्लमेंट की वह ऐतिहासिक इमारत भी देखी, जिसमें २० अगस्त १४३७ को द्वितीय जेम्स की प्रथम पार्लमेंट की बैठक हुई थी। यहीं पर बाद राजा पार्टियाँ दिया करते थे। प्रथम चार्ल्स ने १६३३ में स्काटलैंड में अपने प्रथम आगमन के उपलक्ष्य में यहीं भोज दिया था। उद्धत क्रामवेल ने इसी हाल में १६४८ में दावत खायी थी। अब यहाँ राजाओं और पुराने वीरों के अस्त्र-शस्त्र रखे हैं। हमने उस कक्षा को भी देखा, जहाँ स्काटलैंड के अंतिम राजा का राजमुकुट रखा है।

एडिनबरा का किला देखने के बाद हमने इस पुरातन भाग के एक दूसरे महत्त्वपूर्ण स्थान 'होली रुड हाउस' के महल और मठ को देखा। मठ का अब केवल ध्वंसावशेष ही रह गया है। इस गिरजाघर को भी १५४४ और १५४७ में ईसा के भक्त अंग्रेजों ने नष्ट कर दिया था। महल अब भी खड़ा है और एडिनबरा जाने पर ब्रिटिश राजा इसी राज-सदन में ठहरते हैं।

पथ-प्रदर्शक ने महल के संबंध में एक लम्बा भाषण देना शुरू किया। हम महल के विभिन्न भागों को देखने के लिए आतुर थे, पर वह धुँआधार भाषण दिये जा रहा था। इन पथ-प्रदर्शकों की कौम भी निराली होती है। अतिशयोक्ति के क्षेत्र में ये अच्छे-अच्छे कवियों को भी मात देते हैं। सत्यासत्य की चिंता किये बिना ये अपनी कथा को इतना दिलचस्प बना देते हैं, कि दर्शक मुग्ध हो कर सब चीजें देखने लग जाय। यद्यपि हमारा पथ-प्रदर्शक ऐसा नहीं था, परन्तु भाषण देने में वह भी पटु था।

इस महल के सबसे बड़े कक्ष—पिक्चर गैलरी में ११० राजाओं के चित्र प्रदर्शित हैं। फ्लैंडर्स के शिल्पी जेम्स-द-विट ने १६८४ से १६८६ के बीच इन चित्रों को तैयार किया था, जिनमें कुछ काल्पनिक और कुछ सच्चे हैं। इस हाल में अब विशेष समारोहों पर मधुपान एवं नृत्य का आयोजन होता है।

वास्तव में इस महल की प्रसिद्धि अब मेरी की प्रेमलीलाओं के कारण शेष है। सदन के उन भागों को पथ-प्रदर्शक ने बड़ी दिलचस्पी से दिखाया, जहाँ मेरी का शयन-कक्ष, शृङ्गार-कक्ष एवं विश्राम-कक्ष आदि हैं। मेरी के पति लार्ड डार्नले के शयन-कक्ष से एक पतला रास्ता मेरी के शयन-कक्ष तक गया है, परन्तु उसे अब बन्द कर दिया गया है। कहा जाता है कि षड्यंत्रकारियों ने इसी मार्ग से घुस कर रानी मेरी के निजी सचिव रीजियो को मार डाला था। किंवदन्ती यह भी है कि मेरी और रीजियो में मधुर सम्बन्ध था। मेरी के शयन-कक्ष में जो पलंग और बिस्तर रखा है, उसके संबंध में यद्यपि हमारे पथ-प्रदर्शक ने यही बताया, कि इसी पलंग पर स्कॉटलैंड की रोमांटिक रानी मेरी सोती थी, किन्तु उसे शायद यह पता नहीं, कि क्रामवेल के सैनिकों ने इस महल में घुस कर यहाँ की सभी चीजें या तो लूट ली थीं या नष्ट कर दी थीं। मेरी के शयन-कक्ष में कुछ चित्रांकित परदे और रंगीन खिड़कियाँ हमें बहुत पसन्द आयीं। इस महल में कई गुप्त मार्ग हैं, जिनका संबंध मेरी की रूमानी जिंदगी से था। पथ-प्रदर्शक जिस समय मेरी और रीजियो के बारे में दिलचस्प बातें बता रहा था, उस समय वह एक स्कॉच की भाँति हर्षोल्लास की भावना प्रकट कर अपने रूमानी स्वभाव को भी अभिव्यक्त कर रहा था।

मठ के ध्वंसावशेष के पास ही पहाड़ी से नीचे गुल्मों और घास से आवृत एक अजीब पुरानी इमारत देखने को मिली। कहते हैं यहीं रानी अपनी खूबसूरती बढ़ाने के लिए ह्वाइट वाइन (एक प्रकार की शराब) में स्नान करती थी। इस क्षेत्र में हम कुछ देर तक कार में बैठ कर घूमते रहे। पहाड़ियों के अंचल में बसा हुआ यह भाग सचमुच बड़ा ही आकर्षक है। प्रिंसेज स्ट्रीट तथा इस भाग के बीच बागों की लम्बी कतारें सैलानियों के लिए क्रीड़ा का एक अच्छा क्षेत्र हैं। अभी पुराने एडिनबरा में और भी बहुत कुछ देखना था किन्तु लंच का समय हो गया था, इसलिए हम सीधे होटल वापस आ गये।

कुमारी शॉ ने 'पाइप बैंड प्रतियोगिता' दिखाने की व्यवस्था करके इस यात्रा को और भी रोचक बना दिया। पाइप और पाइपर (मशकबीन और उसे बजाने वाले) स्कॉटलैंड के सांस्कृतिक जीवन की उस परम्परा को अभिव्यक्त

करते हैं, जिस पर आज भी यहाँ के लोग मुग्ध हैं। पाइप बैंड स्कॉटलैंड का राष्ट्रीय बाजा है।

आज यहाँ मशकबीन की यूरोपीय प्रतियोगिता थी, जिसमें स्कॉटलैंड के विभिन्न भागों के पाँच सौ पाइपर भाग ले रहे थे। इन प्रतियोगियों की रंगीन चारखाने की पोशाकें, सिर पर नैपालियों जैसी छोटी टोपी तथा उससे लटकती झालर और लहराते हुए दुपट्टे भी कम आकर्षक न थे। वातावरण मशकबीन के मधुर स्वर से परिपूरित था। बारह से अठारह वर्ष तक की लड़कियों का भी एक दल प्रतियोगिता में भाग ले रहा था। मशकबीन बजाते हुए जब लड़कियों की टोली ने मार्च शुरू किया, तो तालियों की गड़गड़ाहट से आकाश गूँज उठा। प्राकृतिक सौंदर्य ने विषम परिस्थिति में भी इस देश के रहनेवालों को खुश रहने की कला सिखा दी है। अचानक जब छः-सात लड़कियाँ मशकबीन की स्वरलहरी में खोयी-सी नाचने लगीं तो सबकी आँखें उधर ही गड़ गईं। प्रतियोगिता के प्रबन्धकों ने हमें चाय पिलायी और उन्हें धन्यवाद दे कर हम वहाँ से सीधे ओवरसीज़ लीग की स्थानीय शाखा में गये, जहाँ चाय पर आमंत्रित किया गया था। यहाँ भारतीय सिविल सर्विस के अवकाशप्राप्त पुराने अधिकारी मिले। यहाँ भी कश्मीर-विवाद के सम्बन्ध में बातें हुईं। उत्तरप्रदेश के एक भूतपूर्व कार्यवाहक गवर्नर ने अपने जमींदार मित्रों के सम्बन्ध में पूछताछ करते हुए कहा, कि जमींदारी-विनाश से उन्हें कष्ट है और इसी सिलसिले में उन्होंने कुँवर सर जगदीश को याद किया। मैंने जब कहा "पुराने साथियों की याद यहाँ भी आपको सता रही है", तो वे मुझे जमींदारी-प्रथा की उपयोगिता समझाने लगे। जिस सामन्ती प्रथा ने करोड़ों किसानों के जीवन को निष्प्राण बना रखा था, उसकी प्रशस्ति सुन कर मुझे उनकी समझ पर तरस आया। दुनिया छलाँग मार कर आगे बढ़ रही है, किन्तु ओवरसीज़ लीग के सदस्य अभी पुरानी व्यवस्था से चिपके रहना चाहते हैं।

ओवरसीज़ लीग के भवन से बाहर आते ही ताजी हवा के झोंकों से नव-स्फूर्ति प्राप्त हुई। प्रिंसेज स्ट्रीट पर टहलते हुए कुछ देर हमने यहाँ की एक मीठी झलक प्राप्त की। इसी स्ट्रीट पर एडिनबरा की मुख्य दुकानें, होटल और जलपानगृह हैं। स्कॉट का स्मारक मैंने अच्छी तरह देखा। सर जान स्टील द्वारा तैयार की गई सर वाल्टर स्कॉट की आकर्षक प्रतिमा और उसके साथ दो सौ फुट ऊँचा टावर व स्काट के पात्रों की मूर्तियाँ निस्सन्देह आकर्षक

हैं। यहाँ से मैं बाहर निकल कर ज्यों ही प्रिंसेज स्ट्रीट से लगे बाग में जाने के लिए आगे बढ़ा, तो श्री सेम्पुल्स और आचार्य भी वहीं मिल गये। उनके साथ और फिर कुछ देर अकेले पार्क में मैं घूमता रहा। प्रिंसेज स्ट्रीट और पुराने किले के बीच झीलों को पाट कर इस पार्क को तैयार किया गया है। पहाड़ियों के ढाल के नीचे पतले रास्तों से रंग-बिरंगे फूलों की शोभा देखता हुआ मैं एक ऐसे भाग में पहुँच गया, जहाँ मैंने मखमली घास के बिछौने पर वृक्षों के नीचे पहाड़ियों की आड़ में अल्हड़ जवानी के नशे में कुछ युवक-युवतियों के निर्बन्ध प्रेम-व्यापार की भूमिका भी देख ली। पर्वतीय पक्षियों की भाँति पर्वतीयों का स्वच्छन्द हास-विलास! पार्क के प्रेम-विह्वल वातावरण में रंगीनी इसलिए आ गई थी, कि आज आसमान में सूरज चमक रहा था और तभी नीचे इस शीत प्रदेश के जीवन में भी चमक आ गई थी।

रायल स्काटिश एकेडमी की १२५वीं कला प्रदर्शनी भी हमने देखी। यह स्काटलैंड के साहित्यकारों एवं कलाकारों की एक बड़ी संस्था है। प्रतिवर्ष इसके तत्त्वावधान में कला-प्रदर्शनी होती है। मूर्तिकला, चित्रकला एवं स्थापत्यकला के तीन विभागों में कई अच्छी कलाकृतियाँ प्रदर्शित थीं। यूरोप के विभिन्न देशों में कला के क्षेत्र में जो नयी शैलियाँ प्रचलित हैं, उन्हें समझने का अवसर इस भाग के लोगों को प्रदर्शनी के द्वारा प्राप्त होता है।

कला-प्रदर्शनी से बाहर आते ही एक जगह मैंने देखा—कुछ लोग जमा हैं और एक वृद्धा भाषण कर रही है। हमें देखते ही अपेक्षाकृत अधिक उच्च स्वर में वह बोलने लगी—"वे सम्भवतः भारतीय हैं, जो इधर आ रहे हैं। इन्होंने भी अंग्रेज़ों के जुल्म सहे हैं, जैसे कि हम सहते आ रहे हैं। किंतु हमें अपने पवित्र स्काटलैंड को अंग्रेज़ी प्रभुत्व से मुक्त करना है।" उस वृद्धा ने अपने भाषण में यह भी कहा—"इंगलैंड की स्वार्थपरता के कारण स्काटलैंड की आर्थिक-स्थिति चिंतनीय है। हममें फूट है और इसका लाभ अंग्रेज़ उठा रहे हैं, परंतु हमें अपनी आर्थिक एवं राजनीतिक स्वाधीनता के लिए संघर्ष करते रहना है। स्काटलैंड के जिन नेताओं ने १७०७ तक स्वाधीनता कायम रखी, उनके प्रति मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ।"

पूछताछ के फलस्वरूप मुझे ज्ञात हुआ, कि नेशनल कांग्रेस आफ स्काटलैंड के तत्त्वावधान में इस प्रकार की सभाओं की आयोजना हुआ करती है। इस संगठन की ओर से स्काटलैंड के राष्ट्रीय संघर्ष के सम्बन्ध में साहित्य भी प्रकाशित होता है। किंतु जनहित के लिए निश्चित नीति अपना कर आन्दोलन

को जनवादी स्वरूप न देने का यह परिणाम है, कि इस संगठन के कार्य को अभी तक कुछ लोग प्रदर्शन ही समझते हैं।

नये और पुराने एडिनबरा के कुछ और महत्वपूर्ण भागों को देखने की लालसा इतनी प्रबल थी, कि पुनः हम एक बार कार से घूमने निकल पड़े। नेशनल लाइब्रेरी, विश्वविद्यालय, जॉनसन का घर आदि कई सांस्कृतिक स्थानों की झलक हमने प्राप्त की। स्कॉट और बर्न्स की स्मृतियों से जुड़े मकानों पर तख्तियाँ लगी हुई हैं, जिनको देख कर यह समझने में कठिनाई नहीं होती, कि किसी न किसी रूप में इन स्थानों से इन सांस्कृतिक प्रतिनिधियों का सम्बन्ध रहा है। राबर्ट लुइस स्टैवेंसन का स्मारक भी देखा, जहाँ उनकी काँसे की भावुक मूर्ति बहुत ही लुभावनी है। केनन गेट, पेरिश चर्च के प्रांगण में 'वेल्थ और नेशन' नामक अर्थशास्त्र की पुस्तक के लेखक और प्रसिद्ध पूँजीवादी अर्थशास्त्री एडम स्मिथ की कब्र को देखने के बाद हम अंत में मेडिकल कालेज देखने गये, किंतु शल्य-चिकित्सा-प्रदर्शनी न देख पाये। एडिनबरा का मेडिकल कालेज विश्व में सुविख्यात है। यहाँ कुछ भारतीय विद्यार्थी हमें देख पड़े।

एडिनबरा से 'स्काट्समैन' नामक टोरी विचारों का सुप्रसिद्ध दैनिक पत्र प्रकाशित होता है, जिसकी ग्राहक-संख्या लगभग ८५ हजार है। यद्यपि अखंड मानवता में विश्वास रखनेवाला कोई भी व्यक्ति इस पत्र की नीति से सहमत नहीं हो सकता, किंतु सम्पादन और उत्पादन की दृष्टि से यह 'लंदन टाइम्स' का समकक्ष है।

इस पत्र की प्रतिष्ठा भी काफी है। यहाँ से 'एडिनबरा इवनिंग न्यूज़' और 'इवनिंग डिस्पैच' नामक दो सांध्य-पत्र भी प्रकाशित होते हैं।

कल सवेरे ही यहाँ से स्काटलैंड के और भागों को देखने के लिए हम रवाना हो जायँगे। मगर यह खेद बना रहेगा, कि इस देश को राजधानी के लोगों से मिल कर उन्हें समझने का अवसर नहीं प्राप्त हो सका।

———

१३ मई

(१) हाईलैंड में प्रकृति के लुभावने दृश्य
(२) जल-विद्युत्-केन्द्र और सेमन मछली
(३) पर्थ से डंडी

जिस भू-भाग की झीलों, बर्फीली पहाड़ियों और बलूत तथा दूसरे प्रकार के वृक्षों ने अंग्रेजी साहित्य के कई कवियों और कथाकारों को सर्जनात्मक प्रेरणा प्रदान की और कर रहे हैं, उसी हाइलैंड की ओर कार द्वारा ठीक १० बजे हम एडिनबरा से कुमारी शॉ के साथ रवाना हुए।

हम आज बहुत खुश थे, क्योंकि स्काटलैंड के उस भाग की ओर जा रहे थे, जहाँ युगों के बाद भी प्रकृति अभी नहीं बदली है। एडिनबरा के पास ही क्वींस घाट है, जहाँ फोर्थ नदी को पार करने के लिए हमें कुछ देर रुकना पड़ा। छोटे-छोटे जहाजों से नदी को पार किया जाता है जो आध-आध घंटे पर छूटते हैं। हमारे पहुँचने के कुछ समय पूर्व जहाज छूट चुका था, अतः लगभग पन्द्रह मिनट प्रतीक्षा करनी पड़ी। स्काटलैंड के लोग गरीब दिखायी पड़े। घाट के पास जब एक स्काच से मैंने बातचीत शुरू की, तो उसने बताया कि आर्थिक-विकास की दिशा में स्काटलैंड अभी बहुत पिछड़ा हुआ है। उसने कहा—हाईलैंड के क्षेत्र में बसने वाले लोगों की स्थिति इस भाग के लोगों से अधिक बुरी है। इस नागरिक से बातचीत हो ही रही थी, कि जहाज इस किनारे आ गया और हम कार के साथ उस पर सवार हो गये। पन्द्रह-बीस मिनट में हमने फोर्थ नदी पार कर ली। अब हम स्काटलैंड के ग्रामीण क्षेत्रों से हो कर गुजर रहे थे। शुरू में कुछ खेत देख पड़े। न्यू कॉसल से जब ट्रेन द्वारा पूर्वी किनारे से होते हुए हम एडिनबरा रवाना हुए थे, तो उस दिन (११ मई) उस क्षेत्र में बड़े-बड़े खेत दिखायी दिये थे, किन्तु इधर छोटे-छोटे खेत देख पड़े। मगर इस भाग में भी खेतों की जुताई ट्रेक्टरों से होती है। और, ब्रिटेन जैसे देश में यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि मशीनों से खेती करने की दिशा में यह देश काफी आगे बढ़ा हुआ है।

स्काटलैंड खेती के मामले में एक प्रकार से तीन भागों में बँटा हुआ है :—(१) कृषियोग्य भूखंड, (२) डेयरी-क्षेत्र और (३) ऊन उत्पादक एवं केवल मवेशियों द्वारा कृषियोग्य प्रदेश। ज्यों ज्यों हमारी कार बढ़ती जा रही थी, पहाड़ियों की अनवरत शृङ्खलाएँ और उनके अंचल में वनप्रदेश दिखाई पड़ रहे थे। इसी कारण स्कॉटलैंड की एक करोड़ नब्बे लाख एकड़ जमीन में से केवल ४'५ लाख एकड़ ही जमीन खेती-योग्य है। १ करोड़ १० लाख एकड़ जमीन में लम्बे-लम्बे चरागाह फैले हुए हैं। इस प्रदेश की मुख्य उपज जई है और नौ लाख तीस हजार एकड़ जमीन में यहाँ केवल यही फसल बोयी जाती है।

जलवायु और परिस्थिति लोगों को कितना अध्यवसायी बना देती है, इसका उदाहरण इस भाग में हमने व्यापक रूप से पाया। समतल धरातल से ऊपर उठते-उठते जहाँ तक खेती-योग्य भूमि मिल सकी है, उसे ट्रैक्टरों से तोड़ कर उसमें फसल बो दी गई है। लम्बे-लम्बे चरागाहों को देख कर ऐसा प्रतीत होता, जैसे इस क्षेत्र की पृथिवी हरित-सौंदर्य को अपने आँचल में समेटे मुग्धा की भाँति इठला रही है। भेड़ों के अनगिनत झुंड देख पड़े। कुछ भेड़ों की देह पर लम्बा-लम्बा ऊन लहरा रहा था और इन्हीं भेड़ों के कारण यह प्रदेश ऊन-उद्योग का एक केन्द्र बन गया है।

धीरे-धीरे दृश्य बदलते जा रहे थे और हमारी कार कभी पचास व कभी साठ-सत्तर मील की रफ्तार से पिटलौखरी के जल-विद्युत्-केन्द्र की ओर जा रही थी। अब वह भाग आ गया, जहाँ सौ वर्ष पहले तक सभ्यता के चिह्न शायद ही देखने को मिलते और इसी कारण इंगलैंडवाले इसे पुराने युग का 'बर्बर प्रदेश' कहते हैं। किन्तु अब इस भाग में कुछ अच्छी सड़कें तैयार हो गई हैं और जगह-जगह अच्छे होटल भी खुल गये हैं। औद्योगिक सभ्यता की चमक इस भूखंड में धीरे-धीरे व्याप्त हो रही है, मगर प्रकृति के बीहड़ रूप का दर्शन आज भी यहाँ होता है। पहाड़ी की चोटी से समतल भूमि तक जंगल और गुल्मों से ढकी पृथ्वी एवं उनके बीच पतली-पतली सड़कें, जो कहीं-कहीं सर्पिणी-सी बल खाती हुई झरनों के किनारे से भी गुजरती हैं। कितना अनूठा और आकर्षक दृश्य है यह! इसकी तुलना किससे करूँ, नैसर्गिक सौंदर्य तो अनुपम है। पिकनिक के लिए इधर-उधर जानेवाली प्रमोदी युवक-युवतियों की टोलियाँ भी दिखायी पड़ीं। उनके रंगीन कपड़ों से उनकी रंगीन भावनाएँ झलक रही थीं। कहीं मछली के शिकारियों की तन्मयता देख पड़ी,

तो कहीं दूर गोल्फ के खिलाड़ियों की मस्ती। गोल्फ स्कॉटलैंड का राष्ट्रीय खेल है और चौदहवीं सदी से स्काटलैंडवाले इस खेल को अपनाये हुए हैं। स्केटिंग तो इस पर्वतीय प्रदेश में मनोरंजन का साधन है ही।

कार में मेरे साथ बेनीपुरीजी और आचार्य थे। हमारी कार की महिला ड्राइवर बड़े रस के साथ अपने देश के प्राकृतिक सौंदर्य की प्रशंसा करती जा रही थी और रह-रह कर जब किसी वाक्य के बाद अथवा किसी दृश्य की प्रशंसा करते-करते वह "अहा हा!" कह उठती, तो बेनीपुरी जी इस शब्द के उच्चारण पर लहालोट हो जाते। महिला-ड्राइवर ने कहा कि उसका पति पाकिस्तान में है और वह यहाँ अपनी आजीविका अपने परिश्रम से कमा रही है। उसने यह भी बताया, कि अपने माँ-बाप का पेट पालने की जिम्मेदारी भी उसी पर है। प्रकृति के इस लुभावने रूप को देख कर उसके मन में वियोग-व्यथा भी पैदा हुई, किन्तु उस कर्मठ महिला के मधुर स्वभाव ने उसे प्रकट नहीं होने दिया। उसने हमसे पूछा—सुना है, आपका देश भी बड़ा खूबसूरत है। मैंने कहा—"हर देश को प्रकृति ने अपना सौंदर्य प्रदान किया है, हमारे देश में भी कश्मीर-सा नन्दन-कानन है, जहाँ केशर के खेतों, गुलाब की क्यारियों और सेब के बागों में अनुपम सौंदर्य बिखरा पड़ा है। जहाँ धवल हिम-राशि चाँदी की चमक को भी मात करती है और जहाँ कश्मीर ही क्या, हिमालय से कन्याकुमारी तक अनेक क्षेत्रों से अनुपम नैसर्गिक-सौंदर्य सदैव खिलखिलाता रहता है।" उसने बड़े हसरत-भरे स्वर में कहा—काश, मैं भी उस सौंदर्य को देख पाती। मध्यम और निम्न मध्यवर्ग के न जाने कितने लोग विदेश-यात्रा से वंचित रह जाते हैं और उनकी लालसाएँ कभी पूरी नहीं हो पातीं। किन्तु वह युग भी आयेगा, जब अभाव के कारण किसी की हसरतों का खून न होगा।

पहाड़ियों और जंगलों के एकान्त-संगीत ने भी इतना मुग्ध कर दिया था, कि मैं सुधबुध खो बैठा। जब कुमारी शॉ ने हमसे होटल चलने के लिए कहा, तब मुझे ज्ञात हुआ, कि फिशर होटल के सामने अब हमारी कार खड़ी हो गई है। इस होटल का स्काटिश वातावरण मुझे बहुत प्रिय लगा। यहीं हमने खाना खाया। हाईलैंड के होटलों में खाने-पीने का खर्च अधिक है। जिस प्रकार अपने देश के पर्वतीय स्थानों में गर्मी के मौसम में ही भीड़भाड़ होती है, वही स्थिति यहाँ भी है और इसीलिए होटलों का खर्च अधिक है। भोजन के बाद विश्राम-कक्ष में कॉफी पीते समय स्कॉटलैंड के जल-विद्युत्

कार्यालय के प्रतिनिधि ने हमें अपनी योजना के सम्बन्ध में कुछ खास-खास बातें बतायीं।

उत्तरी स्काटलैंड में बिजली पहुँचाने के लिए १९४३ में जल-विद्युत् बोर्ड की स्थापना हुई। इस भाग में नदियाँ बड़े वेग से बहती हैं। इनके जल से विद्युत्-शक्ति पैदा करने की सुविधा यहाँ प्राप्त है। किन्तु इस भाग के लोगों ने शुरू-शुरू में इस योजना का तीव्र विरोध किया और वह भी इसीलिए—(१) इन नदियों पर बाँध बनाने से प्राकृतिक शोभा नष्ट होगी, (२) सागर से अन्य मछलियों के साथ खूबसूरत सेमन मछली का आना रुक जायगा और (३) जल-विद्युत् योजना के कार्यान्वित हो जाने से सस्ती बिजली मिलने के कारण इस भाग के कोयला-उद्योग को धक्का पहुँचेगा। शिक्षा की कमी के कारण विरोध ने इतना उग्र रूप ग्रहण किया, कि सरकार को एक जाँच समिति बैठानी पड़ी और जब इस कमेटी ने यह रिपोर्ट दी, कि जल-विद्युत् योजना को अवश्य कार्यान्वित किया जाय, (क्योंकि इससे जनता को लाभ पहुँचेगा; किन्तु सेमन मछली की रक्षा के उपाय पर भी ध्यान दिया जाय) तब कहीं लोगों ने इस योजना में सहयोग किया।

उक्त अधिकारी ने बताया, कि पिटलौखरी जल-विद्युत् योजना के पूर्व लोखस्लाय जलविद्युत् योजना पर काम शुरू हुआ था और यही दो जल-विद्युत् योजनाएँ उत्तरी स्काटलैंड के लिए तैयार की गई हैं। इनके अन्तर्गत ३० वर्गमील में १०२ बाँध तैयार किये जायँगे। इससे इस पिछड़े हुए भूखंड के गाँव-गाँव में बिजली पहुँच जायगी तथा खाना पकाने से ले कर कारखाने तक का सारा काम इससे सम्भव हो सकेगा। स्काटलैंडवासियों की भावनाओं को ध्यान में रख कर योजना-सम्बन्धी कार्य में इस प्रदेश के ही लोग नियुक्त किये जाते हैं और यथासम्भव इस बात की भी कोशिश की जाती है, कि यहीं का सामान प्रयुक्त किया जाय। १९४८ से ही इस योजना पर अमल होना शुरू हो गया है। पाँच बाँध तैयार हो चुके हैं और इन जल-विद्युत् केंद्रों से एडिनबरा तक बिजली सप्लाई होती है। ३० अन्य बाँधों पर काम हो रहा है। भारत के संबंध में जब जल-विद्युत् योजनाओं की चर्चा चली, तो हम कुछ लज्जित हुए, क्योंकि बड़ी योजनाएँ बना कर भी अभी उनसे हमारे देश की जनता को कोई खास लाभ नहीं पहुँचा है, जब कि छोटी-छोटी योजनाओं पर अमल करके यहाँ की जनता को लाभ पहुँचाया जा रहा है। परिस्थिति के अनुकूल आचरण करना अभी हमने नहीं सीखा। जब हमसे कहा गया—

आपका देश बड़ा है, इसलिए आप बड़ी योजनाओं में विश्वास करते हैं और स्काटलैंड छोटा है इसलिए यहाँ छोटी योजनाओं में विश्वास किया जाता है, तो यह सुन कर मैं और भी लज्जा से गड़ गया।

हमने पिटलौखरी में तीन बाँध देखे। टमेलगैरी जल-विद्युत् योजना से इस इलाके के लोगों को धीरे-धीरे विकास के पथ पर अग्रसर होने का मौका मिलेगा। सेमन मछली की रक्षा के लिए जो वचन दिया गया था, उसका पूर्णतया पालन हो रहा है। इस मछली का रंग सचमुच बड़ा आकर्षक है। ऊपर बादामी, नीचे कपिल तथा उभय पार्श्व रुपहले।

जिस समय टमेल नदी के बाँध को हम देख रहे थे, वहाँ और भी पर्यटक, तथा इस भाग के कुछ लोग उपस्थित थे। स्काटलैंड वाले बड़े उत्साह से सेमन मछली को देखते ही खुशी से उछल पड़ते और युवतियों की चंचलता बढ़ जाती। इस स्वादिष्ट मछली के प्रति इस पर्वतीय प्रदेश के लोगों का यह आकर्षण आश्चर्यजनक अवश्य है। जल-विद्युत्-योजना को देखने के बाद अब हमारी कार पर्थ की ओर रवाना हुई, जहाँ से होते हुए डंडी जाना था। खूबसूरत पिटलौखरी का साथ छूट रहा था। टमेल नदी के उत्तरी तट पर बसे इस कस्बे का नैसर्गिक सौंदर्य बहुत लुभावना है। यहाँ से एक मील दूर मौलिन नामक एक छोटा किन्तु आकर्षक गाँव है। मानो चित्रकारों को प्रेरणा देने के लिए ही यह गाँव बसाया गया हो। इस गाँव से एक मील पूर्व किनियार्ड कॉटेज में स्काटलैंड के सुप्रसिद्ध कथाकार एवं निबन्ध-लेखक राबर्ट लुइस स्टैवेंसन ने कुछ दिन निवास किया था और यहीं उसने अपनी कुछ कृतियाँ लिखी थीं।

पिटलौखरी से जब हम आगे बढ़े, तो कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता, जैसे पहाड़ियों से कोई अव्यक्त गायक प्रकृति-नटी के रंगीन जीवन का मादक गीत सुना रहा हो। जंगलों के बीच से हमारी कार गन्तव्य स्थान की ओर दौड़ रही थी और कहीं-कहीं गुल्मों में सैलानियों की जोड़ियाँ भी देख पड़ती थीं। पर्थ के स्टेशन के पास पहुँच कर हम लोग कार से उतरे और कुछ देर वहाँ टहलते रहे। इस नगर को देखना कार्यक्रम में शामिल नहीं था। किन्तु डंडी जाते हुए स्काटलैंड की इस पुरानी राजधानी (अब नयी राजधानी एडिनबरा है) की झलक मिल ही गई। अंग्रेजी साहित्य के सुप्रसिद्ध लेखक जॉन रस्किन ने इसी नगर में अपनी शैशवावस्था व्यतीत की थी। रंग के भी यहाँ कई कारखाने हैं।

पर्थ से शाम को हम स्काटलैंड के तीसरे बड़े नगर डंडी पहुँचे। यह नगर टे नदी के मुहाने पर बसा है। पर्थ से आते समय नगर में प्रविष्ट होने के पूर्व नदी के किनारे-किनारे कार से गुजरते समय उस भाग की रंगीन छटा बड़ी ही सुखद प्रतीत हुई।

डंडी के रायल होटल में हमारे ठहरने की व्यवस्था थी। अपने कमरे में सामान रखवा कर हमने चाय पी और घूमने निकल पड़े। पहले हम यहाँ का बन्दरगाह देखने गये। यहीं टे नदी उत्तरी सागर से मिलती है। अतः इसका पाट बहुत चौड़ा है। टे नदी के उस पुल को भी हमने देखा, जो संसार का एक बड़ा पुल समझा जाता है। बंदरगाह देख लेने के बाद हम पुनः नगर में आ गये। आज रविवार होने के कारण सभी दुकानें बन्द थीं। इमारतों से भव्यता नहीं टपकती थी। लन्दन की अपेक्षा यहाँ की दीवारें और भी काली देख पड़ीं। एक स्क्वायर के पास जब हम पहुँचे, तो वहाँ एक ओर एक पादरी धर्मगीत गा रहा था और दूसरी ओर लाल झंडे के नीचे एक बड़ी सभा हो रही थी। पूछने पर ज्ञात हुआ, कि यही यहाँ का सिटी स्क्वायर है। कोई कम्युनिस्ट कार्यकर्ता मजदूर सरकार की परराष्ट्र-नीति की आलोचना करते हुए अपने भाषण से यह बता रहा था, कि आर्थिक-क्षेत्र में ब्रिटेन अमेरिका का गुलाम होता जा रहा है और एटली की राजनीति के फलस्वरूप पुनरुद्धार का काम सुचारु रूप से नहीं हो रहा है। वक्ता ने जब मजदूर सरकार की शस्त्रीकरण-सम्बन्धी नीति की तीव्र आलोचना शुरू की, तो श्रोताओं ने करतलध्वनि से इन विचारों का स्वागत किया। उक्त भाषण के बाद डंडी कम्युनिस्ट पार्टी के सेक्रेटरी मंच पर आये और उन्होंने श्रोताओं से प्रश्न पूछने का आग्रह किया। लोग बड़ी दिलचस्पी से आर्थिक और राजनीतिक विषयों से सम्बन्धित प्रश्न पूछने लगे। अधिकांश प्रश्नों से यही आभास मिला, कि लोग दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति न हो सकने से दुखी और तीसरे महायुद्ध की आशंका से पीड़ित हैं। कुछ श्रोताओं से जब मेरी बातें हुईं, तो उन्होंने यही कहा, कि हम शांति चाहते हैं और युद्ध का बजट तैयार करने वालों से हमें नफरत है। यहीं हमें यह भी ज्ञात हुआ, कि डंडी के मजदूरों में कम्युनिस्ट पार्टी का काफी प्रभाव है और इस सभा की उपस्थिति से भी इसकी पुष्टि हुई।

रात में भोजन के समय एक खेदजनक घटना हुई। श्री रंगास्वामी ने श्री बेनीपुरी की शान के खिलाफ कुछ बातें कहीं और जब अवसर के अनुकूल स्वभाव ग्रहण करने वाली बेनीपुरीजी की मधुर वाणी से भी वह चुप न हुए,

तो कटुता मोल ले कर मैंने ही उन्हें चुप किया। अधिक वेतन पाने एवं कार रखने का अहंकार एक पत्रकार में पा कर मुझे कम आश्चर्य नहीं हुआ। श्रमजीवी पत्रकार कहलाने में जो प्रतिनिधि अपना अपमान समझे, वह भी श्रमजीवी पत्रकारों के प्रतिनिधि-मंडल में शामिल हो कर शायद केवल मनोरंजनार्थ विदेश चला आया—यह राज़ भी आज ही खुला।

खाने के बाद टहलने के लिए पुनः हम बाहर निकले। यहाँ भी अलबर्ट इंस्टीट्यूट के सामने बर्न्स की मूर्ति देख पड़ी। सुनसान सड़कों पर घूमना किसे नहीं अखरता। हम होटल वापस आ गये।

आज नींद भी नहीं आ रही थी। कुछ देर तक डंडी के सम्बन्ध में पुस्तकें पढ़ता रहा। श्रमिकों के इस नगर में आज का रैन-बसेरा भी मुझे बड़ा प्रिय लगा।

१४ मई

(१) डंडी से ग्लासगो

(२) लोमंड झील का रूमानी वातावरण

आज मौसम बहुत अच्छा था। खिड़की से बाहर देखा, तो धूप खिली हुई थो और मजदूर तेजी से अपने काम पर जा रहे थे। जलपान के बाद हम डंडी में एक जूट का कारखाना देखने गये। हमारे कार्यक्रम में यद्यपि मुख्य रूप से कल-कारखानों एवं औद्योगिक प्रतिष्ठानों को दिखाना ही शामिल है, किन्तु अभी तक बड़े कारखाने एवं इंजीनियरिंग वर्क्स नहीं दिखाये गये। डंडी में जूट, फ्लैक्स, लिनन और इंजीनियरिंग-उद्योग के अतिरिक्त जहाज बनाने के कारखाने भी हैं। किन्तु यहाँ हम केवल एक जूट मिल देख सके। मिल के मैनेजिंग डायरेक्टर ने बड़े चाव के साथ हमें विविध विभागों का काम दिखाया। मिल में स्त्रियाँ भी काम कर रही थीं। इंगलैंड की भाँति स्काटलैंड में भी पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को कम मजदूरी मिलती है।

जूट का कारखाना देखने के बाद हम होटल वापस आ गये। यहाँ ओवरसीज़ लीग की स्थानीय शाखा की ओर से हमें लंच पर आमंत्रित किया गया था, जिसमें यहाँ के कई प्रमुख उद्योगपति एवं अधिकारी उपस्थित थे। डंडी में कम्युनिस्टों का जोर है और सम्भवतः इसीलिए इस प्रीति-भोज में उन्हें कुछ लोग खाते समय गालियाँ भी देते जा रहे थे। मेरे पास बैठे हुए एक महाशय ने भारत के सम्बन्ध में चर्चा शुरू की और उन्हें जानकर बड़ा ताज्जुब हुआ, कि भारत में चार करोड़ से अधिक मुसलमान हैं। पता नहीं किस सूत्र से उन्हें खबर मिली थी, कि भारत में विभाजन के बाद अब कोई मुसलमान नहीं है। उन्हें इस बात पर भी आश्चर्य हुआ, कि भारत के शिक्षा-मंत्री—मुस्लिम जगत के जाने-माने विद्वान मौलाना अबुल कलाम आजाद हैं। प्रारम्भ में इन्होंने कश्मीर पर बात चीत करने का जो सिलसिला शुरू किया था, वह इस सूचना के बाद खत्म हो गया और उन्होंने कहा कि भारत के सम्बन्ध में यहाँ लोगों में बड़ा भ्रम है। मैंने कहा—इसकी जिम्मेदारी यहाँ

के पत्रों पर है, जो ईमानदारी के साथ कश्मीर-विवाद के सम्बन्ध में न तो अपनी राय प्रकट करते हैं और न सच्ची खबरें छापते हैं। एशिया के नव-जागरण की चर्चा आते ही फिर कम्युनिज्म के खिलाफ भाषण होने लगे। यह भी एक मजेदार अनुभव था। एक सज्जन ने जब लंच के बाद लोकतंत्र-वाद पर लेक्चर देना शुरू किया, तो मैंने उनसे कहा—"उपनिवेशवाद और साम्राज्यलिप्सा की भावना खत्म हुए बिना लोकतंत्रवाद की दुहाई देने से एशियाई राष्ट्र पश्चिम के कथन में कैसे विश्वास कर सकते हैं?"

लंच के बाद डंडी से हम कार द्वारा ग्लासगो रवाना हुए। मार्ग में इस क्षेत्र में भी चतुर्दिक् नैसर्गिक छटा बिखरी हुई थी। अचानक आगे की कार रुक गई और कुमारी शॉ ने आ कर हमसे यह प्रस्ताव किया, कि पास ही में स्कॉटलैंड की खूबसूरत और प्रसिद्ध झील लोमंड है, उसे क्यों न देख लिया जाय। मुझे यह प्रस्ताव बहुत पसन्द आया और खुशी की बात यह हुई, कि सबने उस मनोरम झील को देखने का सुझाव स्वीकार कर लिया। पहाड़ियों और जंगलों के अनुपम सौंदर्य को निहारते हुए हम लगभग साढ़े चार बजे झील ने किनारे पहुँच गये। मोटर-बोट ले कर हम लोग झील में बिहार करने लगे। झील के किनारे तरह-तरह की छोटी-बड़ी रंगीन नावें खड़ी थीं। कुछ दूर आगे जाने पर दोनों ओर बर्फीली पहाड़ियाँ, उनके अंचल में वनप्रदेश की हरित शोभा और किनारे-किनारे पुष्पों से ढकी धरती देख कर हम उस रूमानी वातावरण पर रीझ उठे। झुरमुटों में आलिंगन-पाश में बँधे प्रेमी झील में नौका-विहार करनेवालों के मन में रूमानी भावनाओं को पैदा कर रहे थे। पक्षियों के कलरव से आकाश गूँजा हुआ था। पहाड़ की चोटी से पद-तल तक फैले चरागाहों में भेड़ों के साथ खड़े हुए चरवाहे भी बर्न्स की अनुभूति को व्यक्त कर रहे थे। इस झील पर वर्ड्सवर्थ भी फिदा थे। तभी तो 'स्वीट हाईलैंड गर्ल' की मिठास उनकी कविता में भर गई थी। सचमुच इस झील में मोटर बोट से विहार करते समय यही मालूम पड़ा, जैसे प्रकृति की जवानी यहाँ खिल आई है। कहीं-कहीं पानी में टहनियाँ झुकी हुई थीं:—

पानी को छू रही है झुक-झुक के गुल की टहनी,
जैसे हसीन कोई आईना देखता हो।

यहाँ 'इकबाल' की कल्पना सत्य में परिवर्तित हो गई है और इसीलिए उनका 'हो' (पानी को छू रही हो) यहाँ 'है' (पानी को छू रही है) बन गया है।

अगर स्काटलैंड में झीलों का सौंदर्य इस भाग के लोगों को सुलभ न होता, तो यह प्रदेश बड़ा सूना लगता। ब्रिटेन का यह उत्तरा-खंड १०६ झीलों के रूमानी वातावरण में डूबा हुआ है। लोमंड झील २२ मील लम्बी, लगभग ५ मील चौड़ी और इसकी अधिकतम गहराई ६२३ फीट है।

झील के किनारे एक होटल में हमने खाना खाया। हमारे साथ हों तीनों महिला ड्राइवरों ने भी खाना खाया। ये लड़कियाँ विनम्र होने के साथ ही कार्यकुशल भी थीं।

भोजन के बाद पुनः यात्रा शुरू हुई। काफी रात गये हम ग्लासगो पहुँचे। नार्थ ब्रिटिश होटल में ठहरने का प्रबन्ध था। अपने कमरे से बाहर झाँकने पर मुझे पार्क में सर वाल्टर स्कॉट की मूर्ति दिखाई पड़ी। एडिनबरा के जिस होटल में हम ठहरे थे, वहाँ भी मेरे कमरे के ठीक सामने बाहर प्रिंसेज स्ट्रीट के किनारे स्कॉट स्मारक था और यहाँ भी उसी कथाकार की मूर्ति देख कर साहित्यकारों के प्रति यहाँ के लोगों की श्रद्धा से मैं प्रभावित हुआ।

———

१५ मई

(१) राबर्ट ओवेन का घर
(२) 'ग्लासगो का हाइड पार्क'
(३) अविस्मरणीय दृश्य

आज सुबह घर की जो याद आई, तो व्यथा से मन भर गया। टकटकी लगाये मैं कमरे की छत की ओर देख रहा था। सहसा आँखों के आकाश से अश्रु-तारिका टूट पड़ी। बाहर भी पानी बरस रहा था। उस समय कितना सूनापन भर गया था, वातावरण में। किन्तु एक पर्यटक धर्म को याद कर मैं बिस्तरे से उठ पड़ा और बहुत जल्द तैयार हो कर ब्रिटिश द्वीप के दूसरे महानगर ग्लासगो को देखने के लिए होटल से बाहर निकला। ३६,७२५ एकड़ में फैले इस नगर की जन संख्या ११ लाख से कुछ अधिक है। ब्रिटेन में आबादी की दृष्टि से लंदन के बाद यही दूसरे नम्बर का नगर है और औद्योगिक केंद्र होने के नाते भी यह दुनिया भर में प्रसिद्ध है। कल पार्क में मैंने अपने होटल के कमरे से सर वाल्टर स्काट की मूर्ति देखी थी और आज वहाँ जा कर देखता हूँ, कि समूचे पार्क में कई मूर्तियाँ हैं। इन मूर्तियों को देखते हुए मजदूर अपने काम पर जा रहे थे। उनके शरीर पर गंदी और पैबंद लगी हुई बरसातियाँ देख पड़ीं। सुना था, कि यहाँ का म्युनिसिपल प्रशासन बहुत अच्छा है और इस साफ-सुथरे स्क्वायर में टहलते हुए उसका कुछ आभास मुझे मिला भी। इस पार्क में कहीं वाष्प-शक्ति की उपयोगिता बताने वाले जेम्स वाट की मूर्ति है, तो कहीं विश्वविख्यात घुमक्कड़ लेमिंग्सटन की। अपने रूमानी कवि बर्न्स को स्कॉटलैंड का कौन भाग भुला सकता है? उनकी भी मूर्ति यहाँ है। साथ ही ग्लैडस्टन की प्रतिमा भी यहाँ प्रदर्शित है। पार्क के मुख्य द्वार पर प्रसिद्ध सेनापतियों की मूर्तियाँ हैं।

सरकारी कार्यक्रम के अनुसार ग्लासगो से करीब २२ मील दूर क्लाइड नदी के किनारे बसे न्यू लानार्क में एक कॉटन मिल देखने गये, जिसका नाम भी गाँव के नाम पर 'न्यू लानार्क काटन मिल' है। पानी तेजी से गिर रहा था।

जाड़ा भी अधिक था । मिल के जनरल मैनेजर ने हमें बड़े प्रेम के साथ हर भाग को दिखलाया । इस गाँव और मिल का महत्त्व इसी बात में निहित है, कि ब्रिटेन में समाजवादी परम्परा के प्रतिष्ठापक राबर्ट ओवेन ने यहीं प्रथम बार मानवतावादी भावना से एक ऐसी मिल चलाने का ख्वाब देखा था, जिसमें श्रमिकों का भी हिस्सा हो और वे केवल मजदूरी पाने के अधिकारी न हों। अपनी सारी सम्पत्ति बेच कर उन्होंने अपने सपने को मूर्त रूप देने का प्रयास किया । किन्तु उनका समाजवादी प्रयोग असफल रहा । मिल के मैनेजर ने बड़े गर्व के साथ कहा, कि ब्रिटेन के प्रथम श्रमिक नेता राबर्ट ओवेन के इसी प्रयोग को दृष्टि में रख कर मजदूर दल के स्वर्गीय रैमजे मैकडोनल्ड ने कहा था—"हमारा देश मार्क्स का नहीं, ओवेन का है ।" ओवेन के प्रति किसके मन में श्रद्धा न होगी, किन्तु मार्क्स से उनकी तुलना करके मैकडोनल्ड ने अपनी संकुचित मनोवृत्ति का परिचय दिया है । मैकडोनल्ड के सम्बन्ध में यही जानना पर्याप्त है, कि मजदूर दल के सदस्यों को भ्रम में डाल कर परदे के पीछे अपने ही दल के आदर्शों के विरुद्ध उन्होंने टोरियों से समझौता किया तथा अपने राजनीतिक जीवन के शुरू के शान्तिवादी लक्ष्य को भुला कर 'जेनेवा प्रोटोकल' तक का विरोध किया । रूई धुनाई, कताई-बुनाई को देखने के बाद मैनेजर ने हमें राबर्ट ओवेन के हाथ का लिखा हुआ हिसाब-किताब दिखाया । वे जीर्ण पत्र सँजो कर रखे गये हैं । दो सौ वर्ष पुराना ओवेन का मकान भी गर्व के साथ अभी है । यह जान कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि इस घर में इसी मिल के मजदूर रहते हैं । मिल में लगभग ५०० मजदूर काम करते हैं और हम लोगों को इसे दिखाने का उद्देश्य शायद यही रहा होगा, कि ओवेन के इस स्मारक को हम भी देख लें ।

उक्त मिल की ओर से हमें लंच दिया गया था । इस गाँव में साधारण भोजन प्राप्त कर भी बड़ी खुशी हुई । भूख लगी थी इसलिए जो कुछ मिला, वही स्वादिष्ट मालूम हुआ । यहाँ से सीधे हम क्लाइड के किनारे जहाज के कारखाने को देखने गये । भारत के लिए भी यहां कम्पनी जहाज बनाती है जिसका नाम मेसर्स बार्कले कर्ले एंड कम्पनी लिमिटेड है । इस कम्पनी के जनरल मैनेजर ने यह बताया, कि कई देशों के लिए यह कम्पनी जहाज तैयार करती है । उस समय हमें इस बात पर अवश्य खेद हुआ, कि एक समय था, जब हमने नौका-नयन के क्षेत्र में बड़ी प्रसिद्ध प्राप्त की थी और आज हमारी यह स्थिति हो गई है, कि यहाँ से जहाज बनवाते हैं ।

जहाजों के नक्शे तैयार करने से लेकर उन्हें अन्तिम रूप देने तक का कार्य हमने बड़ी दिलचस्पी से देखा। जिस समय हम वहाँ पहुँचे थे—पाँच जहाज तैयार हो रहे थे। काम में संलग्न मजदूर कभी-कभी हमारी ओर भी देख लेते थे।

जहाज बनाने में इस नगर का अपना विशिष्ट स्थान है। क्वीन मेरी और क्वीन एलिजाबेथ नामक जहाज इसी कारखाने में तैयार हुए थे और सुदृढ़ जंगी जहाज 'एच० एम० एस० वेनगार्ड' भी यहीं तैयार हुआ था। जहाज-उद्योग के अतिरिक्त यहाँ लोहे और इस्पात के कारखाने हैं। रासायनिक पदार्थ एवं शराब तैयार करनेवाली कम्पनियाँ भी हैं।

जल-वृष्टि से आज दिन गीला हो गया था और हमारे दो साथी जुकाम से पीड़ित होने के कारण बड़े क्लान्त थे, इसलिए हम यहाँ से सीधे होटल वापस आ गये।

ग्लासगो से कल हम इंगलैंड रवाना हो जायँगे। मैंने सोचा, अब यहाँ की कोई चीज़ न देख पाऊँगा; किन्तु अचानक पानी रुक गया और मैं घूमने निकल पड़ा। ट्रान गेट के पास एक पढ़े-लिखे नागरिक ने बताया, कि इस भाग में बर्न्स, सर वाल्टर स्कॉट, एडम स्मिथ कभी बड़े प्रेम से टहला करते थे। इस वृद्ध ने ग्लासगो की इमारतों की जब प्रशंसा की, तो मुझे कुछ आश्चर्य अवश्य हुआ। पता नहीं क्यों मुझे इस नगर के वातावरण में कुछ मनहूसियत नजर आई। हो सकता है, कि मौसम की खराबी के कारण यह मेरी धारणा बन गई हो। कारखानों के धुएँ और मौसम ने इस नगर की दीवारों पर भी कालिख पोत दी थी। हाँ, यह अवश्य सत्य है, कि 'ग्लासगो कैथिड्रल', जिसकी दीवारें काली पड़ गई हैं, गोथिक शैली का एक अच्छा नमूना है। मुझे चार्ल्स रेनी मैकिनतोष स्कूल आफ आर्ट की इमारत निस्सन्देह अच्छी लगी।

अचानक एक और नागरिक से मेरी भेंट हुई, जो बड़े विनोदी स्वभाव का था। उसने पूछा—"आपने ग्लासगो का हाइडपार्क देख लिया? मेरे 'न' कहने पर उसने बड़ा आश्चर्य प्रकट किया और उसके साथ ही मैं 'ग्लासगो ग्रीन' की ओर चल पड़ा। इसी पार्क में १७६५ में एक रविवार को तीसरे पहर घूमते हुए जेम्स वाट ने वाष्प के व्यावहारिक प्रयोग को चिन्तन के बाद समझ लिया था। यहाँ नशे में डूबे स्त्री-पुरुष भी देख पड़े और मस्ती से झूमती युवतियाँ भीं!

दूर ही से ग्लासगो विश्वविद्यालय की एक झलक मिल गई, जहाँ

पाँच-छः हजार के करीब छात्र शिक्षा पाते हैं, जिनमें लड़कियों की संख्या लगभग १६०० है।

यहाँ 'फिश और चिप शॉप' तथा आइसक्रीम की दुकानें बड़ी लोकप्रिय हैं। इनमें कुछ देर बैठने पर इस भाग के लोगों को समझने की सुविधा प्राप्त हो सकती है। टोकरियाँ हाथ में लटकाए और शॉल लिये स्त्रियाँ कहीं-कहीं देख पड़ीं। कोई हिस्सा बिलकुल मनहूस, तो कहीं मौजियों के झुंड दिखाई पड़े। यहाँ मजदूरों की बस्तियाँ भी बहुत हैं, लेकिन हम उनमें से एक भी न देख पाये। इस नगर में स्काटलैंड के धुर उत्तर और दक्षिण (हाईलैंड तथा लोलैंड) के निवासियों की रहन-सहन का मिश्रित रूप दिखायी पड़ता है। इंगलैंड की अपेक्षा स्काटलैंड के लोगों के चेहरे अधिक लाल हैं, मगर इस भाग की स्त्रियों के सौंदर्य में ज्यादा आकर्षण है। अंग्रेज़ी जीवन की भाँति वहाँ की नारियों का सौंदर्य भी नीरस है।

रात में डायरी लिखते समय कार्यक्रम पर ध्यान गया, तो इससे खुशी हुई, कि अब हम कल यहाँ से शेक्सपियर के गाँव पहुँचेंगे।

११ मई की शाम को ६ बज कर १६ मिनट पर हम एडिनबरा पहुँचे थे। रहस्यमय कथाओं के देश स्काटलैंड में चार दिन व्यतीत करने के बाद कल साढ़े नौ बजे प्रातः ही ग्लासगो से बरमिंघम के लिए ट्रेन पकड़नी है। अच्छी तरह इस पहाड़ी प्रदेश को न देख सकने का दुःख बना रहेगा। इस नगर से ७ दैनिक (४ प्रातःकालीन और ३ सांध्यकालीन) पत्र प्रकाशित होते हैं। इनमें 'ग्लासगो हेराल्ड' यहाँ का प्रसिद्ध पत्र है। इसकी ग्राहक संख्या ६२,२४६ है। यह पत्र भी टोरी पार्टी का समर्थक है, लेकिन अपनी उच्च साहित्यिक अंग्रेजी और शुद्ध सम्पादन के लिए यह पत्र ब्रिटेन भर में विख्यात है।

एक बात का मुझे निश्चित रूप से खेद रहेगा, कि ग्लासगो से बहुत दूर न होते हुए भी राबर्ट बर्न्स के जन्म-स्थान को मैं न देख सका।

अब कल ही स्काटलैंड को छोड़ना है, किन्तु यहाँ की झीलों के कल-कल स्वर में जो संगीत मैंने सुना है, उसे क्या कभी भुला सकूँगा। सर वाल्टर स्कॉट के निमन्त्रण पर स्काटलैंड पहुँचते ही अंग्रेजी साहित्य के प्रकृति-प्रेमी कवि वर्ड्सवर्थ जिस प्रदेश के प्राकृतिक सौंदर्य पर मुग्ध हो गये थे, उसी भूखंड में चार दिन के आवास ने मेरे जीवन में भी मधुरिमा भर दी है। मैं जहाँ भी रहूँगा, इस प्रदेश के चरागाहों, झरनों, बर्फीली पहाड़ियों, वनों और अलमस्त गाँवों का दृश्य मेरी आँखों में नाचता रहेगा।

१६ मई

ब्रिटेन का सांस्कृतिक तीर्थ-स्थान

(१) एवन के तट पर शेक्सपियर का स्मारक
(२) नाटककार के उद्यान में
(३) 'शेक्सपियर मेमोरियल थियेटर'

ठीक साढ़े नौ बजे ग्लासगो के सेंट्रल रेलवे स्टेशन से हम बरमिंघम रवाना हुए। ब्रिटेन के पूर्वी तट से होते हुए हम ट्रेन द्वारा न्यू कासल से एडिनबरा गये थे। अब पश्चिमी किनारे से इंगलैंड जा रहे थे। इस भाग में इंगलैंड और स्काटलैंड की सीमा पर जब ग्रेटनाग्रीन नामक गाँव देख पड़ा, तो पूर्वी तट के कोल्ड स्ट्रीम और लैम्बरटन नामक स्थानों की स्मृति ताजी हो उठी। पुराने समय से ग्रेटनाग्रीन प्रेमी-प्रेमिकाओं को विवाह-बन्धन में बँध जाने की सुविधा प्रदान करता रहा है। कहते हैं वृद्ध-जन इस स्थान के नाम से आज तक चिढ़ते हैं। जिन प्रेमी-प्रेमिकाओं के विवाह में माँ-बाप बाधक होते थे, वे यहीं भाग कर विवाह कर लेते थे। स्काटलैंड के पुराने कानून के अनुसार अगर किसी गवाह के सम्मुख प्रेमी-प्रेमिका विवाह की घोषणा कर देते, तो यहाँ घोड़े के पैर में नाल ठोंकने वाले लुहार भी शादी करा देते थे। किंतु १८२६ में इस कानून में यह संशोधन हो गया है, कि प्रेमी अथवा प्रेमिका में से किसी एक को विवाह के पूर्व यह सिद्ध करना होगा, कि स्काटलैंड में उसने लगातार तीन सप्ताह निवास किया है।

जिस समय हमने स्काटलैंड की सीमा पार की, उस समय एक बार पुनः झुरमुटों के बीच से गुजरनेवाली सड़कों के किनारे छोटे-छोटे घरों के आगे लाल, हरे, नीले, बैंजनी एवं सफेद रंग के फूलों और सर्पिणी की भाँति बल खा कर बहती हुई पहाड़ी नदियों के गीत कानों में गूँज उठे। राबर्ट बर्न्स के भावुक प्रदेश की मीठी याद लिये मैं इंगलैंड के मनमोहक और रंगीन कल्पनाओं के प्रदेश में पहुँच गया।

इस क्षेत्र में प्रकृति के विविध रूप दीख पड़े। और ऐसा क्यों न हो, जब कि लंकाशायर में रुई के गीत गूँजते हैं, तो लेक डिस्ट्रिक्ट में सद्यःस्नाता रमणी की भाँति मोहक प्रेरणा प्रदान करने वाला नैसर्गिक सौंदर्य वर्ड्सवर्थ की कविताएँ सुनाता रहता है। कवि शेली ने इसी क्षेत्र के केसविक नामक स्थान में अपनी कुटीर में बैठे-बैठे प्रेम, सौंदर्य और विचारों की दुनिया में हलचल मचा दी थी। मार्ग में जब लंकाशायर का स्टेशन देख पड़ा, तो अपने स्वाधीनता-संग्राम की कुछ कथाएँ स्मरण हो आईं। इस नगर ने भारत के पुरातन वस्त्रोद्योग को आघात पहुँचा कर हमारे बाजार को अपने हाथ में कर लिया था। गांधीजी ने स्वदेशी का व्रत ग्रहण करने के लिए रचनात्मक आन्दोलन चलाया और दूसरे सत्याग्रह आन्दोलन में विदेशी कपड़ों की होली जलायी गई। इसी कारण हमारे गाँव के अनपढ़े किसान भी शोषक लंकाशायर का नाम जान गये थे। किन्तु अब वह परिच्छेद खत्म हो गया है।

लन्दन पहुँचने के बाद से ही जिस घड़ी की बड़ी आतुरता से प्रतीक्षा कर रहा था, वह आ पहुँची। लगभग ४ बज कर ५० मिनट पर हम बर्मिंघम पहुँचे। स्टेशन से बाहर आते ही यहाँ के सूचना-विभाग की कारों पर सवार हो कर हम सीधे इस द्वीप के सांस्कृतिक स्थल 'स्ट्रैटफर्ड-आन-एवन' रवाना हो गये। अब कुछ देर बाद ही उस तीर्थ-स्थान में पहुँचनेवाले हैं, जहाँ महान् नाटककार और कवि शेक्सपियर पैदा हुए थे। मार्ग में चारों ओर हरियाली बिखरी हुई थी और कहीं-कहीं धरती फूलों से ढकी हुई। एक स्थल पर गृहहीन लोगों की एक बस्ती जब दिखाई पड़ी, तो पूछने पर ज्ञात हुआ कि घरों की व्यवस्था न हो सकने के कारण स्टेशनवैगन नुमा घरों में अभी रहने के लिए ये मजबूर हैं। यहाँ घरों की समस्या अभी विकट रूप धारण किये हुए हैं। घरों का किराया बहुत ज्यादा है। बर्मिंघम से करीब २५ मील की दूरी तय करके ५ बज कर २५ मिनट पर हम 'स्ट्रैटफर्ड-आन-एवन' पहुँच गये।

जोसेफ हंटर ने १८२४ में लिखा था: "स्ट्रैटफर्ड में हम हर जगह शेक्सपियर से मिलते हैं" और शेक्सपियर होटल में कदम रखते ही इस उक्ति की सत्यता साकार हो उठी। इस होटल के कमरों के नाम शेक्सपियर के नाटकों के नाम पर रखे गये हैं और गलियारे में मानव-स्वभाव के इस अमर शिल्पी के नाटकों से सम्बन्धित चित्र टँगे हैं। कहते हैं, कि अठारहवीं सदी के सुप्रसिद्ध अभिनेता डेविड गैरिक ने १७६९ में इस होटल के कमरों के नाम शेक्सपियर के नाटकों के नाम पर रखे थे। इसी सुप्रसिद्ध अभिनेता ने १७६९

में सर्वप्रथम शेक्सपियर की जयन्ती मनायी। यह होटल बहुत पुराना है और इसकी इमारत एलेजेबेथन वास्तुकला की परिचायक है।

ब्रिटिश मेले के कारण इस साल यहाँ पर्यटकों की संख्या इतनी बढ़ गई है, कि होटल के एक-एक कमरे में दो-दो व्यक्तियों को ठहरना पड़ रहा है, जब कि होटलों की संख्या यहाँ दस से अधिक है। हमारे कमरे का नाम 'कॉमेडी आफ एरर्स' है। 'द टू जेंटिलमेन आफ वेरोना' लिखने के बाद जब शेक्सपियर को रूमानी सुखान्त नाटक लिखने के अपने प्रथम प्रयोग में सन्तोष नहीं हुआ, तो जुड़वाँ भाइयों और जुड़वाँ नौकरों के द्वारा प्रहसनात्मक स्थिति पैदा करके एक नये दृष्टिकोण से सुखान्त नाटक लिखने के प्रयास में 'कॉमेडी आफ एरर्स' का प्रणयन हुआ। मानवीय भावनाओं के आधार पर न सही; किन्तु गलत शिनाख्त के आधार पर उसमें खुश होने की सामग्री पर्याप्त है। मेरे साथ बेनीपुरी जी थे, इसलिए उनके उद्‌गारों से मनोरंजक स्थिति तो पैदा होती ही रहती थी।

होटल से बाहर निकल कर जब हम जल्दी-जल्दी शेक्सपियर के घर पहुँचे, तो समय की पाबंदी के कारण वहाँ अन्दर न जा सके। दर्शकों के लिए छः बजे तक घर का द्वार खुला रहता है, किन्तु हम पहुँचे ६-४५ पर। भावनाओं की कोमलता और नियमों की कठोरता में कहाँ सामंजस्य स्थापित हो सकता है! कुछ देर तक हम श्रद्धा के साथ उस पुराने घर को निहारते रहे। छोटा-सा दुमंजिला खपरैल का मकान, जिसमें लगे लकड़ी के काले-काले तख्ते मध्यकालीन ब्रिटिश वास्तुकला का परिचय दे रहे थे। और यही है वह स्थान, जहाँ मानव-जाति का श्रेष्ठ रत्न २३ अप्रैल १५६४ को पैदा हुआ था। यही है वह घर, जिसे देखते ही उस मानवतावादी साहित्यकार के सम्बन्ध में न जाने कितनी स्मृतियाँ ताजी हो जाती हैं। यह गृह सोलहवीं सदी के शुरू के मध्यमवर्गीय अंग्रेजों के घरों का प्रतीक है। हेनले स्ट्रीट में गर्व से खड़ा यह गृह आज विश्व में प्रसिद्ध है और इसे देखने के लिए अनेक राष्ट्रों के हज़ारों पर्यटक प्रति वर्ष यहाँ आते हैं। खिले फूलों की छटा से उस कलाकार की आत्मा झाँक रही थी। इस घर को कल देखने की लालसा दबाये जब मैं एवन के तट की ओर चला, तो सारा वातावरण शेक्सपियरमय दीख पड़ा।

नदी के एक किनारे स्मारक-थियेटर और दूसरी ओर पुष्पोद्यान एवं बीच में एवन इठलाती हुई बह रही है। इसे भी शेक्सपियर पर नाज़ है, क्योंकि उसी अमर नाटककार ने इसे भी तो गौरवान्वित किया है। शेक्सपियर

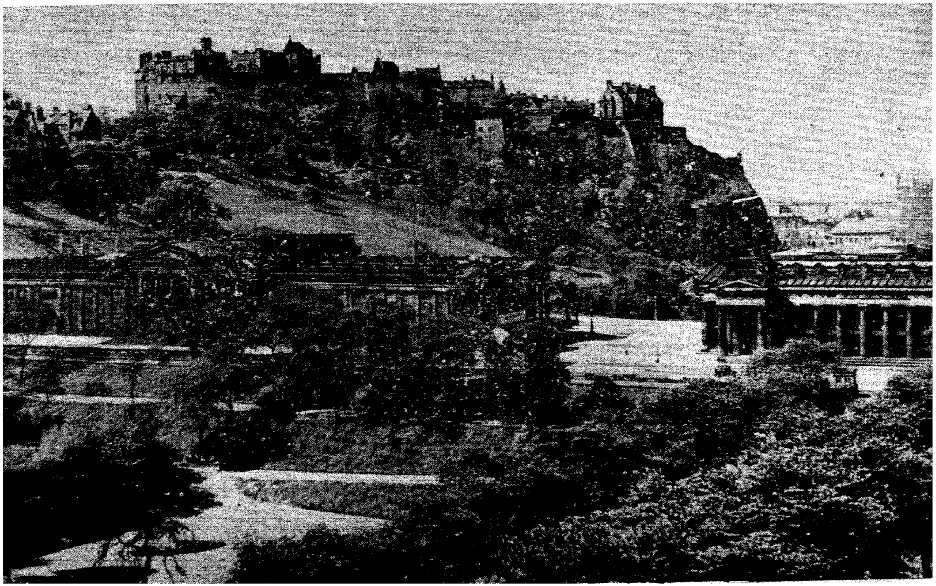

स्काटलैंड की राजधानी एडिनबरा में पहाड़ी पर खड़ा वह ऐतिहासिक गढ़ जहाँ अंग्रेज़ों और स्काटलैंडवालों के बीच १६वीं सदी में लोमहर्षक संग्राम हुए थे। इस भू-भाग के सांस्कृतिक प्रतिनिधि सर वाल्टर स्काट के स्मारक से एडिनबरा किले का लुभावना दृश्य। • १२ मई की डायरी, पृ० १३४

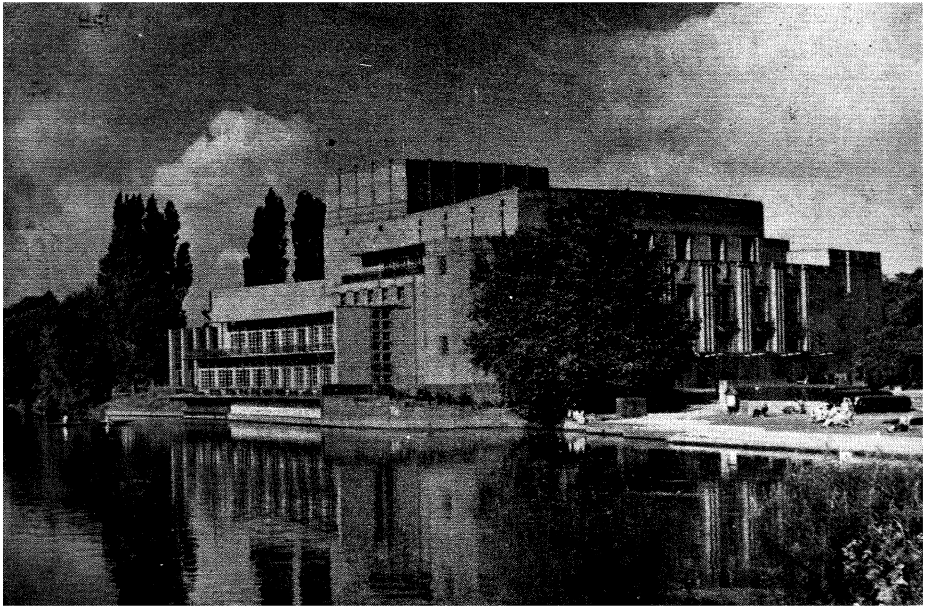

शेक्सपियर मेमोरियल (स्मारक) थियेटर (रंगशाला)। एवन नदी के तट पर रंगशाला के ठीक सामने शेक्सपियर स्मारक है।

१६ मई की डायरी, पृ० १५६-५७

मेमोरियल थियेटर के सामने शेक्सपियर स्मारक है, जहाँ एक ऊँचे चबूतरे पर गंभीर मुद्रा में शेक्सपियर की मूर्ति प्रतिष्ठित है। बारह वर्ष के परिश्रम के बाद मूर्तिकार लार्ड रोनाल्ड सदरलैंड गोवर ने इस मूर्ति को तैयार किया था। १० अक्टूबर १८८८ को इस मूर्ति का प्रतिष्ठापन-समारोह हुआ था, जिसमें अन्य साहित्यकारों के साथ आस्कर वाइल्ड भी उपस्थित थे। जिस नाटककार के नाटकों से यह प्रकट होता है, कि वह मानव-स्वभाव का कितना बड़ा पारखी था, आज उसकी मूर्ति भी यहाँ से क्लाप्टन ब्रिज होते हुए लंदन जाने वाले यात्रियों को देखा करती है। इस स्मारक के चारों ओर इसके नाटकों से जो पंक्तियाँ खुदी हैं, वे भी सूझ की परिचायक हैं :—

*वह था विवेक का देवदूत, आदम के मन में आ उमगा,
अपने प्रहार की दृढ़ता से था दिया हृदय का पाप भगा।
['पंचम हेनरी']

+ + +

†मन के मृदु राजदुलारे को सादर है मेरा अभिवादन,
जिसकी सब क्लान्ति हरा करते हैं, देवदूत जन के मधु स्वन।
['हेमलेट']

+ + +

‡यह रंगमंच जिस पर जीवन छाया का रूप लिये चलता,
अकुशल अभिनेता व्यर्थ समय को खो देता निज कर मलता।
['मैकबेथ']

---

*Consideration like an angel came and whipp'd the offending adam out of him.

—*Henry V.*

†Good night, sweet prince, and flights of angels sing thee to the rest.

—*Hamlet*

‡ Life's 'but a walking shadow, a poor player
That struts and frets his hour upon the stage.

—*Macbeth.*

* कुशल दक्ष हूँ नहीं मात्र मैं अपने में ही,
अन्य जनों में निहित दक्षता-कारण-स्नेही।
[चतुर्थ 'हेनरी' भाग २]

शेक्सपियर की मूर्ति के चारों ओर नीचे हेमलेट, लेडी मैकबेथ, फाल-स्टाफ और प्रिंस हल की काँसे की मूर्तियाँ हैं, जो क्रमशः दर्शन, सुख-दुःख और इतिहास को प्रतीक हैं। चबूतरे के नीचे जलाशय में तैरते हुए राजहंस देख पड़े। उसके चारों ओर घास का मखमली बिछौना और बीच में फूलों से भरी कई क्यारियाँ। बेनीपुरी जी अंग्रेजी पुष्पों का नाम पूछ-पूछ कर डायरी में लिखते जा रहे थे और कुछ प्रौढ़ाएँ उन्हें बड़े प्रेम से बताती जा रही थीं—वह हँसती डेजी है और यह दिलकश टुलिप। महान् साहित्यकार के इस महान् स्मारक को देख कर मेरा हृदय प्रसन्नता से नाच उठा।

स्मारक के ठीक सामने शेक्सपियर मेमोरियल थियेटर में जब पहुँचे, तो वहाँ टिकट खरीदनेवालों की एक लम्बी क्यू दिखायी पड़ी। यद्यपि हमारे लिए सीटें कल के लिए रिजर्व थीं, किंतु आज भी हम नाटक देखने को लालायित थे। सभी टिकट बिक गये थे और अब खड़े-खड़े नाटक देखने के लिए टिकट मिल सकते थे। रंगशाला में सबसे पीछे खड़े हो कर भला नाटक का रस कैसे प्राप्त हो सकता था। नाटक देखने का विचार स्थगित कर वहीं एवन के तट पर कुछ देर टहलते रहे।

अलंकरण-शैली से रहित इस थियेटर का सादा भवन वर्तमान वास्तुकला का अच्छा उदाहरण है। स्थापत्य-कला के क्षेत्र में विश्वविख्यात कुमारी एलिजाबेथ स्काट ने इस भवन का नक्शा तैयार किया था। विश्व के कोने-कोने में फैले शेक्सपियर-साहित्य के प्रेमियों ने इसके निर्माण में धन दिया। इस रंगशाला के निर्माण में २ लाख पौंड (लगभग २६ लाख रुपया) व्यय हुआ। बर्नर्ड शॉ इस थियेटर-भवन को देख कर बहुत प्रसन्न हुए थे। इसके उद्घाटन-समारोह के अवसर पर १९३२ में ब्रिटेन के राजकवि जॉन मैसफिल्ड ने जो कविता लिखी थी, उसमें उन्होंने यह आकांक्षा प्रकट की थी—यह रंगशाला नये गीतकारों एवं कलाकारों के लिए सफल युग के

---

* I am not only witty in myself,
But the cauce that wit is in other men.
— *Henry IV. Pt. 2*

निर्माण में सहायक सिद्ध हो तथा इसकी प्रसिद्धि चतुर्दिक् फैले। यह रंगशाला सीमित क्षेत्र में उस आकांक्षा को पूरा कर रही है।

हमने शेक्सपियर के उस उद्यान को भी देखा, जहाँ उनके हाथ का लगाया हुआ मलबेरी का वृक्ष आज भी खड़ा है। यह बाग शेक्सपियर के उस घर के पास है, जिसे लंदन से साधनसम्पन्न हो कर वापस लौटने पर उन्होंने खरीदा था और जिसे अब 'न्यू प्लेस' कहते हैं।

इस उद्यान में विविध प्रकार के पुष्पों की रंगीन मुसकान हमें इस प्रकार आकृष्ट किये हुए थी, कि वहाँ से हटने की इच्छा ही नहीं होती थी। उस वृद्ध मलबेरी के वृक्ष को देखने के लिए और भी कई पर्यटक टूट पड़े थे।

मेरे मस्तिष्क में यही प्रश्न चक्कर काट रहा था, कि क्या सचमुच इसी मलबेरी को शेक्सपियर ने लगाया था? किन्तु जहाँ भावनाओं के मधुर रस में लोग डूबे हों, वहाँ तर्क की बात करना प्रहसन समझा जाता है। इसलिए जो कथा प्रचलित है, उसे स्वीकार कर मैंने भी बड़ी दिलचस्पी से इस वृक्ष को देखा। मुझे बताया गया, कि इस वृक्ष को जीवित रखने के लिए वनस्पति-शास्त्र के जानकारों की सहायता प्रति वर्ष ली जाती है।

इस बगीचे से लगा, शेक्सपियर की नतिनी एलिजाबेथ हल के पति थॉमस नैश का मकान है, जिसमें शेक्सपियर की स्मृतियाँ सँजोयी हैं। किन्तु इसे भी हम आज न देख सके।

रात के करीब आठ बजे हम होटल वापस आ गये। डायनिंग हाल का नाम 'ऐज़ यू लाइक इट' है। मधु-कक्ष के द्वार ही पर अंकित है—'मेजर फार मेजर'। इन दोनों कक्षों के नाम सचमुच बड़ी सूझबूझ से रखे गये हैं। जो पसन्द हो खाइए और प्याले पर प्याला खाली करते जाइये।

भोजन के बाद आज बहुत देर तक दूसरे देशों के पर्यटकों से बातें कीं। भारत के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए लोग बहुत उत्सुक हैं। दूर देश में आ कर हम यह महसूस कर रहे हैं, कि श्री नेहरू की शान्तिवादी परराष्ट्र-नीति ने हमारी मर्यादा कितनी बढ़ा दी है। इस कक्ष का नाम 'टेम्पेस्ट' है और जहाँ निकट दो-एक मित्रों के साथ बैठ कर चिन्तन के क्षण गुजारे जाते हैं, उसका नाम 'मिड समर नाइट्स ड्रीम' है। शेक्सपियर स्वयं इस नाटक में चिन्तन की अवस्था में पहुँच गये थे। और सचमुच डेविड गैरिक ने इस होटल के भागों का इस प्रकार नामकरण करके यह प्रकट कर दिया है, कि वे शेक्सपियर के भावों को अच्छी तरह समझे थे।

के फूटे साज-बाज का प्रतीक यह गढ़ विलास का अड्डा था और इसी कारण यहाँ कई लड़ाइयाँ हुईं। इस किले की रूमानी कथाओं ने स्काटलैंड के कथाकार सर वाल्टर स्कॉट को भी अपनी ओर आकृष्ट किया। एलिजाबेथ एवं प्रथम जेम्स के भाग्य का वर्णन 'केनिलवर्थ' में प्रस्तुत करके इसे उसने अमर कर दिया है। क्रामवेल ने इस गढ़ पर आधिपत्य स्थापित करने के लिए इसे ध्वस्त कर दिया था और अब इसकी केवल भग्न दीवारें ही खड़ी हैं।

इस भाग में ट्यूडर-कालीन इमारतों की बहुलता है। उस समय यहाँ अजीब प्रकार के घर बनते थे। छोटे-छोटे एक मंजिले और दुमंजिले मकान, जिनकी दीवारों में थोड़ी-थोड़ी दूर पर लकड़ी के काले-काले तख्ते लगे हुए हैं और इन इमारतों के निर्माण में लकड़ी का ही अधिक उपयोग किया गया है। मुझे ये घर आकर्षक नहीं प्रतीत हुए, किन्तु इन्हें देख कर ट्यूडर काल की वास्तुकला को समझने का अवसर ज़रूर मिला।

यह क्षेत्र प्राचीन काल से इंगलैंड का सुप्रसिद्ध औद्योगिक एवं व्यावसायिक इलाका रहा है। स्ट्रैटफर्ड-आन-एवन को रोमन विजेताओं ने अपना व्यावसायिक केन्द्र बनाया था। विभिन्न भागों की एक झलक लेने के बाद हम डनलप फोर्ट पहुँचे। यहाँ जिस प्रकार हमारा स्वागत किया गया, उससे यह पता चल गया, कि ब्रिटेन में उद्योग-धन्धों को चलाने वाले अपने कार्य में कितने निपुण तथा उच्च स्तर के विज्ञापन में विश्वास करने वाले हैं। डनलप टायर तैयार करने के लिए यहाँ 'डनलप फोर्ट' नाम से एक छोटा नगर ही खड़ा हो गया है। १६१५ में इस कारखाने का काम शुरू हुआ था और इस समय राष्ट्रमंडल के देशों में टायर-उद्योग का यह सब से बड़ा कारखाना है। भारत में इस कंपनी ने टायर तैयार करने के लिए कलकत्ते के पास एक नया कारखाना खोला है।

डनलप फोर्ट के २६० एकड़ में फैले इस कारखाने में दस हज़ार मजदूर काम करते हैं। विभिन्न विभागों के कार्यों को सम्पन्न करने के लिए इस कारखाने में प्रति सप्ताह २,००० टन कोयला और १५,२०,००० यूनिट विद्युत्-शक्ति की खपत है। प्रतिमास ४५ हज़ार टायर यहाँ तैयार होते हैं। रबर-उद्योग और टायर-प्रणालियों की शोध के सम्बन्ध में यहाँ अच्छा शोध-केन्द्र कायम किया गया है। कच्चे रबर से किस प्रकार टायर और ट्यूब तैयार होते हैं—इस प्रणाली को हमने बड़ी दिलचस्पी से देखा। टैंकों के लिए यहाँ बड़े-बड़े टायर तैयार हो रहे थे, उसे देख कर मुझे उद्योग के विध्वंसात्मक

पहलू पर खेद हुआ। लूटखसोट वाली सामाजिक व्यवस्था के जारी रहने के कारण इंसान अपनी हत्या के लिए खुद इन चीज़ों को तैयार करता है और इन्हें प्रदर्शित करने में भी नहीं शर्माता।

यहाँ बीस एकड़ जमीन में श्रमिकों के लिये थियेटरघर, सिनेमाघर, नृत्यशाला, खेल के मैदान तथा सोशल क्लब बने हैं। मुझे बताया गया, कि यहाँ के कैंटीन में प्रतिदिन ५ हजार से अधिक मजदूर भोजन करते हैं। आज हम डनलप कम्पनी के अतिथि थे, अतः भोजन यहीं करना पड़ा।

कार्यक्रम के अनुसार साढ़े चार बजे डनलप फोर्ट से स्ट्रैटफर्ड वापस आना था, किन्तु लंच के बाद मैं प्रतिनिधिमंडल के अन्य तीन सदस्यों के साथ शेक्सपियर की जन्मभूमि वापस आ गया। शेक्सपियर के गाँव आ कर यहाँ के महत्वपूर्ण स्थानों को देखने की लालसा इतनी प्रबल थी, कि डनलप फोर्ट में अधिक समय रुकना कठिन हो गया।

स्ट्रैटफर्ड-आन-एवन पहुँचते ही सीधे हम शेक्सपियर का घर देखने गये। घर में प्रविष्ट होते ही सर्वप्रथम वह कमरा देख पड़ा, जिसमें शेक्सपियर बैठ कर काम किया करते थे। फर्श कहीं-कहीं टूट गया है। इसी कमरे में मैंने वह कुर्सी देखी, जिस पर वह अमर कलाकार बैठा करता था। मगर इसे देख कर यह वेदना हुई, कि पर्यटकों ने इसे काट-काट कर खराब कर डाला है। इस कुर्सी का कुछ अंश घर ले जाने वालों ने यह न सोचा होगा, कि वे उस पवित्र स्मृति को नष्ट कर रहे हैं, जिसे देखने अनन्त काल तक इस कस्बे में दुनिया के विभिन्न भागों के लोग आते रहेंगे। कुछ देर तक मौन मैं कुर्सी को निहारता रहा और जब अमेरिकी पर्यटकों की भीड़ वहाँ पहुँची, तब उनके शोरगुल से वहाँ का सुसंस्कृत वातावरण कुछ देर के लिए चुलबुला बन गया।

इस कमरे से लगा हुआ वह कमरा है, जिसमें विलियम शेक्सपियर के पिता जॉन शेक्सपियर की दुकान थी। उस समय इस भवन के दो भाग थे। एक भाग में दुकान थी। परन्तु बीच की दीवार अब नहीं है और इसीलिए एक साथ दोनों कमरों को देखा जा सकता है। एक सदी से कम ही हुआ, जब इस घर के दोनों ओर के कुछ मकानों को इसलिए नष्ट कर दिया गया था, ताकि अग्निकांड में यह पवित्र निधि भी नष्ट न हो जाय।

बैठकखाने के पीछे रसोईघर है, और इसमें वे बर्तन सुरक्षित हैं, जिनमें शेक्सपियर के लिए खाना पकता था। नटखट शेक्सपियर को खाना पकाते समय घर ही में रखने के लिए उनकी माँ मेरी आर्डन के कहने से उनके पिता

ने ऐसी व्यवस्था कर दी थी, जिसका दूसरा उदाहरण ढूँढने से अन्यत्र नहीं मिलेगा। जमीन में लकड़ी का एक डंडा गाड़ दिया गया है, उसमें लोहे का एक ऐसा घुमावदार पेंच लगा है, जिसे बच्चे की कमर में बाँध देने पर वह तेली के बैल की भाँति घूमता रहेगा। नाटक लिखने के साथ ही जिस कलाकार ने अभिनय के क्षेत्र में भी प्रतिष्ठा अर्जित की, उसे माँ यहीं डाँटती होगी और वह बाल-सुलभ अभिनय करता होगा। चिढ़ कर माँ उसे इसमें बाँध कर घूमने को छोड़ देती होगी। किन्तु उसे क्या पता था, कि यही नटखट शेक्सपियर वह अमर साहित्यिक निधि छोड़ जायगा, जिसपर सम्पूर्ण मानव-जाति गर्व करेगी।

दुमंजिले पर वह कमरा है, जहाँ शेक्सपियर पैदा हुए थे। वहाँ उस समय का बिस्तरा भी रखा हुआ है, मगर उसी पर विलियम शेक्सपियर सोते थे, ऐसा नहीं कहा जा सकता। एक तरफ बच्चों की गाड़ी है, सम्भवतः शेक्सपियर की माँ इसी गाड़ी में बचपन में अपने पुत्र को घुमाने ले जाती होंगी। यहीं शेक्सपियर सम्बन्धी कागजात शीशे के फ्रेम में मढ़े दीवारों पर टँगे हैं। उनके जीवन-काल में प्रकाशित उनकी कुछ पुस्तकों की प्रतियाँ भी यहाँ जीर्णावस्था में हैं। ब्रिटेन के इस सांस्कृतिक दूत का हस्ताक्षर भी यहीं देखने को मिला। इस घर के पीछे एक छोटा, किन्तु खूबसूरत बाग है, जिसमें वे सभी वृक्ष और पुष्प लगा दिये गये हैं, जिनकी चर्चा शेक्सपियर की पुस्तकों में है।

इस घर के पास ही दूसरा घर है, जिसे 'जन्म-स्थान म्यूज़ियम' कहते हैं। यहाँ शेक्सपियर सम्बन्धी चित्र और साहित्य बिकता है। मैंने यहीं उस अमर गायक की कांसे की मूर्ति खरीदी।

लंदन से यश और धन कमा कर लौटने के बाद शेक्सपियर ने यहाँ १५९७ में जिस घर को खरीदा था, उसे 'न्यू प्लेस' (नया घर) कहते हैं, मगर एक मूर्ख पादरी के कुकृत्य के कारण वह घर अब बिलकुल नष्ट हो गया है और उसकी केवल स्मृति शेष है। इसी नये घर में २३ अप्रैल १६१६ को शेक्सपियर का देहावसान हुआ था। इसी घर में शेक्सपियर ने 'टेम्पेस्ट' नामक अपना नाटक लिखा था। सप्तम हेनरी के राज्य-काल में निर्मित उस नये घर की प्रशंसा उस काल के इतिहास-लेखकों ने भी की थी।

शेक्सपियर की मृत्यु के बाद प्रथम चार्ल्स की रानी हेनेरिता मेरिया १६४७ में स्ट्रैटफर्ड आई, तो नाटककार की बड़ी लड़की सुस्ना हल की मेहमान के रूप में वे तीन रोज नये घर में रहीं। किन्तु अब तो उस ऐतिहासिक गृह की नींव ही शेष है।

जिस मलबेरी वृक्ष की चर्चा मैंने कल की डायरी में की है, वही इस नये घर के विनाश का कारण हुआ।

अठारहवीं सदी में फ्रैंसिस गैस्ट्रेल नामक पादरी ने 'नये घर' को खरीद लिया था। इस सदी के मध्य में उक्त मलबेरी के पेड़ को देखने के लिए इतनी भीड़ इकट्ठी होने लगी, कि इससे चिढ़ कर पादरी ने १७५६ में इस पेड़ को कटवा दिया, जिसे बाद में किसी प्रकार जीवित रखा गया। उस पादरी की मूर्खता यहीं खत्म नहीं हुई। तीन वर्ष बाद उसने 'नये घर' को भी गिरवा दिया। लोग इस कुकृत्य से इतने क्रुद्ध हुए, कि उस पादरी को स्ट्रैटफर्ड ही छोड़ना पड़ा। दुनिया सदा उस पादरी के घृणित कार्य को कोसती रहेगी। यहाँ उस कुएँ को भी हमने देखा, जिसका पानी शेक्सपियर पीते थे। वह कुआँ अभी सूखा नहीं है और वह सूख भी कैसे सकता है?

शेक्सपियर के नये घर से लगा हुआ थॉमस नैश का मकान है। कवि की नतिनी एलिजाबेथ हल के प्रथम पति थॉमस.नैश यहीं रहते थे। अब न्यू प्लेस म्यूज़ियम' के नाम से यह घर प्रसिद्ध है। यहाँ शेक्सपियर की स्मृति से जुड़ी हुई चीज़ें प्रदर्शित हैं। यहाँ मुझे एक ऐसी टेबुल दिखायी गई, जिसमें मलबेरी वृक्ष के प्रयुक्त ५२ टुकड़े इस बात को प्रकट करते हैं, कि शेक्सपियर ५२ वर्ष जीवित रहे। शेक्सपियर की स्मृतियों के साथ ही उनकी प्रथम जयन्ती मनाने वाले अभिनेता डेविड गैरिक की भी बहुत-सी चीजें हमें यहाँ देखने को मिलीं। वह वस्त्र, जिसे पहन कर गैरिक ने प्रथम बार अभिनय किया था, यहाँ सुरक्षित है। शेक्सपियर ने जिन मधु-पात्रों का उल्लेख किया है, उनके नमूने भी यहाँ संग्रहीत हैं। इस म्यूजियम में शेक्सपियर के कई चित्र और मूर्तियाँ भी दर्शनीय हैं।

आज रात हमने शेक्सपियर मेमोरियल थियेटर में इसी गाँव के अमर नाटककार द्वारा लिखित 'द्वितीय रिचर्ड' नामक नाटक देखा। सामन्ती ईर्ष्या, द्वेष, हत्या और प्रतिशोध के विचारों से ओतप्रोत यह नाटक भी कम विचारोत्तेजक नहीं है। महोत्सव के अवसर पर 'द्वितीय रिचर्ड' 'चतुर्थ हेनरी' के दो भाग और पंचम हेनरी,—इन चार नाटकों को खेलने के कार्यक्रम में 'द्वितीय रिचर्ड' पहला है, जिसे हम आज देख रहे थे। प्रोग्राम संबंधी सूचना-पत्रक में यह कहा गया था, कि रिचर्ड केवल एक दूसरे प्रकार का मानव ही नहीं, बल्कि एक दूसरे प्रकार का नरेश भी था। और यह सत्य भी है, क्योंकि मध्यकालीन नरेशों में यह एक प्रकार से अन्तिम नरेश था, जो पृथ्वी पर अपने

को परमात्मा का प्रतिनिधि समझता था। किंतु रंगमंच पर जिस रूप में यह नाटक प्रस्तुत किया गया, उससे यह तो प्रकट हो गया, कि वह सर्वथा दूसरे प्रकार का नरेश था, किंतु यह परिलक्षित न हो सका, कि वह दूसरे प्रकार का व्यक्ति भी था। राजा द्वितीय रिचर्ड की भूमिका में माइकेल रेडग्रेव और उसके प्रतिद्वन्द्वी बोलिंग ब्रुक की भूमिका में हैरी एंड्रूज का अभिनय बहुत प्रशंसनीय रहा। जिस समय रिचर्ड अपनी पत्नी से विदा हो रहा था तथा जेल में अपने जीवन-काल की पुरानी स्मृतियों को चिन्ताशील मुद्रा में अभिव्यक्त करता था, तो मेरे बगल में बैठी महिलाएँ बार-बार रूमाल से अपनी आँखें पोंछती जाती थीं। इस नाटक में रिचर्ड की काव्यात्मक भावाभिव्यक्ति से उपयुक्त वातावरण पैदा करने में डायरेक्टर एंथनी क्वीले को भी अच्छी सफलता मिली। कुछ पात्रों का अभिनय जहाँ साधारण था, वहीं कुछ पात्रों के सफल अभिनय से यह त्रुटि छिप जाती थी।

ब्रिटिश महोत्सव को दृष्टि में रख कर रंगशाला को नये और आकर्षक ढंग से सजाया गया था। दर्शकों तथा रंगमंच के बीच पहले जो दूरी थी, वह अब खतम हो गई थी। किंतु कभी-कभी पात्रों के संवाद के कुछ अंश नहीं सुन पड़ते थे। रंगमंच की विशेषता यह थी, कि काले रंग की लकड़ी का दुमंजिला मंच खड़ा किया गया था, जिसमें दो तरफ से ऊपर जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी थीं। बगल से दो तथा पृष्ठ भाग से एक—कुल तीन रास्ते मंच पर आने के लिए थे। परदा-शून्य काष्ठ-मंच की इस व्यवस्था से युग के अनुरूप वातावरण पैदा हो रहा था और रोशनी के प्रभावोत्पादक प्रबंध से विभिन्न दृश्य सजीव बन जाते। वही काष्ठ-मंच कभी राजसदन, कभी संघर्ष-क्षेत्र, कभी उद्यान और कभी जेल का रूप ग्रहण कर लेता था। रंगशाला में बारह सौ दर्शकों के बैठने के लिए स्थान है।

नाटक समाप्त होने के बाद सभी पात्र मंच पर एक साथ जब उपस्थित हुए, तब इस दुःखान्त नाटक की भावनाओं को भुलाकर दर्शकों ने हर्षध्वनि के बीच उनका अभिवादन किया। मेरे बगल में बैठी महिला ने जब उत्साह के साथ मुझसे पूछा—"नाटक पसन्द आया?" तो मैंने कहा—"अभी आपकी आँखें शायद गीली हैं।" और तब गद्गद हो कर उसने कहा—"सुना है भारत में लोग शेक्सपियर को बहुत अच्छी तरह समझते हैं।" इस वाक्य के पूर्ण होते ही उसके साथ की दूसरी महिला ने कहा—"हमसे भी अच्छा!" मैंने कहा—"कहीं कला के क्षेत्र में भी भौगोलिक सीमाएँ खड़ी हो सकती हैं?"

१८ मई

(१) साप्ताहिक वेतन मिलने पर भी चेहरा गम्भीर
(२) कृषि-प्रणाली

जिस पश्चिमी मध्य इंगलैंड में हम हैं, वह अपने अछूते प्राकृतिक सौंदर्य के साथ ही उद्योग-धन्धों के लिए भी प्रसिद्ध है। बर्मिंघम लोहे व इस्पात के उद्योग के क्षेत्र में विश्वविख्यात है। इस नगर के पुस्तकालय में शेक्सपियर सम्बन्धी साहित्य अन्य सभी पुस्तकालयों की अपेक्षा अधिक है। हमें बताया गया, कि इसमें शेक्सपियर सम्बन्धी पुस्तकों की संख्या लगभग २५ हजार है। इसी भाग के एक दूसरे महत्त्वपूर्ण औद्योगिक स्थान कवेंट्री हम रवाना हुए, जहाँ हमने स्टैंडर्ड मोटर कंपनी के ट्रैक्टर-वर्क्स को देखा। मोटर और साइकिल-उद्योग के लिए मुख्य रूप से यह स्थान प्रसिद्ध है, किन्तु यहाँ नकली रेशम, बिजली के सामान तथा विविध प्रकार की मशीनें भी तैयार होती हैं।

कारखाने के कार्यालय में यहाँ के अधिकारियों ने पहले इसके इतिहास और कार्य-प्रणाली पर प्रकाश डाला। १९०३ में इस कम्पनी की स्थापना हुई थी। द्वितीय महायुद्ध के दौर में इसका कार्य तेजी से बढ़ा। १९३९ में यहाँ पचास हजार मोटर कारें तैयार हुई थीं। अब इसी प्रतिष्ठान के कारखाने में १९४६ से फर्गुसन ट्रैक्टर भी तैयार होने लगे हैं। इसी सिलसिले में यह भी बताया गया, कि १९५० के सितम्बर तक यहाँ डेढ़ लाख ट्रैक्टर तैयार हुए थे। संसार के लगभग ७५ देशों के बाजारों में इन ट्रैक्टरों की खपत है। उत्पादन सम्बन्धी आँकड़े प्रस्तुत करते हुए यह कहा गया, कि प्रतिमास ४० लाख पौंड का माल यहाँ से बाहर भेजा जाता है। १९५१ में १ लाख कार तथा १ लाख ट्रैक्टर बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

हमें ट्रैक्टर तैयार करनेवाला कारखाना दिखाया गया। पहले पुर्जे ढालने वाली मशीनें हमने देखीं, जहाँ कई हज़ार मशीनों में दो हज़ार अपने आप काम कर रही थीं, उनमें पुर्जों के साँचे रख दिये जाते थे और उसी

आकार का पुर्जा ढल कर निकल आता था। कारखाने के विभिन्न भागों को देखते हुए हम वहाँ पहुँचे, जहाँ इन पुर्जों को फिट कर देने के बाद ट्रैक्टर तैयार होते हैं और फिर वहाँ गये, जहाँ इनकी परीक्षा होती है। अधिकारियों ने हमें बताया—प्रति दो मिनट में यहाँ एक ट्रैक्टर तैयार होता है।

ट्रैक्टर तैयार करनेवाला कारखाना तो दिखाया गया, पर मोटर तैयार करनेवाले कारखाने को हम न देख सके। अन्य बड़े कारखानों की भाँति यहाँ भी मज़दूरों के लिए कैंटीन आदि की व्यवस्था है।

मजदूरों को यहाँ अपना साप्ताहिक वेतन लेने के लिए किसी खास विभाग में नहीं जाना पड़ता। वे जिस विभाग में काम करते हैं, वहीं उनके वेतन की रकम लिफाफे में बन्द उन्हें प्राप्त हो जाती है। जिस समय हम पुर्जों को फिट कर ट्रैक्टर तैयार करने वाले विभाग में वहाँ के कार्य-कलाप को देख रहे थे, उसी समय साप्ताहिक वेतन वितरित किया जा रहा था। कुछ मजदूरों ने बिना खुशी प्रकट किये गम्भीर मुद्रा में लिफाफा ले कर पॉकेट में रख लिया, जब कि साधारणतः वेतनभोगी-वर्ग वेतन मिलते ही कुछ क्षण के लिए प्रसन्न हो उठता है। मुझे इस बात पर कुछ आश्चर्य हुआ। जब मैंने उनमें से एक मजदूर से यह पूछा कि साप्ताहिक वेतन पाने पर भी यह गम्भीर मुद्रा क्यों? तब उसने बड़े दर्दभरे शब्दों में कहा—"परिवार बड़ा है, वेतन कम। जो कुछ आज मिला है, वह तो पहले ही खर्च हो चुका है।" उसी समय एक दूसरे व्यक्ति के वहाँ पहुँचते ही वह चुप हो गया।

खाने की जिस समय घंटी बजी, कुछ मजदूर कैंटीन गये और कुछ वहीं जो कुछ रूखा-सूखा उनके पास था निकाल कर खाने लगे। हमें भी कम्पनी की ओर से लंच दिया गया था। खाते समय भी ट्रैक्टर-प्रकरण जारी रहा।

इंगलैंड का यह भाग कृषि के लिए प्रसिद्ध है। अतः ट्रैक्टर का कारखाना देखने के बाद हम रायल लिमिंगटनस्पा गये, जहाँ हमने एक बड़े फार्म को देखा। दो हज़ार एकड़ के इस फार्म में गेहूँ, आलू, चुकन्दर आदि की खेती होती है। वारविकशायर एग्रीकल्चर एक्जीक्यूटिव कमेटी के अधिकारी (काउंटी एग्रीकल्चरल आफिसर) ने ब्रिटेन की कृषि-प्रणाली के सम्बन्ध में मोटी-मोटी बातें बतायीं। इस देश में कुल ६ करोड़ एकड़ जमीन है, जिसमें ४ करोड़ ८० लाख एकड़ भूमि पर खेती होती है। ब्रिटेन के अधिकांश लोग उद्योग-धंधों में लगे हैं; क्योंकि यह एक औद्योगिक देश है। मगर यहाँ भी १२ लाख व्यक्ति फार्मों पर काम करके अपनी रोटी कमाते हैं।

आमतौर पर चकबन्दी के द्वारा बड़े पैमानों पर खेती की जाती है। परन्तु ५ एकड़ से कम की भी ८६ हजार जोतें हैं।

ग्रेट ब्रिटेन में फार्मों की कुल संख्या ३ लाख से कुछ अधिक है। खेतिहर मज़दूरों और किसानों को जीने योग्य वेतन देने तथा उनके रहन-सहन का स्तर ऊंचा उठा कर कम से कम खर्च में अधिक से अधिक उत्पादन की दृष्टि से १९४७ में मजदूर सरकार ने जो कृषि कानून पास किया था, उससे उक्त अधिकारी के कथनानुसार उत्पादन बढ़ा है।

द्वितीय महायुद्ध के पूर्व ब्रिटेन अपनी आवश्यकता का केवल ३१ प्रतिशत गल्ला पैदा करता था। किन्तु १९४९ के शुरू में यह मात्रा बढ़ कर ३९ प्रतिशत हो गई थी। उत्पादन बढ़ाने के लिए नये औजार देने के साथ ही नयी खाद भी दी जा रही है। आवश्यकता पड़ने पर कर्ज भी दिया जाता है। वयस्क खेतिहर मज़दूरों की मज़दूरी २०-२५ पौंड के मध्य है। १९४९ के मार्च से वयस्क खेतिहर मज़दूरों को आम तौर से प्रति सप्ताह ९४ शिलिंग और स्त्रियों को ७१ शिलिंग मज़दूरी दी जाती है। इनसे सप्ताह में ४७ घंटा काम लिया जाता है। खेतिहर मज़दूरों के सम्मुख घर की समस्या है। हमें बताया गया, कि सरकार अब इस प्रश्न पर ध्यान दे रही है।

मशीनों से खेती करने में ब्रिटेन का स्थान महत्त्वपूर्ण है। उक्त अधिकारी ने बताया, कि पिछली लड़ाई से पाँच गुना अधिक औजार कृषि-सम्बन्धी फार्मों को दिये गये हैं। और इस समय २ लाख ७० हजार से अधिक ट्रैक्टर फार्मों के काम में लगे हुए हैं। फार्म को देखने के बाद इससे सम्बद्ध गोशाला और मुर्गीखाना भी देखा। मोटी-ताजी गायों को देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई। इन्हें रखने के लिए चरागाहों के बीच में बाड़े बने हुए हैं। हमें बताया गया, कि गायों को अधिक से अधिक समय तक चरागाहों में रखने पर वे अधिक दूध देती हैं और जल्दी ही गाभिन भी हो जाती हैं। गायों के लिए अलग-अलग चरागाह हैं। हर दो टुकड़ों के बीच में तार है, जिसमें बिजली दौड़ती है और यह व्यवस्था इसलिए है, ताकि एक टुकड़े से दूसरे टुकड़े में गायें न जा सकें। एक चरागाह की घास खत्म होने पर ही दूसरे चरागाह में इन्हें चरने दिया जाता है। बाड़े के पास जब हम पहुँचे, तो मशीन से गायें दुही जा रही थीं। हमारे देश में बिना बछड़े के गायों को दुहना कठिन होता है, किन्तु यहाँ गायों के दुहने में बछड़ों के न होने पर कोई कठिनाई नहीं होती। हमें बताया गया, कि औसतन एक गाय प्रति-

दिन ४ गैलन दूध वर्ष में १० मास तक देती रहती है। चार दिन के बाद बछड़े को माँ के थन से दूध नहीं पीने दिया जाता। हर साल मवेशी के डाक्टर गायों की परीक्षा करते हैं।

मुर्गीखाने को देख कर यह बात स्मरण हो आई, कि अंडों की कमी के कारण जब यहाँ यह निर्णय हुआ, कि रोज अंडे नहीं मिलेंगे, तो ब्रिटिश पार्लमेंट में इस पर बड़े मनोरंजक प्रश्न पूछे गये थे। अंडे की समस्या अभी यहाँ सरकार विरोधी प्रदर्शनों में अच्छा योग देती है। अभी ब्रिटेन में रोज अंडे नहीं मिलते।

इंगलैंड और स्काटलैंड के ग्रामीण भागों को देखने के पश्चात् एक आश्चर्यजनक अनुभव मुझे यह प्राप्त हुआ, कि इस देश में भी केवल दस्तखत करनेवाले नागरिकों की संख्या नगन्य नहीं है। उस दिन एडिनबरा में एक सज्जन ने मुझे बताया था, कि ब्रिटिश फौज में सैनिकों की निरक्षरता वैज्ञानिक रण-कौशल के युग में सरदर्द बनी हुई है। इस भाग में आने पर कहीं-कहीं मुझे यह भी देखने को मिला, कि यहाँ दस्तखती वीर काफी हैं। औद्योगिक-क्षेत्र में आगे बढ़े हुए ब्रिटेन के लिए यह लज्जा की बात है। कल स्ट्रैटफर्ड-आन-एवन में घूमते समय एक भावुक अंग्रेज़ ने यह भी बताया था, कि इस प्रदेश में आज भी कहीं-कहीं ऐसे एक-दो व्यक्ति मिल जायँगे, जिन्होंने आज तक ट्रेन से सफर न किया हो।

लेमिंगटन मध्य इंगलैंड का एक स्वास्थ्य-केन्द्र है। रंगीन ईंटों से तैयार इमारतें बड़ी खूबसूरत लगीं। फूलों के सौंदर्य से भरी हुई इस प्रदेश की हरित धरती बहुत लुभावनी है। इंगलैंड का यह हृदय-स्थल सचमुच बड़ा मनोरम और आकर्षक है।

सायंकाल हम पुनः स्ट्रैटफर्ड वापस आ गये। शेक्सपियर के जिन स्मृति-चिह्नों को अभी हम नहीं देख सके थे, उन्हें आज भी न देख पाये। खाना खा कर जब घूमने निकले, तो कस्बे में बड़ी रौनक थी। किन्तु मुख्य रूप से यहाँ एवन नदी के किनारे क्लाप्टन ब्रिज के आस-पास लोग टहलते रहते हैं। ब्रिज-स्ट्रीट में भी मैंने बड़ी चहलपहल देखी। इस सड़क से पुल पार कर लंदन जाने का रास्ता है, जिससे हो कर शेक्सपियर लंदन गये थे। अधिकांश दुकानों में शेक्सपियर के चित्र व मूर्तियाँ दिखायी पड़ीं। कुछ मधुपायी सैलानी स्त्रियों को छेड़ रहे थे। जिस सामाजिक व्यवस्था में अनेक व्यक्तियों की लालसाएँ अतृप्त रहती हों, वहाँ यदि साहित्यिक तीर्थ-स्थल में भी मार्ग पर उच्छृंखलता का प्रदर्शन हो, तो क्या आश्चर्य!

१९ मई

आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय

कीट्स ने भावुकतावश यह कहा था कि आक्सफोर्ड विश्व का सर्वोत्तम नगर है। और आज हम इसी नगर के विश्वविद्यालय को देखने जब पहुँचे, तो यह कटु स्मृति भी ताजी हो गई, कि इसी विद्यापीठ के अधिकारियों ने इंगलैंड के सुप्रसिद्ध कवि शेली को 'नास्तिकवाद की आवश्यकता' शीर्षक पुस्तिका लिखने के कारण यहाँ से निकाल दिया था। यद्यपि युग छलाँगें मार कर आगे बढ़ता जा रहा है, किंतु यहाँ के वातावरण में वही पुरानापन नजर आया, जो दकियानूसी विचारों को प्रश्रय प्रदान करता है।

आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय का इतिहास दूसरे पुराने विश्वविद्यालयों अथवा विद्यापीठों के समान ही है। हमारे देश में जिस प्रकार परिषदों के गर्भ से तक्षशिला और नालन्दा के शिक्षा केन्द्रों का उदय हुआ—जहाँ वेद-वेदांगों के अतिरिक्त कला, शल्य-चिकित्सा, ज्योतिष, खगोल-शास्त्र, कृषि, धनुर्विद्या तथा अन्य दूसरी विद्याओं की शिक्षा दी जाती थी, उसी प्रकार पेरिस में चर्च के सहयोग से पेरिस विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। इसी विश्वविद्यालय से प्रेरणा प्राप्त कर बारहवीं सदी के मध्य में आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय का इतिहास प्रारम्भ हुआ। इस विश्वविद्यालय के न्यू कॉलेज के भूतपूर्व वार्डन तथा सुप्रसिद्ध इतिहास-लेखक फिशर ने अपने 'हिस्ट्री आफ यूरोप' (यूरोप का इतिहास) में लिखा है : "जब फ्रांस के नरेश से द्वितीय हेनरी का संघर्ष हो गया, तो ११६७-६८ के बीच कई इंगलिश अध्यापकों और छात्रों को पेरिस छोड़ कर स्वदेश वापस आ जाने का हुक्म मिला" और उसके बाद ही धीरे-धीरे आक्सफोर्ड में पठन-पाठन का काम शुरू हुआ। उस युग में छात्र शिक्षा प्राप्त करने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर मारे-मारे फिरते थे। इस विद्यापीठ की स्थापना से वह स्थिति बदल गई और अब तो यह दुनिया के प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों में है। मगर उस समय यहाँ के शैक्षिक वातावरण पर धर्म का जो प्रभाव था, वह आज भी कायम है।

शहर की चहल-पहल तथा उपनगर के औद्योगिक कारबार के कारण यहाँ के शैक्षिक वातावरण की पवित्रता कुछ कम अवश्य हो गई है। 'गाउन का नगर' अब 'टाउन गाउन और स्पेनर' का नगर हो गया है। किन्तु कुछ लोगों का कहना है, कि पिछले ३० सालों में यहाँ रोजगार और उद्योग-धन्धों का जो विकास हुआ, उसका कोई बुरा असर इस विद्यापीठ पर नहीं पड़ा है। परंतु इस नगर में कुछ घंटे व्यतीत करने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ, कि यदि यह 'गाउन का नगर' ही बना रहता, तो अच्छा होता।

गुरु और शिष्य के बीच निकट सम्पर्क स्थापित रखने की प्रणाली आक्सफोड विश्वविद्यालय की शैक्षिक नीति की एक उल्लेखनीय विशेषता है। यहाँ छात्रों के बीस कॉलेजों के समूह को ही आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय समझा जाता है। इन कॉलेजों के अतिरिक्त छात्राओं के लिए पाँच कालेज अलग हैं। हर कॉलेज में लगभग दो सौ छात्र हैं और छात्राओं की संख्या एक हजार से कुछ अधिक है। भारतीय छात्रों की संख्या करीब चालीस है और कुल विदेशी छात्रों की संख्या लगभग एक हजार है। कॉलेज में १२-१५ शिक्षक या ट्यूटर हैं। छात्र और शिक्षक साथ रहते हैं और एक साथ खाना खाते हैं। हर कॉलेज के लिए अपना-अपना चर्च, पुस्तकालय और भोजनागार है। इन गिरजाघरों और कालेजों को देख कर ही आक्सफोर्ड को कालेजों और गिरजाघरों का नगर कहते हैं। हर कॉलेज में एक क्लब रूम और छात्रों तथा ट्यूटरों के लिए अलग-अलग कामन रूम हैं। यह विश्वविद्यालय बीस इकाइयों का संघबद्ध रूप है।

शिक्षकों और छात्रों में मित्रों जैसा संबंध रहता है। हर छात्र को संबंधित शिक्षक अच्छी तरह जानते हैं और अधिक नहीं, तो सप्ताह में एक बार इनसे भेंट अवश्य होती है। शिक्षा-विधि भी बड़ी रोचक है। छात्र अपने विषयों पर निबन्ध लिखते हैं और छोटे-छोटे छात्र-समूहों के बीच इन निबन्धों पर विचार-विनिमय होता है। सप्ताह में तीन-चार बार एक-एक ग्रुप के सभी छात्रों को एक साथ भी पढ़ाया जाता है। परन्तु सभी छात्रों की उपस्थिति अनिवार्य नहीं है। एक अध्यापक ने बताया, कुछ शिक्षा-शास्त्री इस पद्धति की आलोचना करते हैं, किन्तु इस प्रणाली से लाभ यह है, कि अगर किसी शिक्षक का लेक्चर सुनने कम छात्र आते हैं, तो वह इस बात पर गंभीरतापूर्वक विचार करता है, कि क्यों उसकी कक्षा में कम छात्र उपस्थित रहते हैं। और इस प्रकार उसे भी अपने लेक्चर की त्रुटियाँ दूर करने का मौका मिल जाता है।

एक घंटे तक एक ही छात्र को पढ़ाने का अवसर मिलने से छात्र और शिक्षक एक दूसरे को अच्छी तरह समझने लगते हैं और इससे छात्र के मानसिक विकास का अवसर मिलता है। यहाँ के छात्र निजी अध्ययन पर विशेष ध्यान देते हैं।

एशमोलियन म्यूजियम के पास ही, जो संसार का एक पुराना संग्रहालय माना जाता है, यहाँ के एक नागरिक ने आक्सफोर्ड की महत्ता की चर्चा करते हुए कहा : "अंग्रेजी भाषा बोलने अथवा समझनेवाली दुनिया का यह विद्यापीठ प्रतिनिधित्व करता है।" और सचमुच जब हम विभिन्न कॉलेजों को देख रहे थे, तो यूरोप के अतिरिक्त एशिया, अफ्रीका और अमेरिका महाद्वीप के छात्र भी वहाँ दीख पड़े।

साढ़े नौ बजे सुबह हम स्ट्रैटफर्ड-आन-एवन से रवाना हुए थे और ठीक ग्यारह बजे आक्सफोर्ड के हाई स्ट्रीट के मित्रे होटल पहुँच गये। वहीं हमें कई भारतीय छात्र तथा इस क्षेत्र के सूचना-अधिकारी मिले। भारतीय छात्रों की आक्सफोर्ड मजलिस के सभापति श्री राघवन एन० अय्यर के साथ हम लोग विश्वविद्यालय देखने रवाना हुए।

सबसे पहले हमने एक्जिटर कॉलेज देखा, जिसे एक्जिटर के बिशप (पादरी) वाल्टर-द-स्टैप्डन ने १३१४ में स्थापित किया था। भारतीय छात्रों को मुख्यतः इसी कॉलेज में पढ़ने की सुविधा प्राप्त होती है। १५५४ में स्थापित ट्रिटी कॉलेज को भी हमने देखा, जहाँ अभिजात-वर्ग के लड़कों को ही स्थान मिलता है। चर्च से प्रभावित इस विश्वविद्यालय में छात्रों के प्रवेश के सम्बन्ध में विभेद की नीति बरतना कम आश्चर्य की बात नहीं है। तक्षशिला और नालन्दा में उस पुरातन-काल में भी राजकुमारों के साथ साधारण-वर्ग के छात्र पढ़ते थे, किंतु आज के युग में सरस्वती के मन्दिर में यह अलगाव की भावना निश्चय ही खेदजनक है। "गत वर्ष एशिया के एक छात्र को ट्रिटी कालेज में स्थान मिला था"—यह अवश्य हमें बताया गया, मगर इससे यह कालेज अपना कलंक नहीं दूर कर सकता। इसके द्वार सभी देशों के छात्रों के लिए खुल जाने चाहिये।

जिस समय हम बोडलियन पुस्तकालय पहुँचे, वहाँ कुछ लड़के पढ़ रहे थे और कुछ पर्यटक पांडुलिपियों को देखने में संलग्न थे। यहाँ हमें पाँचवीं और छठी सदी के लेखकों की पांडुलिपियाँ देखने को मिलीं। यहीं शेली के हस्ताक्षर से युक्त उसकी कुछ रचनाओं के अतिरिक्त उसकी घड़ी और पोर्ट्रेट देख कर

न जाने कितने छात्रों को आज भी इस विश्वविद्यालय से उस कवि के पुराने संबंध याद हो आते होंगे। शेली स्वयं जितना खूबसूरत था, वैसी उसकी हस्तलिपि भी सुन्दर है। ब्रिटेन के सुप्रसिद्ध अंध-कवि मिल्टन की भी कुछ स्मृतियाँ यहाँ सहेजी हुई हैं। शेक्सपियर के प्रथम फोलियो की एक प्रति भी यहाँ है। इस पुस्तकालय में १५ लाख जिल्दबन्द पुस्तकें हैं। इनमें ४२ हजार पांडुलिपियाँ हैं। ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत जितनी पुस्तकें प्रकाशित होती थीं, उनकी एक-एक प्रति कानूनन इस पुस्तकालय को मुफ्त मिल जाती थी। इसीलिए यहाँ पुस्तकों की संख्या इतनी अधिक है।

डिवंटी स्कूल को देख कर इस नगर की धर्मांधता और रूढ़िप्रियता की कथाओं के पृष्ठ आँखों के सामने खुलने लगे। मेरी के राज्यकाल में इस स्कूल में कुछ ऐसी दुःखजनक घटनाएँ हुईं, जिन्हें कभी नहीं भुलाया जा सकता। आक्सफोर्ड में सुधारवादी विचारों को भला कैसे सहन किया जाता। लैटिमर और रिडले ने जब धार्मिक अंधविश्वास के खिलाफ आवाज बुलन्द की, तो कार्डिनल पोल द्वारा नियुक्त कमीशन के सामने इसी स्कूल में उन्हें सुधारवादी कार्यों के लिए उत्तर देना पड़ा और बाद में उन्हें जिन्दा जला दिया गया। १६६५ में इसी स्कूल में कामन सभा की बैठक भी हो चुकी है, क्योंकि प्लेग के कारण लंदन से सभी लोग इधर-उधर भाग गये थे। पंद्रहवीं सदी के इस स्कूल की इमारत कई बार बनती-बिगड़ती रही और सत्रहवीं सदी के अन्त में ब्रिटेन के सुप्रसिद्ध वास्तुकला-विशारद सर क्रिस्टोफर रेन ने इस भवन को अपनी सूझ-बूझ के अनुकूल बनवाया। मैग्डालेन चर्च के उत्तर में शहीद-स्मारक बना हुआ है और वहाँ पहुँचते ही धार्मिक कट्टरता व अत्याचारों का वह युग याद आ गया, जब न जाने कितने सुधारवादी ईसाई कट्टरपंथियों के क्रोध के फलस्वरूप मौत के शिकार हुए। नयी बोडलियन लाइब्रेरी को देखते हुए हम इंडियन इंस्टीट्यूट पहुँचे। इसके प्रवेश द्वार पर एक संस्कृत का श्लोक अंकित है। संस्कृत के सुप्रसिद्ध प्रोफेसर स्वर्गीय सर एम० मोनीर विलियम्स के प्रयास से इस इंस्टीट्यूट की स्थापना हुई थी। इसके पुस्तकालय में संस्कृत की कई बहुमूल्य पुस्तकें हैं। १९४९ से यहाँ पूर्वी कला का एक म्यूजियम भी खुल गया है। यहाँ कई अच्छी मूर्तियाँ और चित्र संग्रहीत हैं। गांधार शैली की कुछ मूर्तियाँ बड़ी भव्य और आकर्षक लगीं।

क्राइस्ट चर्च की इमारत काफी आकर्षक है। मैग्डालन कॉलेज आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के सभी कॉलेजों में अपने खूबसूरत भवन के लिए

प्रसिद्ध है। मध्यकालीन एवं वर्तमान वास्तुकला के आकर्षक स्वरूप को इस कॉलेज की इमारतें अभिव्यक्त करती हैं। लार्ड मैकाले इस कालेज के बड़े प्रशंसकों में थे। 'वाटर वाक्स' के कारण इस कॉलेज को काव्यात्मक प्रेरणा प्राप्त होती रहती है। कॉलेज के बगल में एक छोटा नाला है और दूसरी ओर विविध प्रकार के पुष्पों तथा वृक्षों से भरा उद्यान। कहते हैं, कि अंग्रेजी साहित्य के लेखक जोसेफ एडिसन यहाँ टहला करते थे। जिसे अब 'एडिसन वाक' कहते हैं, वहाँ अंग्रेज़ी साहित्य के कई सुप्रसिद्ध कवि और लेखक टहला करते थे। हमें यह स्थान इसलिए भी आकर्षक प्रतीत हुआ, कि यहीं कवि शेली एक बच्चे को गोद में ले कर उससे पूर्व जन्म का वृत्तान्त पूछ बैठे थे। इस कॉलेज का मृग-पार्क भी अपने ढंग का अनोखा पार्क है। वहाँ हमें कई हरिन देख पड़े। सत्य क्या है, यह तो नहीं कह सकता, किन्तु एक सज्जन ने बताया, कि यहाँ जितने स्कॉलर होते हैं, उतने हरिन भी दीख पड़ते हैं। लताओं के सौंदर्य को लपेटे मौडलिन टावर को कई पर्यटक निहार रहे थे। वहाँ से हम कॉलेज के छात्रावास में गये। यद्यपि कमरे बहुत छोटे-छोटे हैं, किन्तु छात्रावासों का बौद्धिक और शान्त वातावरण मुझे बहुत पसन्द आया।

आक्सफोर्ड के सबसे बड़े चर्च—सेंट मेरी का गिरजाघर देखते हुए हम यूनिवर्सिटी कॉलेज में शेली का स्मारक देखने गये। जिस समय हम स्मारक के सामने पहुँचे, कवि और चिंतक शेली के तूफानी जीवन से सम्बद्ध कई घटनाएँ स्मरण हो आईं। सामाजिक विद्रोह की ज्वाला जिसके हृदय में धधक रही थी; उसकी मृत्यु स्पेजिया की खाड़ी में तूफान में फँस जाने के कारण जिस मार्मिक स्थिति में हुई, वह साहित्यिक जगत की एक अविस्मरणीय घटना बनी रहेगी। आज इस कॉलेज में शेली के शव की संगमरमर की मूर्ति मैंने देखी, तो ऐसा प्रतीत हुआ, कि मानवता का संदेश सुनाने के लिए सागर की तूफानी लहरों से ऊपर अमर शेली की नंग-धड़ंग छाया उठ रही है। भावुकता भरी इस प्रतिमा को सुप्रसिद्ध मूर्तिकार आन-स्लो फोर्ड ने तैयार किया था। शेली इसी कालेज के छात्र थे। मूर्तिकार ने शेली स्मारक के लिए उक्त मूर्ति को तैयार करने में जिस कलात्मक विवेक का परिचय दिया है, वह निस्संदेह प्रशंसनीय है। शेली की मूर्ति के नीचे कविता की मूर्ति, जिसकी आँखों से आँसू झर रहे हैं और ऊपर परम्पराओं को तोड़ कर नये जीवन का सपना देखनेवाले कवि की वह मार्मिक प्रतिमा, जिसे देख कर ऐसा मालूम पड़ता है, जैसे स्पेजिया की खाड़ी से अभी-अभी यह लाश निकाल कर रखी गई है और शेली के बालों से

पानी चू रहा है। एक समय था, जब शेली को उसके स्वतंत्र विचारों के कारण कालेज से निकाल दिया गया था और अब यहीं उसका भव्य स्मारक खड़ा किया गया है। किंतु रूढ़िवादियों को आज तक इस मूर्ति से चिढ़ है। हमें ज्ञात हुआ, कि इस मूर्ति को खराब करने की कोशिशें हो चुकी हैं। इस बात को सुन कर रूढ़िवादी ब्रिटेन के उस पहलू का परिचय मिला, जिस पर कलंक के अमिट धब्बे लगे हैं।

इसके बाद हम यहाँ के दूसरे कालेजों को देखते रहे। मगर रह-रहकर शेली के शव की मूर्ति का चित्र आँखों में तैरने लगता और मन भारी हो जाता। गिरजाघर और कालेजों से भरे इस नगर से बाहर निकल कर हम नौका-प्रतियोगिता देखने गये। आक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयों के छात्रों के बीच यह नौका-प्रतियोगिता प्रतिवर्ष यहाँ के छात्र-छात्राओं के मनोरंजन का एक प्रमुख साधन है। टेम्स नदी के तट पर छात्र-छात्राओं का उत्साह देखने ही योग्य था। फाली ब्रिज से इफले तक नदी के इस भाग को यहाँ 'आइसिस' के नाम से पुकारते हैं और इसी भाग में यह नौका-प्रतियोगिता होती है। यद्यपि इस पुरातन विश्वविद्यालय में सहशिक्षा-प्रणाली प्रचलित नहीं है, किंतु यहाँ छात्र-छात्राएँ एक साथ प्रतियोगिता देखने में इस प्रकार तल्लीन थीं कि अलगाव की भावना खत्म हो गई थी। सम्भवतः इस रंगीन वातावरण से कीट्स को बड़ी सौंदर्यानुभूति प्राप्त हुई होगी।

नौका-प्रतियोगिता देखने के बाद हम पुनः आक्सफोर्ड नगर वापस आ गये। ऐशमोलियन म्यूजियम की केवल झलक मिल सकी, क्योंकि संग्रहालय बन्द होने के कुछ ही मिनट पूर्व हम वहाँ पहुँचे थे। ब्रिटेन के शैक्षिक केंद्र को इस म्यूजियम पर भी नाज़ है और इसमें कोई संदेह नहीं, कि कई ऐतिहासिक निधियों के अतिरिक्त यहाँ मूर्तियों और चित्रों का भी अच्छा संग्रह है। यहाँ के सुप्रसिद्ध 'आल सोल्स कालेज' को भी हमने जाते-जाते देखा। ब्रिटेन के कई सुप्रसिद्ध विद्वानों को पैदा करने का गर्व इस कालेज को है। इस विश्वविद्यालय के सभी बड़े समारोह 'शेल्डोनियन थियेटर' में होते हैं और इसका निर्माण सर क्रिस्टोफर रेन द्वारा तैयार किये गये नक्शे के आधार पर हुआ था।

आक्सफोर्ड के दिल 'रेडक्लिफ स्क्वायर' में जिस समय हम घूम रहे थे, एक व्यक्ति ने बताया, कि 'गाउन' के साथ ही 'टाउन' के उदय हो जाने से यहाँ सामाजिक बुराइयाँ फैल गई हैं और वारांगनाओं के कारण यहाँ के शैक्षिक वातावरण की पवित्रता नष्ट हो रही है।

आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के कुछ कालेजों की इमारतें अच्छी और कुछ पुरानी तथा आकर्षण-शून्य हैं। किसी-किसी कालेज के आसपास का वातावरण बड़ा थका-माँदा मालूम पड़ता है, जैसे विचारों में परिवर्तन न होने के कारण युगों की जीर्ण-शीर्ण भावनाएँ उसे बोझिल बनाये हुए हों।

ब्रिटेन में बड़े विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक (प्रोफेसर) की औसत मासिक तनख्वाह १,७५० रुपया है। रीडर को यहाँ औसतन प्रतिवर्ष १,०६० पौंड, लेक्चरर को प्रतिवर्ष लगभग ७६५ पौंड और असिस्टेंट लेक्चरर को प्रतिवर्ष ४७५ पौंड मिलता है। ब्रिटेन के विश्वविद्यालयों में कालेज-प्रवेश-परीक्षा, जिसमें 'इंटरव्यू' भी शामिल है, पास करने के उपरान्त लड़के प्रवेश पाते हैं। इस बात पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है, कि जिन लड़कों की रुझान उच्च शिक्षा की ओर न हो, उन्हें विश्वविद्यालयों में दाखिल न किया जाय।

ब्रिटेन में भारतीय छात्रों की संख्या भी अब पहले से अधिक हो गई है और इस समय लगभग तीन हज़ार छात्र विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा इंस्टीट्यूटों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। किन्तु मुझे ज्ञात हुआ, कि इनमें से अधिकांश छात्र अपने शैक्षिक-कार्यक्रम पर ठीक से विचार किये बिना ही यहाँ पहुँच जाते हैं। यहाँ आ कर वे कभी-कभी अच्छी शिक्षा-संस्थाओं में स्थान नहीं पाते, तो किसी भी कॉलेज में नाम लिखा कर अपना बहुमूल्य समय नष्ट करते हैं। भारतीय छात्र ब्रिटेन में प्रति वर्ष डेढ़ करोड़ से कुछ अधिक रुपया खर्च करते हैं। और इसीलिए यह प्रश्न भी बहुत महत्त्वपूर्ण है, कि इस व्यय का परिणाम देश के लिए कितना लाभजनक सिद्ध होता है? एक भारतीय छात्र ने बताया, कि लंदन-स्थित भारतीय हाई कमिश्नर के कार्यालय में शिक्षा-विभाग को इस प्रकार संगठित करने की आवश्यकता है, ताकि उससे छात्रों को आवश्यक परामर्श प्राप्त हो सके एवं भारत सरकार के शिक्षा-विभाग को भी इस बात पर ध्यान देना चाहिए, कि एक सुनिश्चित योजना के अनुकूल ही यहाँ भारतीय छात्र पढ़ने के लिए आवें।

लंच के समय आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के कृषि-विभाग के प्रधान से भारतीय कृषि-समस्याओं के सम्बन्ध में बातचीत होती रही। उनका विचार है, कि भूमि पर किसानों को स्वामित्व का अधिकार दे देने से उनमें उत्पादन बढ़ाने की प्रेरणा नहीं पैदा होगी। लंच के समय मधुर वातावरण बनाये रखने के लिए यह बहुत आवश्यक है, कि गलत विचारों का भी विरोध न किया जाय। इसलिए मीठे शब्दों में इसके विपरीत अपनी राय प्रकट कर मैं ब्रिटेन

की कृषि-व्यवस्था के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करता रहा।

आज दिन भर आक्सफोर्ड में एक स्थान से दूसरे स्थान एक प्रकार से दौड़-दौड़ कर वहाँ के विभिन्न दर्शनीय स्थानों को देखता रहा; इसलिए काफी थक गया था। स्ट्रैटफर्ड वापस आने के बाद मैं रात में होटल से बाहर नहीं निकला। डायरी लिखने के बाद सो गया।

———

२० मई

(१) स्ट्रैटफर्ड का शेक्सपियरमय वातावरण
(२) ईरानी तेल के प्रश्न पर टोरी पत्रों द्वारा शक्ति-प्रयोग की माँग

*मेरे ब्रिटेन तेरी जय की अभिव्यंजित जिससे कीर्ति सतत,
योरप की निखिल निसर्ग-छटा उसके चरणों में श्रद्धानत।
वह नहीं एक युग का, उससे उपकृत सारे युग अनुवर्ती,
उसकी प्रतिभा रचना-शैली पर गर्वित सृष्टि पुलक भरती।
लालित्यमयी पदरचना का सम्यक् परिधान बुना उसने,
उल्लसित आज यह संसृति है जिसको अपने तन पर पहने।

—बेन जॉनसन

आज शेक्सपियर के जन्म-स्थान से विदा होते समय बेन जॉनसन के उक्त उद्‌गार स्मरण हो आये। सचमुच वह अमर कवि और नाटककार एक युग का नहीं, बल्कि सभी युगों का है। और मुझे भी शेक्सपियर का ही ब्रिटेन पसन्द है।

जलपान के बाद मैं आज आखिरी बार शेक्सपियर-स्मारक को देखने के लिए जब एवन नदी के तट पर पहुँचा, तो वहाँ अन्य कई देशों के पर्यटक दिखायी पड़े। उनमें से कुछ के साथ मैंने एवन में नौका-विहार का रस लिया।

---

*Triumph my Britain, thou hast one to show,
To whom all scenes of Europe homage owe,
He was not of an age, but for all time.
Nature herself was proud of his designs,
And joy's to wear the dressings of his lines,
Which were so richly spun and woven so fit.

—Ben Jonson

किनारे के कुंज और खिले पुष्प बड़े मनोरम लग रहे थे। नौका में बैठी हुई युवतियाँ रह-रह कर उन लुभावने दृश्यों को देखते ही 'लवली-लवली' कह उठतीं और निश्चय ही नदी के किनारे-किनारे दोनों ओर कुछ दूर तक इतने सुन्दर एवं आकर्षक उद्यान और झाड़ियाँ हैं, जिनसे इस सांस्कृतिक क्षेत्र के सौंदर्य में चार चाँद लग जाते हैं।

रविवार होने के कारण एवन के दूसरी ओर विस्तृत मैदान में युवक-युवतियों की टोलियाँ मस्ती से डोल रही थीं और कहीं-कहीं प्रगाढ़ आलिंगन में बँधी प्रेमिकाएँ पुष्पों से खेल रही थीं। नैसर्गिक और मानवीय सौंदर्य का यह सम्मिलन भला किसे अपनी ओर आकृष्ट न करता!

ड्राइडन ने लिखा है, कि शेक्सपियर की आत्मा बहुत व्यापक थी। सम्भवतः इसीलिए अब स्ट्रैटफर्ड-आन-एवन की आत्मा भी इतनी व्यापक बन गई है, कि सब देशों के लोग खिंच कर यहाँ चले आते हैं। मेमोरियल थियेटर के पास मोटर-बोट से उतर कर मैं होली ट्रिंटी चर्च देखने गया, जहाँ शेक्सपियर की समाधि है। वहाँ प्रार्थना हो रही थी, इसलिए बाहर ही से लौट आया। शेक्सपियर का ग्रामर स्कूल भी बाहर से ही देख सका, क्योंकि रविवार के कारण वह बन्द था।

लंच के समय जब होटल वापस आया, तो आज डायनिंग हाल में अमेरिकी पर्यटकों की भीड़ लगी हुई थी। वेट्रसेज उनकी फरमाइश से परेशान थीं। हमारी टेबुल पर जो वेट्रेस खाना परोस रही थी, उसने ऊब कर कहा—"इन अमेरिकियों के व्यवहार से जी आफत में है, वे ऐसा सोचते हैं, उनसे अच्छा कोई खाना ही नहीं खाता, कितनी शेखी ये बघारते हैं।" दूसरी बार वेट्रेस कुछ और चीजें ले कर हमारी टेबुल के पास आई, तो उसने कहा—"ये अमेरिकी पर्यटक बड़े शैतान हैं, भोजन के समय भी ये गंदे मजाक करना बन्द नहीं करते।"

आज सचमुच डायनिंग हाल में हर प्रकार और विचार के लोगों का जमघट लगा था। श्वेत-अश्वेत—सभी रंगों के प्रतिनिधि देख पड़े। इस सांस्कृतिक तीर्थ-स्थान में रंग की दीवार ढह गई थी और नीग्रो जाति को घृणा की दृष्टि से देखने वाले श्वेत अमेरिकी भी एक ही डायनिंग हाल में कई अश्वेत पर्यटकों के साथ भोजन कर रहे थे।

लंच के बाद हम सीधे शेक्सपियर की पत्नी का गृह देखने रवाना हो गये। यह घर शेक्सपियर के जन्म-स्थान से सवा मील दूर शॉटरी नामक गाँव

में आज भी गर्व से खड़ा है। घर के पास पहुँचते ही यह ख्याल पैदा हुआ, कि यही वह स्थान है, जहाँ शेक्सपियर ने अपनी पत्नी से प्रेमालाप किया होगा और न जाने कितनी रूमानी रातें हास-परिहास के बीच गुजर गई होंगी। इसे 'एन हाथवे कॉटेज' कहते हैं। ट्यूडर काल में यहाँ के मध्यवर्ग के किसान-परिवार छोटे-छोटे मकानों में रहते थे और यह घर उसी शैली का द्योतक है। यद्यपि घर की रक्षा की पूर्ण व्यवस्था की गई है, किन्तु कहीं-कहीं लकड़ियाँ घुन रही हैं और यह डर है, कि कहीं यह स्मृति-चिह्न अपने मौलिक स्वरूप को खो न दे। इस घर का शेक्सपियर पर बड़ा प्रभाव था। अपने कई नाटकों में उसने अप्रकट रूप में इसकी प्रशंसा में भावुकता-भरे उद्गार प्रकट किये हैं। आज यहाँ भी हमारे साथ अन्य देशों की अपेक्षा अमेरिका के ही अधिक पर्यटक थे। घर के अन्दर प्रवेश करते ही वह पुरानी बेंच दीख पड़ी, जिस पर एन हाथवे और विलियम शेक्सपियर बैठ कर प्रेमपूर्ण वार्तालाप किया करते थे। दो लड़कियाँ भावुकतावश नियम को ताक पर रख कर उस बेंच पर बैठ ही गईं। मगर शीघ्र ही शरमा कर उठ खड़ी हुईं। बेंच के बगल में अँगीठी है; यहीं आग तापते हुए शेक्सपियर और एन हाथवे ने अपनी शादी का निर्णय किया था। शयन-कक्ष में वह पुरानी चटाई व बिछावन भी सुरक्षित है, जिस पर अमर कलाकार सोया करता था। एन हाथवे की छोटी बहन ने अपनी बड़ी बहन को शादी के समय जो चादर भेंट की थी, वह वहाँ रखी हुई है। शेक्सपियर के ससुर ने अपनी पुत्री और दामाद को जो चारपाई दी थी, वह इसी कमरे में आज भी प्रदर्शित है। वह शराब का प्याला भी हमें यहीं देखने को मिला, जिसमें शादी के पूर्व एन हाथवे के साथ शेक्सपियर शराब पिया करते थे। एन हाथवे कॉटेज में शेक्सपियर और उनकी पत्नी के जीवन से सम्बन्धित सभी चीज़ें सँजो कर रखी हैं। इस महान नाटककार की कृतियों का प्रथम प्रकाशित संस्करण भी यहाँ संगृहीत है। कहा जाता है. कि शेक्सपियर के साथी जान हेमिंग और हेनरी कांडेल ने प्रथम संस्करण का सम्पादन किया था। इस घर के चारों ओर आकर्षक पुष्प-क्यारियाँ हँसते हुए फूलों से भरी थीं।

शेक्सपियर की पत्नी का गृह देखने के बाद उनकी पुत्री सूसान का घर भी हमने देखा, जहाँ वह अपने पति डाक्टर जान हल के साथ रहती थीं। कहते हैं शेक्सपियर अपने इस दामाद और पुत्री को बहुत प्यार करते थे। यहाँ वे दोनों पलंग सुरक्षित हैं, जिन पर सूसान और डाक्टर जान हल सोया

करते थे । अपनी पुरानी स्मृतियों के कारण आज भी यह घर बड़ा प्रेरक प्रतीत हुआ ।

शेक्सपियर की समाधि देखने के लिए हम पुनः गिरजाघर की ओर गये, किन्तु द्वार बन्द हो चुके थे और चर्च का पादरी भला समाधि के निकट खड़े हो कर हमें श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर ही क्यों देता !

हाई स्ट्रीट में आज हारवर्ड हाउस के सामने पर्यटकों की बहुत भीड़ जमा थी । अमेरिका की सुप्रसिद्ध हारवर्ड यूनिवर्सिटी के संस्थापक जान हारवर्ड की माता का यही निवास-स्थान है । अमेरिकी उपन्यास-लेखिका मेरी कारेली ने, जो यहीं आ कर बस गई थीं, लिखा है—"अमेरिका और ब्रिटेन के मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का यह घर प्रतीक है ।"

जिस तीर्थ-स्थान का वातावरण शेक्सपियरमय है और जहाँ हर भाग में कहीं भी घूमते समय शेक्सपियर से भेंट होती है, वहाँ से विदा होने का समय आ पहुँचा। इस गाँव में आ कर जो प्रेरणा प्राप्त हुई, उसे शब्दों में किस प्रकार व्यक्त करूँ । यहाँ की मधुर-स्मृतियाँ क्या कभी विस्मृत हो सकती हैं !

ठीक चार बजे हम स्ट्रैटफर्ड-आन-एवन से लेमिंगटन स्पा रवाना हुए, जहाँ ५ बज कर २९ मिनट पर हमें लंदन के लिए ट्रेन मिली । ७ बज कर ५० मिनट पर हम लंदन के पेडिंगटन रेलवे स्टेशन पहुँच गये । इस बार हमें सेंट एरमिंस होटल में ठहराया गया । वैसे तो ब्रिटेन के होटलों में रंग-भेद की नीति नहीं बरती जाती—परन्तु कुछ ऐसे होटल भी मिलेंगे जहाँ श्वेतांगों को तरजीह दी जाती है । हमें ऐसे होटलों को देखने का मौका नहीं मिल सका ।

आज भोजन के बाद मैंने पिछले दो सप्ताह के पत्रों को पलटना शुरू किया । यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ, कि ईरान के तेल के प्रश्न पर जो विवाद पैदा हो गया है, उसे हल करने के लिए कुछ टोरी पत्र शक्ति-प्रयोग की माँग कर रहे हैं । 'डेली मेल' ने तो खुले आम यह लिखा है, कि ईरान में फौजी ताकत से ऐंग्लो-ईरानियन आयल कंपनी के अधिकारों को कायम रखा जाय । 'न्यू स्टेट्समैन ऐंड नेशन' ने इस दोहन-प्रथा का विरोध करते हुए मजदूर सरकार को युग-धर्म के अनुकूल आचरण करने की सलाह दी ।

स्वर्गीय श्री बेविन ने मध्यपूर्व के देशों के सम्बन्ध में टोरी पार्टी की भाँति जो घातक नीति अपना रखी थी, उसी के फलस्वरूप ईरान में तेल के प्रश्न पर संकट की स्थिति पैदा हो गई है । किन्तु क्षोभजनक बात यह है, कि एटली सरकार इस बात को स्वीकार करने के लिए प्रस्तुत नहीं है, कि ईरान को

तेल के मामले में राष्ट्रीयकरण की नीति ग्रहण करने का हक है। मगर शोषण और साम्राज्य-लिप्सा की भावना से जिनके विचार दूषित नहीं हो गये हैं, वे यह स्वीकार करेंगे, कि ईरान सरकार को तेल-उत्पादन के राष्ट्रीयकरण का अधिकार प्राप्त है और जबरन १९३३ में जो सुविधाएँ ऐंग्लो-ईरानियन कंपनी ने प्राप्त कर ली थीं, उन्हें भी खतम करने का नैतिक हक ईरान को है। यह वर्तमान युग के लिए एक अभिशाप ही है, कि १९५१ में टोरी पार्टी के पत्र यह चाहते हैं कि दक्षिणी ईरान पर अधिकार कर के तेल से मुनाफा कमाने का धन्धा अंग्रेजी कंपनी के हाथ में ही रहे। ईरान में तेल पैदा हो और उसका पूरा नफा ब्रिटेन उठावे, यह आज का ईरान कैसे बरदाश्त कर सकता है। अरबों रुपया ईरान के तेल से ब्रिटेन की उक्त कंपनी ने कमाया और कमाती जा रही है। मुनाफे का अनुमान इसी बात से किया जा सकता है, कि एंग्लो-ईरानियन आयल कंपनी प्रतिवर्ष कर के रूप में ब्रिटिश सरकार को एक करोड़ अस्सी लाख पौंड देती है। जिस देश के तेल से ब्रिटेन की तिजोरियाँ भरती जा रही हैं, वहीं, उस अभागे देश ईरान के निवासी गरीबी का जीवन बिता रहे हैं। भला शोषकों का ब्रिटेन क्योंकर पसन्द आयेगा ?

आज रह-रह कर स्ट्रैटफर्ड-आन-एवन की याद आती रही। डायरी लिखते समय मैंने सोचा, ब्रिटेन का वह गाँव कितना गौरवशाली है, जो केवल अंग्रेजी भाषा-भाषियों का ही नहीं, बल्कि समस्त साहित्य-प्रेमियों का हृदय-स्थल बन गया है और इसीलिए शेक्सपियर के ब्रिटेन से सभी को प्यार है।

२१ मई

(१) कॉमनवेल्थ पुस्तकालय में संस्कृत और
हिंदी की पांडुलिपियाँ
(२) "ब्रिटेन पर अमेरिका छा जाना चाहता है"
(३) कुछ पत्रों की ग्राहक-संख्या

आज लंदन की कामनवेल्थ लाइब्रेरी में हिन्दी और संस्कृत की कई अलभ्य पांडुलिपियों को देख कर मन में बड़ी व्यथा हुई। पाकिस्तानी हठ के कारण जहाँ भारत और पाकिस्तान की कई समस्याएँ अब तक नहीं सुलझ सकी हैं, वहीं इस पुस्तकालय से भारतीय पुस्तकों की पांडुलिपियाँ प्राप्त करने के संबंध में भी कोई निर्णय नहीं हो सका है। किन्तु इस पुस्तकालय को देखने के बाद यह भी कहना पड़ता है, कि साम्राज्यवादी लूट की कोई सीमा नहीं होती। अंग्रेज़ शोषकों ने धन-दौलत तो लूटा ही, हमारी सांस्कृतिक निधियाँ भी यहाँ उठा ले आये। संस्कृत, पाली, हिन्दी, तेलगू, तिब्बती, पारसी, अरबी आदि भाषाओं की हज़ारों पांडुलिपियाँ यहाँ संग्रहीत हैं। इन पांडुलिपियों की निश्चित संख्या दस हज़ार से कम न होगी। विषयों की दृष्टि से साहित्य, इतिहास, धर्म, कला, ज्योतिष और वैद्यक आदि कई विषयों की पांडुलिपियाँ यहाँ हैं। संस्कृत पांडुलिपियों की संख्या करीब पाँच हज़ार है।

हिन्दी पांडुलिपियों की संख्या लगभग १५० है। पृथ्वीराज रासो की दो अधूरी प्रतियाँ मैंने यहीं देखीं। हम्मीर रासो की पांडुलिपि और कबीर के पदों का संग्रह भी यहाँ है।

महाकवि केशवदास की कई पांडुलिपियाँ यहाँ उठा लाई गई हैं। बिहारी सतसई की १७९६ की प्राचीन प्रति यहाँ रखी है। हिन्दी गद्य की कुछ बहुत पुरानी पुस्तकें यहाँ हैं, जिनमें एक ओरछा-नरेश महाराज इन्द्रजीत सिंह की 'भर्तृहरिनीति शतक' पर टीका भी है। सुदर्शनदास द्वारा लिखित 'ज्ञान समुद्र' की एक प्रति भी मैंने देखी, जिसमें वैष्णव सन्तों का वर्णन है। अभी उस दिन मैं लंदन के कुछ भारतीय छात्रों से बातचीत करते हुए इस बात

का मजाक उड़ा रहा था, कि 'हिंदी का डाक्टर' बनने के लिए पता नहीं विलायत आना क्यों ज़रूरी समझा जाता है। किन्तु इन पांडुलिपियों को देख कर मुझे स्वीकार करना पड़ा, कि लंदन आये बिना छात्रों को शोध-सम्बन्धी कार्यों में तब तक कठिनाई बनी रहेगी, जब तक इन पांडुलिपियों को हम प्राप्त नहीं कर लेते।

आज शाम को फ्लीट स्ट्रीट के एक पब में कुछ संवाददाताओं से इस सम्बन्ध में बातें होती रहीं, कि क्या कारण है, कि अभी तक ब्रिटेन में भी कोई महिला (महिला सम्बन्धी पत्रों को छोड़ कर) न तो किसी पत्र की सम्पादिका है और न किसी महत्त्वपूर्ण पद पर ही उन्हें काम करने का अवसर मिला है। मुझे बताया गया कि, 'टाइम्स' ने विदेश में एक महिला संवाददात्री को नियुक्त किया है। ब्रिटेन के पत्रकारों का यह ख्याल है, कि बाल स्तम्भों, शृंगार प्रसाधन एवं पारिवारिक-जीवन-सम्बन्धी खबरों को महिलाएँ पुरुषों से अच्छा लिख सकती हैं। 'नेशनल यूनियन आफ जर्नलिस्ट्स' के दस हज़ार सदस्यों में महिलाओं की संख्या पाँच सौ से अधिक नहीं है। जहाँ तक वेतन का सम्बन्ध है, पत्रकारिता के क्षेत्र में पुरुषों और महिलाओं का निम्नतम वेतन बराबर है। किन्तु ऊँचे ग्रेड में महिलाओं की संख्या नगण्य है। हाँ, 'महिला-पृष्ठ' की सम्पादिका को अच्छा वेतन मिलता है। हर प्रतिष्ठित पत्र में 'महिला-पृष्ठ के लिए सम्पादिका नियुक्त होती है। एक संवाददाता ने हँसते हुए कहा, कि महिलाओं के लिए 'उपसम्पादकी' करना आसान नहीं है, किन्तु वे संवाददाता का काम अच्छी तरह कर सकती हैं। 'न्यूज क्रॉनिकल' की संवाददात्री लूसी मोरगन ने ब्रिटिश पत्रकारों के बीच अच्छी प्रतिष्ठा अर्जित की है। महिला पत्रकारों की संस्था का नाम—'दि सोसायटी आव वीमन जर्नलिस्ट्स' है, जिसकी स्थापना १८९४ में 'लेडीज पिक्टोरियल' के मालिक श्री जे० एस० वुड ने की थी। इसके अतिरिक्त अन्य पत्रकार-संगठनों में भी महिला पत्रकार शामिल हैं।

आज एक पत्रकार ने मुझे यह भी बताया, 'पिक्चर पोस्ट' के सम्पादक टेड कॉसल के इस्तीफे के पीछे अमेरिकी दूतावास का हाथ है। इनके पहले इसी पत्र के सम्पादक टाम होपकिन्सन भी त्यागपत्र दे चुके थे। 'पिक्चर पोस्ट' की ग्राहक-संख्या बढ़ाने के लिए इसके मालिकों ने सनसनीखेज़ सामग्री देने के सम्बन्ध में जो नीति ग्रहण की थी, उसकी फ्लीट स्ट्रीट में बड़ी चर्चा है। श्री टेड कॉसल एक सक्रिय सोशलिस्ट तथा पार्लमेंट की सदस्या बारबरा

कॉसल के पति हैं, इसलिए लंदन के पत्रकारों में इस इस्तीफे की विशेष रूप से चर्चा थी। 'पिक्चर पोस्ट' के १० मार्च के अंक में एंड्रू राथ का एक लेख चीनी सेना के बारे में प्रकाशित हुआ था। इस लेख में लेखक ने कुछ ऐसी बातें लिखी थीं, जो अमेरिका की विदेश-नीति के प्रतिकूल थीं। कहा जाता है, कि लंदन-स्थित अमेरिकी दूतावास के एक अधिकारी ने श्री कॉसल से मिल कर उक्त लेख के प्रकाशन पर आपत्ति की थी। 'न्यू स्टेट्समैन एंड नेशन' ने अमेरिकी दूतावास के एक अधिकारी की इस बात को बेचैनी पैदा करने वाली घटना बताया था। इस घटना से ब्रिटिश मज़दूर दल से निष्कासित श्री जिलियाकस का यह आरोप क्या सत्य नहीं साबित होता, कि अमेरिका ब्रिटेन के जीवन पर छा जाना चाहता है।

'पत्र' से बाहर निकल कर मैंने टैक्सी पकड़ी और सीधे बी० बी० सी० के पूर्वी विभाग पहुँच गया। वहाँ कवि श्री गिरिजाकुमार माथुर को देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। बाद उन्होंने मुझे बताया, कि संयुक्त राष्ट्र संघ के ब्राडकास्टिंग विभाग से उनका सम्बन्ध खत्म हो गया है और लंदन होते हुए वह भी स्वदेश लौट रहे हैं। चाय पीने के बाद यहीं से हम लोग हिंदी केन्द्र के उद्घाटन-समारोह में भाग लेने के लिए रवाना हुए। बेनीपुरीजी ने उद्घाटन-भाषण किया। डाक्टर कमल कुलश्रेष्ठ ने अध्यक्ष तथा श्री ओमप्रकाश आर्य ने जनरल सेक्रेटरी की हैसियत से इस केन्द्र के कार्यक्रम पर प्रकाश डाला। लंदन में हिन्दी भाषा और साहित्य का प्रचार करना ही इसका उद्देश्य बताया गया।

श्री गिरिजाकुमार माथुर के साथ 'टेल्स आफ हाफमैन' संगीत-रूपक कार्लटन थियेटर जा कर देखा। श्री गिरिजाकुमार 'मैनहाटन' और अमेरिकी ऐश्वर्य की चर्चा करने में बड़ी दिलचस्पी ले रहे थे। दूसरे साथियों का इससे मनोरंजन हो रहा था। यह ठीक है, कि अमेरिका में गगनचुम्बी अट्टालिकाएँ हैं, बिजली की छलछलाती रोशनी है और डालर की महिमा भी अनोखी है, किन्तु उसी अमेरिका में जन-गायक 'पाल रोबसन' पर पत्थर भी फेंके जाते हैं। इसकी चर्चा शुरू होते ही माथुर चुप हो गये। कुछ भावुक कवि परिस्थितियों के शिकार हो ही जाते हैं।

आज ब्रिटिश पत्रों की ग्राहक-संख्या के बारे में भी कुछ पत्रकारों से बातें हुई। यहाँ पत्रों के ग्राहकों की संख्या निश्चय ही बड़ी सन्तोषप्रद है। इस क्षेत्र में अशिक्षा के कारण हमारे देश के पत्र बहुत पिछड़े हुए हैं। पहले

यहाँ भी ग्राहकों की संख्या कम होने के कारण पत्रों के सम्मुख विकट समस्या उपस्थित रहती थी और मालिकों की ओर से ग्राहक-संख्या बढ़ाने के लिए न जाने कितने अवांछनीय हथकंडे अपनाये गये। किन्तु अब सूरत बदल गई है और कुछ मुख्य-मुख्य पत्रों की ग्राहक-संख्या इस प्रकार है :—

पत्र का नाम	राजनीतिक दृष्टिकोण	ग्राहक संख्या
१. टाइम्स	स्वतंत्र किंतु हर पार्टी की सरकार का समर्थक	२,५५,७८०
२. डेली एक्सप्रेस	स्वतंत्र (साम्राज्यवादी पत्र)	४०,८२,७०६
३. डेली मेल	टोरी विचारों का पत्र	२२,१५,००३
४. डेली मिरर	स्वतंत्र—टोरी पार्टी का विरोधी पत्र	४५,४७,१६१
५. डेली हेरल्ड	सोशलिस्ट	२०,८७,९६३
६. डेली ग्रैफिक	टोरी पार्टी का पत्र	७,८५,८८१
७. डेली टेलीग्राफ	टोरी पत्र	६,७४,५२२
८. डेली वर्कर	कम्युनिस्ट पत्र	१,१७,४०७
९. न्यूज क्रॉनिकल	लिबरल पार्टी का पत्र	१५,६२,८०५
१०. फाइनेंशियल टाइम्स	टोरी विचारों का पत्र	५८,६८६
११. इवनिंग न्यूज	टोरी विचारों का पत्र	१६,९२,६८२
१२. इवनिंग स्टैंडर्ड	साम्राज्यवादी विचारों का समर्थक	८,४१,३२४
१३. स्टार	लिबरल	१२,०१,३०६

लन्दन के इन दैनिक (सवेरे और शाम प्रकाशित होनेवाले दोनों प्रकार के) पत्रों के अतिरिक्त 'मानचेस्टर गार्जियन' ब्रिटेन का एक विश्वविख्यात पत्र है। यह मानचेस्टर से प्रकाशित होता है। उदार विचारों के इस पत्र की ग्राहक-संख्या १,३६,३६६ है। ब्रिटेन में गम्भीर और संयत विचारों के पत्रों की ग्राहक-संख्या कम है। यहाँ कुछ प्रान्तीय पत्रों की ग्राहक-संख्या भी काफी है और उनका सम्मान भी कम नहीं है। कुछ पत्रों को छोड़ कर शेष पत्रों में सनसनीखेज खबर देने का प्रलोभन इतना अधिक है, कि उसकी चर्चा के लिए एक अलग पुस्तक लिखने की आवश्यकता पड़ेगी। साप्ताहिक पत्रों में सबसे अधिक ग्राहक-संख्या (१४,२२,०६३) सचित्र 'पिक्चर पोस्ट' की है। रविवार को प्रकाशित होनेवाले पत्रों में 'न्यूज आफ दि वर्ल्ड' के ग्राहकों की संख्या

८४,२८,१६३ है। इसके बाद 'संडे पिक्टोरियल' का नम्बर आता है, जिसकी ग्राहक-संख्या ५०,१७,९२२ तथा सोशलिस्ट पत्र 'पीपुल' की ग्राहक-संख्या ४९,७६,६४५ है। केवल रविवार को प्रकाशित होनेवाले पत्रों की संख्या ११ है। सहकारिता-आन्दोलन के पत्र 'रेनल्ड्स न्यूज' की ग्राहक-संख्या ७,०८,४८६ है। यह पत्र भी रविवार को प्रकाशित होता है।

ब्रिटेन के मुख्य पत्रों की ग्राहक-संख्या इस बात की द्योतक ज़रूर है, कि यहाँ लोग पत्रों में काफी दिलचस्पी लेते हैं। एक ही पत्र को कई व्यक्ति एक दूसरे से ले कर पढ़ें, यह प्रथा यहाँ नहीं है। साधन-सम्पन्न परिवार में हर व्यक्ति अपनी रुचि का अखबार मँगाता है। और इसी कारण इस छोटे-से भूखंड में पत्रों के ग्राहकों की संख्या अधिक है। अपने देश से अशिक्षा का अंधकार दूर होते ही हमारे पत्रों की ग्राहक-संख्या भी तेजी से बढ़ेगी। परन्तु आज की स्थिति निस्सन्देह खेदजनक है।

२२ मई

(१) चाय के पैकेट और दूध की बोतलें
(२) शृंखलाबद्ध पत्रों का प्रकाशन

हमने आज सर्वप्रथम जे० लायंस कंपनी का चाय का कारखाना देखा। इंगलैंड में चाय नहीं होती, किंतु भारत, लंका और कुछ दूसरे भागों से चाय की पत्तियाँ मँगा कर यहाँ उसे साफ किया जाता है तथा गुण के अनुसार विभिन्न प्रकार के पैकेटों में बंद करके उसे देश-विदेश के बाजारों में भेजा जाता है। भारत से ६० प्रतिशत चाय यहाँ आती है।

कंपनी की ओर से हम लंच पर आमंत्रित थे। भारतीय ढंग का शुद्ध शाकाहारी भोजन विशेष रूप से तैयार करवाया गया था। चार-पाँच प्रकार की सब्जियाँ एक साथ उबाल दी गई थीं। खीर भी थी। यहाँ पापड़ भी मिला, लेकिन कच्चा। इसे देख कर जब एक साथी की हँसी न रुकी, तो कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर को संदेह हुआ, कि कोई न कोई भूल ज़रूर हुई है। जब यह बताया गया, कि पापड़ तलने के बाद खाया जाता है, तो तले हुए पापड़ लाये गये। इस प्रकरण से खाना बनाने तथा परोसने वाली लड़कियों से ले कर लंच में आमंत्रित कंपनी के अन्य अधिकारियों तक का मनोरंजन हुआ। इसी बीच शेरी की सौम्य मादकता ने भी एक महाशय पर ऐसा असर किया, कि उनका पानी का गिलास टेबुल पर लुढ़का और मेजपोश तर हो गया। हास्यपूर्ण वातावरण पैदा कर इस घटना को तत्काल भुला देने की कोशिश की गई। खाना परोसनेवाली लड़कियों ने पलक मारते ही सब चीजें हटा कर टेबुल को फिर से सजा दिया। किंतु उसके बाद सम्भवतः इसी घटना पर वे धीरे-धीरे हँसती भी रहीं।

लंच के बाद हमने लंदन की एक सुप्रसिद्ध डेयरी की कार्य-प्रणाली को देखा। इंगलैंड में दूध की कमी जरूर है परन्तु शुद्ध दूध यहाँ नागरिकों को सुलभ है। इस प्रदेश के ६० प्रतिशत लोगों को एक्सप्रेस डेयरी, कोआपरेटिव डेयरी और यूनाइटेड डेयरी से दूध प्राप्त होता है। इन डेयरियों में

वैज्ञानिक पद्धति से बोतलों में दूध भर कर विभिन्न भागों में पहुँचाया जाता है। बच्चों, बीमारों तथा साधारण लोगों के लिए अलग-अलग किस्म का दूध तैयार करके बोतलों में भरा जाता है। इन पर लगे विभिन्न रंग के लेबुलों से यह ज्ञात हो जाता है, कि किस बोतल में किस प्रकार का दूध है। कीटाणुओं से रहित गर्म किये हुए दूध को ठंडा करके उसे मशीनों से ही बोतलों में भरा जाता है। डेयरी का प्रायः सभी काम मशीनों के जरिये होता है। यूनाइटेड डेयरी में प्रतिघंटा दूध की ७० हज़ार बोतलें तैयार होती हैं। इन्हें विभिन्न स्थानों में पहुँचाने के लिए बाहर कतार की कतार लारियाँ खड़ी रहती हैं।

रात का खाना खा कर साढ़े सात बजे मैं पुनः घूमने निकला। होटल के पास ही कैक्सटन हॉल है, जहाँ ऊधमसिंह ने 'ओ डायर' पर गोली दागी थी। इस हाल में सार्वजनिक सभाएँ अथवा अन्य समारोह हुआ करते हैं।

लंदन पहुँचने के बाद ही मैं यह जानने को उत्सुक था, कि ब्रिटेन में कौन-कौन पत्र किस-किस शृंखला से प्रकाशित होते हैं और इन शृंखलाबद्ध पत्रों की स्थिति क्या है। कुछ जिम्मेदार पत्रकारों से बातचीत करके आज मैंने इस विषय में काफी बातें मालूम कीं।

इस द्वीप में शृंखलाबद्ध पत्रों के प्रकाशन से विचार-स्वातंत्र्य पर ज़रूर असर पड़ता है। एकाधिकार की भावना भी किसी न किसी रूप में काम कर रही है। प्रथम महायुद्ध के बाद १६२१ के अंतिम चरण से यहाँ शृंखलाबद्ध पत्रों का प्रकाशन तेज़ी से शुरू हुआ और १६२१ से १६४८ के बीच शृंखला-बद्ध पत्रों के प्रकाशन के कारण इंगलैंड, वेल्स और स्कॉटलैंड में दैनिक एवं रविवार को प्रकाशित होनेवाले समाचारपत्रों की संख्या १७६ से घट कर १२८ रह गई। लंदन से प्रकाशित होने वाले दैनिक पत्रों की संख्या १२ से ६, प्रांतीय दैनिक पत्रों (प्रातःकालीन) की संख्या ४१ से २५, लंदन से शाम को प्रकाशित होनेवाले दैनिक पत्रों की संख्या ४ से ३, प्रादेशिक सांध्य-दैनिक पत्रों की संख्या ८६ से ७५ और रविवार को प्रकाशित होने वाले पत्रों की संख्या २१ से १६ हो गई है। इसके अतिरिक्त और भी कई छोटे-छोटे पत्रों को बड़े पत्र निगल गये। कुछ प्रांतीय पत्रों को अपना अस्तित्व कायम रखने के लिए शृंखलाबद्ध प्रकाशन का अंग बन जाना पड़ा। यद्यपि स्वतंत्र पत्रों और शृंखलाबद्ध पत्रों में आज भी प्रतिद्वन्द्विता चल रही है, किंतु शृंखलाबद्ध पत्र स्वतंत्र पत्रों के लिए बहुत खतरनाक सिद्ध हो रहे हैं।

ब्रिटेन के १२२ दैनिक तथा रविवार को प्रकाशित होनेवाले १६ पत्रों

में २२ पत्रों (१६ दैनिक तथा ६ रविवारीय) के मालिक लार्ड केम्सले हैं, जिनकी संस्था का नाम 'केम्सले न्यूज पेपर्स लिमिटेड' है। ब्रिटेन में पाँच मुख्य शृंखलाबद्ध-पत्र-प्रकाशन-संस्थाएँ हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं :—

१. केम्सले न्यूजपेपर्स लिमिटेड।

२. एसोशियेटेड न्यूजपेपर्स लिमिटेड।

३. वेस्ट मिनिस्टर प्रेस ग्रुप।

४. प्राविंशियल न्यूजपेपर्स लिमिटेड।

५. हर्म्सवर्थ।

ब्रिटेन के दैनिक एवं रविवार को प्रकाशित होने वाले कुल १२८ पत्रों में ५५ पत्र इन पाँच शृंखलाओं के हाथ में हैं अर्थात् लगभग ४२.९६ प्रतिशत पत्रों पर इनका स्वामित्व है।

इन शृंखलाबद्ध पत्रों के प्रकाशन से विचार-स्वातंत्र्य पर किस प्रकार आघात पहुँचता है, इसका अनुमान इसी बात से किया जा सकता है, कि जितने पाठक एक शृंखला द्वारा प्रकाशित पत्रों को पढ़ते हैं, उन्हें एक ही विचारधारा की चीज़ें रोज पढ़ने को मिलती हैं। किसी भी देश में हर नागरिक से यह आशा करना कि वह पत्रों के विचारों को समझ-बूझ कर तथा विश्लेषण के बाद ग्रहण करेगा, केवल कल्पना-लोक की बात समझी जायगी। अधिकांश नागरिक पत्रों में प्रकाशित सामग्री को ब्रह्मवाक्य मान कर उसे वैसे ही ग्रहण कर लेते हैं। इसी दृष्टि से शृंखलाबद्ध पत्रों का प्रकाशन घातक सिद्ध हो रहा है। ब्रिटेन के दैनिक पत्रों की कुल ग्राहक-संख्या २ करोड़ ८५ लाख ५० हजार २२ से कुछ अधिक है। इसमें केम्सले न्यूजपेपर्स लिमिटेड द्वारा प्रकाशित पत्रों के ग्राहकों की संख्या १२.३ प्रतिशत है। उक्त पाँच शृंखलाओं के अतिरिक्त लंदन एक्सप्रेस न्यूज पेपर्स लिमिटेड के अन्तर्गत जो पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं, उनके ग्राहकों की संख्या १९.८ प्रतिशत है। इन आँकड़ों से यह बात स्वतः प्रकट हो रही है, कि शृंखलाबद्ध पत्र किस प्रकार लोगों पर अपने-अपने विचार थोपने के प्रयास में उनके मानसिक विकास को रोक रहे हैं तथा स्वतंत्र पत्रकारिता की उन्नति में भी बाधक सिद्ध हो रहे हैं।

पार्टियों द्वारा प्रकाशित पत्रों के सम्बन्ध में भी यहाँ शिकायतें हैं। १९५१ के पूर्व जो आँकड़े सुलभ थे, उसके अनुसार टोरी पार्टी की २३० और लेबर पार्टी की २२८ पत्र-पत्रिकाएँ विभिन्न स्थानों से लोकल पार्टियों द्वारा प्रकाशित होती हैं।

लंदन से बारह दैनिक (६ प्रातःकालीन एवं ३ सांध्यकालीन) पत्र प्रकाशित होते हैं। इनके अतिरिक्त यहाँ से १० समाचार पत्र केवल रविवार को प्रकाशित होते हैं। इनमें शृंखलाबद्ध पत्रों की सूची इस प्रकार है :—

१. केम्सले न्यूजपेपर्स लिमिटेड—(क) 'डेली ग्रैफिक एंड डेली स्कैच', (ख) 'संडे क्रॉनिकल', (ग) संडे ग्रैफिक', (घ) संडे टाइम्स।

२. एसोशियेटेड न्यूजपेपर्स लिमिटेड—(क) 'डेली मेल', (ख) 'ईवनिंग न्यूज', (ग) 'संडे डिस्पैच'।

लंदन से प्रकाशित होनेवाले दैनिक पत्रों में कम्युनिस्ट—'डेली वर्कर', जिसका प्रकाशन १६३० में शुरू हुआ था, घाटे में चल रहा है, क्योंकि विज्ञापनदाताओं का सहयोग इसे प्राप्त नहीं है। शृंखलाबद्ध पत्रों के मालिक नफा कमाने के प्रलोभन में सनसनीखेज खबरें छाप कर पत्रोद्योग के आदर्श पर भी पानी फेर रहे हैं।

ब्रिटेन के सामाजिक जीवन में रूढ़िवादी विचारों का प्रभाव कायम रहने का एक कारण वहाँ के अधिकांश पत्रों की वह रीति-नीति है, जिसके अनुकूल खबरों को इस रूप में प्रकाशित किया जाता है कि सामाजिक-क्रान्ति का पथ अवरुद्ध हो। कुछ पत्रों में प्रायः ऐसी ही खबरों को स्थान मिलता है, जिनसे अभिजात-वर्ग एवं थैलीशाहों के सम्बन्ध में लोगों के विचार अच्छे बने रहें और यही कारण है, कि विचार-विनिमय के साधनों पर पूँजीपतियों का नियंत्रण कायम हो जाने का यहाँ विरोध भी अब धीरे-धीरे जोर पकड़ने लगा है। ब्रिटेन की लोकतंत्रवादी परंपरा की दुहाई बहुत दी जाती है, किन्तु शृंखलाबद्ध पत्रों के प्रकाशन से इस आदर्श की हत्या हो रही है।

२३ मई

(१) लंदन टावर
(२) दुकानें
(३) अखबारी कागज़ की समस्या
(४) न्यूज़ एजेंट
(५) नृत्य-नाटिका

लंदन में अभी देखने के लिए कई चीज़ें हैं, मगर सन्तोष इस बात का है, कि बहुत से महत्त्वपूर्ण स्थानों, संग्रहालयों, थियेटरों, क्लबों तथा पबों की झलक अब तक पा गया हूँ। आज मैंने लंदन टावर में दुर्भाग्यग्रस्त रत्न कोहनूर को देखा, जिसके साथ हमारे देश के इतिहास की कई दर्दनाक स्मृतियाँ भी जुड़ी हुई हैं। यह किला इंगलैंड के पुराने इतिहास की लोमहर्षक घटनाओं का ज्वलन्त प्रतीक है। करीब १०७८ में विजेता विलियम (विलियम द कांकरर) ने इस किले को बनवाया था और इसका मनहूस वातावरण एवं इसकी जीर्ण दीवारें पुकार-पुकार कर सामन्ती साजिश और बर्बरता की कथा मेरे कानों में कह रही थीं। यहीं कई सामन्तों को मृत्यु के घाट उतार दिया गया था और कइयों को बन्दी-जीवन व्यतीत करना पड़ा। आठवें हेनरी की छः रानियों में से—एन बोलिन और कैथरिन हावर्ड—दो रानियों को भी यहीं फाँसी की सजा दी गई थी। लेडी जेन ग्रे के रक्त से भी यह कक्ष रँगा हुआ है। न जाने कितनी खूनी कथाएँ यहाँ मुझे सुनने को मिलीं और मैं उन्हें सुनते-सुनते ऊब गया। कुछ देर तक मैं वेक फील्ड टावर के उस कमरे में रुक गया, जहाँ नरेशों के ताज और रत्न संगृहीत हैं। सम्भवतः यहीं अष्टम हेनरी की हत्या की गई थी। क्रामवेल ने शायद बहुत से राजमुकुटों को नीलाम करवा देने के बाद कुछ को गलवा दिया था। मगर इसी किले में क्रामवेल को भी अपने जीवन के दुखदायी क्षण व्यतीत करने पड़े। जहाँ एक ओर यह किला सामन्ती नृशंसता का परिचायक है, वहीं यह साम्राज्यवादी लूटखसोट का भी प्रतीक है। जिस समय मैं 'किंग एडवर्ड द कनफेसर' का ताज देख रहा था, जो यहाँ के संगृहीत राजमुकुटों में सब से पुराना है, तो

एक पर्यटक ने परिहास के स्वर में कहा—"इन ताजों को पैर से उछालने में बड़ा लुत्फ आयेगा।" हो सकता है कि इस कथन में पॉलिश की कमी हो, किन्तु आज के जनवादी युग में इसे बुरा कौन मानेगा? विक्टोरिया के राज्याभिषेक के समय जो ताज तैयार हुआ था, उसे भी मैंने देखा। इस चौकोर ताज में ३,००० हीरे, ३०० मोती तथा और भी बहुत से रत्न जड़े हुए हैं। इसी ताज में ब्लैक प्रिंस की वह रूबो भी है, जिसे पंचम हेनरी ने एगिन कोट की लड़ाई के समय अपने ताज में जड़वाया था। इस ताज को 'इम्पीरियल स्टेट क्राउन' के नाम से पुकारते हैं। दिल्ली दरबार के समय पंचम जार्ज ने जो राजमुकुट धारण किया था, उसी में हमारा कोहनूर दमक रहा था। कुछ अंग्रेज़ स्त्री-पुरुष भी महोत्सव के रंग में डूबे हुए वहाँ राजमुकुटों को बड़ी दिलचस्पी से देख रहे थे। मैं अकेला उनके बीच में घिरा हुआ था और उस समय मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे मुझे उन्होंने इस डर से घेर लिया हो, कि मैं कहीं कोहनूर को ताज से नोच न लूँ। मगर जिस रत्न ने न जाने कितने ताज व तख्त पलट दिये, उसे मैं क्यों नोचने जाता। वह तो यहीं रहे। इससे इस देश की जनता को यह तो मालूम होता रहेगा कि इनके पुराने शासक लुटेरे भी थे। काट-छाँट के बाद भी कोहनूर की चमक अभूतपूर्व है। इसी टावर में लंदन का सबसे पुराना सेंटजान का गिरजाघर है। इस किले के दमघोंटू वातावरण से जब मैं बाहर आया, तो शीतल हवा के झोंकों से मन को ताजगी मिली और भारीपन दूर हुआ।

लंदन टावर से मैं बी० बी० सी० के आफिस गया, जहाँ कुछ परिचित मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। उनके साथ कुछ देर तक हम लंदन के बाज़ार देखते रहे। वेस्ट एंड में पिकाडिली, रीजेंट स्ट्रीट और आक्सफोर्ड स्ट्रीट में लंदन की बड़ी-बड़ी दुकानें हैं। महोत्सव के कारण इस भाग की कुछ दुकानों को अच्छी तरह सजाया गया है और बड़े-बड़े स्टोर सामान से भरे पड़े हैं। मौसम की भाँति यहाँ की दुकानों के इतिहास याद रखने में लोग बड़ी दिलचस्पी लेते हैं। कुछ लोग यह भी कहते हुए मिले, कि यद्यपि इस देश के साहित्यकारों ने यहाँ की दुकानों और दुकानदारों की उपेक्षा की, किन्तु विश्व-इतिहास में ब्रिटेन को प्रसिद्ध बनाने का श्रेय इन्हीं को प्राप्त है। इस सम्बन्ध में विशेष अभिरुचि लेने पर यह भी बताया जायगा, कि बौंड स्ट्रीट की अमुक दुकान ने नेलसन की वर्दी तैयार की थी और दूसरे महायुद्ध के समय सोवियत नौसेना के कुछ अधिकारियों ने भी यहाँ अपने लिए वर्दियाँ तैयार करवायीं। कोई यह

बतायेगा, कि चॉसरी लेन की अमुक दुकान से बैरिस्टर अपनी पोशाक बनवाते हैं और अमुक दुकान ने रानी एन के लिए राज्याभिषेक के हेतु पोशाक तैयार की थी। राज-परिवार के सदस्यों को अपना ग्राहक बनाने के लिए यहाँ कुछ दुकानदारों में काफी होड़ लगी रहती है। आक्सफोर्ड स्ट्रीट की पुस्तकों की एक बड़ी दुकान में साइनबोर्ड पर दुकान के नाम के नीचे यह भी लिखा हुआ देख पड़ा—"नरेश को पुस्तक बेचनेवाली दुकान"। इसी स्ट्रीट की 'यूटीलिटी शॉप' से मैंने भी अपने लिए एक सूट खरीदा। ब्रिटेन में इस प्रकार की दुकानें बड़ी लोकप्रियता प्राप्त कर रही हैं—इनमें बने-बनाये ऊनी कपड़े मध्यमवर्ग एवं श्रमिक-वर्ग को सस्ते दामों पर सुलभ हैं। किन्तु 'यूटीलिटी शॉप' में बिकनेवाले सूट आदि की कीमतें अगले सप्ताह से बढ़ जायँगी, क्योंकि सरकार ने टैक्स बढ़ा दिया है। इस नीति की यहाँ बड़ी आलोचना होती रही और मजदूर दल के समर्थकों में से ही कुछ लोग यह कह रहे थे कि यदि शस्त्रीकरण की नीति न अपनायी गई होती, तो 'यूटीलिटी शॉप' में बिकनेवाले कपड़ों की कीमतें न बढ़तीं।

लंदन की दुकानों में ग्राहकों के साथ बड़ा शिष्ट व्यवहार किया जाता है। लाखों रुपये की पूँजी से खुले इन स्टोरों के विभिन्न विभागों में क्रमशः सामग्रियों को सजा कर बिक्री की जो समुचित व्यवस्था है, उससे मैं बड़ा प्रभावित हुआ। सबसे उल्लेखनीय बात यह है, कि यहाँ रोजगार में काफी हद तक ईमानदारी बरती जाती है। चमड़े की चीज़ें यहाँ बहुत महँगी हैं। साधारण जूते ४०-५० रुपये में मिल रहे थे। सूती कपड़ा भी महँगा है। युद्ध के फलस्वरूप यहाँ पहले चीज़ों की कीमतें बहुत बढ़ गई थीं और यद्यपि उसमें गिरावट आई, किन्तु अभी दाम काफी ऊँचे हैं।

यहाँ के नागरिकों के शरीर पर अच्छे एवं आकर्षक वस्त्र नहीं दिखाई पड़े। ब्रिटेन में अच्छा कपड़ा तैयार होता है, मगर उसे बाहर भेज दिया जाता है। 'नेवी ब्लू' रंग पुरुषों को बड़ा प्रिय है। यहाँ युवतियों के वस्त्र भी आकर्षक नहीं प्रतीत हुये। फीका चेहरा और फीके रंग के वस्त्र। आर्थिक कठिनाई से यहाँ का रंग ही उड़ गया है!

आज फ्लीट स्ट्रीट में हिन्दुस्तान की भाँति अखबारी कागज की कमी की चर्चा होती रही। ब्रिटिश प्रेस के सम्बन्ध में जाँच के लिए नियुक्त रायल कमीशन के सामने भी यह प्रश्न उठा था। युद्ध के पूर्व यहाँ अखबारी कागज की कीमत १० पौंड प्रति टन थी, जो १९४८ में बढ़ कर ४५ पौंड प्रति टन

हो गई थी और १६५१ में इसमें कुछ और वृद्धि हो गई है। इस प्रकार यहाँ अखबारी कागज की कीमतें लगभग पाँचगुना बढ़ गई हैं। इसी कारण ब्रिटेन में भी कुछ अखबार बन्द हो गए हैं। हमारे देश में अखबारी कागज के संकट के कारण कुछ पत्र बन्द हो चुके हैं और कई स्वतंत्र विचारों के समाचारपत्रों के सम्मुख जीवन-मरण का प्रश्न उपस्थित है।

अमेरिका ने सोवियत-क्षेत्र के अतिरिक्त दुनिया के अन्य भागों के अखबारी कागज को खरीद कर यह स्थिति पैदा कर दी है। युद्ध के पूर्व ब्रिटिश पत्रों के लिए प्रति सप्ताह २१,०४६ टन अखबारी कागज की आवश्यकता पड़ती थी, जिसमें साढ़े सत्तर प्रतिशत कागज लंदन के पत्रों में खप जाता था। इस संकटजन्य स्थिति के कारण अखबारों को अपनी पृष्ठ-संख्या घटानी पड़ी। १६४८ में यहाँ अखबारी कागज की खपत घट कर ६,७०० टन रह गई। पृष्ठ-संख्या कम होने के कारण युद्धपूर्व से इस समय ३३ से ४० प्रतिशत तक कम मैटर अखबारों में दिया जाता है।

मुझे बताया गया, कि अमेरिका में अखबारी कागज की जो खपत है, उसमें यदि १० प्रतिशत कमी कर दी जाय, तो दुनिया के अन्य देशों में अखबारी कागज का संकट खतम हो जायगा, मगर अमेरिका सुनता किसकी है।

अधिकांश पत्रों में यूरोप के अतिरिक्त दुनिया के और भागों की खबरें बहुत कम दी जाती हैं। 'लंदन टाइम्स' तथा दो-तीन और पत्रों को छोड़ कर भारत की खबरों के लिए साधारणतः यहाँ के पत्रों में चार-पाँच इंच स्थान दिया जाता है।

न्यूज़ एजेंटों के सम्बन्ध में भी आज मैंने कुछ जानकारी प्राप्त की। एक जमाना था, जब ब्रिटेन में पत्रों की ग्राहक-संख्या बढ़ाने के लिए नये-नये तिकड़म करने के सम्बन्ध में मालिकों में होड़ लगी रहती थी और उपहार भेंट किये जाते थे। मगर अब अच्छे सम्पादन, आकर्षक छपाई और ताजी खबरों से अखबारों की ग्राहक-संख्या अपने आप इतनी तेजी से बढ़ गई है, कि उपहार, भेंट संबंधी प्रणाली अपनाने की कोई ज़रूरत नहीं है। किन्तु वासना की भावना उभारने वाली और सनसनी पैदा करने वाली खबरों को दे कर पत्रों की ग्राहक-संख्या बढ़ाने की मनोवृत्ति अभी दूर नहीं हुई।

अन्य देशों की भाँति व्यावसायिक दृष्टि से न्यूज़ एजेंटों का महत्त्व यहाँ भी अधिक है। पत्रों के वितरण और बिक्री में निश्चय ही ये महत्त्वपूर्ण पार्ट अदा करते हैं। ब्रिटेन में समाचारपत्रों की ग्राहक-संख्या काफी बढ़ जाने के

बाद भी न्यूज़ एजेंटों को खुश रखने और उन्हें समय पर अखबार देने की पूरी कोशिश की जाती है। उनकी कठिनाइयों को दृष्टि में रख कर समय से पत्रों को छापने पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है और एक प्रबन्धक का यह कथन बिलकुल उचित है, कि पत्रोद्योग में जिस संस्था ने समय का मूल्य नहीं पहचाना, उसका भविष्य अंधकारमय ही समझना चाहिए।

आज 'मारकोवा का बैले' (नृत्य-नाटिका) देख कर मैंने यह महसूस किया कि लंदन में अब बैले भी लोकप्रिय हो गया है। फेस्टिवल बैले देखने के लिए दर्शकों की बड़ी भीड़ जमा थी। जिस रूस से पश्चिमी देशों के शासक को बड़ी नफरत है, उसी देश की नर्तकी की कला देखने दर्शक टूट पड़े थे। ओपेरा और बैले का जितना विकास रूस और उसके बाद इटली तथा फ्रांस में हुआ, उतना अन्यत्र कहीं नहीं। सोवियत रूस के समर्थक और विरोधी दोनों यह स्वीकार करते हैं कि नृत्य-नाटिका के क्षेत्र में रूस से कोई देश आगे नहीं है। कुछ समय पूर्व मैंने सुप्रसिद्ध रूसी कवि अलेक्जेंडर पुश्किन की 'परियों की कहानी' पर आधारित 'मृत राजकुमारी और सात वीरों की कहानी' शीर्षक बैले के सम्बन्ध में एक लेख पढ़ा था। परन्तु उस समय बोलशोई थियेटर के बैले नृत्यकारों की कला के सम्बन्ध में कल्पना भी नहीं कर सकता था, मगर आज रूसी नर्तकी पायोव लौवना की कला देख कर मैं अब सोच सकता हूँ, कि बोलशोई थियेटर की कला कितनी श्रेष्ठ होगी। स्टाल थियेटर का रंगमंच सुकुमार सौंदर्य का प्रतीक बन गया था। अच्छे सेटिंग्स से वातावरण प्राणवान तथा मधुर-संगीत से रसमय हो गया था। नर्तक-नर्तकियों की भाव-भंगिमा एवं पैरों की गति दर्शनीय थी। दुर्भाग्य से मेरे आसपास कुछ ऐसे दर्शक बैठे थे, जो कला पर मुग्ध होने के बजाय नर्तकियों की आकर्षक पोशाकों, सुडौल जाँघों और मोहक हावभावों की फुसफुस चर्चा आपस में इस प्रकार करते, कि उससे मेरे साथ ही कुछ और दर्शकों को चिढ़ होती, किन्तु उनमें लड़कियाँ भी शामिल थीं, इसलिए यह अशिष्टता भी हमें बर्दाशत करनी पड़ी।

इंगलैंड में अब बैले और ओपेरा के विकास पर ध्यान दिया जा रहा है। पहले इस क्षेत्र में यह देश बहुत पिछड़ा हुआ था, किन्तु अब वैसी स्थिति नहीं है। एक कला-पारखी दर्शक ने बैले समाप्त होने के पश्चात् मुझे बताया, कि आज भी ब्रिटेन कला के इस क्षेत्र में बोलशोई थियेटर की बात तो अलग है, इटालियन बैले और ओपेरा का मुकाबला नहीं कर सकता।

२४ मई

(१) पुस्तकों की प्रदर्शनी
(२) एक महिला पत्रकार के विचार
(३) भारत में 'अंग्रेज़ी का प्रयोग'
(४) 'आक्सफोर्ड' बनाम 'हाक्सफोर्ड'.

ब्रिटिश महोत्सव के अवसर पर लन्दन के विक्टोरिया और एलबर्ट म्युजियम में पुस्तकों की जो प्रदर्शनी आज मैंने देखी, उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ। नेशनल बुक-लीग के तत्त्वावधान में यह प्रदर्शनी हो रही है। लगभग ७८० पुस्तकों की इस प्रदर्शनी में ब्रिटेन के सभी बड़े कवियों, कथाकारों एवं विविध विषयों के लेखकों की पुस्तकों के मुख्यतः प्रथम संस्करण प्रदर्शित हैं। कुछ पांडुलिपियाँ भी देख पड़ीं। विषय के अनुरूप अलग-अलग भागों में पुस्तकों की इस प्रदर्शनी को आकर्षक रूप प्रदान करके श्री ह्यूम चैंडविक ने निश्चय ही अपनी कलात्मक सूझबूझ का अच्छा परिचय दिया है। दसवीं सदी से आज तक के ब्रिटेन के सांस्कृतिक प्रतिनिधियों को कृतियों की यह प्रदर्शनी अपने ढंग की अनूठी है। कवियों के ग्रंथों में चासर की 'कैंटरबरी टेल्स' नामक पुस्तक, जो कैक्सटेन प्रेस द्वारा १४७८ में छपी थी, यहाँ प्रदर्शित है। कथाकारों की पुस्तकों में सुप्रसिद्ध उपन्यासकार डिकेन्स के 'डेविड कॉपरफील्ड' की पांडुलिपि को भी देखने का सुअवसर मुझे मिला। सेमुअल जॉनसन के जीवन-चरित्र के सुप्रसिद्ध लेखक बासवेल की पांडुलिपि को देखने के लिए अमेरिकी पर्यटक टूट पड़े थे और 'लन्दन जरनल' पर सचमुच अधिकांश दर्शकों की आँखें गड़ी हुई थीं।

बाल-साहित्य की प्रदर्शनी बहुत प्रेरणा प्रदान करनेवाली प्रतीत हुई। इसमें कुछ अलभ्य पुस्तकें प्रदर्शित हैं। लीयर्स की पुस्तक 'नानसेंस', जिसके बारे में यहाँ यह ज्ञात हुआ, कि पूरे ब्रिटेन में इसके प्रथम संस्करण की केवल तीन प्रतियाँ हैं, उसकी भी एक प्रति इस प्रदर्शनी के लिए प्राप्त कर ली गई है। इस भाग में कई दिलचस्प पांडुलिपियाँ प्रदर्शित हैं। मैडम तुसाद की

मोम की मूर्तियों की प्रदर्शनी के 'विभीषिका-कक्ष' के नाम पर यहाँ भी 'चेम्बर आफ हारर्स' (विभीषिका-कक्ष) है, जिसमें भूतों की कहानियों के अपने आप पलटने वाले दृश्यों को देख कर डर पैदा होने की अपेक्षा, वास्तव में दर्शकों का मनोरंजन हो रहा था। पुस्तकों की छपाई और जिल्दसाजो के विविध रूपों की प्रदर्शनी देखने से छपाई के क्रमिक विकास का इतिहास ज्ञात हुआ। ब्रिटेन ने सुन्दर छपाई की दिशा में अच्छी प्रगति की है।

इस पुस्तक-प्रदर्शनी में कई पुस्तकालयों एवं संग्रहालयों से प्रथम संस्करण की पुस्तकें एवं पांडुलिपियाँ प्राप्त की गई हैं। जब इस प्रदर्शनी को देख कर मैं बाहर निकला, तो एक महिला पत्रकार से अचानक भेंट हो गई और उन्होंने ब्रिटेन के महिला-पत्रों के सम्बन्ध में चर्चा छेड़ दी। उन्हें इस बात की शिकायत है, कि कुछ लोग यहाँ महिला-पत्रों की इसलिए आलोचना करने लगे हैं, कि उनमें शृंगार-प्रसाधन पर अधिक लेख होने के साथ ही प्रेम-सम्बन्धी कथाएँ ज्यादा प्रकाशित होती हैं। मैंने जब उनसे पूछा, कि उन्हें क्या पसन्द है, तो उत्तर मिला, "हर वर्ग की महिला फैशन पसन्द करती है। हाँ, यह बात दूसरी है, कि गरीब परिवार में स्त्रियों को अच्छे कपड़े तथा फैशन की दूसरी चीजें सुलभ न हों। यही बात प्रेम के सम्बन्ध में भी लागू होती है। महिलाओं का जीवन प्रेम के रस से भरा हुआ है, इसलिए प्रेम की कथाएँ उन्हें स्वभावतः प्रिय हैं। अतएव महिला-पत्रों में इन दो प्रकार की सामग्रियों को प्रमुखता मिलनी ही चाहिए।" मैं इस महिला पत्रकार से विवाद करने को प्रस्तुत न था, इसलिए 'हाँ', 'ना' कुछ न कह कर मैंने पूछा—"इस समय लन्दन की लड़कियों में सजधज कर निकलने को प्रवृत्ति क्यों खत्म हो गई है और वे पावडर लगाना क्यों भूल रही हैं...। इसके उत्तर में उसने कहा—"लड़ाई के बाद आर्थिक कठिनाई के कारण जहाँ भोजन और वस्त्र की समस्याएँ पैदा हो गई हैं, वहाँ शृंगार-प्रसाधन पर कैसे ध्यान दिया जा सकता है।" इस पर मैंने कहा—"तब शायद आप महिला-पत्रों में इस विषय के लेख दे कर अपनी अतृप्त आकांक्षाएँ पूर्ण करना चाहती हैं।" वह कुछ देर तक उलझन में पड़ी रहीं और फिर यही उद्‌गार प्रकट किया, कि "चाहे दूसरी समस्याएँ कितनी ही विषम हों, महिलाएँ फैशन और प्रेमपूर्ण कथाएँ ही पसन्द करती हैं।" मैंने चलते-चलते कहा—"शायद इनसे पत्रों को बिक्री भी ज्यादा होती है।" यह सुन कर वह बड़ी खुश हुई।

जब से यहाँ आया हूँ अक्सर यह सवाल मुझसे यहाँ के कुछ पत्रकार,

अध्यापक एवं औद्योगिक प्रतिष्ठानों के अधिकारी पूछते रहे हैं, कि नये भारत में अंग्रेजी भाषा की शिक्षा जारी रहेगी अथवा खतम कर दी जायगी। मैंने जब इसके उत्तर में यह कहा—"अभी तो अंग्रेज़ी जूनियर हाई स्कूलों से ले कर विश्वविद्यालयों तक में पढ़ाई जा रही है," तो इससे उन्हें संतोष नहीं हुआ, और वे यही जानने को आतुर रहे, भविष्य में क्या होगा। इसी प्रसंग में संपन्न अंग्रेज़ी साहित्य और अंग्रेज़ी भाषा के व्यावहारिक लाभों की भी मुक्त कंठ से चर्चा कभी-कभी की गई। मैंने एक सुलझे हुए बुद्धिजीवी से जब यह पूछा, कि क्या आप यह नहीं स्वीकार करते, कि अंग्रेज़ी भाषा के प्रयोग से भारतीय राष्ट्र दो भागों में विभक्त हो जायगा—(१) शासकों का भारत और (२) शासितों का भारत। शासकों की भाषा तो अंग्रेज़ी बनी रहेगी, किन्तु जनता की भाषा हिंदी ही रहेगी, क्योंकि भारतीय जनता अंग्रेज़ी को अपनी भाषा नहीं स्वीकार कर सकती और जन-भाषा की उपेक्षा का अर्थ है—जनवादी विचारों की हत्या। तब इस अंग्रेज़ ने भी यह स्वीकार किया, कि अंग्रेज़ी के स्थान पर हिंदी को ही विकसित करने की ज़रूरत है। मैंने यह कहना अनावश्यक समझा, कि अंग्रेज़ी का विकास भी धीरे-धीरे हुआ और राजनीतिक परिस्थितियों ने इसे समृद्धिशाली बनाने में सहयोग प्रदान किया, किन्तु आज भी एक सज्जन ऐसे मिले, जो मुझे यह समझाने का प्रयास करते रहे, कि अंग्रेज़ी, जो भारत की जनता की भाषा नहीं है, भारत की प्रशासकीय भाषा बनी रहे। इस मनोवृत्ति का कारण असल में यह है कि कुछ अंग्रेज़ यह सोचते हैं, कि अंग्रेज़ी का प्रयोग भारत में जारी रहने से वे अपने विचारों का प्रचार आसानी से हमारे बीच करते रहेंगे।

आज सरकारी यात्रा का अन्तिम दिन था। हमें दोपहर के पूर्व सेंट एरमिन्स होटल छोड़ देने की सूचना मिल चुकी थी। इसलिए श्री चमनलाल के साथ होटल जा कर सामान उठा लाया और उनके कमरे में उसे छोड़ कर हम घूमने निकल पड़े। बी० बी० सी० के हिन्दी विभागवालों ने कई बार मुझसे वार्ता प्रसारित करने का आग्रह किया था, किंतु अब तक मैं उनकी इच्छा पूरी करने में असमर्थ रहा। आज 'ब्रिटिश महोत्सव' तथा 'स्ट्रैटफर्ड-आन-एवन' पर टॉक देना मंजूर कर लिया था, इसलिए एक टॉक को रिकार्डिंग आज ही हो गई और दूसरी कल देने की बात कह कर हम बी० बी० सी० के आफिस से अपने हाई कमिश्नर के कार्यालय गये, जहाँ विसा के लिए हम अपने पासपोर्ट दे आये थे। उसे ले कर हम कुछ देर तक इधर-उधर घूमते रहे। बाद शरलाक

होम्स प्रदर्शनी देखने की इच्छा हुई, किन्तु वहाँ पहुँचते-पहुँचते देखने का समय खतम हो गया था, इसलिए बेकर स्ट्रीट के करिश्मे को न देख सका। आज अन्तिम बार जब हाइड पार्क कॉर्नर पहुँचा, तो वहाँ तकरीरें शुरू हो गई थीं और कुछ श्रोता वक्ताओं को बहुत चिढ़ा रहे थे। यहाँ कुछ देर अंग्रेज़ों के हास-परिहासमय जीवन का सुख लेने के बाद मैं टेम्स नदी के किनारे पहुँचा। रात हो गई थी। महोत्सव के कारण टेम्स नदी के किनारे भी बड़ी भीड़ थी। 'मेले के मूड' में लोग उत्साहपूर्वक इधर-उधर घूम रहे थे। सैलानियों के दल के दल मोटर-बोटों में सवार हो कर नदी में विहार कर रहे थे। किनारे कोई युवती गुब्बारा उड़ा रही थी और कोई प्रगाढ़ प्रेमालिंगन में कसी स्वयं दूसरों के लिए आकर्षण-बिन्दु बन गई थी। वहीं कुछ अभावग्रस्त चेहरे भी दिखायी पड़े। नदी के दूसरे तट पर मेला लगने के कारण इस भाग ने बड़ा मनमोहक रूप ग्रहण कर लिया है। बिजली की रंगबिरंगी रोशनी और रंग-बिरंगे कपड़ों में रंग-बिरंगी सूरतें टेम्स नदी की लहरों को इतनी प्रेरणाएँ प्रदान कर रही थीं, कि वे भी इठला-इठला कर अपने मीठे गीतों से वातावरण को रसमय बनाये हुए थीं। लंदन के इस वीरान भाग में भी 'जीवन का संगीत' गूँज रहा था। युद्ध के बाद पहली बार महोत्सव के फलस्वरूप यहाँ के लोगों को चिन्ता के क्षण भुला कर 'पब' से बाहर भी हँसने और आनन्द मनाने का अवसर प्राप्त है।

बेनीपुरीजी अक्सर यह शिकायत करते रहे हैं, कि अंग्रेज़ अपनी भाषा को इतना बिगाड़ कर क्यों बोलते हैं? आखिर जो कुछ कहते हैं, उसे इस प्रकार बोलने से दूसरे उनके कथन को कैसे समझेंगे? मगर उन्हें शायद यह पता नहीं, कि अंग्रेज़ी सीखना जितना आसान है, उतना बोलना नहीं। अपने देश में यह सभी पढ़े-लिखे जानते हैं, कि पूर्वी बंगाल और पश्चिमी बंगाल में बँगला के उच्चारण में बड़ा अन्तर है। यहाँ मध्य इंगलैंड और इंगलैंड में तो अंग्रेज़ी का उच्चारण बदल ही जाता है। लंदन में भी इसके कई रूप हैं। हिंदी भाषाभाषी के लिए यह अनुभव कम दिलचस्प थोड़े ही है। हिन्दी जैसी गरीब भाषा के शब्दों का उच्चारण एक-सा है और इसमें जो लिखते हैं, वही पढ़ते हैं। मगर अंग्रेज़ी तो 'बड़ी भाषा' है न। इसीलिए इसमें 'आक्सफोर्ड' शब्द किसी साधारण नागरिक के मुख से 'हाक्सफोर्ड' और किसी अभिजात-वर्ग के सदस्य के मुख से 'अक्सफ—ड' बन कर फूट निकलता है। और इसीलिए यदि 'मैग्डालेन' केवल 'मॉडलेन' हो जाता है,

तो इसमें आश्चर्य क्या है ? वास्तव में यह महिमा 'एक्सेंट' की है । ईस्ट एंड तथा वेस्ट एंड के उच्चारण में भी कम अन्तर नहीं है और यह विभेद ही यहाँ के जीवन को नीरस बनाये हुए है ।

आज जब मैं सोने गया, तो लगभग १ मास की यात्रा के अनुभवों पर विचार करता रहा । डायरी के पृष्ठों में इन्हें लिख चुका हूँ । हो सकता है, कि कुछ बातें छूट भी गई हों । स्विफ्ट ने नाराज हो कर यह उद्गार प्रकट किया था : "कोयले को छोड़ कर बाकी हर एक अँग्रेज़ी चीज जला डालो ।" यहाँ के साधारण लोगों से मिलने और उनकी बातें सुनने के बाद इस प्रकार की भावना आज मैं व्यक्त नहीं कर सकता । मगर धनवान कारखानेदारों अथवा उनके समर्थकों के हाथ में शासन-अधिकार होने के कारण आम जनता यहाँ भी अपनी स्थिति से क्षुभित है । उन्नीसवीं सदी के प्रथम चरण में विद्रोही कवि शेली ने 'अराजकता का नकाब' शीर्षक अपनी कविता में जो भाव प्रकट किये हैं, उनमें थोड़ा ही परिवर्तन हुआ है और यही ब्रिटेन का सब से बड़ा कलंक है । कई भागों के मजदूरों को देखने के बाद शेली की अनुभूति आज और भी ठोस प्रतीत हुई :—

"तुमको उस भोजन के लिए तरसते ही रहना है—
मतवाला धनवान जिसे है
फेंक रहा अपने उन मोटे कुत्तों के आगे—
जो उसकी आँखों के नीचे
छक कर मस्त पड़े हैं सोते ।"

—शेली—

यदि इस कलंक को ब्रिटेन मिटा दे, तो वह सही मानो में एक बड़ा राष्ट्र कहला सकता है ।

———

२५ मई

(१) कीट्स का स्मारक-भवन
(२) लंदन से ज्यूरिख

लंदन से आज 'यूरोप के कश्मीर' स्विटजरलैंड रवाना होने के पूर्व चहल-पहल के क्षेत्रों से दूर हैम्पस्टेड के शान्त वातावरण में, जहाँ कभी कार्ल मार्क्स लंदन-प्रवास के समय शाम को टहला करते थे, कीट्स के स्मारक-भवन को देख कर हृदय में बड़ी वेदना पैदा हुई। जिस कवि के शब्द जादू करते हैं, जिसकी भावनाएँ रूमानी ख्यालों में उलझ गई हैं और जो सामाजिक पीड़ाओं को भुलाने के प्रयास में स्वयं उनका शिकार हो गया, उसी औद्योगिक-क्रान्ति के युग के प्रेमी गायक की स्मृतियों ने आज इतना दर्द पैदा किया, कि मेरी आँखें गीली हो गईं। स्मारक-भवन के सम्मुख पहुँचते ही मुझे ऐसा लगा, जैसे कीट्स की बिलखती आत्मा आज भी अपने काल्पनिक गीतों के भावों को पकड़ने के लिए चीखती है और फिर ऐसा लगा, जैसे कवि की वाणी स्वयं पुकार रही हो—यदि मैं कुछ वर्ष और जीवित रहता, तो मैं भी यही सीखता, कि कला, कला के लिए नहीं, बल्कि कला जीवन के लिए है।

कीट्स के समकालीन कवि शेली और बायरन को धनाभाव से चिंतित और दुखी न होना पड़ा, किन्तु इस सुकुमार कवि को आर्थिक कठिनाइयों ने भी कम परेशान नहीं किया। स्मारक में संगृहीत निधियों को देखते समय बार-बार व्यथा-भरे कीट्स के जीवन के दर्दनाक चित्र स्मृति-पटल पर खिंच आते और उस समय यह विश्वास पैदा होता, कि यदि इस कवि की मृत्यु छब्बीस वर्ष की अवस्था में न हुई होती, तो वह भी क्रान्ति के गीत गाता। जिस कवि ने प्रचलित काव्य-शैली के विरुद्ध विद्रोह किया और अंग्रेज़ी काव्य-साहित्य को नया रूप एवं नई शक्ल दी, वह सामाजिक अत्याचारों को मिटाने के उद्देश्य से अवश्य परिवर्तन के गीत लिखता।

कीट्स का स्मारक-भवन बहुत साधारण किंतु सौंदर्यानुभूति का बोधक है। कवि जिस घर में रहता था, वह उसका नहीं था, किन्तु अब उसी में एक

नया भाग जोड़ कर उसे स्मारक-भवन का रूप दे दिया गया है। इसमें कवि की जीवन-सम्बन्धी कई वस्तुएँ संगृहीत हैं। स्मारक-भवन में प्रविष्ट होते ही पहले हम उस कमरे में गये, जहाँ कीट्स की रंगीन भावनाओं और कोमल प्यार को अपनाये फेनी ब्राउने रहती थी। पत्नी के इस कमरे में कवि के कई भावोत्पादक चित्र टँगे हुए हैं और उसकी पुस्तकें रखी हुई हैं।

जिस मित्र के सम्पर्क से कीट्स ने अन्तिम रूप से साहित्य-क्षेत्र अपनाया, उसी ले हंट की वह मेज भी स्मारक-भवन में सुरक्षित है, जिसके चारों ओर डिकेंस और थैकरे जैसे अंग्रेज़ी साहित्य के विख्यात कथाकार, प्रेम और विद्रोही विचारों के गायक शेली, निबन्ध-लेखक हैजलिट और चार्ल्स लैम्ब शाम को घंटों कुर्सी पर बैठे कीट्स के साथ बातें किया करते थे। अपने मधुर स्वभाव और निष्कपट जीवन के कारण कीट्स का सम्बन्ध अधिकांश समकालीन साहित्यकारों से बहुत अच्छा था। भवन की दूसरी मंजिल पर कवि का अध्ययन-कक्ष है, जहाँ वे अपने गीत लिखा करते थे। यहाँ कीट्स का एक तैल-चित्र बहुत ही आकर्षक है।

कवि और उसकी पत्नी फेनी ब्राउने का शयन कक्ष भी इसी भवन में है। क्षय-रोग से ग्रस्त कीट्स अपने शयन-कक्ष में सोफे पर पड़े रहते थे और इसी कमरे से बाहर झाँकने पर लॉन में मलबेरी का वह वृक्ष दिखायी पड़ा, जिसकी डाल पर बैठी बुलबुल का मधुर-संगीत सुन कर कवि ने अपनी सुप्रसिद्ध रचना 'ओड-टु-नाइटेंगिल' लिखी थी। कीट्स के हाथ का लिखा वह गीत आज भी इस स्मारक-भवन में सुरक्षित है। और इसे देख कर पुनः ऐसा लगा, जैसे वहाँ का पूरा वातावरण कराह रहा हो।

कवि के घर से लगा हुआ एक म्यूजियम और पुस्तकालय है। इस संग्रहालय में कीट्स के काव्य-संग्रहों की पांडुलिपियाँ, उसके कई पत्र, (कुछ पत्रों से उसकी आर्थिक परेशानियों का आभास भी मिलता है), मेडिकल स्कूल का वह रजिस्टर, जिस पर उसका नाम अंकित है, तथा अन्य कई चीज़ें संगृहीत हैं। इस संग्रहालय के लिए कवि की जीवन-सम्बन्धी बिखरी स्मृतियाँ जमा की जा रही हैं। विवाह के अवसर पर भावुक कवि कीट्स ने अपनी पत्नी फेनी ब्राउने को जो अँगूठी भेंट की थी, उसे देख कर — शादी के लगभग ३ वर्ष बाद ही (१८१८ में विवाह और १८२१ में रोम में मृत्यु) कवि के असामयिक देहावसान से फेनी ब्राउने के जीवन में जो चिर-शून्यता फैल गई थी, उसका दर्द-भरा चित्र आँखों में उतर आया।

कवि के सुनहरे बालों के दो गुच्छे काट कर उसकी पुण्य स्मृति में रखने का विचार चाहे जितना अच्छा रहा हो, मगर उसे देख कर अब बड़ी टीस पैदा होती है। मुझे कोई बता रहा था—यही वह कलम है, जिससे कीट्स लिखता था और यही उसकी दावात है, ये हैं उसके पत्र और ये हैं पुस्तकें जिन्हें कवि पढ़ा करता था, तो उस समय उन्हें देखने के बजाय स्वयं भावुकतावश वहाँ के वातावरण से बातें करने लगता था। म्यूजियम में कीट्स की संगमरमर की एक बड़ी भव्य मूर्ति है।

स्मारक-भवन से बाहर आ कर एक बार पुनः मैंने उस मलबेरी के पेड़ को देखा, जिसकी डालें धरती को छू लेने को उद्यत हैं। फिर भला कवि की भावनाएँ बाद में जीवन को क्यों न स्पर्श करतीं।

कीट्स-स्मारक को देखने के बाद हम वहाँ से सीधे रीजेंट स्ट्रीट पहुँचे। मैंने यहाँ स्मृति के रूप में कुछ चीजें खरीदीं और चमनलाल के साथ दोपहर को एक फ्रांसीसी चित्र देखा। कला की दृष्टि से अंग्रेज़ी फिल्मों की अपेक्षा फ्रांसीसी और इतालवी चित्र मुझे बहुत अच्छे लगे। रीजेंट स्ट्रीट में आज खरीददारों की बड़ी भीड़ जमा थी और इस मार्ग पर घूमते समय सहसा यह बात स्मरण हो आई, कि १८५० के जुलाई मास में इसी स्ट्रीट में मार्क्स ने बिजली की एक ऐसी मशीन देखी थी, जो गाड़ी को खींचती थी और इस आविष्कार से वाष्पयुग से आगे बढ़ने की प्रेरणा प्राप्त कर उस महान् समाज-शास्त्री ने यह उद्गार प्रकट किया था : "आर्थिक क्रांति के बाद राजनीतिक क्रान्ति होगी, क्योंकि दूसरी क्रान्ति पहली की केवल अभिव्यक्ति है।"

तीसरे पहर बी० बी० सी० के पूर्वी विभाग जा कर शेक्सपियर के गाँव पर टॉक दे आया। वहीं से कई परिचितों के साथ श्री भूपेन्द्र हूजा के घर गया। श्रीमती उषा रानी ने लंदन से विदा होते समय आज रसगुल्ले खिला कर शेष यात्रा को भी मधुर बना दिया। हूजा परिवार और चमनलाल तथा ओमप्रकाश और उनकी पत्नी कमल ने अपने देश से बहुत दूर इस लंदन में अपने मधुर व्यवहार से ऐसा वातावरण पैदा कर दिया था, जिससे कभी यह अनुभव ही न हुआ, कि मैं विदेश में हूँ। साथी चमनलाल ने तो अपना बहुमूल्य समय मुझे कई स्थानों को दिखाने में व्यतीत किया। इस यात्रा में हम दोनों इतने निकट आ गये, कि अब उन्हें 'धन्यवाद' देना अनुचित प्रतीत होता है। इस द्वीप में यह शब्द भी टकसाली शिष्टाचार का द्योतक बन गया है।

परिचितों से विदा ले कर मैं बेनीपुरीजी को साथ लिये हवाई अड्डे

पहुँचो। रात में ठीक सवा नौ बजे (निर्धारित समय से एक घंटा बाद) हमारा विमान स्विटजरलैंड के सुप्रसिद्ध नगर ज्यूरिख की ओर उड़ा। विमान के साथ आकाश में उड़ते हुए मेरी आँखों में ब्रिटिश-यात्रा के विविध अनुभवों के चित्र भी तैरने लगे। ब्रिटेन के जीवन में बड़ा विरोधाभास है। सेंटपाल के गिरजाघर का वह उन्नत गुंबज और उसी के पास ध्वस्त इमारतें, हाइड पार्क कॉर्नर के वक्ताओं और श्रोताओं का हास्यप्रिय जीवन! किन्तु सारे देश के जीवन में अजीब सूनापन--जैसे मौन रहने पर ही विचार छिपे रहेंगे। जनता तीसरे महायुद्ध की चर्चा से भयभीत, किन्तु शासक-वर्ग हथियारबन्दी की होड़ में संलग्न है। पारिवारिक जीवन की पवित्रता भी है, पर साथ ही आर्थिक परवशता के कारण हाइड-पार्क और पिकॉडिली में निर्लज्जतापूर्वक स्त्रियाँ पुरुषों का पीछा करती हैं। नागरिकों की कर्तव्यपरायणता और अनुशासनप्रियता सराहनीय है, मगर अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में शासकों की अनैतिकता ब्रिटेन के लिए कलंक है। वाणिज्य-व्यवसाय में बड़ी ईमानदारी है, किन्तु उद्योगपतियों में दूसरे देशों के शोषण की भावना प्रबल है और अभी हमारे ही देश में कई ब्रिटिश फर्में करोड़ों रुपया कमा रही हैं। लंदन की इमारतों की काली दीवारें मनहूस मालूम पड़ती हैं, मगर खिड़कियों पर लगे परदे बड़े खूबसूरत लगते हैं। 'पबों' में जिन्दगी हँसती है, परन्तु केवल बियर पीनेवालों की भीड़ यह बात प्रकट कर देती है, कि ब्रिटेन भी अब आर्थिक कठिनाइयों से ग्रस्त है।

लंदन की यातायात-व्यवस्था निस्सन्देह बहुत प्रशंसनीय है। किराया कम और दूर-दूर आने-जाने के लिए, बस, ट्राम, ट्यूब, टेक्सी—सब कुछ सुलभ! प्रतिदिन लगभग १ करोड़ व्यक्ति इन यातायात के साधनों से आते-जाते हैं। मगर शाम को पाँच-छः बजे के बीच ट्यूब में इतनी भीड़ होती है, कि कभी-कभी धक्के खाने पड़ते हैं। अब लंदन से दूर हूँ, किन्तु एस्क्लेटर (ट्यूब-स्टेशन के प्लेटफार्म पर पहुँचने के लिए विद्युत्-चालित सीढ़ियाँ) पर चढ़ने-उतरने में जो रस मिलता था, उसको भला मैं कैसे भुला सकता हूँ? मौसम की चर्चा कुछ दिनों बाद मैं अवश्य भूल जाऊँगा, क्योंकि भारत में इस प्रसंग को सुन कर लोग हँसेंगे। किन्तु ब्रिटेन जैसे अनिश्चित मौसम वाले देश में इसकी चर्चा स्वाभाविक है। अपने सब विरोधाभास के बावजूद शेक्सपियर के देश में प्रेरणा प्राप्त करने की क्षमता है और यही क्या कम है?

अचानक विचार-प्रवाह रुक गया। कुहरे के कारण वायुयान संकट में फँस गया था। यात्रियों को 'लाइफ जैकेट' पहनने की कला बतायी जाने लगी।

कुछ यात्री ताबड़तोड़ शराब पी कर उस स्थिति को भुलाने का प्रयास करने लगे। एयर होस्टेस बार-बार क्रॉस (ईसाई धर्म का चिह्न) को स्पर्श कर रही थी और उसका गुलाबी चेहरा फीका पड़ गया था। बेनीपुरीजी 'हनुमान चालीसा' का पाठ करने लगे। सत्य बात तो यह है, कि उस समय सब के चेहरे मुरझा गये थे। कुछ देर बाद जब विमान संकट से बाहर हो गया, तो सब के चेहरे खिल उठे। यात्रियों को कॉफी पिला कर एयर होस्टेस ने अपनी प्रसन्नता प्रकट की। रात में आल्प्स पर्वत का धवल सौंदर्य बड़ा आकर्षक प्रतीत हुआ। विमान से स्विटजरलैंड की जो पहली झलक मिली, वह भी बहुत मीठी थी।

आधी रात के बाद हम ज्यूरिख के हवाई अड्डे पर पहुँचे। पहले से यहाँ किसी होटल में कमरा रिजर्व नहीं करवाया था, क्योंकि बेनीपुरीजी ने यह आश्वासन दिया था, कि डाक्टर सत्यनारायण सिनहा वहाँ सब प्रबन्ध किये रहेंगे। मगर जब डाक्टर सिनहा हवाई अड्डे पर न मिले, तो बेनीपुरीजी बहुत परेशान हुए। मैं भी चिन्तित था, परन्तु यदि विदेश-यात्रा में ऐसा अनुभव न हो, तो सफर का लुत्फ ही क्या। अन्त में बी० ओ० ए० सी० के कार्यालय पहुँचने के बाद ज्यूरिख के एक सब से बड़े होटल में हमारे लिए कमरे का प्रबन्ध हो गया। इस होटल का खर्च अधिक है। मगर लगभग दो बजे रात को यहाँ जो कमरा मिला, वह खर्च की तुलना में कुछ नहीं।

इंगलैंड से दूर अब मैं यूरोप के उस देश में पहुँच गया हूँ, जो स्वयं अकेला रहना चाहता है, किन्तु जिसे देखने के लिए विलासी पर्यटकों की भीड़ लगी रहती है।

२६ मई

झीलों के देश स्विटजरलैंड में

(१) शिक्षा और उद्योग का केन्द्र—ज्यूरिख
(२) 'बर्न' की रूमानी संध्या

सुबह नींद टूटते ही यह ख्याल हुआ कि मैं उस देश में पहुँच गया हूँ, जिसके उद्यानों में मधुर अंगूर की बेलें फैली रहती हैं, जहाँ आल्प्स का धवल सौंदर्य हर देश के पर्यटकों को अपनी ओर आकृष्ट करता है, जहाँ हिम-नदियों को देखते ही क्लान्ति मिट जाती है और जहाँ झीलों की लहरें सुन्दरियों के अंग-विक्षेप को निहार-निहार कर प्रेम-संगीत गाया करती हैं।

हाँ, तो अब मैं कार्ल स्पिटलर (स्विटजरलैंड के महान् कवि, जिन्हें १९१९ में नोबेल पुरस्कार मिला था) के कमनीय और भावोत्पादक देश में, जिसे झीलों का देश भी कहते हैं, पहुँच गया हूँ। खिड़की से बाहर झाँक कर स्विटजरलैंड की शैक्षिक राजधानी ज्यूरिख के स्वस्थ नागरिकों को जब मैंने काम पर इधर-उधर जाते देखा, तो सहसा मुझे यह स्मरण हो आया कि यह छोटा देश उद्योग-धंधों के क्षेत्र में युद्ध-पूर्व के ब्रिटेन और जर्मनी के समान यूरोप में अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

जर्मनी, आस्ट्रिया, इटली और फ्रांस से घिरा हुआ झीलों जंगलों और हिमाच्छादित पर्वतमालाओं के सौंदर्य को समेटे मध्य यूरोप का यह छोटा-सा देश अपने अध्यवसाय और विवेक के कारण दुनिया में प्रख्यात है। यद्यपि यहाँ की कुल आबादी लगभग ४७ लाख है, किन्तु औद्योगिक विकास के कारण कई बड़े-बड़े नगर इस देश में खड़े हो गये हैं। फिर भी अपने देश की भाँति आबादी का बड़ा भाग यहाँ भी गाँवों में बसा हुआ है। दो महायुद्धों में तटस्थता की नीति अपना कर विनाश से यह देश बचा रहा और यही क्या कम कौतूहल की बात है।

होटल में जब मैं जलपान करने गया, तो इंगलैंड और स्विटजरलैंड के

होटलों का अंतर प्रकट होने के साथ ही दोनों की खाद्य-स्थिति का भी तुलनात्मक परिचय मिला। ब्रिटेन की भाँति यहाँ भी बाहर से खाद्यान्न मँगाना पड़त ।है, मगर नाश्ते के समय जिस प्रचुर मात्रा में इस स्विस होटल में मेज पर चीजें दिखायी दीं, उससे यही आभास मिला कि यहाँ खाने-पीने की चीजों की कीमतें अवश्य अधिक हैं, परन्तु इच्छानुकूल किसी भी मात्रा में कोई भी वस्तु ली जा सकती है'। चाहे जितने अंडे लीजिए या रोटियाँ—मात्रा पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है। होटल के प्रबन्ध का तो कहना ही क्या! आराम और सुख-सुविधा की इतनी अच्छी व्यवस्था कि कभी शिकायत की गुंजाइश नहीं।

जलपान के बाद जब हम घूमने निकले, तो होटल के बाहर ही बस-स्टेशन देख पड़ा, जहाँ से पर्यटकों को ज्यूरिख के विभिन्न दर्शनीय स्थानों को दिखाने के लिए बसें छूटती हैं। छः-छः फ्रैंक के टिकट खरीद कर हम वहीं बस की प्रतीक्षा में कुछ देर तक टहलते रहे। रेलवे-स्टेशन भी बिलकुल पास ही था। वहीं किताबों की दुकान पर हम 'गाइड बुक' खरीदने के लिए गये। पुस्तकें बेचनेवाली लड़कियाँ अंग्रेजी न जानने के कारण हमारी बात नहीं समझ पा रही थीं। दो अश्वेत पर्यटकों को देख कर कुछ लोग वहाँ जमा हो गये। ब्रिटेन में कोई इस प्रकार की बातों में दिलचस्पी नहीं प्रकट करता। किन्तु यहाँ मैंने यह अनुभव किया कि अपने देश की भाँति यहाँ के लोग भी आगन्तुकों से मिल कर बात-चीत करने में बड़ी अभिरुचि प्रकट करते हैं। यहाँ संकेत की ही भाषा काम में आई। गाइड बुक खरीदने के बाद हम बस में जा कर बैठ गये। बस हमें घुमाने चल पड़ी और अंग्रेजी जानने वाला मार्ग-दर्शक ऐतिहासिक इमारतों तथा महत्त्वपूर्ण स्थानों का इतिहास बताता जा रहा था। मकानों की दीवारें चमचमा रही थीं। घड़ियों की बड़ी-बड़ी दुकानें तथा विविध सामग्रियों से भरे अच्छे स्टोर भी दिखायी पड़े। ज्यूरिख शिक्षा का केन्द्र होने के साथ ही व्यवसाय और उद्योग का भी केन्द्र है। मुख्य सड़कों के दोनों ओर पेड़ों की दोहरी कतारें और उनकी अच्छी तरह कटी-छटी डालों की हरित शोभा में मन उलझ जाता।

बस्ती से कुछ दूर जब एक छोटे से जंगल के बीच हमारी बस पहुँची, तो चीड़, सनोवर, बलूत, मैपिल और 'बीच' के वृक्षों से भरे उस वन-प्रदेश की छटा इतनी मनोरम प्रतीत हुई कि कुछ दूर आगे जाने के बाद एक क्लब के पास बस रुकवा कर हम लोग उतर पड़े। वहाँ खेलने के लिए बड़े-बड़े मैदान बने थे और फूलों से धरती पटी हुई थी। वहीं स्वच्छ सरोवर

में एक युवक और युवती जल-क्रीड़ा में निमग्न थे । बेदिंग कस्ट्यूम पहने रमणी के खुले शरीर की शोभा जल के शीशे से पारिजात की भाँति झल-झल झलक रही थी । कटि और उरोजों को ढके जब वह सरोवर से बाहर निकल कर खड़ी हुई, तो सद्यःस्नाता उस कामिनी की कान्ति कुछ पर्यटकों को तालाब के किनारे खींच ले गई । च्यांग-काई-शेक के समर्थक दो चीनी मेरे पास ही खड़े थे और वे युवती का फोटो खीचने के लिए इस तेजी से आगे दौड़े कि एक तो सीढ़ी से फिसल कर गिर पड़ा, और जब सब लोग खिलखिला पड़े, तो उनकी लज्जा दूर करने के लिए युवती ने निकट आ कर फोटो खिंचवा लिया ।

ज्यूरिख की फेडरल इंस्टीट्यूट ऑफ टेकनॉलॉजी के विभिन्न विभागों की शानदार इमारतों को देखा जिसकी स्थापना १८५५ में हुई थी और अब यहाँ टेकनिकल विषयों की शिक्षा हजारों छात्रों को देने के लिए करीब ३५५ अध्यापक हैं । ज्यूरिख विश्वविद्यालय को इस बात का गर्व है कि यहीं स्विटज़रलैंड के बड़े-बड़े विद्वानों ने शिक्षा ग्रहण की । इस देश के महान् कवि कॉर्ल स्पिटलर ने भी इतिहास और कानून की शिक्षा यहीं प्राप्त की थी । मुझे कुछ छात्रों से बातचीत करने के बाद यह खुशी हुई, कि महात्मा गाँधी, टैगोर, नेहरू के प्रति इनके मन में बड़ी श्रद्धा है । यहाँ कई औद्योगिक प्रतिष्ठान भी हैं ।

जब हम ज्यूरिख की लुभावनी झील के किनारे पहुँचे, तो ऐसा मालूम हुआ कि यही इस नगर के सौंदर्य की आत्मा है । झील के दोनों ओर दूर पहाड़ियाँ तथा किनारे-किनारे वृक्षों की पंक्तियाँ और फूलों की क्यारियाँ तथा वृक्षों की सघन छाया में सजी-सजायी मेजों के चारों ओर कुर्सियाँ और यहाँ बैठ कर मधुपायी सैलानियों का दल रूप-रस पीने में जिस प्रकार डूबा हुआ था, उसे देख कर इस कथन को कौन अस्वीकार कर सकता है कि मौज उड़ाने के लिए ही पर्यटक स्विटजरलैंड आते हैं । झील में छोटी-बड़ी नौकाएँ रंगीन पालें तान कर इधर-उधर दौड़ रही थीं और कुछ पर्यटक रमणियों को साथ लिये या तो झील के किनारे टहल रहे थे अथवा मोटर-बोटों में बैठ कर उसकी रूमानी लहरों से खेल रहे थे ।

इस नगर की झलक पा लेने के बाद जब हम होटल पहुँचे, तो ज्ञात हुआ कि बर्न से डाक्टर सत्यनारायण सिनहा ने फोन किया था । सुबह घूमने जाने के पूर्व यहाँ से अपने दूतावास को ट्रंक-कॉल द्वारा बेनीपुरी जी ने यह सूचित कर दिया था कि डाक्टर सिनहा को बता दिया जाय कि हम लोग

ज्यूरिख पहुँच गये हैं और होटल 'स्वेन्नोफ' में ठहरे हुए हैं। डाक्टर सिनहा के इच्छानुसार अब हम बर्न रवाना हो गये।

हम सेकंड क्लास में सफर कर रहे थे। यहाँ रेल में तीन श्रेणियाँ हैं। पहले और दूसरे दर्जों में गद्देदार कुर्सियाँ और तीसरे दर्जे के डिब्बों में साफ-सुथरी लम्बी-लम्बी बेंचे। डिब्बे काफी अच्छे और खूबसूरत हैं। यहाँ समस्त रेलें अब विद्युत्-शक्ति से चलने लगी हैं। द्वितीय महायुद्ध के समय कोयले का आयात बन्द हो जाने से यहाँ की सरकार ने इस कठिनाई को दृष्टि में रख कर विद्युत्-शक्ति से रेलों के चलाने की नीति ग्रहण की और अब तो पूरे देश में विद्युत्-गाड़ियाँ दौड़ने लगी हैं। रेल का किराया अपने देश से बहुत अधिक है। हमारे डिब्बे में एक स्विस व्यवसायी बैठे थे, जो अंग्रेजी बोल लेते थे और इनसे बातचीत करने व स्विटरलैंड के प्राकृतिक दृश्यों को देखने में बर्न तक की यात्रा खुशी-खुशी पूरी हुई।

बर्फीली पहाड़ियों की गोद में गुल्मों से घिरे मनोरम तथा फसलों से भरे गाँव, जिनमें स्त्रियों के साथ बच्चे भी काम कर रहे थे, दिखायी पड़े। रह-रह कर नदी-नालों, फूलों और वृक्षों से ढके भू-प्रदेश को देख कर मन आनन्द से गद्गद हो गया। उक्त स्विस व्यवसायी ने महात्मा गांधी की तुलना ईसा से करते हुए हमारे देश के पुराने संस्कृत-साहित्य की मुक्त कंठ से प्रशंसा की तथा यह भी बताया कि गीता के दर्शन से वह बहुत प्रभावित है। फिर जब कश्मीर के सम्बन्ध में बातचीत शुरू हुई, तो उसे यह जान कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि भारत में अभी चार करोड़ से अधिक मुसलमान हैं। वहीं बैठे एक स्विस जर्मन ने हैरत में आ कर पूछा—"क्या अभी हिंदुस्तान में मस्जिदें खड़ी हैं?" मैंने जब बताया कि हर नगर और मुसलमानों की आबादी वाले बड़े गाँवों में मस्जिदें हैं; भारतीय संविधान के अनुसार हर जाति और हर धर्म के लोगों को समान अधिकार प्राप्त हैं; फौज और सिविल सर्विसेज़ में बड़े-बड़े पदों पर मुसलमान कार्य कर रहे हैं; केन्द्रीय एवं राज्य-मंत्रिमंडलों में कई मुस्लिम मंत्री हैं—तो वह आश्चर्यविस्फारित नेत्रों से मेरी ओर देखने लगा। मैंने विस्तार के साथ यह भी बताया कि किस प्रकार अचानक कश्मीर पर हमला कर के पाकिस्तानी सैनिकों ने निर्दोष कश्मीरियों का रक्त बहाया एवं स्वर्गोपम कश्मीर की घाटी में बर्बरतापूर्ण कार्य किये। मैंने जब यह कहा कि कानूनी दृष्टि से कश्मीर भारत का अंग है और शामिलनामे के सम्बन्ध में ब्योरे से सभी बातें बतायीं, तो इन स्विस नागरिकों ने यह स्वीकार किया कि कश्मीर के बारे में

यहाँ जो गलत प्रचार किया जा रहा है, उससे लोग बड़े भ्रम में हैं। हमने जब उन्हें इलायची और डली दी, तो वे समझ नहीं पाये कि कैसे खाया जाय। बाद में जब उन्होंने हमारे कथनानुसार खाया, तो इलायची उन्हें बहुत पसन्द आई। स्विस व्यवसायी ने बड़ी प्रसन्नता से कुछ इलायचियाँ अपनी लड़की के लिए भी रख लीं। हिटलर की चर्चा चलते ही उन्होंने कहा—"वह श्रेष्ठ जर्मन जाति का सबसे बड़ा दुश्मन था। स्विटजरलैंड के अधिकांश जर्मन उसे घृणा की दृष्टि से देखते थे। उसी के कुकृत्य से महान् जर्मन राष्ट्र पुनः गर्त में पड़ा कराह रहा है।" इसके बाद ही उन्होंने कहा—"···परन्तु पराक्रमशाली एवं अध्यवसायी जर्मन जाति की महत्ता रौंदी नहीं जा सकती।" विश्व-शान्ति के सम्बन्ध में बातचीत चलने पर उन्होंने रूस और अमेरिका दोनों को गालियाँ दीं, मगर इसके साथ ही उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा—"अमेरिका यूरोप के आर्थिक-जीवन पर छा जाना चाहता है और यूरोप की जनता को यह स्थिति अप्रिय है।" भारत की वैदेशिक-नीति की उन्होंने बड़ी प्रशंसा की। इन स्विस नागरिकों से बातचीत करके मैंने यह महसूस किया कि यूरोप के लोग अन्तर-राष्ट्रीय गुटबन्दियों से दुःखी हैं, क्योंकि वे शान्ति चाहते हैं और गुटबन्दी से युद्ध की आशंका है।

बर्न स्टेशन पर डाक्टर सिनहा से भेंट न हो सकी। जब हम अपने दूतावास पहुँचे, तो पता चला कि वे हमें लेने स्टेशन गये हैं। हम वहाँ दूतावास के कार्यकर्ताओं से बात कर ही रहे थे, कि वे स्टेशन से निराश वहाँ पहुँचे, परन्तु हमें यहाँ देख कर बड़े प्रसन्न हुए। यहाँ देवनागरी में 'भारत की लिगेशन' की तख्ती देख कर हमें भी खुशी हुई।

डाक्टर सिनहा का बँगला शहर से कुछ दूर है। वहाँ से ग्रामीण जीवन का दृश्य दिखायी पड़ता है। उनकी नौकरानी एक जर्मन बुढ़िया है, जो अंग्रेजी बिलकुल नहीं जानती। हम लोग जब हिन्दी में बातें करते, तो वह बिना समझे हँसने लगती। मगर है वह बड़ी कर्तव्यपरायणा।

शाम को हम लोग घूमने निकले। पहले बर्न के पास ही एक पहाड़ी की ओर गये जहाँ स्विटजरलैंड की सबसे ऊँची चोटी देख पड़ी। यह १५,२१६ फुट ऊँची है। जिस प्रकार इस देश में कई जातियाँ निवास करती हैं, उसी प्रकार यहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य में भी बड़ी विविधता है। आसमान में बादल छाये हुए थे और हमारे सामने, जहाँ तक दृष्टि जाती, बर्फीली चोटियाँ दिखायी पड़तीं। यद्यपि कश्मीर की तुलना में स्विटजरलैंड का प्राकृतिक-सौन्दर्य नगण्य

है, किन्तु इन्सान के परिश्रम और समृद्धि ने इस देश को बहुत सुघर बना दिया है।

हमने उड्डयन-शिक्षण के एक क्लब को देखा। वहाँ छोटे-छोटे कुछ विमान मैदान में खड़े थे। इन वायुयानों द्वारा पहाड़ी दृश्यों को दिखाने का प्रबन्ध है। वहाँ से हम आरे नदी के तट पर गये और काफी देर वहाँ टहलते रहे। रोन, राइन, और आरे नदियों की सुरम्य घाटियों में यह देश बसा है। दूर दृष्टि जाते ही वनों की शोभा देख पड़ती। इस देश के करीब चौबीस प्रतिशत भू-भाग में जंगल ही जंगल हैं। इसीलिए कुछ लोग इसे 'वनों का देश' कहते हैं।

जिस प्रकार 'टेम्म' लन्दन के बीच से हो कर बहती है, उसी प्रकार 'आरे' नदी स्विटजरलैंड की राजधानी बर्न के बीच से हो कर बहती है। इस नदी के जल से खतरे की आशंका रहती थी, इसलिए जगह-जगह इसके जल को झील के रूप में रोका गया है। नगर जाने के पूर्व हम एक गाँव में गये। डाक्टर सिनहा ने बताया कि यहाँ भी बड़े स्वस्थ और पुष्ट घोड़े होते हैं। अस्तबल में बिजली जलते ही जब घोड़ों के पुष्ट पुट्ठे दिखायी दिये, तो ब्रिटेन के घोड़े याद आ गये। यहाँ घोड़ों से खेतों में काम लिया जाता है। गाँव वाले हमें घूर-घूर कर देख रहे थे। डाक्टर सिनहा ने जर्मन भाषा में उन्हें बताया कि भारत से हम लोग उनके देश को देखने यहाँ आये हैं। कुछ ग्रामीणों के चेहरे फीके प्रतीत हुए मगर कुछ काफी प्रसन्न देख पड़े। आरे नदी के किनारे-किनारे हमारी मोटर चल रही थी। नदी से लगी साफ-सुथरी सड़क पर सैलानियों के दल के दल देख पड़े। युवतियाँ चिड़ियों की भाँति फुदक रही थीं। बच्चे किलकारी मार कर उछल रहे थे। वृद्ध जवानी खो जाने के बाद भी ललचायी आँखों से बिजली की छलछलाती रोशनी में नदी की उछलती लहरों को देखते और कभी अपनी वृद्धा संगिनियों का चुम्बन ले लेते। प्रौढ़ाएँ तो चंचलता के प्रदर्शन में युवतियों से होड़ ले रही थीं। और युवक वातावरण की सारी रंगीनी को प्रगाढ़ आलिंगन के द्वारा अपने में समेट लेना चाहते थे। नदी के किनारे-किनारे हास-परिहास एवं कल्लोल के मदिर प्रवाह में पर्यटक बहे जा रहे थे। यही तो स्विटजरलैंड का सुख है, जिस पर लाखों रुपया फूँक कर विलासी पर्यटक घर जाते ही पुनः यहाँ के अस्पतालों, सेनिटोरियमों में भरती होने पहुँच जाते हैं। नदी के किनारे-किनारे तीन मील लम्बी इस सड़क पर शाम को आमोद-प्रमोद का वातावरण पैदा हो जाता

है। एक जगह नदी से अलग लम्बे-लम्बे सरोवर बना दिये गये हैं, जिनमें छन-छन कर नदी का पानी आता है। इन तालाबों में नहाने के लिए रमणीक घाट बने हुए हैं, जहाँ स्त्री-पुरुष साथ-साथ स्नान करते हैं।

बर्न में एक जगह नदी में बाँध द्वारा झरने का दृश्य पैदा किया गया है। यहाँ बाँध के ऊपर बल खा कर गिरती हुई आरे की फेनिल धाराएँ और उन पर बिजली का प्रकाश बड़ा आकर्षक दृश्य उपस्थित करता है। पास ही साकी के नाजुक हाथों से मधुपान की भी व्यवस्था है। वहाँ कुछ युवतियाँ मधु पी कर इस प्रकार मतवाली हो गई थीं कि उनके होठों की लालिमा नेत्रों में पहुँच गई थी और उस समय मुझे महाकवि 'भारवि' की यह उक्ति याद आ गई :—

लोचनाधरकृताहृतरागा वासिताननविशेषितगन्धा।
वारुणी परगुणात्मगुणानां व्यत्ययं विनिमयं तु वितेने॥

—'किरातार्जुनीयम्'

[मदिरा ओठों की लालिमा नेत्रों में उत्पन्न कर रही है और मुख को सुगन्धित करके स्वयं भी मुख की सुगन्धि को ग्रहण कर रही है—इस प्रकार वह परगुणों और आत्मगुणों का व्यत्यय अथवा विनिमय कर रही थी—यह समझ में नहीं आता।]

इसी स्थान से नदी के उस पार स्विटजरलैंड की संघीय पार्लमेंट का भवन और गिरजाघर के ऊँचे कंगूरे बड़े भव्य लग रहे थे। इन खूबसूरत इमारतों की भव्यता बढ़ाने के लिए रात में रोशनी का समुचित प्रबन्ध है। जब हम लोग वहाँ पहुँचे तो काफी लोग इन भवनों को देखने वहाँ जमा थे।

संघीय पार्लमेंट भवन इस देश में बसने वाली विभिन्न जातियों की एकता का प्रतीक है। बाइस प्रादेशिक इकाइयों से स्विस फेडरेशन का निर्माण हुआ है और इन इकाइयों से नेशनल कौंसिल के लिए १९४ प्रतिनिधि चुने जाते हैं। जिस प्रकार हमारी संसद् में दो सदन—लोक सभा और राज्य-परिषद् हैं, उसी प्रकार स्विस पार्लमेंट में भी दो सदन—कौंसिल आव स्टेट और नेशनल कौंसिल हैं। कौंसिल आफ स्टेट की सदस्य-संख्या ४४ है।

यद्यपि स्विटजरलैंड की राजनीतिक पार्टियों का स्वरूप अन्य देशों की भाँति नहीं है, किन्तु यहाँ भी कुल आठ-नौ पार्टियाँ हैं। मंत्रिमंडल में कभी-कभी विशेष योग्यता के आधार पर ऐसे व्यक्तियों को शामिल कर लिया जाता है, जो संघीय पार्लमेंट के किसी भी सदन के सदस्य नहीं होते। किसी सरकारी

प्रस्ताव के अस्वीकृत हो जाने अथवा किसी विषय पर मंत्रिमंडल के सदस्यों में तीव्र मतभेद होने के बाद भी यहाँ राजनीतिक-संकट की स्थिति नहीं पैदा होती। जो सरकारी प्रस्ताव पार्लमेंट में अस्वीकृत हो जाते हैं, वे वापस ले लिये जाते हैं। स्विस संघीय विधान की एक विशेषता यह भी है कि पार्लमेंट के दोनों सदनों को समान अधिकार प्राप्त हैं। सभी प्रश्नों पर दोनों सदनों में विचार होता है और मतभेद होने पर संयुक्त अधिवेशन द्वारा उन्हें दूर करने की कोशिश की जाती है।

पार्लमेंट के सदस्यों को अधिवेशन में उपस्थित होने पर ४० फ्रैंक (करीब ४५ रुपये) प्रतिदिन मिलते हैं, परन्तु जो सदस्य अन्य किसी पेशे में लगे होते हैं, उन्हें यह रकम नहीं मिलती। मंत्रियों को १,६०० पौंड वार्षिक तथा राष्ट्रपति को १,७५० पौंड सालाना वेतन दिया जाता है। स्विटजरलैंड के राष्ट्रपति को कोई विशेष अधिकार नहीं हैं।

पार्लमेंट में विभिन्न दलों के सदस्य अलग-अलग नहीं बैठते। वे मिले-जुले बैठते हैं और पार्टी-अनुशासन पर यहाँ कोई जोर नहीं दिया जाता। ब्रिटिश पार्लमेंट की अपेक्षा स्विस पार्लमेंट में सदस्यों के बैठने का बहुत अच्छा प्रबन्ध है। ब्रिटिश कॉमन सभा में पत्र-प्रतिनिधियों को ऊपर की गैलरी में बैठने की जगह दी गई है, इससे उन्हें सदन की कार्यवाही की रिपोर्ट तैयार करने में कभी-कभी बड़ी कठिनाई होती है। परन्तु स्विस-पार्लमेंट में सदस्यों के पास ही पत्र-प्रतिनिधियों के बैठने का प्रबन्ध है, जहाँ से वे बड़ी सुविधा तथा आराम के साथ अपनी रिपोर्ट तैयार कर सकते हैं। अर्धवृत्ताकार रूप में सीटों का इस प्रकार प्रबन्ध है, कि वक्ताओं के बोलने के समय अन्य सदस्य उनकी बातें सुनने के अलावा उन्हें देख भी सकें।

पार्लमेंट भवन और गिरजाघर देखने के बाद हम लोग बाजार तथा नगर के अन्य भागों को देखते हुए डाक्टर सिनहा के बँगले पर वापस आ गये। आज नगर की शोभा देखने के साथ ही बर्न प्रदेश के जंगलों, बर्फीली पहाड़ियों, झीलों और हरे-भरे खेतों की जो झलक मिली, उसकी मिठास मेरे मन में भर गई।

२७ मई

(१) स्विटजरलैंड की तटस्थता
(२) 'टुन' झील के किनारे
(३) अपने कार्यवाहक प्रतिनिधि से भेंट

कहाँ तो कल रात इस आकांक्षा को दिल में दबाये बिस्तर पर गया था कि आज सब से पहले 'जुंगफ्राऊ' की पहाड़ी पर जा कर स्विटजरलैंड की 'नई दुलहिन' का घूँघट हटा कर उसके चतुर्दिक् बिखरे प्राकृतिक सौन्दर्य को जी भर निहारूँगा और कहाँ यह भोर ही से घनघोर जलवृष्टि ! इन्द्र का यह कोप असहनीय प्रतीत हुआ, किन्तु महाभारत के योद्धाओं की भाँति मेरे पास कोई ऐसा बाण न था, जिसे छोड़ कर मैं जलधारा को सुखा दूँ।

जलपान के बाद श्री बेनीपुरी एक अलग कमरे में बैठ कर लन्दन की अधूरी डायरी लिखने लगे और डाक्टर सिनहा से बहुत देर तक यूरोप तथा एशिया के बारे में हमले बातें होती रहीं। मुझे यह देख कर खेद अवश्य हुआ कि इतने दिनों के प्रवास और यूरोप के विनाशकारी युद्ध के परिणामों को जानने के बाद भी इनके सोवियत विरोधी विचारों में कोई परिवर्तन नहीं आया। कुछ देर बाद वह अपने कमरे में सोने चले गये और मैं अकेला कुछ समय तक एक कमरे में पड़ा रहा।

कल की डायरी लिखते समय मैं एक घटना का उल्लेख करना भूल गया था और आज उसका स्मरण आते ही उसे अंकित करने का लोभ संवरण न कर सका। बर्न से दूर विद्युत्-चालित लिफ्टनुमा गाड़ी से जब हम एक पहाड़ी पर पहुँचे, तो वहाँ सुविस्तृत घास के मैदान, क्षुपों और गुल्मों से ढके शृंग-कलश तथा पुष्प-क्यारियों से घिरे खेल के अच्छे-अच्छे मैदान एवं विचरते हुए घुमक्कड़ों के प्रमोदपूर्ण व्यापार को देख कर यूरोप के इस आकर्षक भू-खंड की छटा आँखों में समा गई।

कमरे में बैठे-बैठे मेरा जी ऊब चला और अब पानी भी धीरे-धीरे गिर रहा था। इसलिए अकेले कुछ दूर टहल आने के लिए मैं बँगले से बाहर

निकल पड़ा । काफी दूर जाने पर कुछ और लोग घूमते-फिरते देख पड़े। उनका साथ हो जाने पर अंग्रेजी जानने वाले एक स्विस नागरिक से जब राजनीति पर बातचीत शुरू हुई, तो उसने बड़े गर्व के साथ कहा—"हमारी तटस्थता हमारे लिए वरदान सिद्ध हो रही है, अन्यथा हम भी यूरोप के अन्य देशों की भाँति सिसकते रहते ।" जब गुटबन्दी की बात चली, तो उसने कहा—"हम आज की दुनिया में अकेला रहना पसन्द करते हैं, क्योंकि इसी में इस देश का कल्याण है।" इस पर जब मैंने यह जानना चाहा, कि विवाद-ग्रस्त मार्शल योजना के सम्बन्ध में पेरिस में जो सम्मेलन हुआ था, उसमें स्विटजरलैंड के प्रतिनिधि क्यों शामिल हुए, तो उसने कहा—"हम अन्तर-राष्ट्रीय सम्मेलनों का बहिष्कार नहीं करते ।" इस उत्तर से मुझे यह आभास मिला कि जिस व्यक्ति से मैं बात कर रहा हूँ वह अवश्य राजनीति के दाँव-पेंच जानता है। बाद में उन्हीं से ज्ञात हुआ कि वह सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी से सम्बन्धित हैं, जो रेडिकल पार्टी के बाद स्विटजरलैंड की दूसरी सब से बड़ी पार्टी है । इसी कार्यकर्ता ने बातचीत के दौरान में यह भी स्वीकार किया—"हिटलर ने स्विटजरलैंड पर इसीलिए हमला नहीं किया था कि उसे यहाँ के औद्योगिक उत्पादनों के मिलने की पूर्ण आशा थी और यदि यह बात न होती, तो सम्भवतः दूसरे महायुद्ध में नात्सी फौजें यहाँ घुस आई होतीं।" इस स्वीकारोक्ति से स्विटजरलैंड के राजनीतिक-जीवन का सच्चा परिचय मिल जाता है।

इस खूबसूरत देश की आर्थिक-स्थिति के सम्बन्ध में मैं जो कुछ यहाँ जान सका, उससे यह जरूर प्रकट हुआ कि पश्चिमी यूरोप के सभी देशों से इसकी हालत अच्छी है। किन्तु धीरे-धीरे विदेशी बाजार इसके हाथ से निकलते जा रहे हैं। स्विस मुद्रा (फ्रैंक) का मान जरूर बढ़ा है और इसे यूरोप के दूसरे देशों में कहीं भी स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं की जाती है। इस समय स्विटजरलैंड का सबसे अधिक माल अमेरिका जा रहा है।

इस देश को फिलहाल बाहरी आर्थिक सहायता की कोई आवश्यकता नहीं, मगर यदि बाज़ार की हालत आज की तरह बनी रही, तो वह भी कुछ समय बाद आर्थिक उलझनों में फँस सकता है। इस देश की तटस्थता के सम्बन्ध में एक दिलचस्प बात यह भी है कि यहाँ रूस के खिलाफ लोगों को काफी उभाड़ रखा गया है और शायद इसी कारण इस देश में समाजवादी विचारधारा का बड़े फैशनेबुल ढंग से विरोध किया जाता है।

लंच का समय होने ही वाला था, इसलिए मैं अकेले घूम-फिर कर पुनः डाक्टर सिनहा के बँगले आ गया। बेनीपुरी डायरी लिखने में ही व्यस्त थे और सिनहा सो रहे थे।

भोजन के बाद हम लोग कार से घूमने निकल पड़े। बर्न से १८ मील दूर 'ठुन' नामक नगर है और वहाँ जाने के पूर्व हम पहले जब 'ठुन' झील के किनारे पहुँचे, तो वहाँ ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे प्रकृति एक प्रेमिका के रूप में पुष्पों का शृंगार किये पर्यटकों के स्वागतार्थ खड़ी है। हवा के कारण बल खाती हुई झील की लहरें उठ-उठ कर उन नौ बर्फीली चोटियों की ओर संकेत कर रही थीं, जिनकी शृंखलाएँ इनके बायें और दायें फैली हुई हैं। यह झील १४ मील लम्बी, २ मील चौड़ी और ७१५ फुट गहरी है। यहीं से बायीं ओर 'जुंगफ्राऊ' की पहाड़ी दिखायी पड़ रही थी, जो दुनिया में अपनी खूबसूरती के लिए प्रसिद्ध है और इसीलिए तो इसे 'जुंगफ्राऊ' (नई दुलहिन) का नाम दिया गया है। आरे नदी इस झील में आ कर जब मिलती है, तो मोतियों की लड़ियाँ इस तरह उछलती नजर आती हैं मानो—

नव उज्ज्वल जल-धार हार हीरक सी सोहति,
बिच-बिच छहरति बूँद मध्य मुक्तामनि पोहति।

—'भारतेन्दु'

आकाश में बादल मँडरा रहे थे और जब बर्फीली चोटियों के ऊपर इन्द्रधनुष की शोभा खिल आई, तो झील भी सतरंगी साड़ी पहने नव-वधू की भाँति मुसकरा उठी। इस मनमोहक दृश्य को देख कर किस मानिनी का मान न टूटता?

यह झील इंटरलाकेन तक चली गई है। छोटे-छोटे जहाज यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पहुँचाया करते हैं।

स्विटजरलैंड की झीलों के किनारे बैठ कर न जाने कितने साहित्यकारों ने अमर साहित्य का सर्जन किया। इंगलैंड के सुप्रसिद्ध इतिहास लेखक गिबन ने यहीं की 'लेमन' झील के किनारे बैठ कर 'रोमन साम्राज्य का पतन और अन्त' नामक वह महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखा, जिसे पढ़ने में उपन्यास से भी अधिक रस प्राप्त होता है। कॉर्ल स्पिटलर ने अपनी कई अमर रचनाएँ झीलों के किनारे ही लिखी थीं।

'ठुन' नामक प्राचीन नगर काफी खूबसूरत है। यहाँ की जनसंख्या २० हजार २३६ है। इस नगर में अस्त्र-शस्त्रों के कारखाने हैं। यहीं हम लोग

एक सैन्य-संग्रहालय देखने गये, जहाँ प्राचीन युग से आधुनिक काल तक के हथियार संगृहीत हैं। स्विटजरलैंड के कुछ प्रमुख सेनापतियों के हथियार व जिरहबख्तर यहाँ सुरक्षित हैं। इस फौजी संग्रहालय में यह भी दिखाया गया है कि स्विटजरलैंड जैसे पहाड़ी देश को शत्रुओं के आक्रमण के समय किस प्रकार तथा किस नीति से बचाया जा सकता है। चार्टों द्वारा यह बताया गया है कि पहाड़ी लड़ाई में डाक्टरी दस्ते किस प्रकार काम करते हैं।

स्विटजरलैंड अपनी सुरक्षा के लिए 'नेशनल मिलीशिया (राष्ट्रीय रक्षा दल) पर आश्रित है। २० से ६० वर्ष तक की उम्र के हर स्वस्थ और अपंगु नागरिक को अनिवार्य रूप से राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अपनी सेवाएँ अर्पित करनी पड़ती हैं।

आज ही बर्न में अपने स्थानापन्न राजदूत श्री नेम्बियर से भी हम मिले। श्री धीरूभाई देसाई के देहावसान के बाद आप ही उनका कार्य-भार ग्रहण किये हुए हैं।

श्री नेम्बियर ने प्रेमपूर्ण ढंग से बातचीत की। विदेश में भारतीय दूतावासों की कार्यप्रणाली के सम्बन्ध में विशेष रूप से बातें हुईं। मेरी शिकायत यह थी कि सीमित साधनों और दूसरी असुविधाओं के बावजूद दूतावासों से सम्बद्ध प्रचार-विभाग जो कुछ कार्य कर सकते हैं, वह भी नहीं करते। कश्मीर के सम्बन्ध में इतना भ्रम लोगों में फैला हुआ है, लेकिन जिन पत्रों में हमारी सामग्री छप सकती है, वहाँ भी हम अपनी सामग्री नियमित रूप से नहीं भेजते और इसका मुख्य कारण यह है कि सुयोग्य पत्रकारों की सेवाएँ प्राप्त नहीं की गई हैं। श्री नेम्बियर ने मेरी इस शिकायत से बहुत अंशों में सहमति प्रकट की।

बर्न में आने के बाद यहाँ अपने दूतावास के सम्बन्ध में जो कथाएँ ज्ञात हुईं, वे गौरवशाली भारत के लिए लज्जाजनक हैं। श्री धीरूभाई देसाई की मृत्यु के बाद यहाँ जो अप्रिय घटनाएँ घटीं, उनसे श्री नेम्बियर को क्लेश पहुँचना स्वाभाविक था। यहाँ जिस परिस्थिति का आभास मुझे मिला, उससे यही प्रतीत होता है कि यहाँ दूतावास-व्यवस्था में बड़े उलटफेर होंगे?

नगर में स्वर्गीय श्री धीरूभाई देसाई की पत्नी माधुरी देसाई के संगीत एवं नृत्य-प्रेम की बड़ी चर्चा है। राजनीति में भिन्न-भिन्न रूप धारण करने वाले बंबई के श्री बाटलीवाला भी देसाई-परिवार के साथ ही यहाँ रहते थे।

आज रात में डाक्टर सिनहा से यात्रा के सम्बन्ध में बातें होने लगीं।

उनका प्रस्ताव यह था कि उनके साथ हम लोग भी ग्रीनलैंड चलें, किन्तु हमें शीघ्र स्वदेश लौटना था, इसलिए स्विटजरलैण्ड के बाद फ्रांस, इटली और मिस्र देख कर ही सन्तोष कर लेने का निर्णय किया। स्विटजरलैंड के दो प्रसिद्ध नगरों—जेनेवा और लोज़ान—को बाद देखने का निश्चय कर के हम पेरिस जाने की तैयारी में जुट गये। लन्दन से आते समय सामान भारी हो जाने के कारण मुझे अतिरिक्त भाड़ा देना पड़ा था। हवाई यात्रा में सामान अधिक हो जाने से भाड़ा बहुत अधिक लगता है, इसलिए ब्रिटेन में विविध औद्योगिक प्रतिष्ठानों से मिली हुई कुछ पुस्तिकाएँ, पैम्फलेट व अन्य बहुत सी छोटी-मोटी चीज़ें मैंने यहीं छोड़ दीं। विमान यात्रा में केवल ६६ पौंड (करीब ३३ सेर) वजन का सामान अतिरिक्त भाड़ा दिये बिना कोई भी यात्री साथ ले जा सकता है, परन्तु इससे अधिक वजन का सामान होने पर अतिरिक्त भाड़ा देना पड़ता है। विदेश जानेवाले पर्यटकों को अपने साथ बिस्तर ले जाने की जरूरत नहीं होती। परन्तु यात्रा शुरू करने के पूर्व पासपोर्ट और जिस देश में जाना हो वहाँ की सरकार की प्रवेशानुमति प्राप्त करना अनिवार्य है। यूरोप जाने वाले यात्रियों को ग्रीष्म काल में भी गर्म कपड़ा साथ रखना चाहिये।

———

२८ मई

........मीठी याद लिये बर्न से पेरिस

आज जब सुबह नींद टूटी, तो आकांक्षाओं के पर लग गये थे और ऐसा क्यों न हो, जब आज ही रात में उस नगर की ओर रवाना होने वाला था, जिसकी क्रान्तिकारी परम्परा और कलात्मक सौंदर्य के गीत विश्व भर में गाये जा रहे हैं। तो आज हम उसी पेरिस जाने की तैयारी में जुट गये थे, जिसके मदिरालयों में प्यास नहीं बुझती और जिसकी हँसती रातें प्रेम के गीत सुना कर सभी देशों के पर्यटकों को आकृष्ट करती रहती हैं। बर्न के बाज़ार में श्री बेनीपुरी और डाक्टर सत्यनारायण सिनहा के साथ काफी देर घूमता रहा। दुकानें सामानों से भरी हुई थीं और खरीदारों की भी कमी न थी। मिठाइयों की दुकानें बड़ी खूबसूरती से सजी हुई थीं। स्विस चाकलेट बेचने वाली लड़कियाँ दुकानों में जाते ही जिस मीठी मुसकान के साथ खरीदारों का स्वागत करती हैं, उससे स्विस मिठाइयों का स्वाद शायद और बढ़ जाता है। स्विटजरलैंड की दुकानों में सामान बेचने वाली लड़कियाँ शिष्ट होने के साथ ही मधुर भी हैं। हम लोगों ने घड़ी, केमरा तथा छोटी-मोटी चीजें खरीदीं। दुकानों में खरीदारी के समय भाषा-सम्बन्धी कठिनाई अवश्य हुई, किन्तु डाक्टर सत्यनारायण की उपस्थिति से हमें कोई परेशानी नहीं हुई।

स्विटजरलैंड का व्यावसायिक जीवन इंगलैंड की भाँति साफ-सुथरा नहीं है। मैंने एक घड़ी की दुकान में यह अनुभव किया कि कोई पर्यटक चाहे, तो घड़ी खरीद कर, कम कीमत की रसीदें बनवा कर उचित चुंगी अदा करने से बच सकता है। मगर इसी बात से यह सन्देह पैदा हुआ कि शायद यहाँ चीजों की कीमतें निर्धारित करने में भी यही नीति बरती जाती हो।

लंच के समय आज फिर हमें अच्छा दही मिला, मगर इसको खाते समय जब अपने गाँव के गाढ़ी मलाई वाले दही की याद आई, तो इसका स्वाद फीका पड़ गया।

भोजन के बाद यात्रा-सम्बन्धी व्यवस्था के लिए हम 'टामस कुक कंपनी'

गये । लंदन फोन करके कंपनी के कर्मचारियों ने ज्यूरिख से रोम के लिए बी० ओ० ए० सी० के विमान में हमारे लिए सीट रिजर्व करा दी और इसके बाद बर्न से पेरिस तथा पेरिस से जेनेवा व लोज़ान होते हुए ज्यूरिख के लिए सेकेंड क्लास का टिकट बनवा कर आध घंटे के भीतर ही उसे हमारे हवाले कर दिया । इस कार्य से मुक्त हो कर हम डाक्टर सिनहा के साथ अपने दूतावास गये और वहाँ के अधिकारियों से बातचीत करने में हमने कुछ समय व्यतीत किया ।

शाम होते ही हम स्टेशन पहुँच गये । यद्यपि ट्रेन छूटने में अभी काफी देर थी, मगर अब यहाँ से मन उचट गया था । स्टेशन के पास ही एक रेस्त्राँ में हम लोगों ने भोजन किया और बिल चुकाने के बाद मेरे मन में यह भावना घर कर गई कि स्विटजरलैंड में धनी पर्यटकों को ही आना चाहिए । डाक्टर सिनहा किसी से मिलने चले गये और हम वहीं टहलने लगे । बार-बार यही इच्छा होती कि स्विस लोगों से बातें की जायँ, किन्तु भाषा की कठिनाई दीवार बन जाती और हम मौन उनके चेहरों को पढ़ते हुए स्टेशन के आस-पास चक्कर काटते रहे । उनकी आँखों से ऐसा मालूम होता जैसे वे भी हमसे बात करना चाहते हों, परन्तु फिर वही भाषा की दीवार ! घूमते-घूमते जब स्टेशन के बुक-स्टाल पर पहुँचा, तो वहाँ भी केवल जर्मन, इटालियन तथा फ्रांसीसी भाषा की पत्र-पत्रिकाएँ व पुस्तकें देख पड़ीं । यहाँ बीस-पचीस पृष्ठ के अखबारों को देख कर मुझे आश्चर्य न हुआ, क्योंकि जब और कई देशों में कागज की कमी के कारण छोटे-छोटे अखबार बंद होते जा रहे हैं, तो यहाँ चालीस पृष्ठ का एक अखबार लोगों में मुफ्त बँटता है । मगर मेरे ख्याल से इसे समाचारपत्र न कह कर व्यापारियों के विज्ञापन का साधन व प्रतिक्रिया-वादियों के विचारों का प्रचार-पत्र कह सकते हैं । परन्तु एक दैनिक अखबार के रूप में यह पत्र सबेरे लोगों के घरों में पहुँच जाता है । बर्न से पेरिस रवाना होते समय मुझे यह बात भी याद आई कि यहाँ के स्वस्थ और प्रसन्न नागरिकों को पूँजीवादी-व्यवस्था के अन्दर जो अधिकार प्राप्त हैं, वह अन्य पूँजीवादी देशों के लिए ईर्ष्या की वस्तु हो सकते हैं । स्विटजरलैंड के ५० हजार मतदाताओं की माँग पर सरकार को अपने प्रस्तावों के बारे में जनता से राय लेनी पड़ती है । १८४८ में संघीय विधान स्वीकृत हुआ था और तब से आज तक कम से कम १४० बिलों पर जनता की राय ली जा चुकी है, जिनमें ७९ बिलों को उसने अस्वीकृत भी कर दिया है ।

भाषा की दृष्टि से भारत के कुछ बड़े नगरों की तुलना स्विटजरलैंड के किसी भी बड़े या छोटे नगर से की जा सकती है। जिस प्रकार हम अपने देश के किसी बड़े नगर में कई भाषाओं और बोलियों के बोलने वालों को देखते हैं उसी प्रकार यहाँ फ्रांसीसी, इतालवी, जर्मन और रोमैंश भाषाओं के बोलने वाले प्रायः हर नगर में मिलते हैं। स्विटजरलैंड में उक्त चार भाषाओं के बोलने वालों की संख्या इस प्रकार है :—

जर्मन—३२,००,०००; फ्रांसीसी—१०,००,०००; इतालवी—१,००,०००; रोमैंश—५०,००० और अन्य भाषाओं के बोलनेवालों की संख्या करीब ३,५०,००० है।

स्विटजरलैंड की सरकारी भाषा फ्रांसीसी, जर्मन और इतालवी है, मगर सभी भाषाओं के लिखने में रोमन लिपि का ही प्रयोग होता है।

आज ही मुझे ज्ञात हुआ कि स्विटजरलैंड में कुल करीब ४०६ समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं, जिनमें ६८ प्रतिशत पत्र जर्मन भाषा के हैं और शेष २६ प्रतिशत फ्रांसीसी, ४ प्रतिशत इतालवी और एक प्रतिशत पत्र रोमैंश भाषा के हैं।

यहाँ के लोगों का दावा है कि स्विटजरलैंड के सभी नागरिक साक्षर हैं।

अब ट्रेन छूटने में करीब पौन घंटा रह गया था और मैं इस नगर की स्मृतियों को सँजो रहा था। बेनीपुरी जी कुछ देर चक्कर काटने के बाद जब पेशाबघर न पा सके, तो आ कर मुझसे उन्होंने कहा कि "यहाँ 'जेंटिलमैन' कहाँ है?" फिर उन्होंने कहा—"भई, इंगलैंड में तो जहाँ 'जेंटिलमैन' लिखा देखा, समझा पेशाबखाना है, परंतु यहाँ बड़ी परेशानी है।" मैंने पेशाबखाने का पता लगा कर उन्हें वहाँ पहुँचाया। 'अंडर ग्राउंड' में यहाँ बड़े ही स्वच्छ पेशाबघर, शौचालय एवं स्नानागार बने हुए हैं। कहीं छः आने, कहीं आठ आने और कहीं इससे भी अधिक पैसे दे देने से स्नान के लिए छोटी तौलिया और छोटा साबुन मिल जाता है। पर्यटन के समय इस व्यवस्था से बड़ी सुविधा होती है।

गाड़ी छूटने का समय आ पहुँचा, इसलिए कुली से सामान उठवा कर हम प्लेटफार्म पर पहुँचे। उसी समय डाक्टर सत्यनारायण भी आ गये। विदेश में अधिकांश स्वदेशवासी एक दूसरे के प्रति बड़ी सद्भावना रखते हैं। डाक्टर सिनहा और मेरे विचारों में मौलिक मतभेद होते हुए भी मेरे साथ उनका जो मीठा व्यवहार था, उसके लिए मैंने उन्हें हार्दिक धन्यवाद दिया। प्लेटफार्म

पर ट्रेन के पहुँचते ही स्लीपिंग कार में हमारा सामान रखवा दिया गया। आखिर ट्रेन की सीटी बजी और वह पेरिस की ओर चल पड़ी।

'स्लीपिंग कार' में मैंने देखा कि वहाँ यात्रियों को सुख-सुविधा की पूर्ण व्यवस्था है। ट्रेन का यह 'शयन-कक्ष' ऐसा मालूम होता, जैसे किसी होटल का छोटा-सा सजा-सजाया कमरा हो। मुलायम गद्दा, ओढ़ने के लिए अच्छा कम्बल और तकिया आदि आराम की चीजों का प्रबन्ध तो था ही, किन्तु इसके साथ ही इन शयन के लिए बने डिब्बों को बिजली से गर्म भी रखा जाता है। पानी पीने के लिए शीशे की छोटी सुराही, कपड़े रखने के लिए आलमारी और रोशनी का ऐसा प्रबन्ध कि पड़े-पड़े स्विच दबा कर रोशनी कर लीजिए।

गाड़ी तेज रफ्तार से फ्रांस की ओर भागी जा रही थी। हम लोग आपस में स्विटजरलैंड के सम्बन्ध में बातचीत कर ही रहे थे कि कस्टम-अधिकारी चीजों के सम्बन्ध में पूछ-ताछ करने आये। सीमा पार करने के समय मेडिकल सर्टिफिकेट और पासपोर्ट की परीक्षा होती है, इसलिए हमने उसे गार्ड के हवाले कर दिया, ताकि बेखटके सो सकें। सोते समय फिर ख्याल आया कि मैं जिस नगर के रंगीन ख्वाबों की बड़ी चर्चाएँ सुना करता था अब कल उसे जी भर देखूँगा और पेरिस देखने के बाद यूरोप में देखने के लिए रह ही क्या जायगा? बर्न तथा ज्यूरिख के आसपास जिन लुभावनी झीलों तथा दूसरे चित्ताकर्षक प्राकृतिक दृश्यों को मैं देख चुका था, उनकी याद आ गई। और उन झीलों की हँसती, मचलती एवं गीत गाती लहरों ने मेरे जीवन में जो रस भर दिया था, उसकी मीठी याद लिये मैं सो गया, क्योंकि पेरिस में भला कहाँ सो पाऊँगा!

२६ मई

(१) पेरिस की मीठी झलक
(२) डालर की महिमा
(३) कैसिनो-द-पेरी में रति-कुमारियों की कला

नींद टूटी और 'स्लीपिंग कार' की खिड़की से बाहर प्रेमियों के स्वप्न-देश फ्रांस के खेतों की हरित शोभा और सुबह के नाजुक सौंदर्य को देख कर मैं उस पर रीझ उठा। खिड़की से बाहर मेरी अपलक आँखें खेतों में फ्रांस का प्रथम दर्शन प्राप्त कर एक नये रंग में खिल उठीं। इन्हीं खेतों के लिए यहाँ के किसानों ने सामन्तशाही के दाँत तोड़ने के लिए क्रांति की और फ्रांस 'इन्कलाब का देश' बन गया।

साहित्य और शिल्प, कला और संस्कृति के देश फ्रांस के खेतों तथा हरे-भरे मैदानों के बीच से हमारी ट्रेन गुजर रही थी। सुबह की मीठी हवा मेरे विचारों को जगा रही थी और मैं सोचता जा रहा था कि अब मैं रिवान्द कौवे, पेस्त्योर, ज़ोला, विक्तर यूगो और वाल्तेयर के फ्रांस में पहुँच गया हूँ। मैं बीसवीं सदी के उस महान् मानवतावादी लेखक रोम्या रोलाँ के देश में हूँ, जो शान्ति का आराधक था। मैं क्रांतिकारी पेरिस के निकट अब पहुँचने वाला हूँ और इस समय विक्तर यूगो के वे शब्द मेरे कानों में गूँज रहे हैं, जिन्हें ७४ वर्ष पूर्व उस साहित्यकार ने ल्यों में मजदूरों के बीच भाषण देते हुए कहा था :—

"नरेश किस बात का ख्वाब देखते हैं ? युद्ध का। जनता किस बात का ख्वाब देखती है ?' शान्ति का।"

और जिस पेरिस की जनता आज भी शान्ति के लिए प्रयत्नशील है, उसी ऐतिहासिक नगर की झलक पाने की लालसा से आँखों में एक नया नशा-सा छा गया था। खेतों के किनारे-किनारे साइकिल पर युवतियाँ कहीं जा रही हैं। उनके रेशम से लहराते सुनहरे बालों को देख कर यह ख्याल पैदा हुआ कि आज यदि सचमुच आरे-द-बालज़ैक होता तो वह लिखता कि ये हैं फ्रांस

की वीरांगनाएँ, जिन्होंने जर्मन फासिस्टों से जनता की सुघर संस्कृति को बचाने के लिए छापेमारों के साथ प्रतिरोधात्मक युद्ध में भाग ले कर अपनी क्रान्तिकारी परम्परा की रक्षा की। हवा में लहराते हुए उनके सुनहरे बाल गालों के चुम्बन से रोमांस का सर्जन कर रहे थे। बालज़ैक के फ्रांस को कौन भुला सकता है?

प्रेरणाओं के नगर पेरिस के साथ ही पूरे फ्रांस के इतिहास ने कई बार करवटें ली हैं। किसी भी दूसरे देश की राजधानी का प्रभाव सारे देश पर उतना न पड़ा होगा, जितना इस महान् नगर का। इसीलिए तो पेरिस को 'फ्रांस का हृदय' भी कहते हैं।

ज्यों-ज्यों हमारी ट्रेन पेरिस के नजदीक पहुँचती जा रही थी, त्यों-त्यों इस नगर की पुरानी स्मृतियाँ ताजी होती जा रही थीं। बैस्तील की घृणित दीवारों को गिराने वाले वीरों ने ही तो उस क्रांतिकारी परम्परा की नींव डाली, जिसके फलस्वरूप १८३० में मजदूरों के विद्रोह हुए। यूरोप में लोकतंत्रवाद, समानता और बन्धुत्व की भावना फैली, निरंकुश शासकों के विरुद्ध इस महाद्वीप के विभिन्न देशों में क्रांति की लपटें उठीं और १८४८ की क्रांतिकारी फ्रांसीसी सरकार ने समाजवादी दर्शन के आचार्य मार्क्स का अभिनंदन किया। १८७१ में 'पेरिस कम्यून' हुआ। मजदूरों ने विश्व-इतिहास में प्रथम बार यहाँ अपना शासन कायम किया। यद्यपि फ्रांस की राज्य-क्रान्ति से ले कर 'पेरिस कम्यून' तक के शानदार इतिहास के बाद भी यहाँ पुनः प्रतिक्रान्ति हो गई, मगर १७८९ से १७९४ के बीच फ्रांस की भूखी जनता तथा बाद के विद्रोहों में मजदूरों ने जिस क्रान्तिकारी विचार को फैलाया उससे आज भी प्रेरणा प्राप्त होती है। उस समय क्रान्ति भले ही धराशायी हो गई, परन्तु बाद इतिहास के चरण उन्हीं नारों को ले कर आगे बढ़े, जो पहले पेरिस के वातावरण में गूँज चुके थे। तो भूख और गरीबी के विरुद्ध सब से पहले आवाज बुलंद करने वाले पेरिस में अब मैं पहुँचने ही वाला हूँ। मगर मैं विचार-प्रवाह में डूबा हुआ था।

दूसरे महायुद्ध में फ्रांस के पतन का वृत्तांत पढ़ कर कितने गुस्से से मैं भर गया था। लावाल, ब्लुम, दलादियर, रेनां और पेतां के कुकृत्यों की गन्दी तस्वीरें उस उपद्रव की याद दिलाने लगीं, जो ६ फरवरी सन् १९३४ को हिटलरी एजेंटों के सहयोग से फ्रांस के फासिस्टों ने सत्ता हथियाने के लिए किया था। इस उपद्रव से फ्रांस को जो नया बल मिला, उसके फलस्वरूप १९३५ में जनवादी मोर्चा बना, जिसके सदस्यों ने 'फ्रांसीसी कम्यून' के

वारिस होने का पार्ट अदा किया। 'पीपुल्स फ्रण्ट' के समर्थकों ने सहर्ष रक्तदान दिया, मगर गौरवशाली पेरिस का सिर न झुकने दिया। क्रान्ति और कला के देश फ्रांस को हिटलर ने अपने बूटों से जी भर कर रौंदा, परंतु अब उसी फ्रांस के गर्भ से जिस नये देश का जन्म हो रहा है, उसने सिद्ध कर दिया है कि पेरिस अमर है और इसकी खूबसूरती को कोई शैतान बिगाड़ नहीं सकता।

ट्रेन आगे बढ़ रही थी और वर्तमान पेरिस के विविध रूप मेरी आँखों के सामने प्रकट हो रहे थे। मुझे ख्याल आया कि मैं सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक फ्रेडरिक जोलिया क्यूरी के पेरिस अब पहुँचने वाला हूँ, जिसकी वाणी पुकार-पुकार कर दुनिया के दूसरे देशों के वैज्ञानिकों से कह रही है कि विज्ञान को विनाश का साधन मत बनाओ। मैं लुई अरागों के नगर अब जा रहा हूँ, जिनका साहित्य नये जीवन के निर्माण में सहयोग प्रदान कर रहा है। मैं सुप्रसिद्ध कथाकार एवं शान्ति आन्दोलन के समर्थक ज्यां-पाल-सार्त्र के पेरिस जा रहा हूँ, जो शायद यह अनुभव करने लगे हैं कि बीभत्स कथाओं में मानव समाज का कल्याण निहित नहीं है। मैं आंद्रे जीद जैसे लेखक के पेरिस नहीं जा रहा हूँ, जिसने फ्रांस की इन्कलाबी परम्परा के विरुद्ध दूसरे महायुद्ध के समय यह लिखना शुरू किया था कि "यदि जर्मन शासन से फ्रांस समृद्धिशाली हो जाय, तो १० में से ६ फ्रांसीसी इस शासन को स्वीकार कर लेंगे।" मैं तो फ्रांसीसी कवि पॉल-एलु-आर के उन गीतों को सुनने पेरिस जा रहा हूँ, जिनसे धीरे-धीरे जनवादी फ्रांस का उदय हो रहा है। मैं उस पेरिस जा रहा हूँ, जहाँ शान्तिवादी शिल्पी पिकासो, मातिश आदि के चित्रों की प्रदर्शनियाँ देखने के लिए अपार जनसमूह उमड़ पड़ता है।

मैं उस पेरिस को नफरत की नजर से देखता हूँ, जो हिंद चीन के चावल के खेतों को अपने टैंकों से बरबाद कर रहा है, और जो एशिया तथा अफ्रीका में अपना साम्राज्यवादी प्रभुत्व कायम रखना चाहता है। कितना कलंकित रूप है पेरिस का यह! कितना घृणित!! परन्तु यह कलंक मिटेगा और जरूर मिटेगा।

पेरिस के ये दो रूप! और दोनों के दो रंग!! मैं किस पेरिस को देखने जा रहा हूँ? मैं उस गौरवशाली पेरिस को देखने जा रहा हूँ, जिसमें नोत्रेदाम का ऐतिहासिक गिरजाघर है, जहाँ सीन नदी की रूपहली लहरें केलि-कुंजों की प्रेम-कथाएँ सुनाती रहती हैं, जिसके लुव में 'मोनोलिज़ा' की रहस्यमय

मुसकान और 'विनस-द-मिलो' (रति की प्रतिमा) का निष्कलंक सौंदर्य देखने को मिलेगा।

पेरिस के निकट पहुँचते ही कल-कारखाने देख पड़े। अब ट्रेन स्टेशन पहुँचनेवाली है और मैं रूप-परी की लटों को देखने के लिए लालायित हो उठा। सुबह करीब साढ़े आठ बजे हम अंत में उस पेरिस पहुँच ही गये, जहाँ ओठों के हँसते फूल सदियों से लोगों के हृदयों को आकृष्ट करते रहे हैं।

सामान स्टेशन पर ही रख कर सबसे पहले श्री बेनीपुरी के साथ मैं श्री चित्रकृष्ण गैरोला से मिलने के लिए सिते विश्वविद्यालय की ओर टैक्सी से रवाना हुआ। मार्ग में कुछ गंदी गलियाँ और सड़कें दिखाई पड़ीं। बेनीपुरी जी कहने लगे—"अरे! मेरी आँखें परियों को खोज रही हैं, किंतु यह कूड़ा-कचरा क्यों दिखाई दे रहा है?" मैंने कहा—शाम को पेरिस की रंगीन छटा देखिएगा अभी से आपका दिल काबू से बाहर क्यों हो रहा है?" मगर कुछ दूरी तै कर लेने के बाद साफ-सुथरी सड़कें, बड़े चौराहों पर भव्य प्रतिमाएँ, सड़कों के किनारे वृक्षों की सुसज्जित कतारें और खिले पुष्पों की क्यारियाँ देख कर जब मैंने उनसे कहा कि पेरिस का यह रूप पसन्द है न! फिर क्या कहना था, वे बोल उठे—"प्यारे भाइयो, यह जादू का देश है, जादू का।"

सिते विश्वविद्यालय पहुँचने पर यह ज्ञात हुआ कि गैरोला कुछ समय पूर्व ही छात्रावास से कहीं बाहर चले गये हैं। भाषा की कठिनाई दूर करने के लिए इनके साथ ही पेरिस घूमने का निर्णय हुआ था और लंदन में मित्रों ने यही राय दी थी कि गैरोला को साथ ले कर घूमने में ही सुविधा रहेगी। इसलिए इनसे भेंट न होने के कारण बड़ी निराशा हुई। वहीं अचानक एक सिंघली युवक से भेंट हो गई, जिसने बड़े प्रेम के साथ घूम-घूम कर विश्वविद्यालय दिखलाया। वहाँ के वातावरण पर मैं मुग्ध हो गया। हँसते हुए फूलों की शोभा अपने हरित अंचल में लपेटे मैदान, जिनके किनारे अलग-अलग देशों के छात्रों के ठहरने के लिए अलग-अलग सुन्दर और साफ-सुथरे छात्रावास। कहीं बेंच पर बैठे युवक-युवतियों के दल किसी विषय पर विवाद कर रहे हैं, तो कहीं एकान्त में कोई छात्रा अध्ययन में लीन है और दूर कहीं मैदान में लड़के खेलकूद रहे हैं। मुझे सब कुछ अच्छा लगा, मगर विभिन्न देशों और महाद्वीपों के आधार पर अलग-अलग छात्रावासों की व्यवस्था पसंद नहीं आई। सभी देशों के छात्रों को एक साथ मिल-जुल कर रहने का अवसर प्रदान करने पर ही तो उस मानवीय सभ्यता का उदय होगा, जिसमें विश्व-

सरकार कर सपना पूरा हो सकता है।

गैरोला से फिर मिलने की बात कह कर मैंने उस सिंघली युवक को धन्यवाद दिया और कुछ देर तक उस क्षेत्र में हम घूमते रहे। सबसे पहले ठहरने का प्रबंध करना आवश्यक था, इसलिए एक होटल में जा कर जब हमने खाली कमरा देखा, तो कम खर्च के प्रलोभन में यहीं जम जाने का विचार हुआ। इस होटल में चाय और भोजन का व्यय छोड़ कर दो सीट वाले कमरे के लिए प्रतिदिन ६०० फ्रैंक (लगभग ६ रुपये) देने पड़ते। मगर वहाँ नहाने का प्रबंध न था, इसलिए तबीयत उखड़ी। वहाँ का वातावरण भी पसंद न आया। होटल की महिला मैनेजर बार-बार सुख-सुविधा की प्रशंसा करके हमसे वहीं ठहरने का अनुरोध कर रही थी। परंतु हमें वह स्थान पसन्द न आया।

फ्रांसीसी भाषा न जानने के कारण हम लोग पग-पग पर मनोरंजक स्थिति में फँस जाते थे। शेक्सपियर की भाषा में किसी फ्रांसीसी से कुछ पूछिए और वह हँस कर रास्ता नापता है। फ्रैंच न जानने के कारण अपने ही ऊपर क्षोभ हुआ। मैं सोचता हूँ कि यहाँ की जनता से कैसे सम्पर्क स्थापित कर पाऊँगा। एक युवक अंग्रेजी जानने वाला मिला भी, तो पहले उसने यही कहा कि "संस्कृति के गढ़ पेरिस में आप बनियों की भाषा अंग्रेज़ी में क्यों बात-चीत करना चाहते हैं!" अपनी भाषा के प्रति फ्रांसीसियों का गर्व स्वाभाविक है। मगर एक हम हैं, जो आज भी बाहर यह कहने में नहीं शरमाते कि अंग्रेजी ही कुछ समय तक अभी भारत की मुख्य भाषा बनी रहेगी। जब हमारे दूतावासों में राष्ट्रभाषा की कोई पूछ नहीं है, तो दूसरे देशों के निवासी स्वाधीन भारत के अस्तित्व को क्या सोच पायेंगे? हाँ, तो जब उस युवक को ज्ञात हुआ कि मैं भारत का हूँ तो मुक्त कंठ से उसने बुद्ध और गांधी की ऐतिहासिक देन की सराहना करते हुए कहा—"पूर्व में भारत और पश्चिम में फ्रांस—यही तो दो देश सभ्यता और संस्कृति के प्रतीक हैं।" अचानक सोरबान विश्व-विद्यालय के इस छात्र से भेंट हो जाने से यह दिक्कत अवश्य दूर हुई कि उसने उन स्थानों के ठीक पते बता दिये, जहाँ हमें जाना था।

एक रेस्त्रां में जा कर जब हम कुछ खाने के लिए बैठे, तो पुनः भाषा की कठिनाई उपस्थित हुई। बेनीपुरी जी परेशान हो रहे थे और मैं "ह्वाट टु से इन फ्रैंच" नामक पुस्तिका देख-देख कर खाने के लिए वेटरेस को आर्डर लिखा रहा था। वह यह देख कर मुसकरा रही थी। वहाँ उपस्थित दूसरे फ्रांसीसी भी इस स्थिति का रस लूट रहे थे। उक्त पुस्तिका के सहारे आर्डर

लिखाते समय फ्रांसीसी शब्दों के अशुद्ध उच्चारण सुन कर जब वेटरेस खिल-खिला उठती, तो यह आभास मिलता कि अब हम इंगलैंड के मौन जीवन से दूर, भावुक फ्रांसीसियों के बीच में हैं। एक बार जब गलत उच्चारण के कारण वह मेरे कथन का अर्थ बिलकुल न समझ सकी, तो कुछ सेकेंड के लिए मैं असमंजस की स्थिति में पड़ गया। फिर किताब खोल कर मैंने उसके सामने रख दी, और उँगली से चीजों के नामों की ओर संकेत करने लगा, तो वहाँ और मनोरंजक वातावरण पैदा हो गया। अपने देश में कुछ लोग कहते हैं कि अंग्रेजी सीख कर सारे विश्व में घूम आओ कोई कष्ट न होगा। परंतु अंग्रेजी भाषा की जानकारी के बावजूद आज इस रेस्त्राँ में जो कुछ हो रहा है, वह क्या इस बात का परिचायक नहीं है कि अंग्रेजी से सब जगह काम चलना असंभव है।

लंच के बाद हम अपने दूतावास गये। आगंतुकों के स्वागत के लिए नियुक्त फ्रांसीसी लड़की संकेतलिपि का अभ्यास कर रही थी और उसकी मेज के पास तीन फ्रांसीसी युवक बैठे हुए थे, जिनसे वह हँस-हँस कर बातें करती जा रही थी। यदि अपने देश की आर्थिक-स्थिति को ध्यान में रख कर दूतावासों में बेकार के साज-बाज पर होने वाले खर्च में कमी कर दी जाय, तो कार्यक्षमता पर इसका कोई बुरा असर न पड़ेगा। ठोस अनुभव के आधार पर ही मैं यह विचार व्यक्त कर रहा हूँ। ब्रिगेडियर ठक्कर से हम कुछ देर बातचीत करते रहे। आज ही वे दक्षिणी फ्रांस जाने वाले थे, इसलिए पेरिस में हमारा साथ न दे सकने के लिए उन्होंने खेद प्रकट किया। हमें मुख्य सूचना-अधिकारी से मिलने के लिए भी कहा गया, परंतु लंदन में अपने हाई-कमिश्नर के कार्यालय का जो कटु अनुभव प्राप्त हुआ था, उसके बाद इस मिलने-जुलने में समय नष्ट करने की अपेक्षा स्वतंत्र घुमक्कड़ों की भाँति पेरिस में डोलना हमने कहीं अच्छा समझा।

दूतावास से हम सीधे स्टेशन गये और वहाँ से टैक्सी में अपने सामान के साथ होटल पेविलों आ गये, जहाँ 'टामस कुक' कम्पनी की सहायता से हमारे लिए रहने का अच्छा प्रबंध हो गया। यद्यपि यह होटल बहुत खर्चीला था, मगर सुख-सुविधा की दृष्टि से यह हमें बहुत पसन्द आया। इस होटल में केवल ठहरने के लिए प्रतिदिन १८) देना पड़ता। अंग्रेजी जानने वाले कर्मचारियों के कारण यहाँ भाषा-सम्बन्धी कोई कठिनाई न हुई। नहा-धो कर जब हम घूमने निकले, तो पेरिस की रंगीन छटा देखते ही हमें नई स्फूर्ति प्राप्त

हुई। एक बार फिर हमने गैरोला से भेंट करने की कोशिश की, परन्तु उनसे मुलाकात न हो सकी। किंतु अकस्मात् पेरिस में भारतीय मजलिस के सभापति डा० बलवीर से भेंट हो गई। वे बहुत देर हिंदुस्तान के सम्बन्ध में बातचीत करते रहे। उन्होंने पेरिस-भ्रमण के सम्बन्ध में कुछ आवश्यक बातें बतायीं और हम उन्हें धन्यवाद दे कर "फ्रांस का हृदय" देखने निकल पड़े।

पेरिस का हर भाग नई दुलहिन के सुहाग-सा खिल उठा था। हर मोड़ पर हुस्न अँगड़ाइयाँ ले रहा था। सुबह जिस नगर के चेहरे पर फीकापन नजर आ रहा था, वही शाम को एक खुशनुमा फूल की तरह खिल गया था और जब हम उस अनुपम राज-पथ पर पहुँचे, जिसे पेरिसवाले बड़े गर्व से शां ज़ेलीज़े (स्वर्गद्वार) कहते हैं, तो वहाँ के आकर्षक दृश्य को देख पर पेरिस पर हम सचमुच मुग्ध हो गये।

वृक्षों में लगे बिजली के रंगीन लट्टुओं से छन-छन कर मस्ती से नीचे उतरने वाली रोशनी पुष्प-क्यारियों की शोभा को बढ़ा रही थी। वृक्षों की खूबसूरत कतारें, फूलों की दिलकश क्यारियाँ और जरा आगे बढ़ कर जी भर निरखिए पेरिस की परियों का जमघट! सड़क के किनारे-किनारे जलपानगृहों और मदिरालयों के आगे तने हुए शामियाने, उनके अन्दर छोटी-छोटी मेजें, जिनके चारों ओर रंगीन कुर्सियाँ, और वहाँ बैठते ही कहीं-कहीं रंगीन तितलियों का उड़ कर पास चले आना तथा सुरापान में डूबे लोग—इन सब को देख कर ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे वातावरण कवि 'नवीन' के शब्दों में कह रहा हो :—

कूजे दो कूजे में साक़ी!
बुझनेवाली प्यास नहीं,
बार-बार 'ला' 'ला' कहने का
समय नहीं, अभ्यास नहीं।

पेरिस की इस खूबसूरत झलक को पा लेने के बाद हमारा मन भी रँग गया था। यहाँ जिससे मिलिए वही कहता है यदि नग्न-सौंदर्य में डूबी निराली रजनी का विलास पेरिस में न देखिए, तो यात्रा अधूरी रह जाती है। मगर आज रात्रि-क्लबों में चक्कर काटने के बजाय 'कौसिनो-द-पेरी' जाने का निर्णय किया, जहाँ संगीत और नृत्य के साथ नग्न-सौंदर्य रंगमंच पर निरखने के लिए हर भाग के पर्यटक शाम को जमा हो जाते हैं। अभी 'कौसिनो-द-पेरी' पहुँचने में एक घंटे की देर थी, इसलिए हम खाना खाने के लिए एक अच्छे रेस्त्राँ में गये। वहाँ का हसीन और मादक वातावरण, शराब के प्यालों का

दौर और नाजनीनों के साथ लोगों की आँखमिचौनी देखने के साथ ही मैंने यह भी देखा कि कुछ अमेरिकी यात्री इस तरह औरतों की ओर घूर रहे थे, जैसे वह बुर्दाफरोशी के बाज़ार में पहुँच गए हों।

फ्रांस की राजधानी पेरिस में आ कर आज पहली बार मैं अपनी आँखों से देख रहा हूँ कि डालर की महिमा क्या है! यही "शां ज़ेलीज़े" है, जहाँ फ्रांस के पतन के बाद दूसरे महायुद्ध में हिटलर के सैनिक निर्लज्जता-पूर्वक औरतों को छेड़ते और मनमाना दुराचरण करते थे। यही वह 'शां ज़ेलीज़' है, जहाँ युद्ध से पूर्व फ्रांस के फासिस्ट जलूस निकालते और थैलीशाहों की मदद से जनता की हसरतों को मसलने का प्रयास करते और आज उसी 'शां ज़ेलीज़' में अमेरिकी यात्री नारी सौंदर्य के साथ निर्लज्ज व्यवहार करने में किंचित् भी नहीं शरमाते।

'कौसिनो-द-पेरी के दरवाजे पर पहुँचते ही मुझे दो भारतीय मिले। हम चार भारतीय भी कुछ दर्शकों के लिए आकर्षण केन्द्र-विन्दु बन गये थे। टिकट खरीद कर हम हाल में दाखिल हुए। परदा हटा और रंगमंच की शोभा आँखों में बरस पड़ी। आर्कैस्ट्रा की मधुर ध्वनि गूँज उठी। रंगमंच पर नृत्य और संगीत के साथ रूप की लपटें! कलाप्रेमी दर्शकों के स्वागतार्थ पुष्पांजलि लिये पुष्पकुमारियाँ!! अजीब मनमोहक दृश्य!!! नग्न-तारिकाएँ अल्हड़ जवानी के नशे में मंच पर जिस प्रकार मस्ती में डूबती-उतराती अपनी नृत्यकला का प्रदर्शन कर रही थीं, उसे देख कर हमारे आसपास बैठे युवक अथवा प्रौढ़ अपनी पत्नी या प्रेयसी को आलिंगन में कस लेते, और चुम्बन का व्यापार तो अटूट गति से चल ही रहा था। दर्शक आँखें फाड़-फाड़ कर उस सौंदर्य को निहारते समय ऐसी मुद्रा प्रदर्शित करते जैसे :—

"उधर नीड़ में नग्न-माधुरी लख पंछी भरमाये।"

—'अंचल'

लंदन में भी नग्न-सौंदर्य मैं देख चुका था, मगर वहाँ उसमें भी कुछ शर्म है। परन्तु क्रान्ति और फिर प्रतिक्रान्ति के नगर पेरिस की आँखों में सामन्ती मस्ती का आज भी ऐसा खुमार है कि वह हुस्न के चेहरों पर नकाब डालना पसन्द नहीं करता। अजन्ता और एलोरा की अर्धनग्न अप्सराओं को देख कर ही जिस देश के लोग कला के इस पहलू की कटु आलोचना करते हैं, वहाँ के नागरिक जब यहाँ रंगमंच पर थिरकती सजीव रति-कुमारियों को देखते हैं, तो यह भावना पैदा होना स्वाभाविक है कि क्या यूरोप को नग्न-

नारी-सौंदर्य के इस कामुक प्रदर्शन पर भी नाज़ है? अतृप्त लालसा कहीं नग्न-सौंदर्य को देखने से तृप्त होती है? वह तो सामाजिक जीवन में निखार आने पर ही पूरी हो सकती है। परंतु इस समय मैं जो कुछ देख रहा हूँ उसका सच्चा चित्र अपनी डायरी में प्रस्तुत कर देना अपना कर्तव्य समझता हूँ।

हाँ, तो रंगमंच पर एक के बाद दूसरे लुभावने दृश्य बदल रहे थे और मेरे पास ही बैठे एक युवक अंग्रेज कलाकार ने हँसते हुए कहा—"पेरिस में देखिए मत, घूरिये; क्योंकि यहाँ घूरने में ही लुत्फ है।" मंच पर एक-दो-तीन-चार—अरे कितनी संख्या गिनाऊँ! मृदुता, कोमलता एवं सुकुमारिता की तीस और फिर इससे भी अधिक नग्न-प्रतिमाएँ! केशों की कुटिलता, कटाक्षों की दीर्घता, कुचों की कठोरता, कटि की क्षीणता, कदली-स्तम्भ-सी सुघर रोमशून्य जाँघों की रुचिरता, नितम्बों की सुडौलता, चरणों की स्निग्धता और नाखूनों की लालिमा देख कर कुछ दर्शक तो सुध-बुध खो बैठे थे।

इन नग्न-रति-कुमारियों के अंग-प्रत्यंगों का वर्णन करने की क्षमता मुझमें नहीं है, इसके लिए तो कोई 'जयदेव' चाहिए।

रंगमंच की व्यवस्था निश्चय ही बहुत प्रशंसनीय थी। कभी रति की ये प्रतिमाएँ पुष्प-कुमारियों के रूप में खिल उठतीं, और कभी ख्वाब की दुनिया में पर लगा कर परियों की भाँति उड़ने लगतीं, फिर कभी युद्ध और वासना का प्रतीक बन विचारों की पहेली बन जातीं। कभी रंगमंच पर आल्प्स की बर्फीली चोटियों की सुषमा देख पड़ती, तो कभी 'नंदन कानन' का अलौकिक सौंदर्य बिखर पड़ता। और भिन्न-भिन्न दृश्य इस तेजी से बदलते कि रंगमंच की टेकनीक पर मैं मुग्ध हो उठता।

इंटरवल हुआ और विश्राम-कक्ष में सेंट की लहर दौड़ गई। शेनल की सुरभि मानस-जगत को अभिभूत कर रही थी। वहाँ वसन्तोत्सव की छटा-सी दिखाई दी। जिधर देखिए, वातावरण पुकार-पुकार कर कह रहा था—"शराब दे, शराब दे।"

आज पहली बार पेरिस में मुझे यह भी अनुभव हुआ कि यहाँ कुछ स्थानों में शराब पानी से भी सस्ती मिलती है। एक पाकिस्तानी साथी ने वहाँ पानी पिया और उन्हें एक गिलास के लिए सवा रुपया चुकाना पड़ा। लोग पाकिस्तानी साथी का मजाक उड़ाने लगे—"पेरिस में भी कोई पानी पीता है!"

"पिये साक़िया क्या जवानी में पानी ,
मये अर्ग़वानी ! मये अर्ग़वानी !!"
—'साग़र'

मध्यान्तर के बाद फिर हम नृत्य और संगीत के नशे में झूमने लगे। एक दृश्य में जब रंग-बिरंगी रोशनी और गुलाल-भरे गालों की शोभा देख पड़ी, तो ऐसा आभास हुआ जैसे 'कैसिनो-द-पेरी' में होली हो रही हो। इस 'कैसिनो-द-पेरी' की कला देखने के लिए परिवारों के लोग महिलाओं के साथ उपस्थित थे। साहित्यकारों और कलाकारों का तो यहाँ जमघट रहता ही है, राजनीतिज्ञों का डेरा-फेरा भी यहाँ कम नहीं होता।

'कैसिनो-द-पेरी' की कला देखने के बाद जब मैं बाहर निकला, तो १० बज चुका था और सड़कों पर नगर की जवानी इठला रही थी। लन्दन में १२ बजे तक काफी शांत वातावरण पैदा हो जाता है, मगर यहाँ तो रात भर रंगीन भावनाओं का दरिया लहरें लेता है। उर्दू के प्रसिद्ध कवि और मेरे प्रिय साथी 'मजाज़' ने अपनी 'आवारा' शीर्षक कविता में जो कुछ लिखा है, वह पेरिस की पहली रात की छटा देखने के बाद ही मुझे इस तरह याद आया कि उसकी कुछ पंक्तियाँ मैं गुनगुना उठा :—

झिलमिलाते कुमकुमों की राह में जंजीर-सी,
रात के हाथों में दिन की मोहिनी तसवीर-सी,
मेरी छाती पर मगर चलती हुई शमशीर-सी,
ऐ ग़मे-दिल क्या करूँ, ऐ वहशते-दिल क्या करूँ ?
रात हँस-हँस कर यह कहती है कि मैखाने में चल,
फिर किसी शहनाज़ लाला रुख के काशाने में चल,
यह नहीं मुमकिन तो फिर ऐ दोस्त ! वीराने में चल,
ऐ ग़मे-दिल क्या करूँ, ऐ वहशते-दिल क्या करूँ ?
हर तरफ बिखरी हुई रंगीनियाँ रानाइयाँ,
हर कदम पै इशरतें लेती हुई अँगड़ाइयाँ,
बढ़ रही हैं गोद फैलाये हुए रुसवाइयाँ,
ऐ ग़मे-दिल क्या करूँ, ऐ वहशते-दिल क्या करूँ ?

परन्तु पेरिस की शरारतपूर्ण मुसकान का जादू मुझ पर न चल सका। पेरिस की जिंदगी में जो क्रांतिकारी और कलात्मक सौंदर्य है, उसकी शोखी मुझे मुग्ध बनाने के लिए पर्याप्त है।

३० मई

(१) कला-मन्दिर 'लुव'
(२) 'क्रान्ति-भूमि'
(३) वर्साई का केलि-सदन
(४) "शैतानों को वोट नहीं दे सकतीं"
(५) 'कामुकों का प्रजातंत्र'

क्रान्ति और कला के नगर पेरिस के म्यूजियमों (संग्रहालयों) की मीठी चर्चाएँ बहुत सुन रखी थीं और आज यहाँ के सुप्रसिद्ध कलातीर्थ 'लुव' में पहुँचते ही यह प्रकट हो गया कि सांस्कृतिक जीवन के रसमय अध्ययन का यह संग्रहालय सर्वोत्तम साधन है। फ्रांसीसियों को 'लुव' पर नाज़ है और इस कला-भवन में संगृहीत मूर्तियों और चित्रों के देखने के बाद किसे न इस पर गर्व होगा? यहाँ भौगोलिक सीमाएँ टूट जाती हैं और कला के निष्कलंक सौंदर्य को निहार कर विभिन्न देशों के पर्यटकों के मन में समान रस की सृष्टि होती है। क्या भूत और क्या वर्तमान, संस्कृति और सभ्यता के अटूट क्रम के इतिहास के पृष्ठों को कलाकृतियाँ मेरी आँखों के सामने पलटती जा रही थीं और मैं विभिन्न युगों के कलाकारों की कल्पनाओं के मूर्तरूप को देखता जा रहा था। काव्य, संगीत और नृत्य की अपेक्षा मूर्तियों और चित्रों के द्वारा भावनाओं की सफल अभिव्यक्ति में जो अनूठापन है, उसी में कला की रसमयता निहित है और आज संसार के एक उत्कृष्ट और सबसे बड़े संग्रहालय में शिल्पियों की प्रेरक कृतियों को देख कर मैं आत्म-विभोर हो उठा। अजन्ता की गुफाओं में आकर्षक भित्ति-चित्रों को देख कर हैदराबाद के कवि 'वज़्द' ने 'अजन्ता' शीर्षक कविता में जो उद्‌गार व्यक्त किये थे, वह आज 'लुव' म्यूजियम में घूमते समय सहसा मुझे याद आ गये :—

"हुनरमन्दों ने तस्वीरों में गोया जान भर दी है,
तराजू दिल में हो जाती है, वह काफिर नजर दी है,

अदाओं से अयां है, लज़्ज़ते-दर्दे-जिगर दी है,
खुलेंगे राज़ इस डर से दहन पर मोह्र कर दी है,
ये तसवीरें बज़ाहिर साकित-ओ-खामोश रहती हैं,
मगर अहले-नज़र पूछे तो दिल की बात कहती हैं।"

तो, मूर्तियों और चित्रों से 'दिल की बात' सुनते हुए मेरे साथ न जाने कितने देशों के पर्यटक अनेक सदियों की मानव-सभ्यता का अध्ययन करने में निमग्न थे। मिस्र और ग्रीस, असीरिया और फारस की पुरातन सभ्यता से ले कर मध्य और आधुनिक यूरोप की कलाकृतियों का इतना उत्कृष्ट संग्रह ब्रिटेन के किसी एक संग्रहालय में मुझे देखने को न मिला। लंदन की नेशनल गैलरी में निश्चय ही यूरोपीय चित्रकला के अच्छे नमूने हैं और लंदन वालों का यह दावा है कि इटली से बाहर इतालवी चित्रों का इतना अच्छा संग्रह कहीं नहीं है। परन्तु 'मोनोलिज़ा' की वह रहस्यमय मुसकान, जिस पर विश्व का सब सौंदर्य निछावर किया जा सकता है, मुझे 'नेशनल गैलरी' में नहीं, 'लुव' म्यूजियम में ही देखने को मिली। १७५३ में स्थापित ब्रिटिश म्यूज़ियम में पुरातन चीनी चित्रों और मिस्री मूर्तियों का आकर्षक चयन निश्चय ही प्रशंसनीय है, परंतु मूर्तिकला के अनुपम नमूने 'लुव' में ही हैं। यदि फ्लोरेंस, रोम तथा वेनिस के संग्रहालयों को अपने उत्कृष्ट मूर्ति-संग्रह पर नाज है, तो भी 'विनस-द-मिलो' का जादू भरा निष्कलंक सौंदर्य 'लुव' के अतिरिक्त और कहाँ देखने को मिल सकता है? रोम और यूनान की मूर्तिकला के जो नमूने यहाँ हैं, उन्हें देखने के बाद ईसा से पूर्व की यूरोपीय सभ्यता का चित्र आँखों में उतर आया। जीवन और शौर्य को प्रतीक ये प्रतिमाएँ अपनी अनूठी शैली के कारण सदा आकर्षण का केन्द्र बनी रहेंगी। ग्रीक मूर्तिकला के अन्तिम छोर पर 'विनस-द-मिलो' (रति की प्रतिमा) की अनुपम छवि देख कर मैं मुग्ध हो गया। स्वस्थ सौंदर्य की यह अनूठी प्रतिमा यूनानी मूर्तिकला की श्रेष्ठता प्रकट कर रही थी और मैं मूर्तिकार की अनुपम कल्पना पर इस प्रकार रीझ गया था कि मूर्ति के पास से हटने की इच्छा ही न होती थी। मूर्तिकला की शिक्षा पाने वाले कई छात्र-छात्राएँ पुराने आचार्यों की कला के अध्ययन में यहाँ लीन थे। पेरिस के विलासमय जीवन की प्रतीक कुछ रति-कुमारियाँ भी यहाँ जमा थीं, जिन्हें इस सुडौल प्रतिमा को देख कर सम्भवतः अपने शरीर की गढ़न पर तरस आ रहा था। संसार के सर्वोत्तम राज-पथ 'शां ज़ेलीज़े' में शाम को टहलते समय इनमें जो शोखी नज़र आती

है, वह इस प्रतिमा के सम्मुख खड़े होते ही दूर हो गई थी । पेरिस की रमणियाँ अपने सुडौल शरीर के नग्न-प्रदर्शन से नैश-विहार को पेरिस के जीवन का आकर्षक अंग बना चुकी हैं, किंतु वे भी 'विनस-द-मिलो' के सामने आते ही हीनता की भावना से शर्मा जाती हैं। यह प्रतिमा कामिनी के जिस आकर्षक रूप को प्रकट करती है, उसकी गरिमा एक हाथ टूट जाने पर भी कम नहीं हुई। ईसा से ३०६ वर्ष पूर्व की मूर्ति "सैमोथ्रेज की विजय" यूनानी मूर्ति-कला की उस शैली की द्योतक है, जिससे शौर्य के साथ गति और गहरे भावों की तन्यमता परिलक्षित होती है । रेनेसां (पुनर्जागरण) युग के इतालवी मूर्तिकारों के उत्कृष्ट नमूने भी यहाँ देखने को मिले । दान्तेलो, माइकेल-एंजलो आदि मूर्तिकारों की कृतियाँ मुझे बहुत पसन्द आईं । इन कलाकारों की अलंकृत शैली में भारीपन नहीं है, बल्कि भव्यता है ।

खाल्दिया, असीरिया और फारस की पुरानी मूर्तियाँ यहाँ चौबोस कमरों में संगृहीत हैं । खाल्दिया साम्राज्य (खाल्दिया एक प्रकार से बैबीलोनिया का एक प्रान्त था । ईरान की खाड़ी के ऊपर की ओर अरब के रेगिस्तान से मिला हुआ फिरात नदी के निचले हिस्सों के किनारे पर यह भाग आबाद था) ने मूर्तिकला के क्षेत्र में जो प्रशंसनीय योग प्रदान किया था, उसके प्रमाण-स्वरूप उस युग की जो मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं, उनका अच्छा संग्रह इस म्यूजियम में है । इस साम्राज्य की राजधानी सूसा और प्रसिद्ध नगर टेलो के राजमहलों से खाल्दियन मूर्तिकला के महत्त्वपूर्ण नमूने प्राप्त हुए हैं । एक मूर्ति, जिस पर सिरपुला के राजकुमार गुदिया का नाम खुदा हुआ है, कृष्णवर्ण-प्रस्तर की है और खाल्दियन शैली की भव्य यादगार है । इस मूर्ति से ऐसा प्रतीत होता है कि उस युग में इस क्षेत्र के लोग कितने हृष्ट-पुष्ट होते थे। भौंहों से एक अनूठी शैली का आभास मिला और जिस अज्ञात मूर्तिकार ने व्यक्तित्वबोधक अपनी इस मूर्ति में स्वस्थ मांसल शरीर एवं सौम्य मुखाकृति को अभिव्यक्त किया है, उसकी सराहना अनंत काल तक होती रहेगी । खाल्दियन शैली की मूर्तियाँ मिस्री मूर्तियों से सर्वथा भिन्न हैं । मैंने लुव में मानव-आकृति की जो मूर्तियाँ देखीं, उनमें मनुष्य की दुबली-पतली और लम्बी आकृति दिखाई गई है । मिस्री और चीनी मूर्तिकारों की भाँति असीरिया और फारस के मूर्तिकारों को पशु-पक्षियों की मूर्तियाँ तैयार करने में जो कमाल हासिल था, उसके कुछ नमूने यहाँ देख कर यह स्वीकार करना पड़ा, कि वे भी इस शैली के आचार्य थे । असीरियन मूर्तियों की अपेक्षा फारस की मूर्तियों में भावुकता और भव्यता

अधिक होने के कारण वे अधिक छविमयी हैं। मिस्री मूर्तियों के देखते समय फ्रांको के स्पेन से निष्कासित लोकतंत्रवादी स्पेन के समर्थक दो स्पेनिश कलाकार भी मुझे वहाँ मिले और उन्होंने मुक्त कंठ से मिस्री मूर्तियों की प्रशंसा करते हुए मुझे बताया कि इन मूर्तियों को देखने से प्रकट हो जाता है कि प्रस्तर-प्रतिमाओं में पुरातन सभ्यता को जीवित रखनेवाले वे कलाकार प्रकृति के पर्यवेक्षण में कितने निपुण थे। प्राचीन मिस्र के पंचम राजवंश के एक पुरोहित की मूर्ति को देख कर उसकी मुखाकृति से परिलक्षित भावों और स्कन्धों की सुडौलता पर मैं रीझ उठा। मूर्ति देखते ही यह मालूम होता है कि पुरोहित कितना विचारमग्न, सतर्क और पटु है। हर देश की मूर्तिकला और चित्रकला पर धर्म की छाप पड़ी है और मिस्री मूर्तियों से उस देश के प्राचीन वैभव तथा विजयोल्लास की झलक मिली।

फ्रांसीसी मूर्तिकला के तो उत्कृष्ट नमूने यहाँ हैं ही। मूर्तिकला में अलंकरण-शैली का अपना अनूठा स्थान है। फ्रांसीसी मूर्तिकार ज़्यां गूज़ों की 'सतीत्व तथा प्रकाश की देवी' और 'बारहसिंघे की प्रतिमा' इस शैली की भव्यता के उत्कृष्ट नमूने हैं। विभिन्न युगों की मूर्तियों के रूप-विधान, वस्त्र-परिधान एवं अलंकार-विन्यास को देख कर ईसा के पूर्व से वर्तमान युग तक की सभ्यता की झलक पाने के बाद जो खुशी हुई, वह अवर्णनीय है।

वस्त्राभूषणों, फर्नीचर, चीनी मिट्टी के बर्तन, कलायुक्त चित्रों से सुसज्जित दीवारों के पर्दे (टेपेस्ट्रीज़) पर आज मेरी दृष्टि न रुकी। यूरोप के प्रतिनिधि चित्रकारों की कलाकृतियों को देखने की लालसा से जब मैं चित्र-कक्ष में पहुँचा, तो रंगों की रुचिर गहराई में मेरा मन डूब गया। मानव की विविध भावनाओं का सफल चित्रांकन देख कर जो स्फूर्ति और प्रेरणा प्राप्त हुई, उसे शब्दों के डोरे में बाँध सकना असम्भव है। बदलते रंगों और बदलते विचारों का चित्रों के द्वारा अध्ययन करते समय कला के विकास के नये रूप प्रकट होते जाते, और मैं कभी शिशु की निष्कपट मुसकान पर निछावर होता, तो कभी जीवन के मधुमय वसन्त को देख कर उस पर ठगा-सा रह जाता, फिर संचित प्यार की निधि लुटानेवाली प्रेमिका के लास-विलास में फँस जाता, तो कभी चिन्ता और विषाद की मुखर रेखाएँ मन पर कुहरे की घनी छाया फैला देतीं। और तभी मंगल हास-सी प्राकृतिक दृश्य की छवि आँखों में भर जाती।

इतालवी, स्पेनिश, फ्लेमिश, डच, फ्रेंच, जर्मन और इंगलिश चित्र-शैली के नमूने तो यहाँ हैं हीं, अमेरिकी चित्रकला का संग्रह भी इस म्यूज़ियम में है।

डायरी के पृष्ठों में इस विशाल संग्रहालय के उत्कृष्ट चित्रों का अध्ययन कैसे कर पाऊँगा ? इस पर तो हिंदी में भी स्वतंत्र रूप से अच्छे ग्रंथ लिखने की आवश्यकता है और मूर्तिकला तथा चित्रकला के विशेषज्ञों को यह काम करना चाहिए। मैं तो केवल थोड़े से उन्हीं चित्रों का शब्द-चित्र प्रस्तुत कर सकूँगा, जो मुझे बहुत प्रिय लगे।

विषयों के चुनाव, रंगों के विन्यास एवं रेखाओं के अद्भुत प्रकार से पन्द्रहवीं सदी के सुप्रसिद्ध जनवादी इतालवी चित्रकार, मूर्तिकार, गणितज्ञ, इंजीनियर, संगीतज्ञ और विचारक 'ल्यो-नार्दो-विंशी' ने चित्रकला में जिस टेकनीक को जन्म दिया, उसका दर्शन विश्व-विख्यात 'मोनोलिज़ा' की रहस्यमय मुसकान में पा कर मेरा मन आनंद से भर गया। इस 'मुसकान' को देख कर मैं विचारों की दुनिया में डूब गया। १५०२ में इस अमर शिल्पी ने इस चित्र को शुरू किया था और चार वर्ष में यह तैयार हुआ। आलोक और छाया के हेरफेर से 'ल्यो-नार्दो-विंशी' ने इस चित्र में जो प्राण फूँक दिया है, उसका उदाहरण किसी अन्य शिल्पी को तूलिका आज तक प्रस्तुत न कर सकी। मुझे यह जान कर बड़ा क्लेश हुआ कि इस कला-मंदिर में आ कर किसी शैतान ने सोलहवीं सदी के शुरू की इस अनूठी सांस्कृतिक देन को विकृत करने के लिए इस पर दाग लगा दिया था। परन्तु यह देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि फ्रांसीसी शिल्पियों ने बड़ी कुशलता के साथ उस दाग को दूर कर दिया है। इसी चित्रकार की दूसरी कृति 'सेंट जान' के मुख पर वही 'मोनोलिज़ा की मुसकान' तथा मुख पर समान गाम्भीर्य देख कर मैं इस मनोवैज्ञानिक उलझन में पड़ गया कि आखिरकार वह कौन-सी ऐसी रहस्यमय मुसकान थी, जिसने चित्रकार की भावनाओं को इतना गहरा बना दिया था। 'सेंट जान' का एक हाथ शून्य में उठा हुआ उंगली से अनन्त की ओर संकेत कर रहा है। सिर पर घने बालों की लहराती जटा और भावनाओं को व्यक्त करने वाली आँखों को देख कर ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे इस महान् शिल्पी के आध्यात्मिक विचारों का यह चित्र सजीव प्रतीक हो। शैली चित्र की भाषा होती है, और उसी के द्वारा चित्रकार की कल्पनाएँ व्यक्त होती हैं। 'ल्यो-नार्दो-विंशी' के चित्रों से उनके चिन्तनशील व्यक्तित्व और गूढ़ विचारों की स्पष्ट झलक मिलती है।

रेनेसां युग के इतालवी चित्रकार वातिशेली का 'रति-जन्म' और पवित्र तथा अपवित्र प्रेम की भावनाओं को प्रकट करने वाला 'टीशियन' का 'नग्न-नारी'

का चित्र दो विभिन्न शैलियों को प्रकट करते हैं। 'रति-जन्म' में आकार पर नहीं, बल्कि रेखाओं पर जोर दिया गया है और वक्र रेखाओं के द्वारा रति के लहराते बालों की शोभा प्रकट करने में चित्रकार को इतनी सफलता मिली है कि उन अलकों में सभी दर्शकों का मन उलझ जाता है। टीशियन की 'नग्न-नारी' में संगीत के ताल और सुर के मधुर लय की भाँति आध्यात्मिक और भौतिक सौंदर्य का जो मधुर मेल है, उसने मुझे बहुत आकृष्ट किया।

सुप्रसिद्ध इतालवी शिल्पी रैफेल का चित्र 'सेंट जान के साथ कुमारी मरियम और शिशु ईशु' भावाभिव्यक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है। वेरोशियो नामक एक अन्य इतालवी चित्रकार का 'कुमारी मरियम और बालक ईशु' चित्र भी मुझे बहुत पसन्द आया। रैफेल का 'सेंट जार्ज' शीर्षक चित्र गहरे विचारों और आध्यात्मिक कल्पनाओं का प्रतीक है। प्रातःकालीन शीतल वायु के झोंकों की स्निग्धता को व्यक्त करने वाले कान्तिमय वृक्षों और श्वेत घोड़े पर गुलाबी तथा लाल रंग के आलोक की वर्षा देख कर मन मुग्ध हो गया। इस चित्र में सर्पाकार दैत्य को परास्त कर आध्यात्मिक साहस के प्रतीक सेंट जार्ज विजयोन्मुख भाव को देखते ही यह सपना साकार हो उठता है कि इस विश्व में कुरूपता, चिंता और अंधकार के लिए कोई स्थान नहीं है।

स्पेनिश चित्रों में गोया नामक चित्रकार का 'पंखा हाथ में लिये महिला' शीर्षक चित्र सुघर वर्ण-विन्यास का द्योतक है। फ्रांसीसी शिल्पी 'ग्रीजों' का 'गुड़िया के साथ शिशु' नामक चित्र रंगों और रेखाओं में कविता की ऐसी अनूठी कल्पना है, जिसे देखने के बाद फ्रांसीसी चित्रकारों की सूझबूझ का कायल होना ही पड़ता है। रूमानी चित्रशैली के प्रतिनिधि चित्रकार 'दे क्रोज़' की 'बैठी हुई नग्न महिला' का चित्र जिस मांसल सौंदर्य को अभिव्यक्त करता है, वह युग-युग तक मूर्तिकारों और चित्रकारों को प्रेरणा प्रदान करता रहेगा। शिल्पी ने इसे नारी-सौंदर्य के अध्ययन का एक विषय बना दिया है। मैंने शुरू में ही कहा था कि इस डायरी में सभी शैलियों के चित्रों का अध्ययन सम्भव नहीं है, इसलिए विभिन्न शैलियों के यूरोपीय चित्रकारों के नाम गिनाने की अपेक्षा संक्षेप में मैं यही कहना चाहता हूँ कि इस कला-संग्रहालय में अनूठी कृतियाँ संगृहीत हैं।

'लुव' कला-मन्दिर का इतिहास भी बड़ा दिलचस्प है। एक समय था, जब इस संग्रहालय के भव्य-भवन में फ्रांस के निरंकुश और विलासी नरेश निवास करते थे, परन्तु यही अब यहाँ का राष्ट्रीय म्यूजियम है। चौदहवें लुई

कला-मन्दिर लुव के चित्रकक्ष की मीठी झलक

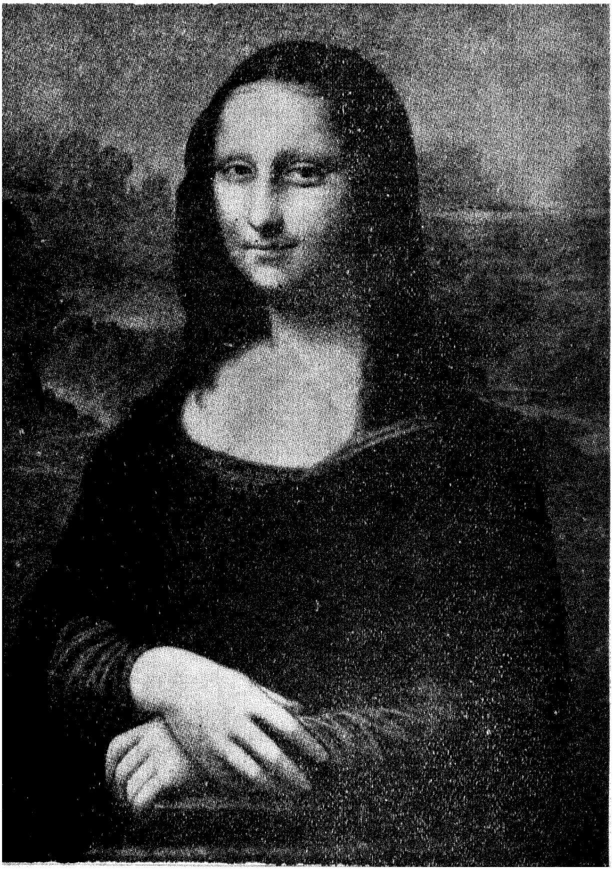

पन्द्रहवीं-सोलहवीं सदी के सुप्रसिद्ध जनवादी इतालवी चित्रकार ल्यो-नार्दो-विंशी का विश्वविख्यात चित्र 'मोनोलिज़ा' जिसमें आलोक और छाया के हेरफेर से कलाकार ने प्राण फूँक दिये हैं।

३० मई की डायरी, पृ० २३६

कलामन्दिर लुव के चित्रकक्ष की मीठी झलक

विश्वविख्यात इतालवी शिल्पी रैफेल का 'सेंट जान के साथ कुमारी मरियम और शिशु ईशु' नामक चित्र जो भावाभिव्यक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है।

३० मई की डायरी, पृ० २४०

ने जब वर्साई का महल बनवाया, तो राजपरिवार के सदस्य पेरिस के संघर्षमय जीवन से दूर उस नये प्रासाद में रहने लगे और यह महल कला-मन्दिर बन गया। लुव म्यूजियम की शानदार और भव्य इमारत को देख कर यह कहना ही पड़ता है कि इस कलातीर्थ के शरीर और आत्मा—दोनों ही छविमय हैं।

प्रथम फ्रांसिस ने इन कला-कृतियों के संग्रह का काम शुरू किया था और उसके बाद भी यह क्रम जारी रहा। चौदहवें और सोलहवें लुई के अतिरिक्त तृतीय नैपोलियन ने इस संग्रहालय के लिए यूरोप के कई भागों से विविध कलाकृतियों को जमा किया। क्रान्ति के पूर्व यह म्यूजियम केवल फ्रांसीसी नरेशों और उनकी रानियों के मनोरंजन का साधन था, परन्तु १७९३ में इस संग्रहालय का द्वार जनता के लिए खुल गया। १८४८ से यह राष्ट्र की सम्पत्ति है। द्वितीय महायुद्ध के समय पेरिस को खुला नगर घोषित कर के लज्जा से नत फ्रांसीसियों ने अपनी कलाकृतियों की रक्षा भले ही कर ली, किन्तु सभ्यता एवं संस्कृति की जो अपूर्व थाती पेरिस के कला मंदिरों में संगृहीत है, उसकी रक्षा के लिए स्थायी शान्ति की आवश्यकता है। मगर मुझे यह देख कर दुःख हुआ कि फ्रांस के वर्तमान शासक विनाश के पथ को अपनाये हुए हैं। परन्तु साथ ही मैंने यह भी अनुभव किया कि पेरिस की जनता शान्ति की रक्षा में सहयोग प्रदान कर के इन कलाकृतियों की ज़रूर रक्षा करेगी।

'लुव' से बाहर आते ही त्युलरीज़ महल और वाटिका की शोभा देखने लगा। इस वाटिका की क्यारियाँ फ्रांस के सुप्रसिद्ध बागवान ला-नोत्रे के दिमाग की उपज हैं।

'लुव' से कोंकोर्द तक बाग की क्यारियाँ चली गई हैं। हर क्यारी के मोड़ पर खड़ी भव्य मूर्तियाँ इस देश की कलाप्रियता प्रकट करती हैं। ६२,४०० वर्ग मीटर में फैले इस स्थल की शोभा अनूठी है। इसी स्थान पर, जहाँ क्रान्ति के पूर्व पन्द्रहवें लुई की मूर्ति खड़ी थी, पेरिस की क्रुद्ध जनता ने त्युलरीज़ के महल में गिरफ्तार सोलहवें लुई और उसकी रानी मेरी एन्तोइनेत को २१ जनवरी सन् १७९३ ई० को गिलोतिन पर चढ़ा दिया। नरेश के खून से गिलोतिन की सीढ़ियों पर चढ़ कर फ्रांसीसी क्रान्ति के नेता दान्तन ने क्रान्तिकारियों के समक्ष भाषण करते हुए योरप के दूसरे निरंकुश नरेशों को भी यह चेतावनी दी थी :—

"यूरोप के नरेशों को हम चुनौती देना चाहेंगे; हम एक राजा का सिर

उनके आगे फेंकते हैं।"

उस समय इस स्थान का नाम 'क्रान्ति की भूमि' पड़ गया, परन्तु बाद लुई फिलिप के शासन-काल में इसे पुनः 'प्लेस-द-ला-कोंकोर्द' के नाम से पुकारने लगे और आज तक यही नाम प्रसिद्ध है। इसी स्थान पर, जहाँ एक समय निरंकुश पन्द्रहवें लुई की विशाल मूर्ति खड़ी थी और जिसे क्रान्ति के समय क्रुद्ध जनता ने नष्ट कर दिया था, वहीं अब पुरातन सभ्यता के गढ़ मिस्र का वह स्तम्भ खड़ा है, जिसे 'क्लियोपेत्रा की सुई' अथवा 'ओबलिस्क' कहते हैं। यह पुराना स्तम्भ यूरोपीय सभ्यता के घोंसले पेरिस में गर्व से खड़ा आज भी पुकार-पुकार कर यह कह रहा है कि सभ्यता और संस्कृति किसी देश विशेष की विरासत नहीं। राजभवन अब फ्रांस का राष्ट्रीय असेंबली-भवन है। हमारे मार्ग-दर्शक ने यह ठीक ही कहा था कि "मुक्का तानने वालों का यह सदन है।" और जिस सदन में अक्सर कुर्सियाँ चल जाती हैं, उसे यह नाम देना गलत नहीं है।

'क्लियोपेत्रा की सुई' के पास ही कला के सजीव प्रतीक दो फौवारे हैं, जिनकी जलपरियों को देखते समय हमारे आसपास रंगीन तितलियाँ मँडराने लगी थीं। इन फौवारों में वरुणदेव के छः अनुचरों और जल-देवियों की प्रतिमाओं के हाथ में मछलियाँ, और उनके मुख के जलोच्छालन को देख कर मैं मुग्ध हो गया। इस प्रांगण के चारों ओर आठ ऊँचे चबूतरे हैं, जिन पर खड़ी विशाल मूर्तियाँ फ्रांस के महान नगरों के मूर्तिमान स्वरूप को अभिव्यक्त करती हैं। शाम होते ही रोशनी हो जाने पर यह स्थान कुछ फ्रांसीसियों के कथनानुसार रति का विहार-स्थल प्रतीत होता है, परन्तु मुझे तो ऐसा लगा जैसे यह स्थान आज भी जनता के शोषकों को यह चेतावनी दे रहा है कि अब वे मानवता का गला नहीं घोंट सकते।

आज मैं घूम-घूम कर यहाँ के अधिकांश महत्त्वपूर्ण स्थानों की मीठी झलक पाने के लिए इस प्रकार लालायित था कि विश्राम का ध्यान न था।

मैं अब पुनः उस राजपथ पर पहुँच गया, जिसे शां ज़ेलीज़े कहते हैं। कोलबर्त ने पहले-पहल १६६७ में इस राजपथ को तैयार करने की योजना प्रस्तुत की थी, और अब पुरातन तथा नवीन पेरिस को जोड़ने की यही कड़ी बन गया है। मार्ग के दोनों ओर पाँच-पाँच कतारों में पेड़ों की पंक्तियाँ और दो कतारों के बीच फूलों की क्यारियाँ। पाँचवीं कतार के बाद वह प्रशस्त-पथ, जिस पर एक साथ तीन-चार मोटरें विपरीत दिशाओं से आ-जा सकती हैं।

शाम होते ही रंग-बिरंगी रोशनी से इस क्षेत्र का वातावरण और लुभावना हो जाता है। इसी राजमार्ग के दोनों ओर बड़े रेस्त्राँ, सिनेमाघर और सजी-सजायी अच्छी-अच्छी दुकानें हैं। शां ज़ेलीज़े नाट्यशाला की इमारत वर्तमान वास्तुकला का एक अच्छा नमूना है।

'शां ज़ेलीज़े' के अन्तिम छोर पर विजय-तोरण है। स्थापत्य-कला-मर्मज्ञ शालग्रिन के मस्तिष्क की यह सूझ है। यह तोरण ४६ मीटर ऊँचा ४५ मीटर चौड़ा है, जिसके भित्ति-चित्रों में नेपोलियन की सेना के प्रस्थान, विजय, प्रतिरोध और शान्ति को जिस सफलता के साथ मूर्तिकारों ने अभिव्यक्त किया है, उसे देख कर मैं अवाक् रह गया। इसके नीचे अज्ञात सैनिक का स्मारक है, जहाँ प्रतिदिन सायंकाल स्मृति-दीप जलाये जाते हैं।

विजय-तोरण के पास से पेरिस के चुने हुए १२ स्थानों को जाने के मार्ग हैं और इस चौराहे पर खड़े होते ही पेरिस नगर के नक्शे की झलक मिल जाती है। विजय-तोरण देखने के बाद मैं नेपोलियन-स्मारक देखने गया, जहाँ पहुँचते ही उस निरंकुश नरेश के जीवन का चित्र स्मृति-पटल पर खिंच आया, जिसने एक बार कहा था—"सत्ता मेरी उपपत्नी है।" मगर यूरोप के बहुत बड़े भाग को पदाक्रान्त कर लेने के बाद भी मास्को की पराजय के बाद वाटरलू की लड़ाई ने उसे यूरोप का बन्दी बनाया और सेंट हेलीना द्वीप में साढ़े पाँच वर्ष तक नारकीय जीवन व्यतीत करने के बाद उसकी मृत्यु हुई और मरने के बाद भी अंग्रेज़ गवर्नर ने उसकी बहुत बुरी कब्र बनवाई। इसमें कोई सन्देह नहीं कि विचारों तथा कल्पनाओं से भरा हुआ नेपोलियन एक साहसी योद्धा था, किन्तु आदर्शों का कोई मूल्य उसकी दृष्टि में न था। वैन्दोम स्तम्भ के पास नेपोलियन की बुढ़िया माँ के वे शब्द मुझे याद आ गये, जिन्हें उसने इस मूर्ति को देखने के बाद कहा था—

"सम्राट् एक बार पुनः पेरिस में आ गया है।" नेपोलियन का स्मारक बहुत ही कलात्मक एवं आकर्षक है।

मैंने उस फौजी स्कूल को भी देखा, जहाँ नेपोलियन ने शिक्षा पाई थी। यहीं द्वितीय महायुद्ध के समय फ्रांसीसी और जर्मन सैनिकों के बीच कुछ देर जम कर लड़ाई हुई थी और फौजी स्कूल की दीवारों पर गोलियों के दाग़ बदस्तूर कायम हैं, जो इस देश की नई पीढ़ी को हिटलरी जुल्मों की याद दिलायेंगे। पुराने महलों, गिरजाघरों तथा अन्य कई महत्त्वपूर्ण स्थानों को देखते हुए मैं 'इफेल टावर' देखने पहुँचा। ६८४ फुट ऊँचे इस्पात के बने इस

टावर का निर्माण-कार्य २८ जनवरी १८८७ को आरम्भ हुआ था, और १८८९ में बन कर तैयार हो गया था। फ्रांसीसी बड़े नाज से कहते हैं कि लोहे व इस्पात से बना यह ऊँचा टावर वर्तमान स्थापत्य-कला की एक महान देन है। १८९० की अन्तरराष्ट्रीय प्रदर्शनी का मुख्य आकर्षण यही टावर था। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी प्रदर्शनी में विशेष रूप से इसी टावर को देखने पेरिस गये थे। टॉल्सटॉय ने इसे "मनुष्य की मूर्खता का चिह्न" कहा है। मैंने उसी 'मूर्खता के चिह्न' के सामने खड़े हो कर जब उसे ठीक से देखा, तो गांधी जी के इस उद्गार को अक्षरशः स्वीकार करना पड़ा कि "इफेल टावर में सौंदर्य का नाम भी नहीं है।" सचमुच इसे देखने के बाद मैं भी यह पूछने के लिए विवश हूँ कि सौंदर्य और कलाप्रिय पेरिस में इस कुरूप टावर का निर्माण क्यों हुआ ?

पेरिस में आ कर अंतरराष्ट्रीय महत्त्व के स्थान 'पैले-द्-शाइयो' को भला मैं कैसे न देखता ? यहीं संयुक्त राष्ट्र जनरल असेंबली का पेरिस-अधिवेशन हुआ था। इसी भव्य-भवन में संयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र के आदर्श की रक्षा की चर्चा हो चुकी है, परन्तु फ्रांस के शासक उसी घोषणापत्र के विरुद्ध आचरण करने में नहीं शरमाते। कितना बड़ा प्रपंच आज की राजनीति में है !

मैडलिन के आकर्षक मन्दिर (गिरजाघर) के पास पहुँचने पर मुझे एक और कष्टदायक अनुभव हुआ। ज्योंही मैं इस पवित्र मन्दिर के द्वार पर पहुँचा, एक फ्रांसीसी ने चुपके से मेरे पास आ कर नंगी स्त्रियों के चित्र दिखाये और उन्हें खरीद लेने का आग्रह करने लगा। गिरजाघर के सामने यह कुत्सित व्यापार ! मुझे यह बात बहुत बुरी लगी, और जब डाँट कर मैं उसे भगाने लगा, तो टूटी-फूटी अंग्रेजी में उसने कहा—"पेट पालने के लिए सब कुछ करना पड़ता है महाशय !" इसके बाद वह दूसरे पर्यटकों के पास बढ़ गया और मैं यूनानी मन्दिरों की शैली पर बने पेरिस के इस पुरातन गिरजाघर को देखने में तल्लीन हो गया। पन्द्रहवें लुई के राज्याश्रय में पलने वाले स्थापत्य-कला-विशारदों ने यूनानी शैली में इस गिरजाघर को बनाने का सफल प्रयास किया था। सादगी के साथ कला का प्रतीक यह मन्दिर मुझे बहुत ही अच्छा लगा। बाइबिल के कथानकों के आधार पर बनी मूर्तियों व भित्ति-चित्रों से यह मंदिर अलंकृत है।

आज ही वर्साई के ऐतिहासिक महल को भी देखने का निर्णय किया। और बस पर सवार हो जब वहाँ पहुँचा, तो 'बोबर्न' नरेशों के विलासमय

जीवन की सच्ची झलक मुझे मिली। यही वह महल है, जहाँ १८७१ ई० के जनवरी मास में सोलहवें लुई के सुन्दर दीवानखाने में संयुक्त जर्मनी की घोषणा हुई थी और प्रशिया का नरेश कैसर के नाम से सम्राट् बना था और इसी महल के दीवानखाने में प्रथम महायुद्ध के बाद 'वर्साई की सन्धि' हुई थी, जिसके फलस्वरूप उस राजवंश के शासन का अंत हुआ।

पेरिस से दूर इस केलि-सदन का निर्माण चौदहवें लुई ने उस समय करवाया था, जब फ्रांस की जनता भूखों मर रही थी और पेरिस में लोग रोटियों के लिए तड़प रहे थे। 'बोबर्न' नरेशों की विलासिता इस सीमा तक पहुँच गई थी कि वे ऐयाशी के लिए नये-नये कर लगा कर सामन्तों और अमीरों की सहायता से भूखी जनता को चूस रहे थे। इस राजमहल के भीतर प्रविष्ट होते ही आँखों को चकाचौंध कर देने वाली विलास की सामग्री देख कर मुझे ऐसा लगा, जैसे इसमें जनता के खून के धब्बे लगे हों। महल के विभिन्न कमरों में कलापूर्ण टेपेस्ट्रीज़ (चित्रांकित दीवारों के पर्दों), मूर्तियों, तात्कालिक फ्रांस के बड़े-बड़े शिल्पियों के सुन्दर चित्रों आदि को देख कर यह भी स्वीकार करना पड़ा कि विलासिता के साथ बोबर्न नरेशों में कलाप्रियता भी थी। इस प्रासाद का सर्वोत्कृष्ट हाल—'दि-हाल-आफ मिरर'—है, जो रेनेसां शैली के अलंकृत स्वरूप का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। छतों के चित्रांकन को देख कर मुगलकालीन महलों के भित्ति-चित्रों की याद आ गई। इसी शानदार हाल में वह कमरा है, जहाँ २८ जून, १९१९ को 'शान्ति-सन्धि' पर फ्रांस की ओर से पराजित जर्मनी को अधिक से अधिक अपमानित करने की इच्छा से क्लेमेंशो, अमेरिका की ओर से प्रेसिडेंट विलसन, ब्रिटेन की ओर से लायड जार्ज तथा इटली की ओर से आरलैंडो ने हस्ताक्षर किये थे। जर्मनी की ओर से तत्कालीन परराष्ट्र मन्त्री मूलर ने भी अनिच्छापूर्वक वर्साई के सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर किया था। मैंने उस छोटी मेज़ को भी देखा, जिस पर वर्साई सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर हुए थे। उस सन्धि की शर्तों की चर्चा मैं इस डायरी में क्या करूँ, मगर फिलिप, स्नोडन जैसे तथाकथित समाजवादी राजनीतिज्ञों ने भी, जो प्रथम महायुद्ध के बाद की ब्रिटिश लेबर पार्टी की आधारभूत नीतियों के खिलाफ मेकडोनल्ड के साथ टोरियों को खुश करने में लगे हुए थे, इसके बारे में लिखा है कि "यह सन्धि लुटेरों, साम्राज्यवादियों और सैन्यवादियों को सन्तुष्ट कर देगी। मगर जो यह आशा कर रहे थे कि युद्ध समाप्त होने पर शान्ति कायम होगी, उनकी आशाओं पर इसने तुषारपात कर दिया। यह

शान्ति की सन्धि नहीं है, बल्कि दूसरे युद्ध की घोषणा है।" हुआ भी यही।

चौदहवें लुई के शयन-कक्ष को देख कर यह प्रकट हो गया कि वह भूखी प्रजा के धन को अपने आराम व विलास के लिए बड़ी बेरहमी से उड़ाता था। सुअलंकृत पलंगों, आदमकद शीशों, पुरानी टाइमपीस, जिसके चारों ओर सोने का पानी चढ़ा हुआ, दीवारों पर चित्रों से सुसज्जित पर्दों, सुन्दर मधुपात्र तथा चित्रों और मूर्तियों से सजा-सजाया कमरा सामन्ती ऐश्वर्य का प्रतीक है। इस राजप्रासाद का हर कमरा 'बोबर्न' नरेशों के वैभव का ज्वलन्त उदाहरण है।

महल से बाहर निकल कर उससे लगे बाग और सुन्दर पार्क को देखा, जो आंद्रे-ला-नोत्रे की कलात्मक सूझ-बूझ का परिचायक है। महल और बाग के नीचे विस्तृत प्रांगण में रुचिर फौवारे हैं, जो फ्रांस की नदियों के प्रतीक माने जाते हैं। इसी बाग में चौदहवें लुई की रानी अंगूरी आसव के नशे में केलि-क्रीड़ा किया करती थी।

हमारे साथ अमेरिकी पर्यटकों का एक पूरा दल वर्साई का राजमहल देखने आया था। वहीं पुर्तगाल की राजधानी लिस्बन की एक युवती से भेंट हो गई। बातचीत शुरू होने पर उसने कहा—"आपके देश के लोग पुर्तगालियों को घृणा की दृष्टि से देखते होंगे?" मैंने कहा—"भारतवासी पुर्तगाल के प्रतिक्रियावादी शासकों को अवश्य घृणा की दृष्टि से देखते हैं, परंतु वहाँ की आम जनता से हमें क्यों घृणा होगी।" यह सुन कर वह खुद कहने लगी—"हमारी सरकार भारत-स्थित पुर्तगाली बस्तियों को अपने प्रभुत्व में रखने के प्रलोभन से एशिया के एक महान् देश को अपना शत्रु बना रही है।" मैंने सोचा एक सलाजार है, जो युग-धर्म के विरुद्ध गोवा, डामन और ड्यू को अपने अधिकार में रखने की घोषणाएँ किया करता है और उसी देश की यह एक साधारण युवती है, जो उसके इस कार्य को घृणित समझती है। बेनीपुरीजी मुझसे कहने लगे कि "यह युवती मुझे कोई जासूस मालूम पड़ती है" और इस कथन की पुष्टि में उन्होंने तर्क यह दिया कि "वह अपूर्व सुन्दरी है।" मगर मुझे तो वह एक निष्कपट युवती प्रतीत हुई, जिसने बाद शान्ति के आराधक गांधी के प्रति भावुकतापूर्ण शब्दों में श्रद्धा प्रकट की।

महल के प्रांगण से बाहर आ कर जब सड़क के किनारे एक रेस्त्राँ में बैठा मैं काफी पी रहा था, तो याद आया कि यही वह मार्ग है, जिससे हो कर 'मानव अधिकारों की घोषणा' के विरोधी सोलहवें लुई और उसकी रानी

एन्तोइनेत (उस समय पेरिस के लोग एन्तोइनेत को मैदम देफिसित—अभाव की देवी—कहते थे) को गिरफ्तार करके पेरिस के क्रान्तिकारी लोगों ने उन्हें जुलूस के साथ त्युलरीज़ के राजमहल में ले जा कर कैद कर दिया था। वर्साई के राजमहल पर जनता के हमले की स्मृति निश्चय ही बड़ी स्फूर्ति-दायक है।

क्रान्तिकारी पथ के वर्साई से पेरिस लौट कर मैं सीधे अपने होटल गया और शाम को जब पुनः घूमने निकला, तो देखा कि आम चुनाव का प्रचार-कार्य हर मोड़ पर तेज़ी से हो रहा है। १७ जून से चौथे लोकतंत्र का आम चुनाव-शुरू होने वाला था, इसलिए अब चुनाव-प्रचार में गर्मी आ गई थी। हर प्रतिक्रियावादी क्षेत्र से धन प्राप्त करने वाली द गाल की पार्टी ने बड़े-बड़े पोस्टर लगा रखे थे। अभी कुछ पार्टियों के पोस्टर तैयार नहीं हो पाये थे। फ्रांसीसी भाषा न जानने के कारण हर दल के लोगों से मिल कर उनके संबंध में कुछ जानने में बड़ी कठिनाई हो रही थी। वे मुझसे बात करना चाहते थे, किन्तु अंग्रेजी बोल कर मैं उनको निराश कर देता था। मगर अंग्रेजी बोलनेवाले जब मिल जाते, तो उनसे जी भर कर सब बातें पूछता और वे बड़ी दिलचस्पी के साथ मुझे सब कुछ बताते। एक अधेड़ फ्रांसीसी ने द गाल पार्टी के बारे में बातचीत चलते ही कहा—"जिस व्यक्ति के साथ दूसरे महायुद्ध के पूर्व के सभी फासिस्ट हों, जिसकी प्रतिक्रियावादियों से पूरी सांठगांठ हो और लड़ाई के समय प्रतिरोधात्मक युद्ध में बिना भाग लिये ही कुछ राष्ट्रों की कृपा से जो फ्रांस के छापामार युद्ध का नेता कहा जाने लगा हो, उसे गलित मनोवृत्ति के मतदाता ही वोट दे सकते हैं।" इसके बाद उसने कहा—"मगर अफसोस यही है कि कई खेमें गड़ गये हैं, प्रगतिशील जमातों में एका नहीं है। प्रतिक्रियावादियों का संयुक्त मोर्चा आम चुनाव के बाद सरकार बनाने के लिए होगा। और फ्रांस पर पुनः जनता के शत्रु शासन करेंगे।" वह अधेड़ व्यक्ति एक अध्यापक था और १९३५ के 'पीपुल्स फ्रंट' का समर्थक। कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट तथा एम० आर० पी० पार्टी के कार्यकर्ताओं को मैंने चुनाव-प्रचार में रत पाया।

फ्रांस में कम्युनिस्ट पार्टी सब से बड़ी राजनीतिक पार्टी है। इस देश का हर तीसरा नागरिक या तो कम्युनिस्ट है अथवा कम्युनिस्ट पार्टी का समर्थक। हर बड़े चौराहे पर कम्युनिस्ट कार्यकर्त्ता फ्रांसीसी नागरिकों से बातचीत कर के उन्हें अपना कार्यक्रम समझा रहे थे और इस प्रकार वे अधिक से अधिक मत-

दताओं के साथ निकटतम सम्पर्क स्थापित करने में संलग्न थे।

पेरिस की स्त्रियों का बहुत बड़ा भाग वर्तमान शासकों की कुव्यवस्था से क्षुभित है। टैक्सों के बोझ से जनता की कमर टूट रही है, परन्तु फ्रांस के शासक युद्ध की तैयारी में अधिक से अधिक खर्च करने की नीति अपना कर मुद्रा-स्फीति का रोग तेजी से फैलाते जा रहे हैं। एक महिला ने मुझसे आवेश के स्वर में कहा—"उन शैतानों को महिलाएँ वोट नहीं दे सकतीं, जिनकी गलत अर्थ-नीति के कारण खाने की चीज़ों की कीमतें आसमान पर पहुँच गई हैं। हम आज पर्याप्त मांस नहीं खरीद सकतीं, क्योंकि वह महँगा है और मूल्य चुकाने के लिए हमारे पास फ्रैंक नहीं हैं।" सोशलिस्टों के खिलाफ कम्युनिस्ट पार्टी की ओर से यह कहा जाता था कि वे हिंद चीन में फ्रांसीसी साम्राज्यवाद की आक्रामक नीति को प्रोत्साहन दे रहे हैं और सोशलिस्ट इस आरोप का उत्तर नहीं दे पाते थे, क्योंकि फ्रांसीसी मंत्रिमंडल में उनके साथी हिन्द-चीन सम्बन्धी नीति के पोषक हैं। दुर्भाग्य से फ्रांस की वर्तमान सोशलिस्ट पार्टी में ऐसे लोगों की भरमार है, जो हर कीमत पर अमेरिकी सहायता चाहते हैं और अपने कार्यों से फ्रांसीसी साम्राज्यवाद का समर्थन करते हैं।

फ्रांसीसी मुद्रा की कीमत इतनी गिर गई है कि आज १०० फ्रांसीसी फ्रैंक का मूल्य केवल एक रुपया है, जब कि एक स्विस फ्रैंक की कीमत एक रुपये से कुछ अधिक है। और इसी मुद्रा-स्फीति के कारण जब मैं किसी रेस्त्राँ में खा कर बिल चुकाता हूँ, तो कभी-कभी एक वक्त के भोजन के लिए एक हज़ार फ्रैंक तक दे देने पड़ते हैं। साधारणतः कुछ जलपानगृहों में ५० या १०० फ्रैंक बख्शीश में दे देने पर भी अपने लिए मधुर वातावरण नहीं पैदा किया जा सकता। और कई हज़ार फ्रैंक खर्च कर लेने के बाद जब मैं यह सोचता हूँ कि अपने देश में एक श्रमजीवी पत्रकार को कभी एक साथ हज़ारों रुपये के दर्शन नहीं होते, तो यह भी एक दिलचस्प अनुभव मालूम होता है। मगर यह अनुभव फ्रांस की जनता के लिए बड़ा महँगा है।

चुनाव-प्रचार की झलक पा लेने के बाद मैं पेरिस के उस क्षेत्र में पहुँचा, जहाँ बड़ी-बड़ी आकर्षक दुकानें हैं और सुप्रसिद्ध 'ओपेरा भवन' के कारण ही जिस की प्रसिद्धि में चार चाँद लग गये हैं। यही 'ओपेरा' फ्रांस की राष्ट्रीय संगीत-परिषद् है। दुनिया के हर भाग के साधन-सम्पन्न पर्यटक यहाँ संगीत और नृत्य का आनंद प्राप्त करने जमा होते हैं। 'ओपेरा' भवन स्थापत्य-कला का उत्कृष्ट नमूना है। नाटक, गीत, संगीत, काव्य और नृत्य के भावों का

मूर्त रूप देख कर कौन दर्शक मुग्ध न होगा ? इस भवन का पूरा वातावरण इतना कलात्मक है कि इसका जादू आँखों में छा जाता है, और रमणी के मधुर कंठ से हृदय-मूर्च्छना के ढरते ही ऐसा प्रतीत होता है कि वेणु-वनों की स्वर-लहरी का रसास्वादन कर रहे हों। पेरिस ! सचमुच तुम्हारे रूप में बड़ा रस है ! बड़ा आकर्षण है !!

रात के नौ बजे मैं बेनीपुरी जी के अतिरिक्त अमेरिका आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड आदि देशों के कुछ सैलानियों के साथ पेरिस के उस रंगीन जीवन को देखने निकल पड़ा, जिसे देख कर भी बहुत से पर्यटक वहाँ का वृत्तांत लिखने का साहस नहीं करते, परन्तु मेरी विदेश-यात्रा की स्मृति-रेखाएँ जीवन की वास्तविकता को अभिव्यक्त करेंगी और यही मैं चाहता भी हूँ, क्योंकि सत्य का गला घोंटना मैं सामाजिक अपराध मानता हूँ।

दिन की अपेक्षा रात में पेरिस की खूबसूरती बढ़ जाती है। वातावरण में नशा छा जाता है। आज सर्वप्रथम हम पेरिस की उस मस्जिद में पहुँचे, जिसका उद्घाटन मोरक्को के सुल्तान यूसुफ ने १९२६ में किया था। इस मस्जिद में मोरक्को के मुस्लिम भाइयों से मिल कर मुझे बड़ी खुशी हुई, परंतु उनकी निस्तेज आँखें यह बता रही थीं कि वे शोषण और गुलामी के कारण कितनी मार्मिक-स्थिति में हैं। दूर उनके देश में विद्रोह की लपटें उठनेवाली हैं और ये बेचारे यहाँ फ्रांसीसी साम्राज्यवादियों के काले कारनामों पर परदा डालने के लिए रखे गये हैं। मस्जिद के मुल्लों के शरीर पर ज़रूर मुझे अच्छे कपड़े देख पड़े, मगर और मुसलमानों के वस्त्रों ने उनकी गरीबी प्रकट कर दी। फ्रांसीसी और अरबी भाषा की गैरजानकारी के कारण इनसे हमारी बातचीत न हो सकी, किंतु 'खुशआमदीद' शब्द के द्वारा हमारे प्रति इन्होंने अपनी भावनाओं को प्रकट किया। यहीं हमने कॉफी पी और इन मुस्लिम भाइयों से विदा ले कर हम नैश-विहार के स्थालों को देखने 'मोंमात्र' पहुँचे।

'मोंमात्र' क्षेत्र पुराने समय से शिल्पियों का प्रिय स्थान रहा है। कुछ लोग इस भाग को 'स्वच्छन्द जीवन व्यतीत करनेवाले कलाकारों का लोकतंत्र' कहते हैं और सम्भवतः इसका कारण यह है कि कलाकार 'मॉडेल' की तलाश में अँगूरी शराब ढाले यहाँ मस्ती से प्रायः रात भर विचरण किया करते हैं। परंतु मैं इसे 'कामुकों का लोकतंत्र' कहना अधिक उपयुक्त समझता हूँ। रात में नौ बजे के बाद यहाँ की जिंदगी शुरू होती है और भोर तक यहाँ के रंगीन वातावरण की शोखी बनी रहती है।

पेरिस के अधिकांश रात्रि-क्लबों का जीता-जागता चित्र है—सिगरेट का धुआँ, रमणी का अंग-प्रदर्शन, प्रगाढ़ आलिंगन, चुम्बन तथा सुरापान का अटूट दौर।

मोंमात्र के रात्रि-क्लबों में मैंने उन पर्यटकों की संख्या अधिक देखी, जिनका परिचय कवि 'अंचल' के शब्दों में इस प्रकार है—

"जिनकी आँखों में मदिरा, नस-नस में कामुकता उद्दाम,
बर्बर पशुता से लथपथ जो पी जाते नारी का जाम।"

और मदिरा के नशे में नग्न शरीर उछाल-उछाल कर दर्शकों को आकृष्ट करने वाली उन अप्सराओं के सम्बन्ध में यही कह देना पर्याप्त है—

"जिनकी छाती के गड्ढों पर दीप वासना के जलते,
जिनके नील कपोलों पर मतवाले ग्राहक मुख मलते।"

इन 'मतवाले ग्राहकों से भरे' रात्रि-क्लबों को छोड़ कर हम यहाँ के कुछ अच्छे नैश-विहार के स्थानों को देखने गये। मुझे इन रात्रि-क्लबों में यह देख कर आश्चर्य अवश्य हुआ कि पुरुषों के साथ स्त्रियाँ भी पर्याप्त संख्या में नग्न-नारियों का नृत्य देखने जमा होती हैं।

कुछ नैश-विहार के स्थानों में पेरिस वालों की कलाप्रियता भी प्रकट होती है। नृत्यों के अलग-अलग नाम भी दिये गये हैं, जिनकी चर्चा मैं इस डायरी में अप्रासंगिक समझता हूँ। रंगमंच से सटी मेज़ों की कतारें, बर्फ भरी बाल्टियों में शेम्पेन की बोतलें और 'पिये जा, पिये जा' की ध्वनि से परिपूरित वातावरण! कभी-कभी रङ्गमञ्च से नीचे उतर कर जब कोई नर्तकी किसी दर्शक को चूम जाती, तो तालियाँ बज उठतीं, और जब वह दर्शक रूमाल हिला-हिला कर पुनः उसे बुलाता, तो फिर अँगड़ाई के साथ नीचे उतर कर वह चुम्बन का उपहार दे जाती।

किसी-किसी रात्रि-क्लब में हमारे साथ के पर्यटकों में भी कुछ युवक-युवतियों को इतनी प्रेरणा मिलती, कि वे भी नाचने लगते और हमें भी खींच-खींच कर उस नृत्य में भाग लेने को विवश करते।

इन रात्रि क्लबों की परिभाषा कामुक संगीत और नृत्य तथा वासना—इन तीन शब्दों में निहित है।

परन्तु साहित्यकारों और कलाकारों के प्रिय स्थान 'लेटिन क्वार्टर' के रात्रि-क्लबों में रुचिरता है। इस भाग के एक छोटे से रात्रि-क्लब में जब शेफान (एक विशेष प्रकार का झीना फ्रांसीसी रेशम) का आवरण धीरे-धीरे हटा कर

नृत्य में संलग्न रमणी का सुघर गात सौंदर्य-किरणों के झिलमिल प्रकाश-सा खिलखिला उठा, तो उसके 'खुले मसृण भुजमूलों' से वह 'आमंत्रण' मिला कि कई दर्शकों में बेकली पैदा हो गई। परन्तु अब इन रात्रि-क्लबों में भी अमेरिकियों की निर्लज्ज छीना-झपटी देख कर पेरिसवालों के मन में बड़ी कुढ़न पैदा होती है। 'शां ज़ेलीज़े' के 'लीडो' क्लब में डालर से नारी-सौंदर्य के खरीदारों का जमघट लगा रहता है।

पेरिस का यह रूप मुझे अच्छा नहीं लगा। नारी के जीवन को द्रव्य के लोभ में विकृत बना देने का यह घृणित व्यापार क्रान्तिकारी पेरिस के लिए सचमुच बड़ी शर्म की बात है!

पेरिस! तुमने ईरान, स्पेन, मिस्र और अपने ही देश के दक्षिणी भाग की हज़ारों सुन्दरियों को इन रात्रिक्लबों में जमा करके जो करिश्मा खड़ा कर रखा है, वह तुम्हारे गर्वोन्नत मस्तक पर कलंक का टीका है। इतिहास में प्रथम बार मानव-अधिकार की घोषणाएँ करने का श्रेय तुम्हें है, किन्तु इन नारियों के साथ जो अन्याय हो रहा है, वह क्या तुम्हारे लिए लज्जा की बात नहीं है? देखो! क्रान्तिकारी चीन ने पलक मारते इस सामाजिक कोढ़ को दूर कर दिया और शंघाई से यह घृणित व्यापार मिट गया। अब तुम्हें भी इस कलंक को मिटाना है। पेरिस! तुम यह क्यों भूल रहे हो कि जन-रुचि को विकृत बनाने से प्यास नहीं बुझती।

---

३१ मई

(१) क्रान्ति का स्मारक
(२) नोत्रेदाम का भव्य-मन्दिर
(३) 'हसीन चाँद में धब्बे'
(४) 'लहरों के आशाजनक गीत'

आज जब सर्वप्रथम वैस्तील के स्मारक को देखने मैं पहुँचा, तो वहाँ जाते ही फ्रांसीसी राज्य-क्रान्ति की वे घटनाएँ याद आ गईं, जिनसे फ्रांस ही क्या यूरोप के दूसरे देशों के निरंकुश नरेश भी काँप उठे थे। सोलहवें लुई के राज्य में जनता भुखमरी की शिकार हो रही थी और उसके गवर्नर भूखे व अधनंगे लोगों से यह कहा करते थे—"घास उग आई है, खेतों में जा कर उसे चरो।" इस असहनीय स्थिति से क्षुभित हो कर फौज भी नरेश के विरुद्ध हो गई और ऐतिहासिक १४ जुलाई १७८९ को पेरिस की क्रुद्ध जनता ने वैस्तील किले के सैनिकों की सहायता से सामन्ती जेल में बन्द कैदियों को मुक्त कर दिया और गढ़ की घृणित दीवारें ध्वस्त हो गईं। इसीलिए चौदहवीं जुलाई का दिन फ्रांस का राष्ट्रीय पर्व बन गया। अब उस जेलखाने का कोई भाग शेष नहीं है, केवल वहाँ क्रान्ति का स्मारक बना है, जिसके सम्मुख जा कर मैंने सादर अपना शीश झुका दिया। यहाँ पहुँचते ही ऐसा मालूम देता है, जैसे सदैव 'मार्साई का गीत' (राष्ट्रीय-गीत) गूँजा करता है, जो क्रान्ति के समय गूँजा करता था।

इस स्फूर्तिदायक स्थान को देखने के बाद मैंने नोत्रेदाम के विश्व-विख्यात गिरजाघर को देखा। गोथिक शैली के इस भव्य भवन को देख कर मैं चकित रह गया। जिस प्रकार अपने देश के खजुराहो के कटहरियानाथ महादेव के मन्दिर, भुवनेश्वर के मन्दिर अथवा बारहवीं सदी के होयसलेश्वर (मैसूर) को देख कर प्राचीन भारत की प्रस्तर-कला के सम्मुख विदेशी भी सिर झुका देते हैं, उसी प्रकार आज मैं गोथिक शैली के इस भव्य मन्दिर को देख कर विमुग्ध हो गया। यह मन्दिर बाहर से जितना खूबसूरत है, उससे अधिक

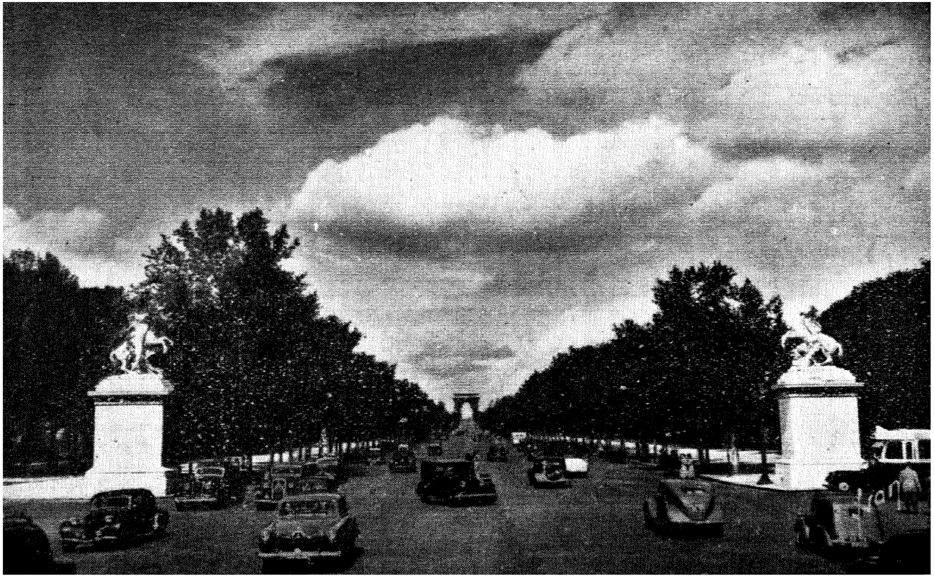

पेरिस ही नहीं बल्कि विश्व का एक सब से चित्ताकर्षक पथ—शां ज़ेलीज़े—जहाँ पर हर शाम पेरिस की रंगीन छटा पर्यटकों के मन को मुग्ध कर लेती है।

३० मई की डायरी, पृ० २४२-४३

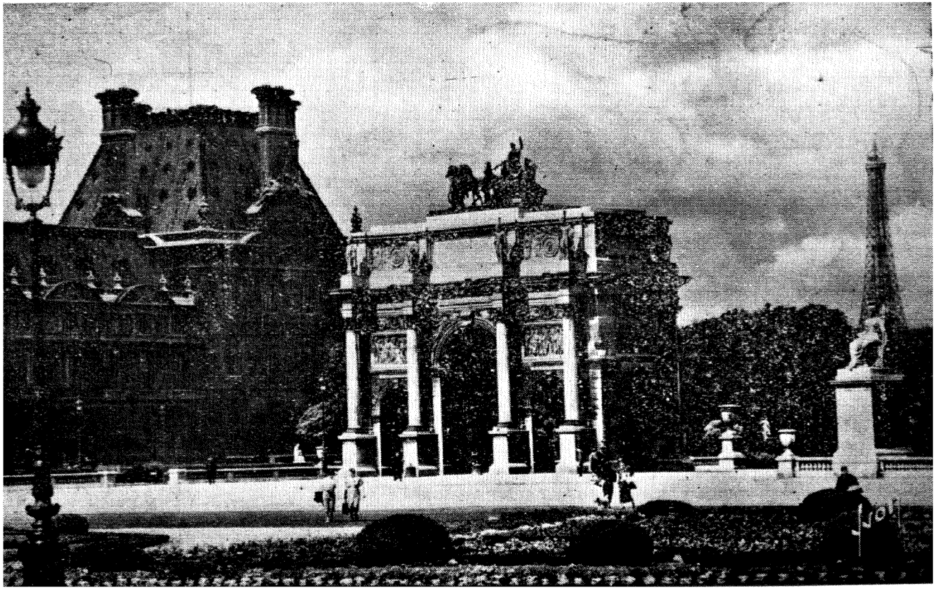

स्थापत्यकला-मर्मज्ञ शालग्रिन के मस्तिष्क की सूझ—विजयतोरण, जो शां ज़ेलीज़े के अन्तिम छोर पर है। दायें भाग में इफेल टावर का ऊपरी भाग दिखाई दे रहा है। इसी टावर को टालस्टाय ने 'मनुष्य की मूर्खता का चिह्न' कहा था।

३० मई की डायरी, पृ० २४३-४४

इसकी आत्मा कान्तिमयी है। भीतर प्रविष्ट होते ही भित्ति-चित्रों पर जो आँखें गड़ती हैं, तो हटाये नहीं हटतीं। गांधी जी इस मन्दिर को देख कर इसकी निर्माण-कला पर चकित हो गये थे।

इस मन्दिर के कोषागार को देख कर रोमनों के अत्याचारों की कहानियाँ याद आ जाती हैं। ईसा के सिर पर काँटों का जो ताज रखा गया था, उसके कुछ टुकड़े यहाँ देखने को मिले, और एक कील भी मैंने देखी, जिसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि महाप्राण ईसा को सूली पर चढ़ा कर उनके शरीर में जो लोहे की कीलें ठोंकी गई थीं, उन्हीं में से यह भी एक है। इसी कोषागार में प्रथम नेपोलियन की वह पोशाक भी देखने को मिली, जिसे राज्याभिषेक के समय उसने धारण किया था। यहाँ बहुत सी पुरानी, धार्मिक और ऐतिहासिक वस्तुएँ सुरक्षित हैं। धर्म और राजतंत्र के बीच जो सम्बन्ध रहा है, उसका प्रतिनिधित्व यह चर्च करता है, क्योंकि यह न होता, तो इस मन्दिर में फ्रांस के २८ नरेशों की मूर्तियाँ क्यों दिखाई देतीं? जब मैं इस मन्दिर के ऊपरी भाग में पहुँचा, तो वहाँ से पेरिस नगर की अपूर्व छटा देख पड़ी। ११६३ में इस मन्दिर के निर्माण का काम शुरू हुआ था और दो सौ वर्षों में पूरा हुआ। यह गिरजाघर विश्व के सात आश्चर्यों में एक है। और धर्म में आस्था रखने वालों अथवा न रखने वालों—दोनों को ही इस मन्दिर की भव्यता आकृष्ट करती रही है। मैं इस मन्दिर की छवि को कभी नहीं भुला सकता। परन्तु यह देख कर कितना क्लेश हुआ कि इस मन्दिर के पास भी नंगी औरतों के चित्रों के अलबम बेचनेवाले पर्यटकों का पीछा करते हैं।

मूर्तियों और फौवारों को अपनी गोद में छिपाये पेरिस के बीचोबीच लुक्ज़मबूर बाग अपने पुष्पों की सरस हँसी से पर्यटकों का स्वागत करता है। वहाँ के प्रमोदपूर्ण वातावरण ने मुझे उल्लास का उपहार प्रदान किया। मैंने यहाँ देखा कि एकान्त में कहीं सौरबौन विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राएँ अध्ययन में रत हैं, तो कहीं अनुरागमयी युवती कुञ्ज में अपने प्रेमी के साथ पुष्पों की कथा सुनते-सुनते सुधबुध खो कर आलिंगन-पाश में बँध जाती है, और कहीं साहित्यकार एवं कलाकार अपनी कृतियों के लिए ेरणा प्राप्त करते हैं।

लुक्ज़मबूर-बाग में घूमते समय आज मुझे 'पैले-द-शाइयो' के सामने 'शा-द-मार', के बागों की निशाकालीन रंगीन छटा याद आ गई। कल रात आसमान में चाँद खिलखिला रहा था और उस बाग में 'कविता की प्रतिमाएँ'

इधर-उधर डोल रही थीं। वहीं एक अनिंद्य स्पेनिश सुन्दरी को देखने के बाद ऐसा लगा जैसे कवि 'प्रसाद' की कल्पना मूर्तरूप में मेरे सामने खड़ी हो:—

नील - परिधान - बीच सुकुमार ,
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग ;
खिला हो ज्यों बिजली का फूल ,
मेघ - वन - बीच गुलाबी रंग ।

मैं महान् पेरिस के किन-किन चित्रों का वर्णन डायरी के पृष्ठों में करूँ! इस नगर की रंगशालाएँ, भव्य ऐतिहासिक इमारतें, संग्रहालय, शिक्षासदन एवं स्मारक—सभी ने तो मुझे आकृष्ट किया। मगर जिस पेरिस को हम हसीन चाँद कह सकते हैं, उसमें कुछ ऐसे-धब्बे लग गये हैं, जिन्हें मैं कैसे भुला पाऊँगा? लुक्ज़मबूर-बाग में अंग्रेज़ी जानने वाले कुछ फ्रांसीसी छात्रों ने बड़े क्लेश के साथ मुझे यह बताया कि "फ्रांस के वर्तमान शासक अमेरिका के गुलाम हो गये हैं।" इस कथन के प्रमाण में उन्होंने कहा—"फ्रांस के दक्षिण-पश्चिमी अतलांतक-तट के बंदरगाह बोरदू और ला-रोशले पर सच्चे अर्थों में अमेरिकी सरकार का आधिपत्य है।" उन्होंने मुझे यह भी बताया कि हथियारों से भरे अमेरिकी जहाज इन बन्दरगाहों में पहुँचते हैं और कुछ हथियार यहाँ रख कर शेष ट्रेन द्वारा पश्चिमी जर्मनी भेज दिये जाते हैं। फ्रांस की प्रगतिशील जनता निस्सन्देह इस स्थिति से बहुत असंतुष्ट है।

इस यात्रा में मुझे यह भी अनुभव हुआ कि प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष करों के बोझ से यहाँ की साधारण जनता बहुत परेशान है। अर्थशास्त्र के एक अध्यापक ने मुझे बताया कि पिछले साल ६५ फ्रैंक के एक पैकेट सिगरेट पर सरकार ५० फ्रैंक कर ले लेती थी और आज स्थिति उससे बदतर है। यहाँ सरकारें प्रायः बदलती ही रहती हैं। परन्तु अमेरिकी सहायता के द्वारा औद्योगिक ट्रस्टों और बैंकों के मालिकों का प्रभाव इस प्रकार व्याप्त है कि पिछले तीन-चार साल से जो भी सरकार आ रही है, वह जनता के लिए नहीं, बल्कि तृतीय महायुद्ध के लिए बजट में शस्त्रास्त्रों की वृद्धि के लिए खर्च बढ़ा रही है, और इसे पूरा करने के लिए करों का बोझ गरीब जनता पर लादा जा रहा है। इस अध्यापक ने बड़े रुँधे कण्ठ से कहा—"युद्ध के पूर्व बैंकों और इस्पात तथा लोहे के कारखानों के मालिकों ने इस देश की परराष्ट्र-नीति को अपने इच्छानुसार संचालित किया और इसी कारण यह मशहूर था कि पूँजीपतियों और जागीरदारों के दो सौ परिवारों का शासन इस देश पर है, परंतु खेद इस

बात का है कि युद्ध समाप्त होने के बाद इस काले युग के अंत की जो आशा पैदा हो गई थी, वह फिलहाल समाप्त हो गई है।" 'द गाल' की पार्टी, 'रैली आफ दि फ्रेंच पीपुल्स' दायें बाजू के सोशलिस्ट, कैथलिक, एम० आर० पी० आदि जमातें जिस ढंग से नये युद्ध की तैयारी में जनता को तबाह कर रही हैं, उससे फ्रांस में एक प्रकार से 'संकट की स्थिति' पैदा हो गई है। बाहरी शक्ति के सहारे आज फ्रांस में प्रतिक्रियावादियों का शासन कायम है और किसान-मजदूर तबाह हो रहे हैं।

पेरिस के ट्रेड यूनियन फेडरेशन के एक कार्यकर्ता ने मुझे बताया कि मजदूरों की दशा अत्यन्त चिन्तनीय है। पाँच लाख से अधिक मजदूर बेकार हैं और उनके सामने भुखमरी मुंह बाये खड़ी है। वृद्ध मजदूरों को ५३ फ्रैंक प्रतिदिन पेंशन मिलती है और आज की स्थिति में वे इससे एक वक्त भरपेट भोजन भी नहीं कर सकते। इसी कार्यकर्ता ने मुझे यह भी बताया कि जार्ज बिदोल जैसे सोशलिस्ट नेता हिंद चीन के राष्ट्रवादियों का रक्त बहा कर पैसा बटोरने में रत हैं। पेरिस का वह चित्र निश्चय ही बड़ा दुःखजनक है।

मैंने आज यहाँ कुछ चीजें खरीदीं और उस समय लंदन और पेरिस की दुकानों का अन्तर मालूम पड़ा। ब्रिटेन अथवा स्विट्ज़रलैंड में चाहे जिस कीमत की चीज़ लीजिए, खरीदारों के साथ बहुत शिष्ट व्यवहार किया जाता है। मगर यहाँ के बड़े स्टोरों में कम कीमत की चीज खरीदते समय सामान बेचने वाली शोख लड़कियाँ उपेक्षा का जो भाव ग्रहण करती हैं, वह मुझे बहुत खटका। यहाँ कीमतों के बारे में भी सन्देह बना रहता है। एक ही प्रकार की टाइयों की भिन्न-भिन्न कीमतें मुझसे अलग-अलग दुकानों में माँगी गईं। लंदन में कभी किसी चीज को खरीदने के बाद कीमत के विषय में कोई संदेह मन में नहीं रहता, यद्यपि ब्रिटेन की अपेक्षा यहाँ के लोग बड़े मिलनसार और भावुक हैं। फ्रांस के होटलों और जलपानगृहों में ब्रिटेन से अच्छा खाना मिला।

पेरिस की भूमिगत बिजली की गाड़ियों में सफर करने पर लोगों की धक्कमधुक्की देख कर अपने देश की याद आ गई और जीर्ण डिब्बों को देखते ही यह आभास मिला कि यातायात विभाग के अधिकारी 'पेरिस मेट्रो' की खूबसूरती बढ़ाने पर कोई ध्यान नहीं देते। यहाँ टैक्सीवाले घुमा-फिरा कर यात्री से अधिक किराया वसूल करने के चक्कर में रहते हैं।

आज अंतिम बार 'शां ज़ेलीज़े' की चहल-पहल देखने के लिए चला, तो 'प्लेस-द-ला-कोंकोर्द' के पास पहुँचते ही मूसलाधार बारिश होने लगी। जून

श्रौर श्रक्तूबर में यहाँ काफी वृष्टि होती है। पानी बरस चुकने के बाद जब मैं 'शां ज़ेलीज़' पहुँचा तो आज अधिक रंगीनी नज़र आई। पेरिस अपनी स्थापना के दो हज़ार वर्ष पूरे होने पर अपना जन्म दिवस मना रहा है और इसीलिए हर भाग सजधज के साथ आनन्दोत्सव में निमग्न था।

पेरिस को सलाम करके यहाँ से विदा होने का समय निकट आ रहा था। जिस समय मैं यहाँ से 'छोटे पेरिस' जेनेवा रवाना हुआ, मुझे सीन नदी की 'लहरों के आशाजनक गीत' सुनाई पड़े, जिनमें नये फ्रांस के उदय का संदेश था।

———

१ जून

(१) साधन-सम्पन्न पर्यटकों के प्रेम-नीड़ में

(२) लोज़ान का रंगीन वातावरण

(३) खतरनाक चौराहे पर खड़ा पश्चिमी यूरोप

स्विटजरलैंड से पेरिस रवाना होने के एक दिन पूर्व बर्न के पास टुन झील की इठलाती लहरों ने पुनः आल्प्स की धवल मुसकान देखने का निमंत्रण दिया था और आज सवेरे जेनेवा में आ कर इस नगर के प्रथम दर्शन से यह प्रतीत हुआ, जैसे श्वेत कमल खिलखिला रहा हो । आल्प्स पर्वत की मौंट ब्लैक चोटी की गरिमा जेनेवा की आँखों में छलछल छलक रही थी और छः सौ झीलों के देश स्विटजरलैंड की सबसे मनोरम जेनेवा झील के किनारे पहुँचते ही हठात् मेरे मुख से निकल पड़ा—सचमुच यह 'छोटा पेरिस' है ।

रोन नदी के दोनों किनारों पर बसे इस नगर का इतिहास ईसा से ५८ वर्ष पूर्व से शुरू होता है, परन्तु पुराने इतिहास ने इसकी प्रसिद्धि में योग प्रदान नहीं किया है । वास्तव में राष्ट्रसंघ का सदर मुकाम होने के कारण दूर-दूर देशों की जनता बिना देखे इस नगर से परिचित है । अन्तरराष्ट्रीय श्रम-कार्यालय तथा १८६४ में स्थापित अन्तरराष्ट्रीय रेडक्रॉस सोसायटी के कारण राष्ट्रसंघ की मौत के बाद भी इसकी ख्याति शेष है । मगर जेनेवा वास्तव में अपने आकर्षक सौंदर्य और मधुर स्वभाव के कारण अब दुनिया में प्रसिद्ध है ।

एक लाख पैंतीस हज़ार निवासियों के इस शहर को स्विटजरलैंड का एक सर्वोत्तम नगर कहा जाता है, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है । इसकी चौड़ी एवं साफ-सुथरी सड़कें और इनके दोनों किनारों पर वृक्षों की मनोहर कतारें देख कर मुझे बड़ी खुशी हुई । लंदन की बूढ़ी इमारतों की काली दीवारें देख कर मन में जो कुढ़न पैदा हुई थी, वह जेनेवा झील के तीन ओर

खड़ी धवल अट्टालिकाओं को देख कर दूर हो गई। यहाँ मैंने देखा, कि सड़कों को साफ सुथरी रखने पर नागरिक भी बहुत अधिक ध्यान देते हैं। सड़क से पेड़ों की सूखी पत्तियाँ उठा कर कूड़ेदान में फेंक देना वे अपना कर्तव्य समझते हैं। सदियों की गुलामी के कारण अभी हमारे देश में नागरिक चेतना का अभाव है और सम्भवतः इसी कारण सड़कों पर कूड़ा फेंक देना, बीच सड़क पर पान की पीक गिरा देना अथवा कागज के टुकड़े बिखेर देना कुछ लोगों का स्वभाव हो गया है। परन्तु लंदन और जेनेवा की साफ-सुथरी सड़कों को देख कर अपने देश की गन्दी सड़कों पर बड़ा तरस आया। जेनेवा को देखने से प्रकट हुआ, कि मनुष्य अपने परिश्रम से प्राकृतिक सौंदर्य में चार चाँद लगा देता है। प्रकृति ने कश्मीर को स्विटजरलैंड से अधिक सौंदर्य प्रदान किया है। परन्तु घोर गरीबी और साम्राज्यवादी उत्पीड़न के फलस्वरूप वह इतना पिछड़ा हुआ है, कि स्वाधीन होने के बाद भी उसे सँवारने में समय लगेगा। जेनेवा झील के किनारे-किनारे वृक्षों के नीचे छोटी-छोटी मेजों के चारों ओर रंगीन कुर्सियों पर बैठे पर्यटकों की आँखें झील की शोभा निहारने में लगी रहती हैं। यहाँ के गिरजाघर, विश्वविद्यालय, ओपेरा हाउस, संग्रहालय और टाउन हाल आदि महत्त्वपूर्ण स्थानों की झलक पा लेने के बाद मैं अन्तरराष्ट्रीय श्रम-कार्यालय देखने रवाना हुआ। 'रूसो' द्वीप में रूसो की आकर्षक प्रतिमा देख कर मुझे यह खुशी हुई कि इस नगर ने फ्रांस के पुराने समाजशास्त्री को उचित सम्मान प्रदान किया है। रूसो जेनेवा में ही पैदा हुए थे, इसलिए इसे उन पर गर्व करना स्वाभाविक ही है। यद्यपि इस समाजशास्त्री के सिद्धान्त आज के युग में शायद ही कोई स्वीकार करे, किन्तु अनजाने रूसो ने फ्रांसीसी क्रान्ति की पृष्ठभूमि तैयार करने में जो मदद पहुँचायी थी, उसी कारण उन्हें लोग याद करते हैं। और इस समाजशास्त्री का प्रसिद्ध वाक्य कितने ही लोगों को कंठ है :—

"मनुष्य जन्म से स्वतंत्र है, किन्तु वह सर्वत्र जंजीरों से जकड़ा हुआ है।"

झील के अनूठे सौंदर्य से रूसो द्वीप की खूबसूरती निखर गई है।

राष्ट्रसंघ की इमारतों को देखते समय इस अन्तरराष्ट्रीय संगठन को निर्जीव बना देनेवाले पश्चिमी यूरोप की साम्राज्यवादी साजिशों की याद ताजी हो जाती है। ब्रिटेन और फ्रांस की उपनिवेशलिप्सा के कारण राष्ट्रों के बीच न्याय और सम्मान की डींग मारने वाला यह संगठन जब इटली और

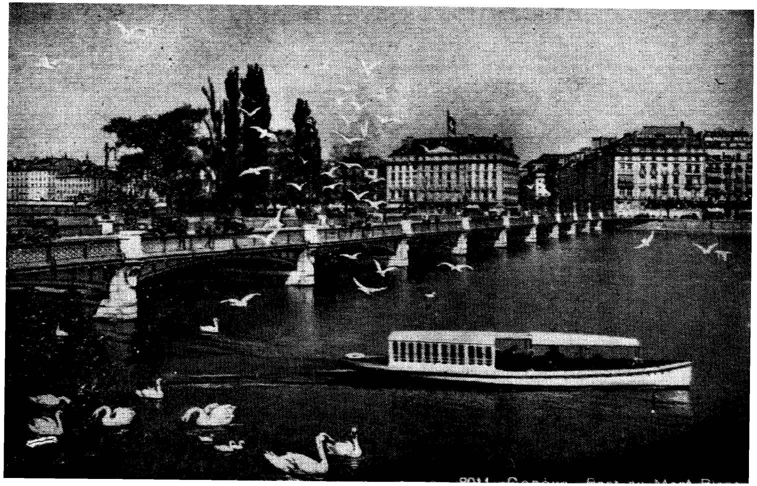

यूरोप के 'छोटे पेरिस' और मृत राष्ट्रसंघ के सदर मुकाम जेनेवा नगर में जेनेवा झील का मनोरम दृश्य

१ जून की डायरी, पृ० २५७

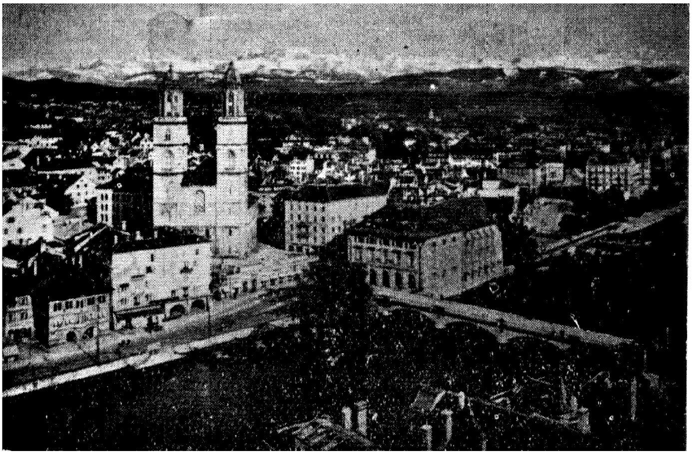

झीलों के देश स्विटजरलेंड के औद्योगिक नगर ज्यूरिख और
आल्प्स पर्वत का दृश्य
२६ मई की डायरी, पृ० २१०

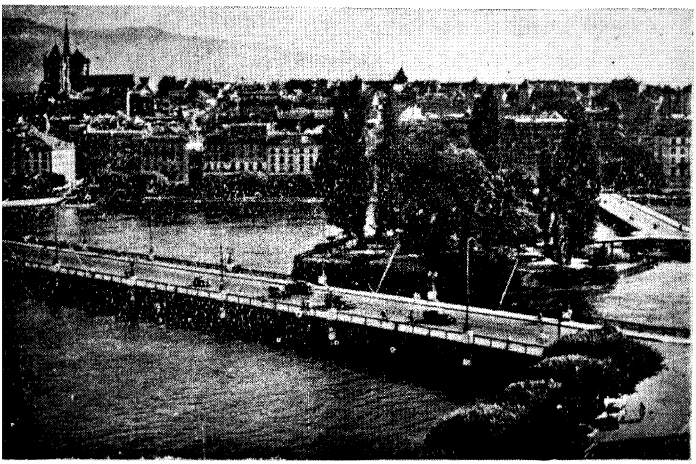

यूरोप के 'छोटे पेरिस' जेनेवा में आकर्षक 'रूसो' द्वीप
१ जून की डायरी, पृ० २५८

जर्मनी के अत्याचारों को दूर न कर सका तो इसकी भी मौत हो गई। मैं जब राष्ट्रसंघ के सचिवालय की इमारतों के सामने खड़ा था, तो वे मुझे सड़ी लाश की भाँति प्रतीत हुई और कुंजों के बीच खड़े श्रम-कार्यालय की इमारत भी शर्म में डूबी हुई नजर आई, क्योंकि जिस सामाजिक न्याय के आदर्श को पूरा करने के लिए इस कार्यालय की स्थापना हुई थी, उस दिशा में इसे भी कोई खास सफलता नहीं मिली। कुंजों के मध्य निर्मित मृत राष्ट्रसंघ के सदर मुकाम को देखने से जो व्यथा पैदा हो गई थी, उसे दूर करने के उद्देश्य से जब मैं झील के किनारे पहुँचा, तो वहीं लेनिनग्राड विश्वविद्यालय के अर्थ-शास्त्र के एक अध्यापक से भेंट हो गई। उनसे दो-चार बातें हुई। वे अन्तर-राष्ट्रीय श्रम-सम्मेलन में भाग लेने के लिए यहाँ आये हुए थे।

जेनेवा अपनी घड़ियों के लिए भी प्रसिद्ध है। घड़ी की दुकानों में विविध प्रकार की घड़ियाँ दिखायी दीं। फाउंटेनपेन में घड़ी, अंगूठी में घड़ी—और इन आकर्षक घड़ियों की प्रशंसा में किसी कोमल कंठ से रसधारा फूट पड़ती, तो ग्राहकों के सम्मुख जेनेवा का एक दूसरा ही चित्र प्रस्तुत हो जाता।

जेनेवा साधन-सम्पन्न पर्यटकों के लिए 'प्रेम-नीड़' के समान अवश्य है, परन्तु साधन-शून्य पर्यटकों को पग-पग पर असुविधाओं का सामना करना पड़ता है। खाने की चीजें बहुत महँगी हैं। अच्छे होटल बहुत महँगे हैं।

जेनेवा नगर एक लम्बे अरसे तक यूरोप के बड़े-बड़े क्रान्तिकारियों को आश्रय प्रदान करता रहा है। इसी नगर में १८८३ में जी० वी० पेलखनोव ने 'श्रमिक-मुक्ति-संगठन' के नाम से प्रथम रूसी मार्क्सवादी दल का निर्माण किया था और सोवियत क्रान्ति के जन्मदाता लेनिन ने भी कुछ समय यहीं से रूसी क्रान्ति का संचालन किया था। मैं इस नगर की खूबसूरत झलक को कभी विस्मृत नहीं कर सकता।

जेनेवा से ट्रेन द्वारा करीब डेढ़ घंटे बाद हम लोज़ान पहुँच गये। फ्रांसीसी स्विटजरलैंड का यह नगर अपने अच्छे जलवायु, प्राकृतिक सौंदर्य और अंगूर के खेतों के लिए प्रसिद्ध है। स्टेशन से बाहर आने के बाद सीधे हम लोज़ान झील के किनारे गये। रंग-बिरंगी नौकाएँ झील में इधर-उधर दौड़ रही थीं। किनारे कुछ शिल्पी प्राकृतिक दृश्यों के चित्रांकन में व्यस्त थे। झील की दूसरी ओर बर्फीली पहाड़ियाँ और उनके ऊपर मँडराते हुए बादलों के टुकड़े तथा नीचे घाटी में घने जंगलों की कतारें देख कर मैं गद्गद हो

उठा। प्रकृति के इस रूमानी दृश्य को देखते हुए अल्हड़ जवानी में डूबे प्रेमी-प्रेमिकाओं के जोड़े आने-जानेवालों की ओर ध्यान दिये बिना ही प्रेमालाप में रत थे। विलेरिव स्नान-तट पर पहुँचने के बाद मैंने देखा, कि युवक-युवतियाँ झील की तरंगों के साथ क्रीड़ा में निमग्न हैं। स्नान के समय के वस्त्र पहने लड़के-लड़कियों के दल बिना शर्म और झिझक के एक साथ स्नान कर रहे थे, कुछ रेत पर लेटे या बैठे धूप खा रहे थे। यहाँ कॉफी अथवा बियर आदि पीने की भी व्यवस्था थी। लड़कियों के सुडौल शरीर देख कर मुझे अपने देश की लड़कियों का ध्यान आया, जो शरीर के गठन पर ध्यान देने की अपेक्षा केवल साड़ियों के चुनाव पर ध्यान देना ही सौंदर्य-वृद्धि का साधन समझती हैं।

फ्रांस और स्विटजरलैंड के स्त्री-पुरुष इंगलैंड की अपेक्षा अधिक सुन्दर हैं। इनके श्वेत रंग में लावण्य है और यहाँ की नारियों में मिठास है। यहाँ स्त्रियों के शरीर पर आकर्षक वस्त्र देख पड़े। परन्तु इंगलैंड के सामाजिक जीवन की पवित्रता यहाँ कहीं भी देखने को न मिली।

लोज़ान के आसपास अंगूर की लताएँ देख कर मैं मस्ती से झूम उठा। अधिक अंगूर होने के कारण ही शराब यहाँ का मुख्य व्यवसाय है। यह नगर अपनी भावुकता तथा सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध है। इस नगर के बाद झील और पहाड़ी के पार फ्रांस की सीमा शुरू होती है। झील के किनारे एक नागरिक से बातचीत होने पर उसने मुझे बताया, कि दूसरे महायुद्ध के समय जब जर्मन विमान सीमा पर फ्रांसीसी गाँवों में बमवर्षा करते थे, उस समय लोज़ान के हृदय में जो व्यथा होती थी, उसका वर्णन शब्दों से नहीं हो सकता।

तपेदिक के रोगियों के आश्रय-स्थल लोज़ान के जलवायु में सचमुच स्वास्थ्य प्रदान करने की क्षमता है।

यह नगर अपनी कलाप्रियता एवं सुन्दरता के कारण फ्रांस का ही एक नगर प्रतीत होता है। यहाँ के होटलों का प्रबन्ध भी बहुत प्रशंसनीय है। मगर इस खूबसूरत नगर के जीवन में चाँद के धब्बे की तरह एक ऐसा दाग लगा है, जिसे स्विटजरलैंड कभी नहीं धो सकता। १९२३ में टर्की से शान्ति-संधि करने के लिए यहाँ जो सम्मेलन हुआ था, उसमें शामिल सोवियत प्रतिनिधि की हत्या कर दी गई और तब से स्विटजरलैंड और रूस में जो कूटनीतिक तनाव पैदा हुआ, वह आज तक दूर न हो सका।

आज रात में जब मैं ज्यूरिख से रोम रवाना हुआ, तो स्विटजरलैंड की झीलें और आल्प्स की पहाड़ियाँ मुझसे यहाँ और रुकने का आग्रह कर रही थीं, परन्तु मैंने विदा होते समय इस मूक आग्रह के लिए धन्यवाद देते हुए कहा—ऐ स्विटजरलैंड ! मैं भी उस देश का निवासी हूँ, जहाँ 'पृथ्वी का स्वर्ग' कश्मीर है, जिसके लिए कवि ने लिखा है—

जो भी पूछेगा जन्नत का हमसे पता,
राह कश्मीर उसको बता देंगे हम।

—'साग़र'

बड़ी आकांक्षाओं एवं अरमानों को ले कर ब्रिटेन और यूरोप को देखने आया था। पूर्वी यूरोप को मैं न देख सका, परन्तु पश्चिमी यूरोप के सम्बन्ध में इस यात्रा में जो कुछ जान सका, उससे व्यथा भरे मन से स्वदेश लौट रहा हूँ। रोम और काहिरा की कथा फिर कभी लिखूँगा, किन्तु मुझे यह देख कर बड़ा दुःख हुआ, कि दो महायुद्धों के कटु अनुभवों के बाद भी पुराने साम्राज्यवादी राष्ट्रों की प्रवृत्ति नहीं बदली। उन्नीसवीं सदी में १८१५ की वियना कांग्रेस यूरोप की कोई समस्या हल न कर सकी। लोलुप नरेशों ने उस समय यूरोप के नक्शे को इस तरह बदल डालने की साजिश की, कि एक राष्ट्र के रूप में पोलैंड का अस्तित्व समाप्त हो गया था। बीसवीं सदी में प्रथम महायुद्ध के बाद वर्साई की संधि फिर यूरोप के लिए अभिशाप सिद्ध हुई। उपनिवेशलिप्सा तथा साम्राज्यविस्तार की नीति ग्रहण करने के कारण यूरोप ने पुनः दुनिया को दूसरे महायुद्ध में बरबाद किया। मगर आश्चर्य इस बात पर है, कि इस बार जर्मनी से अभी तक शान्ति-संधि नहीं हो पाई है, लेकिन दूसरे देशों के प्राकृतिक साधनों को हथियाने तथा संसार में फौजी अड्डों का जाल बिछाने की भूख फिर पैदा हो गई है। दुनिया के लोगों ने सोचा था, कि संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना से पुरानी दुनिया खतम हो जायेगी, नयी धरती पर नये कुसुम खिलेंगे, मानव-मानव के बीच जो दरार पड़ गई थी, वह पट जायगी, बन्धनविमुक्त हो सभी देश प्रगति के पथ पर अग्रसर होंगे। परन्तु हो यह रहा है, कि कोरिया में विनाश की आँधी चल रही है [२७ जुलाई, १९५३ को कोरिया में विराम संधि हो जाने के फलस्वरूप शान्ति स्थापित हो गई है, परन्तु प्रश्न यह है कि क्या यह शान्ति कायम रहेगी—लेखक]। दक्षिणी अफ्रीका में हिटलर की जातीय श्रेष्ठता सम्बन्धी नीति पर चल कर डाक्टर मलान अश्वेतों पर पाशविक जुल्म ढा रहे हैं। अमेरिका में

नीग्रो जाति पर बर्बर अत्याचार होते हैं और एशिया तथा अफ्रीका में शोषण की नीति खतम करने के बजाय अमेरिका की मदद से पश्चिमी राष्ट्र 'विषकन्या' वाली नीति अपना कर इन भूभागों पर अपना प्रभुत्व किसी न किसी रूप में कायम रखना चाहते हैं।

मैंने यह अनुभव किया, कि द्वितीय महायुद्ध के बाद भी पश्चिमी यूरोप के शासकों ने सम्भवतः आज तक कुछ नहीं सीखा। प्रथम महायुद्ध के केवल मृतकों और घायलों की संख्या ४ करोड़ ६० लाख से अधिक थी तथा मित्र राष्ट्रों को लगभग पौने छः खरब रुपये और जर्मन पक्ष को करीब दो खरब रुपये विनाशकारी युद्ध में खर्च करने पड़े थे। ये आँकड़े भी सही ही हैं, ऐसा नहीं कहा जा सकता। हो सकता है, इससे भी अधिक खर्च हुआ हो। दूसरे महायुद्ध की भीषणता इसी बात से प्रकट हो जायगी कि इसके फल-स्वरूप २ करोड़ से अधिक युवक युद्ध में मारे गये; हवाई हमलों के फल-स्वरूप डेढ़ करोड़ स्त्रियाँ, बालक और वृद्ध चिर निद्रा में सो गये; ढाई करोड़ से अधिक व्यक्ति हवाई हमलों से गृहविहीन हो गये; ३ करोड़ अपाहिज हो गये; ३ करोड़ से अधिक घर भूमिसात् हो गये और १५ करोड़ व्यक्ति निराश्रित हो कर अकाल और बीमारी के शिकार हुए। इस महायुद्ध के फल-स्वरूप जो आर्थिक हानि दोनों पक्षों को उठानी पड़ी, उसे पिछले युद्ध की लागत के २७ गुने से भी अधिक आँका जा रहा है। किन्तु इस महाविनाश के बाद भी हथियारबन्दी की होड़ में जिस प्रकार फिर धन फूँका जा रहा है, वह क्या इस बात का द्योतक नहीं कि पश्चिमी यूरोप के राष्ट्र आग और तलवार के खतरनाक रास्ते पर बढ़ रहे हैं।

मैंने इस यात्रा में स्वयं यह अनुभव किया, कि पिछले महायुद्ध का का घाव अभी भरा नहीं है।

एक यूनानी युवक लेखक ने पिछले साल यह ठीक ही लिखा था— "जरा उन ध्वंसावशेषों की ओर देखो जो अभी तक धुआँ दे रहे हैं, शोक सूचक वस्त्र पहने माताओं, पत्नियों एवं बहनों की ओर देखो, जिनके हृदय के घाव अभी हरे हैं। कब्रों की उन अनन्त पाँतों की ओर देखो, जिनमें समय से पहले ही युवक चिर-निद्रा में सो गये हैं। उन लोगों की ओर देखो, जिन्हें सर्वभक्षी युद्ध से उत्पन्न गरीबी ने ग्रस लिया है और इसके साथ ही मौत के उन व्यापारियों की साजिशों एवं चालों को देखो, जो टैंक और गोला-बारूद बेच कर चाँदी के नये अम्बार लगाने की कोशिश कर रहे हैं।" आज के

पश्चिमी यूरोप का यही चित्र दुनिया में भय का वातावरण पैदा कर रहा है और इसी चित्र को देख कर भावी युद्ध की विभीषिका मेरे सामने मूर्तिमती हो उठी।

मैंने यह भी अनुभव किया, कि जनता हर जगह शान्ति चाहती है। किन्तु पश्चिमी यूरोप के लिए यह कितनी शर्म की बात है कि सैद्धान्तिक मतभेद होते हुए भी दूसरे महायुद्ध के समय रूस से पारस्परिक सहयोग की जो उचित नीति अपनाई गई थी, उसे छोड़ कर वह अब अमेरिका का आर्थिक प्रभुत्व स्वीकार करने के कारण उसके संकेत पर जनता को खुशहाल बनाने के बजाय हथियारबन्दी की होड़ में लगा है।

'बदलते दृश्य' में इन सच्चे चित्रों को प्रस्तुत करते समय मैं पश्चिमी यूरोप की महत्ता को भी भूला नहीं हूँ। मैं जानता हूँ, कि जर्मनी के महान् दार्शनिक मार्क्स ने हमें बताया कि संसार गतिशील है और फ्रांस की विश्व-विख्यात महिला वैज्ञानिक मदाम क्यूरी ने रेडियम के आविष्कार से मार्क्स के उद्गार को विज्ञान के द्वारा पुष्ट कर दिया। मैं इस भूखंड के बुद्धिजीवियों की सांस्कृतिक देन को आदर की दृष्टि से देखता हूँ, क्योंकि मानव-संस्कृति भौगोलिक टुकड़ों में विभाजित नहीं की जा सकती। मगर मुझे इस बात का खेद अवश्य हुआ, कि एशिया और अफ्रीका को सच्चे अर्थों में समझने की कोशिश नहीं हो रही है। पश्चिमी यूरोप अमेरिका के साथ मिल कर एशिया के खुले होठों को फिर सी देना चाहता है, मगर अब यह सम्भव नहीं है। एशिया जाग गया है, वह शान्ति और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहा है। अब कोई भी शक्ति उसकी प्रगति में अधिक दिनों तक बाधा नहीं पैदा कर सकती।

पश्चिमी यूरोप के शासकों ने कुत्तों से प्यार करना जरूर सीखा है, मगर यदि वे इन्सान से प्यार करना सीख लेते, तो आज का घिनौना वातावरण शीघ्र दूर हो जाता। इस यात्रा में मैंने यह भी अनुभव किया, कि आक्रामक-नीति का अनुसरण करने वाले पश्चिमी राष्ट्र इस बार एशिया को युद्ध-क्षेत्र बनाना चाहते हैं। हमारे पिछड़े हुए भूभाग के विरुद्ध यह इतनी बड़ी साजिश है, कि इसमें फँसने पर पुनः एक लम्बे अरसे के लिए एशिया दूसरों का मुहताज हो जायेगा।

अपने जीवन के खतरनाक चौराहे पर खड़ा पश्चिमी यूरोप साम्राज्य-लोलुप शासकों के लौह-पाश से मुक्त हो कर नव-निर्माण का मोड़ अवश्य

पकड़ेगा, मगर इस समय इसकी आँखों से आँसू टपक रहे हैं, जनता दुःखी है और हथियारबन्दी की होड़ से बहुत ही भयभीत ! मगर जीवन की ज्योति भला कहीं बुझ सकती है ! सर्वत्र अँधेरा दूर होगा और कोने-कोने में मधुरतम स्वर लहरी गूँज उठेगी—यह सपना भी है और सत्य भी।

समाप्त